ॐ

श्री भक्तामर महामण्डल विधान

-: आशीर्वाद :-

अध्यात्म सरोवर के राजहंस

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

-: रचयित्री :-

आर्यिका रत्न 105 श्री पूर्णमति माता जी

कृति : श्री भक्तामर महामण्डल विधान

आशीर्वाद : आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज

रचयित्री : आर्यिका रत्न 105 श्री पूर्णमति माताजी

मूल्य : रु. 240/- मात्र (पुनः प्रकाशन हेतु)

प्राप्ति स्थल :

- प्रबोध कुमार देवेन्द्र कुमार शाह
  वास्तु सलाहकार
  ई-2/14, अरेरा कॉलोनी, भोपाल
  फोन : 0755-2467952, 9303109613
- नितिन जैन 'विकास'
  118, छत्रपति शिवाजी कॉलोनी,
  चूना भट्टी, कोलार रोड, भोपाल
  मो. 9425378736, 9981060692
  ई-मेल : vikasjain.glad@gmail.com

अपनी बात

स्तोत्र भगवद्-भक्ति का सहज, सरल और सशक्त माध्यम है। प्रायः सभी धर्मों में स्तोत्र साहित्य प्राप्त होता है। स्तोत्र साहित्य की विशेषता यह है कि इसमें भगवद्-भक्ति के साथ-साथ सिद्धान्तों का प्ररूपण भी कान्ता-सम्मित रीति से हो जाता है। अतः स्तोत्र एक ओर जहाँ ईश्वर सामीप्य के साधक हैं तो वहीं दूसरी ओर ईश्वर प्रणीत वाणी के बोधक भी हैं।

"**भक्तामर स्तोत्र**" जैन साहित्य का प्रसिद्धतम एवं सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला स्तोत्र है। कई जैनेतर बन्धु भी श्रद्धापूर्वक इसका पाठ करते हैं। इसमें आदिम तीर्थङ्कर "**श्री आदिनाथ भगवान्**" की स्तुति की गई है। '**भक्तामर**' शब्द से प्रारम्भ होने से यह '**भक्तामर स्तोत्र**' नाम से प्रचलित हो गया। प्रतिकूल परिस्थिति में पड़े हुए एक सच्चे भक्त द्वारा निःस्वार्थभक्ति करते हुए भक्ति का समुचित फल प्राप्त करने का यह अनन्यतम उदाहरण है।

भक्तामर विधान की परम्परा में "**आर्यिका पूर्णमति माताजी**" द्वारा रचित यह विधान नए कलेवर एवं नई विधा के साथ हमारे समक्ष प्रस्तुत है। यह विधान भक्तजन को भक्तिगंगा में अवगाहन कराने का सहज और सरस माध्यम है। इसमें शब्दों और भावों दोनों के समुचित समन्वय के साथ-साथ भक्तियोग एवं ज्ञानयोग का अद्भुत समागम हुआ है। भक्ति एवं ज्ञान की यह पावन धारा आर्यिका श्री पूर्णमति माता जी के सुमधुर कण्ठ से भक्तामर विधान के लालित्यपूर्ण एवं चित्ताकर्षक वाग्धारा के मिलन से उस पुनीता त्रिवेणी में परिवर्तित हो जाती है, जो जन-जन के मन का ताप दूर करती हुई प्रभुभक्ति के रस से सरावोर हो जाता है।

आर्यिका पूर्णमति माताजी का काव्य मानवीय नहीं है, यह दैवीय प्रतिभा सम्पन्न कवित्व की सरलतम अभिव्यक्ति है, जो प्रारम्भिक स्तर के पाठक को

उतना ही आह्लादित और आनन्दित करती है जितना विषयविशेषज्ञों को। आपने **''सन्त शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज''** की जीवन गाथा को **'गुरुकथा'** शीर्षक से काव्यरूप में निबद्ध करके अपनी कवित्व गाथा को दिग्दिगन्तव्यापी एवं अजर-अमर कर लिया है। एक शिष्य के द्वारा अपनी गुरुभक्ति की ऐसी विलक्षण एवं श्रोतृहृदयहारिणी अभिव्यक्ति अन्यत्र दुर्लभ है। हम सौभाग्यशाली हैं जो हमें ऐसे गुरु-शिष्य का मङ्गल सान्निध्य प्राप्त हो रहा है।

अस्तु, श्रद्धालुजन इस विधान के माध्यम से अपने कर्मों और कष्टों का क्षय करते हुए जीवन सार्थक कर सकें इसी भावना के साथ आर्यिकाश्री के प्रति कृतज्ञता एवं पाठकों के प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ कि उन्हें जिनेन्द्र अर्चना के लिए एक और काव्यप्रसून उपलब्ध हो गया है।

डॉ. सोनल कुमार जैन

साहित्याचार्य

आमुख

'भक्तामर स्तोत्र' आचार्य मानतुङ्ग स्वामी द्वारा रचित अद्‌भुत अनुपम कृति है। आठवीं सदी में राजा भोज ने कुपित होकर आचार्य मानतुङ्ग स्वामी को 48 कोठों में बन्द कर दिया था। आचार्य महाराज द्वारा की गई जिनेन्द्रभक्ति के प्रभाव से ताले टूट गए। उस समय यह घटना सभी लोगों ने देखी और सुनी होगी किन्तु भक्ति के प्रभाव से उनके कर्मों के कितने ताले टूटे होंगे यह तो सिर्फ केवलज्ञानी ही जान पाए होंगे।

अनेक साधकों और विद्वानों ने इस स्तोत्र पर विधान, हिन्दी पद्यानुवाद करके जैनत्व और भक्ति के गौरव को बताया है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की सुयोग्य शिष्या **आर्यिका पूर्णमति माता जी** ने बीजाक्षर संयुक्त 2688 पद्यों में भक्तामर विधान की अद्‌भुत रचना की है।

बीजाक्षरों की महिमा अचिन्त्य है। 'श्रीं' बीजाक्षर कीर्तिवाचक है तो 'क्लीं' बीजाक्षर कल्याणवाचक, 'क्ष्वीं' शांतिवाचक है तो 'हं' बीजाक्षर मंगलवाचक, ॐ बीजाक्षर कर्मनाशक है। बीजाक्षरों से युक्त विधान की रचना निश्चित ही पूज्य माता जी के ज्ञान, ध्यान, साधना और भक्ति की गहराई की परिचायक है।

पूज्य माता जी ने अपनी लेखनी से अनेक कृतियाँ जैन साहित्य को प्रदान की हैं। 'भक्तामर विधान' की यह कृति कर्म क्षय का कारण बनेगी। माता जी की लेखनी अनवरत चलती रहे। इसी भावना के साथ...

ब्र. संजीव

हृदयोद्गार

प्रभुत्व को प्रकट करने के दो साधन हैं – एक भक्ति दूसरा ध्यान। भक्ति से परम प्रभु परमात्मा का दर्श होता है और ध्यान से निजप्रभु का दर्शन होता है। भक्ति भी द्वैत और अद्वैत के भेद से दो प्रकार की होती है। अद्वैत भक्ति ध्यान के ही समकक्ष होती है। किसी ने कहा है –

जब मैं था तब प्रभु नहीं, अब प्रभु हैं मैं नाहिं।
भक्ति गली अति सांकरी, तामें दो न समाहिं॥

इस प्रकार भक्ति और ध्यान यह दो File हैं जो प्रभुत्व को प्रकट करती हैं, किन्तु ध्यान की File से कार्य शीघ्र होता है। भक्ति की File धीरे-धीरे खुलती है इसीलिए महासाधक सन्तजनों ने ध्यान की File को खोला , जिससे उन्हें शुद्धोपयोग रूप ध्यान से लक्ष्य की शीघ्र ही प्राप्ति हो गई, शुद्धात्मानुभूति हो गई। लेकिन इस कलिकाल में केवली श्रुतकेवली ऋद्धिधर का दर्शन नहीं है, कदाचित् शुद्धोपयोगी और शुभोपयोगी मुनिजनों का यदा-कदा समागम प्राप्त हो रहा है। जैसे वर्तमान में सन्त श्रेष्ठ – "**आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज**" आदि। पूर्व में भी **श्री कुन्दकुन्द आचार्य, समन्तभद्र आचार्य, जिनसेनाचार्य** और **आचार्य श्री मानतुङ्ग स्वामी** आदि अनेक तपोधनी हो चुके हैं। इनमें श्री मानतुङ्ग स्वामी ने स्तोत्र शिरोमणि कर्मजयी '**भक्तामर स्तोत्र**' भक्ति काव्य की रचना करके जन-जन को भक्ति से कर्म बन्धन को तोड़ने का अनूठा उपहार दिया है।

धन्य हैं श्री मानतुङ्ग स्वामी! जिनकी कर्म रूपी कारागृह की पीड़ा ने इस भक्तिकाव्य को जन्म दे दिया। भक्त के लिए विचारणीय यही है कि –क्या उसके अन्तर में भी ऐसी पीड़ा है? कर्म के बन्धनों से मुक्ति पाने की प्यास है? आचार्य श्री ने देह पर बेड़ियाँ और हथकड़ियाँ तोड़ने के लिए या प्रसिद्धि पाने के लिए भक्ति नहीं की, वे तो कर्म के बन्धन तोड़ स्वात्म सिद्धि के लिए भक्ति सरवर में डूब गए थे। इतने तल्लीन हो गए कि आदीश्वर प्रभु के गुणों में भक्ति की गहनता

से बिना स्पर्श किए ही स्वयमेव बन्धन टूट पड़े । उन्हें एक पल भी यह भाव नहीं आया कि मैं ऐसा प्रभावक काव्य लिखूँ, जिससे काव्य प्रसिद्ध हो। यतिवर तो बालकवत् सरल रहे, अत्यधिक सहज होते गए और जितने सहज होते गए उतने प्रभु – दर्शन सहज होते गए। जैसे – बालक जितना सहज सरल होता है, उतना ही माँ उसका ध्यान रखती है । जब बालक स्वयं को बड़ा समझने लगता है, तब माँ का ध्यान कम होता जाता है।

आचार्य श्री ने भी निर्बन्ध दशा पाने के लिए श्री आदीश्वर प्रभु के चरणों में स्वयं को सौंप दिया। ज्यों–ज्यों चेतन के बन्धन ढीले पड़ते गये त्यों–त्यों तन के बन्धन भी टूटते गए।

निश्चय से निर्बन्ध स्वरूपी होकर भी मैंने जिन दुर्भावों से कर्म बन्धन किया अब स्वभाव सम्मुख होकर सादि अनन्तकाल तक शुद्धात्म का संवेदन कर सकूँ। इन्हीं भावों से भक्तामर के प्रत्येक श्लोक के प्रत्येक अक्षर में हृदय की भक्ति उडेलकर यही भावना की है कि – हे प्रभो ! आचार्य मानतुङ्ग स्वामी जैसी सघन सद्भक्ति मुझमें जाग्रत हो। मेरे उन्हें अगणित प्रणाम हों। जिन्होंने कारागृह में कैद होकर भी ऐसी जीवन्त भक्ति की, जिससे प्रभु आदिनाथ प्रकट हो गये। और काव्य में 'तं' (उनको) के स्थान पर 'त्वम्' (तुमको) और भवन्तम् (आपको) कहने लगे, उन्हें अपने ज्ञान–चक्षु से दिखने लगे। आचार्य मानतुङ्ग स्वामी को कारागृह में भी प्रभु दिख गए, हमें मन्दिर जैसे पावन स्थान पर भी न दिखें, यही बात खलती है। मुनीश्वर की सर्वोच्च भक्ति की वर्गणाओं ने प्रभु आगमन के योग्य वातावरण निर्मित कर दिया, मन्दिर कहने योग्य मन को पवित्र कर लिया, हृदय की वेदी शुद्ध कर ली भक्ति का तोरणद्वार बँधाया, श्रद्धा निष्ठा समर्पण आदि भावों का द्रव्य तैयार कर पलक पावड़े बिछा दिए, आखिर अपने सद्भक्त को दर्शन दे ही दिए।

ऐसी निर्वाञ्छक भक्ति मुझमें भी प्रकट हो इसीलिए भाव हुए कि "**आदि भगवत् कथा**" रूप इस "**श्री भक्तामर महामण्डल विधान**" द्वारा

वृषभेश्वर की स्तुति मैं भी करूँ और करती ही रहूँ, कभी न कभी तो मेरे भीतर भी ऐसी भक्ति प्रस्फुटित होगी ही होगी; क्योंकि यह भक्ति ही मुक्ति का उपाय है। **''नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः''** इसके सिवा और कोई सरल मुक्ति का उपाय नहीं है।

एकापि समर्थेऽयं, जिनभक्ति दुर्गतिं निवारयितुम्।
पुण्यानि च पूरयितुं, दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः।।

दुर्गति निवारक, पुण्य की पूरक, मुक्ति द्वार की उद्घाटक कुन्जी प्रभुभक्ति ही है।

यह विधान 48 दिन में भी विशेष भक्ति के साथ पूर्ण कर सकते हैं। 24 दिन 8 दिन या अपनी सुविधानुसार कर सकते हैं। हाँ , जितने दिन विधान करें , प्रथम पंच कल्याणक तक की पूजन करें फिर ही अर्घ्य चढ़ाना शुरु करें और अन्त में अन्तिम जयमाला पढ़ें। यदि दो या एक दिन का समय है, तो **''आदि भगवत् कथा''** के रूप में भी पाठ कर सकते हैं, जिसमें अर्घ्य छोड़कर सिर्फ संस्कृत व हिन्दी का भक्तामर पढ़कर प्रत्येक श्लोक के 56 अर्घ्य का पाठ भक्ति के साथ करके सातिशय पुण्यार्जन कर सकते हैं। **आचार्य श्री सोमसेन महाराज जी के** द्वारा श्री भक्तामर स्तोत्र पर बृहद् विधान की रचना की है, उसी के अनुसार 2688 अर्घ्यों के द्वारा **''श्री भक्तामर महामण्डल विधान''** का संयोजन किया है । प्रयास किया है कि- भ क्ता म र आदि 2688 अक्षर प्रारम्भ में लिखे जाएँ या प्रथम शब्द में वह अक्षर आ जाए, किन्तु छन्द भंग न हों इसलिए कदाचित् प्रथम चरण में तो वह शब्द आया ही है, जिसे लाल वर्ण में अंकित किया गया है।

यह विधान अपने आपमें ही अतिशयकारी, मनवाञ्छित दातारी, संकटहारी, विघ्न हर्त्तारी है। कई सदी बीत जाने पर भी इस स्तोत्र का प्रभाव और महिमा घटी नहीं है, बल्कि निरन्तर बढ़ती ही जा रही है। देश-विदेश सर्वत्र अनेकों भक्त इसका नियमित पाठ कर आत्म-शान्ति प्राप्त करते हैं। यह विश्वास है कि- सभी विधान कर्त्ताओं को सुखद संवेदन अवश्य होगा, यदि वे श्रद्धापूर्वक

इस विधान को करेंगे, इस "**आदि भगवत् कथा**" को पढ़ेंगे।

विशेष फल पाने 2688 उपवास या एकाशन करके व्रत कर सकते हैं।

-: निर्देश :-

1. इस व्रत को किसी भी तिथि में अपनी सुविधानुसार किया जा सकता है। दिन की कोई भी नियामकता नहीं है।
2. एकाशन आदि व्रत अपनी सुविधानुसार करें।
3. 'भक्तामर स्तोत्र' का व्रत करने वाले, प्रातःकाल "भगवान श्री आदिनाथ" की पूजन करने के बाद व्रत वाले अर्घ्य को पढ़कर अर्घ्य समर्पित करें।
4. व्रत वाले दिन उसी अर्घ्य की जाप के लिए 'अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा' के स्थान पर 'नमो नमः' जोड़कर 108 बार जाप करें। जैसे–

   ॐ ह्रीं अर्हं महिमावन्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

-: जाप :-

ॐ ह्रीं अर्हं महिमावन्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

इस कृति को अति शीघ्र रचने में संघस्थ सभी आर्यिका एवं ब्रह्मचारिणी बहनों का विशेष सहयोग रहा।

सभी सद्भक्तों को मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो और प्रभु व गुरु के प्रति सम्यक् भक्ति मुक्ति पाने तक सदा बनी रहे। इसी भावना से मेरे आदीश्वर स्वरूप "**आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज**" के श्री चरणों में नमन कर उन्हीं की कृति उन्हीं के कर कमलों में सादर सविनय समर्पित ...।

गुरुकृपा-पालिता
पूर्णमति

अनुक्रमणिका

क्र०सं०	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मङ्गलाष्टक	11
2.	विनय पाठ	13
3.	नित्य पूजा पीठिका	15
4.	परमर्षि स्वस्ति मङ्गल पाठ	18
5.	नव देवता पूजन	19
6.	श्री भक्तामर महामण्डल विधान प्रारम्भ	24
7.	आचार्य परमेष्ठी श्री विद्यासागरजी महाराज की पूजन	415
8.	अर्घ्यावली	418
9.	महार्घ्य	421
10.	शान्तिपाठ	422
11.	विसर्जन	423
12.	आ. गुरुवर श्री विद्यासागर जी महा. की अमृतवाणी	427

मङ्गलाष्टकम्

(सर्वप्रथम मङ्गलाष्टक पढ़ें व अभिषेक एवं पूजन की सामग्री व्यवस्थित करें)

श्रीमन्नम्र- सुरासुरेन्द्र- मुकुट- प्रद्योत- रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन- सिद्ध- सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥1॥

नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवन-ख्याताश्चतुर्विंशतिः
श्रीमन्तो भरतेश्वर - प्रभृतयस्तैश्यचक्रिभिः पूजिताः।
ये विष्णु- प्रतिविष्णु- लाङ्गलधराः तैरेव संपूजिता
त्रैलोक्ये प्रथिताः सुतीर्थ-पुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥2॥

ये सर्वौषधि- ऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्त-कुशलाश्चाष्टौ विधाश्चारणाः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः
सप्तैते सकलाश्च ते मुनिवराः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥3॥

ज्योतिर्व्यन्तर- भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः
जम्बूशाल्मलि- चैत्यशाखिषु तथा वक्षार रूप्याद्रिषु।
इक्ष्वाकार- गिरौ च कुण्डल- नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे
शैले ये मनुजोत्तरे जिन-गृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥4॥

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे
चम्पायां वसुपूज्य- सज्जिनपतेः सम्मेद- शैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्त-शिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो
निर्वाणावनयः प्रसिद्ध विभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥5॥

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मंगलम्॥6॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर- प्रवेश- महिमा सम्पादितः स्वर्गिभिः
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥7॥

इत्थं श्रीजिन- मंगलाष्टकमिदं सौभाग्य सम्पत्प्रदं
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनै- र्धर्मार्थ- कामान्विता
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय- रहिता निर्वाण- लक्ष्मीरपि॥8॥

॥इति श्री मंगलाष्टकस्तोत्रम्॥

विद्यासागर-विश्व-वन्द्य-श्रमणं भक्त्या सदा संस्तुवे
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं सर्वार्थ-सिद्धि-प्रदम्।
ज्ञान-ध्यान-तपोभिरक्त मुनिपं विश्वस्य विश्वाश्रयं
साकारं श्रमणं विशाल हृदयं सत्यं शिवं सुन्दरम्॥

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥
अनन्त चतुष्टय के धनी,तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कन्त तुम, तीन भुवन के राज॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि- शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निज गुण रास॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को,नावत तिहुँ जग भूप॥5॥
मैं वन्दों जिनदेव को, करि अति निरमल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछू उपाव॥6॥
भविजन को भव-कूपतैं, तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥7॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में,भविजन को शिवगैल॥8॥
तुम पद-पङ्कज पूजतैं, विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥9॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलें आप तैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहें,नेम सकल हनि पाप॥10॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥
पतित बहुत पावन किए, गिनती कौन करेव।
अञ्जन से तारे कुधी, जय-जय-जय जिनदेव॥12॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय-जय-जय जिनदेव॥13॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥14॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥15॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥16॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥18॥
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा-हा डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार॥19॥
जो मैं कह हूँ और सों, तो न मिटे उर झार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार॥20॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मङ्गलकरन, पूरन परम प्रकाश॥21॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥22॥
मङ्गल मूरत परम पद, पञ्च धरो नित ध्यान।
हरो अमङ्गल विश्व का, मङ्गलमय भगवान॥23॥
मङ्गल जिनवर पद नमों, मङ्गल अर्हन्त देव।
मङ्गलकारी सिद्ध पद, सो वन्दों स्वयमेव॥24॥
मङ्गल आचारज मुनि, मङ्गल गुरु उवज्झाय।
सर्व साधु मङ्गल करो, वन्दों मन-वच-काय॥25॥
मङ्गल सरस्वती मात का, मङ्गल जिनवर धर्म।
मङ्गलमय मङ्गल करो, हरो असाता कर्म॥26॥
या विधि मङ्गल से सदा, जग में मङ्गल होत।
मङ्गल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥27॥

अथ अर्हत्-पूजा-प्रतिज्ञायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तव-समेतं पञ्चमहागुरुभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(पूजा की प्रतिज्ञा करते हुए नौ बार णमोकार-मन्त्र का विधिपूर्वक ध्यान करें)

ॐ

नित्य पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं अरहंत मंगलं सिद्ध मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरहंत लोगुत्तमा सिद्ध लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरहंत सरणं पव्वज्जामि सिद्ध सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पञ्च-नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते॥1॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥2॥
अपराजितमंत्रोऽयं, सर्व-विघ्नविनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मङ्गलं मतः॥3॥
एसो पंच-णमोयारो,सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मङ्गलं॥4॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्॥5॥
कर्माष्टक- विनिर्मुक्तं, मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्॥6॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनीभूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥7॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

पञ्चकल्याणक अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्-चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवलमङ्गलगान- रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥1॥
ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण-पञ्चकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्-चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवलमङ्गलगान- रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥2॥
ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्-चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवलमङ्गलगान- रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे॥3॥
ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिनाष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल पुष्पकैश्-चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवलमङ्गलगान- रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे॥4॥
ॐ ह्रीं स्याद्वाद-नय गर्भित-सम्पूर्ण-जिनसूत्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं
स्याद्वादनायक मनन्तचतुष्टयार्हम्
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्
जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाऽभ्यधायि॥1॥
स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुङ्गवाय
स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जितदृङ्मयाय
स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुत-वैभवाय॥2॥

स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय
स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥3॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्यवल्गन्
भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥4॥
अर्हन् पुराणपुरुषोत्तमपावनानि
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव
अस्मिञ्ज्वलद्विमल-केवलबोधवह्नौ
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥5॥

ॐ विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

स्वस्ति-मंगल

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः॥
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः॥
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः॥
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मःस्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः॥
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः॥
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः॥

(इति चतुर्विंशतिजिनेन्द्रस्वस्तिमंगलविधानम्। पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।)

परमर्षि स्वस्ति मङ्गल पाठ

(प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुतकेवलौघाः, स्फुरन्मनः-पर्ययशुद्धबोधाः।
दिव्यावधि-ज्ञानबलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेक-बीजं, संभिन्न-संश्रोतृपदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण- विलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञानबलाद्वहंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः,प्रत्येक-बुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टाङ्गनिमित्तविज्ञाः,स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥

जंघानलश्रेणि-फलाम्बु-तन्तु,प्रसून-बीजाङ्कुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गणस्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥

अणिम्नि दक्षाःकुशला महिम्नि,लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपु-र्वाग्बलिनश्च नित्यं,स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥

सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर-पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशीर्विषाविषा दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्लविड्जल्लमलौषधीशाः,स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥

(इति परमर्षिस्वस्तिमङ्गलविधानं परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

नवदेवता पूजन

स्थापना

गीता छन्द

अरि चार घाति विनाश कर, अरहन्त पद को पा लिया।
पुरुषार्थ प्रबल किया प्रभो, मुक्तीरमा को वर लिया॥
अरहन्त पथ पर चल रहे, आचार्य पद वन्दन करूँ।
उवज्झाय साधु श्रेष्ठ पद का,भक्ति से अर्चन करूँ ॥1॥
जिन धर्म आगम चैत्य चैत्यालय शरण को पा लिया।
भव-सिन्धु पार उतारने, नौका सहारा ले लिया॥
यह भावना मेरी प्रभो, मम ज्ञान महल पधारिए।
निज सम बना लीजे मुझे, जिनराज पदवी दीजिए॥2॥

दोहा

सुख दाता नव देवता, तिष्ठो हृदय मँझार।
भावों से आह्वान करूँ, करो भवोदधि पार॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

द्रव्यार्पण

(तर्ज - माता तू दया करके .....)

जिनको अपना माना, उनसे ही दुख पाया।
फिर भी क्यों राग किया, यह समझ नहीं आया॥
यह राग की आग मिटे, ऐसा जल दो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्म-जिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.... ।

प्रभो ! काल अनादि से, भव का संताप सहा।
अब सहा नहीं जाता, यह मेटो द्वेष महा॥
इस द्वेष की ज्वाला को, अब शान्त करो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी॥2॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं....।

जिसको मैंने चाहा, सब नश्वर है माया।
जिस तन में हूँ रहता, क्षणभंगुर वह काया॥
क्षत-विक्षत जग सारा, अब जाऊँ कहाँ स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी॥3॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्....।

इस काम लुटेरे ने, आतम धन लूट लिया।
मैं मौन खड़ा निर्बल, बस तेरा शरण लिया॥
विश्वास मुझे तुम पर, आतम बल दो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी॥4॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं....।

इस क्षुधा रोग से मैं, प्रभुवर लाचार रहा।
व्यंजन की औषध खा, ना कुछ उपचार हुआ॥
प्रभु तू ही सहारा है, यह रोग नशे स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी॥5॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं....।

पर तत्त्व प्रशंसा में , महिमा पर की आई।
नर तन में रहकर भी, निज की ना सुध आई॥
अब ज्ञान ज्योति प्रकटे, आशीष मिले स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी॥6॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं....।

कर्मों की आँधी में, चेतन गृह बिखर गया।
आया अब दर तेरे, निज आतम निखर गया॥
शुभ ध्यान अनल में ही, वसु कर्म जले स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी॥7॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं....।

पापों का बीज बोया, कैसे शिव फल पाऊँ।
तप धारूँ कर्म नशे, तब सिद्धालय पाऊँ॥
मुझे पास बुला लेना, यह अरज सुनो स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी॥8॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं....।

वसु कर्मों ने मिलकर, दिन-रात जलाया है।
गुरुदेव कृपा पाकर, यह अर्घ्य बनाया है॥
यह पद अनर्घ्य अनमोल, हो प्राप्त मुझे स्वामी।
नव देव शरण आया, शरणा दो जगनामी॥9॥

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं....।

-:: जाप्य ::-

(ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः)

जयमाला

दोहा

नव देवों की भक्ति से, सब अरिष्ट नश जाए।
आत्मसिद्धि को प्राप्त कर, अष्टम वसुधा पाए॥1॥

चौपाई

जय अरहन्त देव जिनराई, तीन लोक में महिमा छाई।
घाति कर्म चउ नाश किए हैं, भव्य जनों में वास किए हैं॥2॥

दोष अठारह दूर किए हैं, छयालीस गुण पूर्ण हुए हैं।
समवसरण के बीच विराजे, तीर्थङ्कर पद महिमा राजे॥3॥

क्षणभंगुर सारा जग जाना, जड़ चेतन को भिन्न पिछाना।
कल्याणक सब पंच मनाए, देव इन्द्र हर्षित गुण गाए॥4॥

प्रभो! आपने प्रभुता पायी, दो हमको समता सुखदायी।
दुष्ट करम ने मुझको घेरा, निज स्वभाव से मुख को फेरा॥5॥

प्रभो! आप सिद्धालय वासी, दर-दर भटका मैं जगवासी।
अब निज भूल समझ में आई, सिद्धदशा ही मन में भाई॥6॥

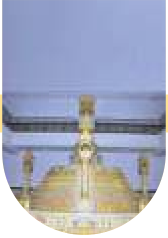

करो नमन स्वीकार हमारा, भवसागर से करो किनारा।
कर्म भँवर में मेरी नैया, गुरुवर तुम बिन कौन खिवैया॥7॥

गुण छत्तीस मुनीश्वर धारे, इस कलयुग में आप सहारे।
दीक्षा देकर राह दिखाते, खुद चलते चलना सिखलाते॥8॥

उपाध्याय पद है तम नाशे, गुण पच्चीस ज्ञान परकासे।
अट्ठाईस गुणों के धारी, साधू पद की महिमा भारी॥9॥

श्री जिनधर्म अहिंसा प्यारा, गूँज उठा है जग में नारा।
आगम आतम बोध कराता, फिर चेतन का शोध कराता॥10॥

जिनने आगम को अपनाया, अहो भाग्य तुम सा पद पाया।
अनेकान्त मय धर्म सहारा, द्वादशांग को नमन हमारा॥11॥

कर्म निकाचित् निधत्ति विनाशे बिम्ब जिनेश्वर आत्म प्रकाशे।
निज स्वरूप का बोध कराती, जिन सम जिनमूरत कहलाती॥12॥

जो जन नित जिन मन्दिर जावें, पाप नशें औ पुण्य बढ़ावें।
परमातम का ध्यान लगावें, शुद्ध होय मुक्तीपुर जावें॥13॥

नव देवों को शीश झुकाऊँ, गुण गाऊँ और ध्यान लगाऊँ।
रहूँ सदा मैं प्रभुवर चरणा, भव-भव मिले आपकी शरणा॥14॥

दोहा

पूर्व पुण्य से हो रहा, नव देवों का दर्श।
अल्प बुद्धि कैसे लहे, अनन्त गुण का स्पर्श॥15॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य- चैत्यालयेभ्यो जयमाला-पूर्णार्घ्यं ....।

घत्ता

प्रभुवर को पूजे, शिवपथ सूझे, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो॥

॥इत्याशीर्वादः॥

ॐ

मङ्गलाचरण

दोहा

आदिनाथ जिन चरण में, जो रखता निज माथ।
भक्त अमर पद प्राप्त कर, बनता निज का नाथ॥

ज्ञानोदय छन्द

सर्व स्तोत्र में अतिशयकारी, महिमाशाली स्तोत्र महा।
सब दुखों का नाशनहारा, संकटहारक स्तवन रहा॥

इसका हर इक श्लोक स्वयं ही, मन्त्र रूप ही माना है।
जिसने इसको पढ़ा भक्ति से, भगवत् पद पहचाना है॥

मानतुङ्ग आचार्य गणी ने, बन्धन से मुक्ति पाई।
टूट गए अड़तालिस ताले, जनता सारी हरषाई॥

भक्तामर पावन विधान से, सर्व कष्ट मिट जाते हैं।
तन-मन या चेतन के दुख हों, पढ़ते ही नश जाते हैं॥

इस विधान में आदिप्रभु के, गुण की महिमा गाई है।
अनुपम प्रभु को उपमा देकर, भक्ति ज्योति जलाई है॥

अष्ट प्रातिहार्यों का वर्णन, अतिशय सुख को देता है।
सर्व भयों से विमुक्त होकर, भक्त अभय हो जाता है॥

रोग और बन्धन को क्षयकर, सम्मानित पद पाता है।
अजर अमर अविनाशी होकर, निज पद में रम जाता है॥

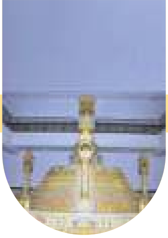

श्री भक्तामर विधान प्रारम्भ

स्थापना

ज्ञानोदय छन्द

विश्ववन्द्य श्री प्रथम तीर्थङ्कर, वृषभनाथ को वन्दन है।
नाभिराय के राजदुलारे, मरुदेवी के नन्दन हैं॥
भवसमुद्र में पतित जनों के, आप मिटाते हो क्रन्दन।
मन-वच-काया से करता हूँ, त्रिभुवनपति का अभिनन्दन॥1॥
नाथ आगमन की बेला में, पलक पावड़े बिछा दिए।
कब आओगे मन मन्दिर में, नयन दरश बिन तरस गए॥
हूँ अधीर प्रभु तड़प रहा मैं, तुम बिन ना रह पाऊँगा।
अपने उर के सिंहासन पर, नाथ तुम्हें पधराऊँगा॥ 2॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीवृषभजिनेन्द्रदेव! मम हृदये अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीवृषभजिनेन्द्रदेव! मम हृदये अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीवृषभजिनेन्द्रदेव! मम हृदये अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

द्रव्यार्पण

ज्ञानोदय छन्द

प्रभु भक्ति वश भक्त नयन से,झर-झर पावन नीर झरे।
तव चरणों के प्रभाव द्वारा, जनम-जनम की पीर हरे॥
आदिनाथ के चरण युगल में, श्रद्धा का जल अर्पण है।
भक्तामर में मानतुङ्ग मुनि, करते प्रभु पद वन्दन हैं॥ 1॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति-विधायकाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

मलयाचल के चन्दन तरु से, ज्यों सुगन्ध महकाती है।
प्रभु के नन्त गुणों की खुशबू, भव आताप मिटाती है॥
आदिनाथ के चरण युगल में, भक्ति चन्दन अर्पण है।
भक्तामर में मानतुङ्ग मुनि, करते प्रभु पद वन्दन हैं॥ 2॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति-विधायकाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं...।

अक्षय पदधारी प्रभु का मुख, कोटि सूर्य सम चमक रहा॥
भवकानन में भटक गया था,दिव्य तेज लख ठहर गया।
आदिनाथ के चरण युगल में, अखण्ड अक्षत अर्पण हैं।
भक्तामर में मानतुङ्ग मुनि, करते प्रभु पद वन्दन हैं॥ 3॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति-विधायकाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

ज्ञान पुष्प मुरझाया मेरा, पुष्पित करने आया हूँ।
सूख गई है विराग बगिया, सिंचित करने आया हूँ॥
आदिनाथ के चरण युगल में, हृदय पुष्प मम अर्पण है।
भक्तामर में मानतुङ्ग मुनि, करते प्रभु पद वन्दन हैं॥ 4॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति-विधायकाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं...।

क्षुधा तृषादिक दोष विजेता, आप विदेही जिनवर हो॥
शरणागत के जनम-जनम के, सारे रोग मिटाते हो॥
आदिनाथ के चरण युगल में, भावों से चरु अर्पण है।
भक्तामर में मानतुङ्ग मुनि, करते प्रभु पद वन्दन हैं॥ 5॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति-विधायकाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

नाथ आपके चिन्मय गृह में, ज्ञानदीप नित जलते हैं।
प्रलयंकारी तूफां से भी, कभी नहीं ये बुझते हैं॥
आदिनाथ के चरण युगल में, भक्ति दीप समर्पण है।
भक्तामर में मानतुङ्ग मुनि, करते प्रभु पद वन्दन हैं॥ 6॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति-विधायकाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

अष्ट कर्म से विमुक्त जिनवर, सिद्धालय में राजित हो।
स्वतन्त्र हो निज गृह में रहते, आप सदा आनन्दित हो॥
आदिनाथ के चरण युगल में, श्रद्धा धूप समर्पण है।
भक्तामर में मानतुङ्ग मुनि, करते प्रभु पद वन्दन हैं॥ 7॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति-विधायकाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

धन्य-धन्य हे नाथ आपने, कर्म बीज को जला दिया।
शिवफल का रस पीकर निज को,अजर-अमर ही बना लिया॥

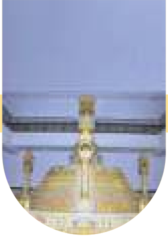

आदिनाथ के चरण युगल में,निष्ठा का फल अर्पण है।
भक्तामर में मानतुङ्ग मुनि, करते प्रभु पद वन्दन हैं॥ 8॥
ॐ ह्रीं परमशान्ति-विधायकाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं... ।

पर पद से सम्बन्ध तोड़ प्रभु, शुद्धातम को चाह लिया।
प्रथम तीर्थङ्कर पावन पद को, युगादि में ही प्राप्त किया॥
आदिनाथ के चरण युगल में, पावन अर्घ्य समर्पण है।
भक्तामर में मानतुङ्ग मुनि, करते प्रभु पद वन्दन हैं॥ 9॥
ॐ ह्रीं परमशान्ति-विधायकाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं... ।

पंच कल्याणक अर्घ्य

ज्ञानोदय छन्द

शुभ आषाढ़ कृष्ण द्वितीया को, तज सर्वार्थसिद्धि आए।
कर्मभूमि के आदि जिनेश्वर, माँ के गर्भ विषैं आए॥ 1॥
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

चैत वदी नवमी के शुभ दिन, नाभिराय गृह जन्म लिया।
सुमेरु पर देवों ने आकर, क्षीरोदधि से न्हवन किया॥2॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

जन्म दिवस पर नृत्य देखकर, नश्वरता को जान लिया।
जन्मोत्सव संयम में बदला, पंचमुष्टि कचलोंच किया॥3॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

फाल्गुन कृष्णा ग्यारस के दिन, पूर्णज्ञान को प्राप्त किया।
समवसरण में सब जीवों को, सप्त तत्त्व उपदेश दिया॥ 4॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

माघ चतुर्दशी कृष्णा के दिन, अष्टापद ने यश पाया।
वसुविध कर्म नशाए प्रभु ने , अष्टम वसुधा को पाया॥5॥
ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीवृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

श्लोक नं॰ 1

अष्टदल कमल पूजा

जिनपद वन्दन

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं- दलित-पाप- तमो- वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन-पाद-युगं-युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम्॥1॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गये चक्री...)

भक्त अमर तत्त्वज्ञ नम्र हो प्रभु-पद नमन करे।
समकित आदि गुणमणि की द्युति तेज महन्त धरे॥
गहन पाप तमपुंज विनाशक जिनके चरण महान।
युगादि में अवतरित तीर्थंकर आदि जिनेश प्रणाम॥
भवसागर में पतित जनों को प्रभु-पद ही आधार।
हृदय वेदि पर सदा बसे प्रभु चरण-कमल सुखकार॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥1॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं।

जितारातीन् जिनान् सर्वान्, मर्त्यदेवाधिपार्चितान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥1॥
ॐ ह्रीं अर्हं जिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. भगवन् ऋषभदेव की महिमा, शब्दों में ना गा सकते।
इसीलिए मन वचन काय से, प्रभु चरणों में हम नमते॥ 1॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. भक्तामर की यशोपताका, सारे जग में फहराई।
कर देती है अमर भक्त को, दुखहरणी अति सुखदाई॥ 2॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. मरण दशा में पीड़ा भारी, सहते रहते अज्ञानी।
वीतराग की शरण प्राप्त कर, होते परम सुखी ज्ञानी॥ 3॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. रति विरति से विरहित स्वामी, दोष अठारह मुक्त हुए।
शुक्लध्यान से स्वातम लखकर,अनन्त गुण संयुक्त हुए॥ 4॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. प्रबुद्ध होकर ज्ञानीजन ही, क्रोधादिक से दूर हुए।
धन्य-धन्य प्रथमेश प्रभु जी, समता से भरपूर हुए॥ 5॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. णमोकार श्री महामन्त्र में, प्रथम प्रभु का सुमिरन है।
अर्हत् सिद्ध नाम जो जपता, होता उसका सु-मरण है॥ 6॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. तप संयम के द्वारा भगवन्, अष्ट कर्म को नष्ट किया।
जिसने शरण आपकी पाई, उसने स्वातम स्वच्छ किया॥ 7॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मौलिक अखण्ड अक्षय पद पा, सिद्धालय में वास किया।
अव्याबाध सौख्य को पाकर, सर्व दुखों का नाश किया॥ 8॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. केलि करते शुद्धातम में, महा मोक्ष पुरुषार्थ किया।
जिनने ध्याया नाथ आपको, निजातमा में तृप्त हुआ॥ 9॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. महा मोक्षफल का आस्वादन, करके भगवन् मग्न रहे।
भक्तजनों की यही भावना, तव चरणों की लगन रहे॥ 10॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. अणिमा आदिक सर्व ऋद्धियाँ, पाकर सिद्धि को वर ली।
अनन्त गुण निधियों को भगवन्,अपने ही वश में कर ली॥ 11॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. प्रमाण नय को व्याख्यायित कर, दिव्यध्वनि में समझाया।
बारह सभा भरी श्रोता से, भव्यों ने समकित पाया॥ 12॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. भामण्डल शोभित होता है, नाथ आपकी आभा से।
भव्य सात भव देखें उसमें, हर्षित हो प्रभु मुद्रा से॥ 13॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. णाणावरणादिक क्षय करने, प्रथम आपने तप धारा।
रत्नत्रय के प्रकाश द्वारा, किया जगत में उजियारा॥ 14॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. मुनिजन ध्यान लगाते निशदिन, नाथ आप सम होने को।
चिन्तन करते परमातम का, कर्म कालिमा धोने को॥ 15॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. उद्योतन करके स्वभाव का, हुए पूर्ण निर्दोषी ही।
वाद्य बजाकर अर्चन करते, सुर नरेन्द्र गुणकोषी की॥ 16॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. तपन मिटाकर भवाताप की, मोक्षनगर में पहुँच गए।
परम शुद्ध सिद्धावस्था में, काल अनन्ता ठहर गए॥ 17॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. कंचन जैसी देह प्रभु की, धनुष पाँच सौ उन्नत है।
परमौदारिक तन की छवि लख, ऋषि यति मुनिवर भी नत हैं॥ 18॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. दल लेकर चउ आराधन का, घाति कर्म का नाश किया।
तीर्थङ्कर अरहन्त दशा पा, भव्यों को उपदेश दिया॥ 19॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. लिख न सके प्रभु मुख की महिमा,सुर-नर अपलक देख रहे।
चातक बन हे नाथ आपके, दिव्य वचन को तरस रहे॥ 20॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तन धन जड़ वैभव को तजकर, चिन्मय चेतन रूप लखा।
युगादि में तीर्थेश आपने, निजानन्द रस खूब चखा॥ 21॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. पाप-पुण्य परिणति विभाव है, यही जानकर विरत हुए।
संवर और निर्जरा द्वारा, मोक्ष तत्त्व में निरत हुए॥ 22॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. पवित्र भावों के द्वारा ही, निज चेतन का स्पर्श हुआ।
भव्यजनों ने भक्ति भाव से, नाथ आपका दर्श किया॥ 23॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तप बल से कर्मों की सेना, प्रभु ने दूर भगाई है।
निष्कर्मा प्रभुवर की मूरत, मेरे हृदय समाई है॥ 24॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. मोक्ष महा मंजिल को पाने, पर से नाता तोड़ दिया।
परद्रव्यों से ममत्व तजकर, निज से नाता जोड़ लिया॥ 25॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. विकार का कारण कषाय है, समूल इसका नाश किया।
निज में निज को निज के द्वारा, निजातमा में वास किया॥ 26॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. तारक हो भक्तों के तुम ही, शरण प्रदाता हो स्वामी।
लोकालोक जानते भगवन्, नमन करूँ अन्तर्यामी॥ 27॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. नंत गुणी को नमन करे जो, शिवपुर में वह गमन करे।
नहीं लौटकर आता जग में, स्वानुभूति में रमण करे॥ 28॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. समरस पीते ज्ञान पात्र से, स्वातम में संतुष्ट रहे।
निराहार होकर भी भगवन् , नन्त काल तक पुष्ट रहे॥ 29॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. सम्यक् ज्ञान दीप प्रकटाकर, आत्म-देश को निरख लिया।
स्व-पर तत्त्व का भेदज्ञान कर, शुद्धातम को परख लिया॥ 30॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म्यक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. प्रतिमा जिनकी अति मनहारी, प्रभु कितने होंगे सुन्दर।
मन कहता है अभी देख लूँ, ऋषभनाथ अनुपम दिनकर॥ 31॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. गुण मणियाँ हैं नन्त पास में, परम धनी कहलाते हो ।
शरणागत की झोली भरकर, चिन्मय धनी बनाते हो॥ 32॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. गम्य नहीं अज्ञानी जन के, परम योगी के गम्य प्रभो।
पूर्णज्ञान की कला प्रकट हो, मेरी अरजी यही विभो॥ 33॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जिनेन्द्र भगवन् को वन्दन हो, मोहजयी को वन्दन हो।
कर्म विजेता पराक्रमी प्रभु, आदिनाथ को वन्दन हो॥ 34॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. नमस्कार करते चरणों में, तीन लोक के राजा हैं।
क्योंकि शरण आपकी पाकर,मिलती अद्भुत साता है॥ 35॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. पावन हो जाता है मन जब, प्रभु की महिमा आती है।
इसीलिए तो समवसरण में, किन्नरियाँ गुण गाती हैं॥ 36॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. दयामूर्ति श्री वृषभ जिनेश्वर, ऋद्धि-सिद्धि दातारी हैं ।
अनगिन तारे नाथ आपने, अब मेरी ही बारी है ॥ 37॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. युगारम्भ में वृषभनाथ प्रभु, धर्मतीर्थ प्रारम्भक हैं।
भूले भटके भवि जीवों के, नाथ आप निर्देशक हैं॥ 38॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. हो गम्भीर गहन उपदेशक, सब श्रोता जन समझ रहे।
प्रभु मूरत को इकटक निरखें, शीश झुकाकर नमन करें॥ 39॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. वायु सुगन्धित बहती रहती, विहार में प्रभु अनुसारी।
चतुर्निकायी देव देवियाँ, स्तुति करें जन मनहारी॥ 40॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. गान कर रहे ऋषि मुनिवर भी, आदीश्वर की महिमा का।
आगम कहता पार नहीं है,जिनवर की गुण गरिमा का॥ 41॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. दान चतुर्विध किया पूर्व में, क्षायिक दान अतः पाया।
नाथ आप-सा ही बनने को, याचक बन शरणे आया॥ 42॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. वास करें प्रभु भक्त हृदय में, भक्त जनों का है कहना।
यह व्यवहार नयाश्रित माना, निश्चय से निज में रहना॥ 43॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. आलम्बन जिनराज आपका, भवसागर से पार करे।
पापी भी पावन हो जाता, निश्चित निज उद्धार करे॥ 44॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. बलशाली जिनराज आपने, मोह अरि को भगा दिया।
दिव्य वचन को सुना-सुनाकर, सुषुप्त जन को जगा दिया॥ 45॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ब' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. नंत काल उपरान्त जिनेश्वर, सिद्धालय को प्राप्त हुए।
सारे कर्म समाप्त कर दिए, भव्यजनों के आप्त हुए॥ 46॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. भगवन् वृषभनाथ जी ने जब, राज-पाट का त्याग किया।
जीर्ण हुए तृण की भाँति झट, नश्वर वैभव छोड़ दिया॥ 47॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वरण किया है मुक्तिवधू का, शाश्वत सुख पा जाने को।
भक्त शरण में आया भगवन्, तव अनुपम गुण गाने को॥ 48॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. जहाज जैसे पार कराता, आप भवोदधि पार करें।
भक्ति आपकी जो करते हैं, उन जीवों को तार रहे॥ 49॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. लेप कर्म का विनाश करके, हुए नाथ परमानन्दी।
प्रथम जिनेश्वर के चरणों में, बनने आया अविकल्पी॥ 50॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ले' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. परम पवित्र चिदात्म आपका, तीन लोक में अनुपम है।
नहीं आप-सा कोई जग में, धन्य आपका जीवन है॥ 51॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. तरणि सम जिनवर के चरणा, जो भी भविजन पाते हैं।
चरण-शरण में जो आ जाते, भवसागर तर जाते हैं॥ 52॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. तांडव नृत्य करे सुरपति जब, जिन बालक का जन्म हुआ।
नयनों से अति हर्ष छलकता, नत होकर प्रभु देह छुआ॥ 53॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. जन्म जरादिक दोष मिटाकर, अनन्त गुण सम्पन्न हुए।
भक्तों ने तव दर्शन पाकर, जड़ चेतन को भिन्न किए॥ 54॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. नाथ आपकी भक्ति करने, भक्तों का मन मचल रहा।
जिसने ध्यान किया दृढ़ता से, सिद्धालय में अचल हुआ॥ 55॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. मुनीनां पूजित जिनदेवा, कब प्रत्यक्ष दर्श होगा।
शब्द अगोचर महिमा जिन की, पूजत मन पुलकित होगा॥ 56॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

प्रभु के चरण-कमल की महिमा, गाकर अर्घ्य चढ़ाता हूँ।
आदिप्रभु औ मानतुङ्ग मुनि, द्वय को शीश झुकाता हूँ॥

ॐ ह्रीं विश्वविघ्नहराय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं....।

श्लोक नं॰ 2

स्तुति का संकल्प

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय- तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः।
स्तोत्रै - र्जगत् - त्रितय - चित्त - हरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥2॥

विष्णुपद छन्द

द्वादशाङ्ग मर्मज्ञ बुद्धि से चतुर इन्द्र द्वारा।
संस्तुत थे उत्कृष्ट स्तोत्र से जो जग मन हारा॥
उन प्रथमेश तीर्थंकर की मैं भक्ति स्तुति करूँ।
अपने सर्व कर्म बन्धन औ भव का आर्त हरूँ॥
स्तुति करने की करें प्रतिज्ञा रत्नत्रय धारी।
स्वानुभूति के रस में डूबे मुनिवर अविकारी॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥2॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं।

अवधिज्ञानसम्पन्नान्, जिनान् कर्मारिघातकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं अवधिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

विष्णुपद छन्द

1. **य:** करोति स: एव कर्त्ता प्रभु ने बतलाया।
अत: सँभल कर करो कर्म जिन-आगम ने गाया॥57॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **संस्**कारों का बिगुल बजाया युगादि में स्वामी।
कुसंस्कार मिटाने आया मैं भव-भव गामी॥58॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'संस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. स्**तु**ति आपकी अन्तर्मन को प्रसन्न करती है।
जनम-जनम के पातक सारे पल में हरती है॥59॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. भव**त:** मुक्त हुए प्रभु जी नहीं नैनों से दिखते।
इसीलिए हम जड़ वचनों से आराधन करते॥60॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **स**त्य धर्म के धारक प्रभु का सच्चा मारग है।
भवदुखहारक सब सुखकारक जिनवर तारक हैं॥61॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **क**र्मों के संहारक फिर भी परम अहिंसक हो।
सुर-नर नाग-नरेन्द्र सभी के प्रभु मनभावक हो॥62॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **ल**ब्धि नव क्षायिक पाई प्रभु निज पुरुषारथ से।
नन्त काल से वञ्चित मैं शुद्धात्म पदारथ से॥63॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. सकल वाङ्मय प्रकट हुआ जिनराज आप द्वारा।
नाथ आपने दिव्यध्वनि से अनगिन को तारा॥64॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वाङ्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. ममता तजकर समता धरकर मोह विनाश किया।
राग-द्वेष अज्ञान मिटाकर ज्ञान प्रकाश किया॥65॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. यम दम शम की युक्ति से मुक्ति पाई स्वामी।
तव गुण-गण की संस्तुति करके बनूँ मोक्षगामी॥66॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. तत्परता से आया दर पर पाने ज्ञान प्रकाश।
अरज करूँ मेरे आतम में हो अज्ञान विनाश॥67॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. त्वमेव भगवन् मात भ्रात पितु हो सर्वस्व तुम्हीं।
मेरे लालन पालनहारे हे जिनराज तुम्हीं॥68॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. बोधि समाधि देना मुझको यही भावना है।
मेरा मन मन्दिर हो भगवन् यही कामना है॥69॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. शुद्धात्मन् कहकर ऋषिगण प्रभु को पुकारते हैं।
नाथ आपकी गाथा गा नित नाम उचरते हैं॥70॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. दुद्धर तप करके प्रभुवर ने कर्म नशाये हैं।
द्वार आपके आकर अतिशय पुण्य कमाये हैं॥71॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दुद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. भूतल पर जयवन्त आपका शासन सुखकारी।
हितोपदेशी वीतराग सर्वज्ञ सु-उपकारी॥72॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. तनिक आपकी सन्निधि पाकर सुख से भर जाते।
बिना आपसे माँगे वे मनवाञ्छित फल पाते॥73॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. बुधजन भी तन की सुध खोकर आतम सुध पाते।
अशुभ और शुभ भाव छोड़ मुनि शुद्ध भाव लाते॥74॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. बुद्धि काम नहीं करती है समवसरण को देख।
वृषभनाथ भगवान आप हैं अनन्त में बस एक॥75॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. परमातम पद पाया प्रभु ने बहिरातम तजकर।
अन्तरातमा होकर पहुँचे भगवन् मोक्षनगर॥76॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. कटुक कर्म फल भोग-भोगकर पीड़ित संसारी।
त्रिविध कर्म को क्षयकर पद पाया है अविकारी॥77॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'टु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. बहुभिः भक्त जनों से पूजित किन्तु प्रभु निज लीन।
महाबली श्री आदिप्रभु ने किया कर्म को क्षीण॥78॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भिः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. सुहित करें सारे जग का प्रभु सर्व दुःख हर्त्ता।
पूजन करके बनूँ आप-सा सर्व कर्म हर्त्ता॥79॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रत्नत्रय के दिव्य तेज में निज को परख लिया।
तीन लोक के पर पदार्थ से निज को विरत किया॥80॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. लोकालोक जानते फिर भी निजानन्द रसलीन।
अज्ञ न जाने स्वातम फिर भी धनानन्द में लीन॥81॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. कल्पतरु से करे कल्पना तो ही फल देता।
नाथ आपसे बिन चाहे सब कुछ ही मिल जाता॥82॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. नाता तुमसे जोड़ लिया तुम ही दिखते दिन-रात।
नहीं चाहिए नाथ मुझे अब स्वर्गपुरी का राज॥83॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. जिननाथैः जो समझाया है तथैव मैं मानूँ।
निजात्म का हित और अहित क्या है अब पहचानूँ॥84॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थैः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. स्तोत्र आपका भक्तामर यह सबको हितकारी।
अर्थ सहित पढ़ ले श्रद्धा से टले कष्ट भारी॥85॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. शास्त्रैर्ज्ञान प्राप्त करके ज्ञानी निज को जाने।
ऋषि मुनि विज्ञ आपको केवलज्ञानी ही माने॥86॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रैर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. जननी सम सारी जगती का करते हो उद्धार।
सिखा दिए षट् कार्य आपका है अनन्त उपकार॥87॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. सुगत् कहाते आप नाथ पंचम गति पाई है।
भक्तों को तव भक्ति करने की ऋतु आई है॥88॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. त्रियोग से जो आप शरण में आता है इक बार।
वह अपार संसार समन्दर से हो जाता पार॥89॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. तट पाया है भवसिन्धु का संयम नैया से।
प्रभु प्रत्यक्ष दर्श करने मेरी अँखियाँ तरसें॥90॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. यतिपति ऋषि गणधर भी प्रभु के चरणों में झुकते।
रात-दिवस गुण कीर्तन करते कभी नहीं थकते॥91॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. चिन्मय चिदानन्द रजधानी में निमग्न रहते।
नन्त काल तक सिद्धिवधू के संग रमण करते॥92॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. चित्त मग्न हो नाथ आपकी पूजा भक्ति में।
इक ही भव में होए बसेरा शाश्वत मुक्ति में॥93॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. हर्ष भाव से जिनवर की जो करता आराधन।
अमिट अनाकुल हो जाता वह पाता शाश्वत धन॥94॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. रैन दिवस हे नाथ आपकी भक्ति स्तुति करूँ।
चउ गतियों का भ्रमण मिटाकर पंचम गति वरूँ॥95॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. रुग्ण भक्त है किन्तु निरोगी प्रभु मनभावन हैं।
दर्शन करके लगा बरसता मानो सावन है॥96॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. दान करे श्रावक औ साधु ध्यान लीन होवे।
श्रमण करे श्रम मुक्ति का निश्चित विधिमल धोवे॥97॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. रैः का अर्थ कहा धन गुणमय धन पाया प्रभु ने।
अचल हो गए पाया चिन्मय सुख सिद्धालय में॥98॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रैः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. स्तोत्र महा भक्तामर भक्तों के संकट हरता।
जो थिर कर उपयोग प्रतिदिन भक्ति से पढ़ता॥99॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. अहं करिष्ये अहं करिष्ये अज्ञ मान करता।
ज्ञानी प्रभु की स्तुति करने का अहो भाव रखता॥100॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष्ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. किन्नर किन्नरियाँ सुर-सुरियाँ प्रभु के गुण गातीं।
आध्यात्मिक स्वर लहरी के संग थिरक-थिरक नाचीं॥101॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. लाभ और हानि की बातें प्रभु दर पर ना हो।
गुरु कहते आतम हित सोचो कभी अहित ना हो॥102॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ला' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. हजारों दर पर भटक-भटक कर आज मिले प्रभु आप।
कृपा करो प्रभु मेरा जीवन हो जाए निष्पाप॥103॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मध्यलोक से नाथ आपको वन्दन करता हूँ।
आदिप्रभु का त्रियोग से अभिनन्दन करता हूँ॥104॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. पिला रहे हैं उपासकों को वचनामृत सुखकार।
हम पतितों पर किया आपने हे जिनवर उपकार॥105॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. तं पुरुदेवं प्रभु ने आतम ज्ञान प्रकाश किया।
केवलज्ञान रवि प्रकटाकर पूर्ण विकास किया॥106॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. **प्र**थम आपने सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित पाया।
रत्नत्रय के महातेज दर्शन को मैं आया॥107॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. **थ**का हुआ था भटक-भटक कर आज द्वार आया।
लगा आपको पाकर मैंने सम्यक् दर पाया॥108॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. **मं**द कषायें हुईं किन्तु ना क्षय कर पाता हूँ।
विषय कषायों के कारण ही मैं दुख पाता हूँ॥109॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. **जि**नवर आप दया के सागर कृपा करो मुझ पर।
रागी-द्वेषी के दर तजकर आया तव दर पर॥110॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. **ने**ता आप धर्म के सबको दिव्यदेशना दें।
समवसरण में मुझे बुला लो स्वातम निधि पाने॥111॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. इ**न्द्रं** नाग नरेन्द्रं सब चरणों में नमते हैं।
बड़भागी वे भक्त अर्चना मन से करते हैं॥112॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्द्रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

करें प्रतिज्ञा स्तुति करने की मानतुङ्ग मुनिराज।
अनर्घ्य पद पाने को प्रभु मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ आज॥

ॐ ह्रीं नानामरसंस्तुताय सकलरोगहराय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 3

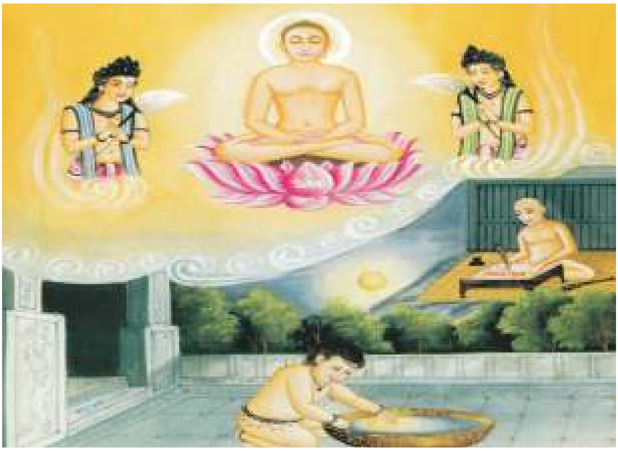

लघुता अभिव्यक्ति

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पाद-पीठ!
स्तोतुं समुद्यत - मति - र्विगतत्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल-संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्॥3॥

विष्णुपद छन्द

जिनका चरणासन भी पूजित देवों के द्वारा।
उनकी स्तुति करूँ मैं कैसे शब्दों के द्वारा॥
बिन बुद्धि के नाथ स्तवन को मैं तैयार हुआ।
लाज रहित समझो प्रभु मुझको मैं लाचार रहा॥
ज्यों जल में शशि बिम्ब पकड़ना चाहे बाल अधीर।
नहीं चाहता उसे पकड़ना धीर वीर गम्भीर॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥3॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं।

परमावधिसंपन्नान्, जिनान् विश्वप्रदीपकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमावधिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

दोहा

1. **बुद्धि रहित मैं अज्ञ हूँ, भक्त आपका बाल।**
शरण आ गया आपकी, वन्दन करूँ त्रिकाल॥113॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **ध्यानी करते आपका, तीन योग से ध्यान।**
निर्दोषी आदीश जिन, नन्त गुणों की खान॥114॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **विरक्त होकर जगत् से, हुए नन्त सुख युक्त।**
द्रव्य भाव नोकर्म से, आप हो गए मुक्त॥115॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **नायक हो त्रय लोक के, जग निर्माता आप।**
परम प्रसिद्धि प्राप्त हो, मुझे बुला लो पास॥116॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **पिपासु हूँ तव दर्श का, पाना मुक्ति द्वार।**
करुणासागर आप ही, त्रिभुवन मङ्गलकार॥117॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **विलय किया मोहारि का, हुए धर्म सम्राट्।**
शरण मिली सौभाग्य से, चरण नवाऊँ माथ॥118॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **बुद्ध प्रबुद्ध हुए प्रभो, पाने चिन्मय देश।**
आदि जिनेश्वर शरण दो, हे मेरे परमेश॥119॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. धार्मिक धर्म क्रिया करे, श्रद्धा धर कर नित्य।
सिद्धिरमा से वह करे, निज सम्बन्ध घनिष्ठ॥120॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धार्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. चिन्मय चिद्गुण को धरें, शिवनारी भरतार।
ऊर्ध्व मध्य पाताल में, हो मङ्गल करतार॥121॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. तट पाया संसार का, पहुँच गए भव तीर।
वृषभनाथ को मैं नमूँ, जयवन्तों हे वीर॥122॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. पाद-पद्म की वन्दना, करे पाप का अन्त।
भटक-भटक मैं थक चुका, करो भ्रमण मम शान्त॥123॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. दर्पण केवलज्ञान का, झलक रहा त्रय लोक।
पद में आश्रय दो मुझे, मिटे सर्व मम शोक॥124॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. पीर सही बहु काल से, मिले न तुम सम नाथ।
वीतराग पद पा सकूँ, आदीश्वर दो साथ॥125॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. ठहर गए शिवधाम में, कर्म मुक्त स्वाधीन।
पराधीन मैं मोह से, करिए निज आधीन॥126॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ठ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. स्तोत्र पढ़े जो भाव से, भक्त अमर पद पाए।
सुख अनन्त वे भोगते, शिवपुर राज कराए॥127॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तुम्हें छोड़ जाऊँ कहाँ, जग में कष्ट अपार।
शान्ति मिले तव चरण में, करिए मम उद्धार॥128॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तुम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. सत् स्वरूप को जानकर, पाया सिद्ध स्वरूप।
अरज यही मम प्राप्त हो, निर्मल निज चिद्रूप॥129॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. मुक्ती सम्पादन किया, अनुपम शक्तीवान।
जीत सकूँ विधि शत्रु को, शक्ति दो भगवान॥130॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. आद्य आपको मुनि कहें, आदि जिनेश महान।
आप पन्थ पर जो चले, हो जाते भगवान॥131॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तजकर सर्व विभाव को, हुए क्षोभ से दूर।
सौम्य मूर्ति तव दर्श कर, हो विकार मम चूर॥132॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. महान हो तिहुँ लोक में, करें सर्व गुणगान।
शीश झुकाकर मैं करूँ, मन वच काय प्रणाम॥133॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. ज्योतिर्मूर्ति आप प्रभो, भव तिरने की नाव।
मुझमें अवगुण नन्त हैं, दूर करो दुर्भाव॥134॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तिर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. विघ्न नष्ट हो भक्त के, जो भज ले इक बार।
सच्ची भक्ति से हुए, अनगिन भविजन पार॥135॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. गमन किया शिवदेश में, पाया शिव साम्राज्य।
सर्व सिद्ध सम्राट् हैं, सबका निज पर राज॥136॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तप्त स्वर्ण सम देह है, नमूँ-नमूँ सिद्धाय।
पूर्ण ज्ञानघन आप हो, स्वयं बुद्ध शुद्धाय॥137॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. त्रस्त जीव अज्ञान से, आप ज्ञान भरपूर।
आया जिनवर द्वार पर, करो मोह मम चूर॥138॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. पोषण कर जड़ देह का, भटक रहा संसार।
आदीश्वर भव पार हैं, वन्दूँ बारम्बार॥139॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. कोऽहं कोऽहं प्रश्न है, सोऽहं उत्तर जान।
आत्मज्ञान पा हो गए, भक्ति से भगवान॥140॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऽहं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. बाह्याभ्यन्तर ग्रन्थ तज, हुए परम निर्ग्रन्थ।
करे निवेदन भक्त यह, दिखला दो शिवपन्थ॥141॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. कलंक से विरहित हुए, धन्य आपकी शान।
दुष्कर्मों से मलिन मैं, संबल दो भगवान॥142॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. विनय भाव से कर रहा, भक्त निवेदन नाथ।
जब तक मुक्ति ना मिले, तब तक देना साथ॥143॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. हारक हो भव व्याधि के, तारक आप जिनेश।
शरण आ गया आपकी, पाने चिन्मय देश॥144॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. यतिजन के भी ईश हो, सर्व श्रेष्ठ परमेश।
मेरे तो सर्वस्व हो, हे मेरे पूर्णेश॥145॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जय जिनेन्द्र कह भक्त जन, स्मरण करे जिनराज।
नाम मात्र भी आपका, तारण-तरण जहाज॥146॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. लगन लगी प्रभु दर्श की,निज दर्शन के काज।
जीवन सफल हुआ प्रभो, अर्घ्य चढ़ाऊँ आज॥147॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. संशय कर प्रभु वचन में, भ्रमता वह संसार।
प्रभु-वच पर श्रद्धा धरे, हो जाता वह पार॥148॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. स्थिरता रख निज आत्म में,पर से दृष्टि हटाए।
वह साधक अरहन्त बन, निश्चित शिवसुख पाए॥149॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्थि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. तन्मय हो परद्रव्य में, अज्ञ नन्त दुख पाए।
धन्य-धन्य आदीश जिन, मेरे हृदय समाए॥150॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. अहमिन्द्रों ने सुर सहित, पूजा तुमको नाथ।
मैं भी श्रद्धा से प्रभु , झुका रहा हूँ माथ॥151॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मिन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. दुख का कारण पाप है, आप मिटाया पाप।
नन्त दुखों से व्यथित मैं, करो मुझे निष्पाप॥152॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. बिम्ब दर्श से नष्ट हो, निधत्ति निकाचित कर्म।
अत: करूँ श्रद्धा सहित, दर्शन फल शिव शर्म॥153॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बिम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. बन एकेन्द्रिय जीव मैं, भ्रमा निगोद मँझार।
तीव्र पुण्य से आ गया, आज आपके द्वार॥154॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ब' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. महिमा मण्डित आप जिन, मैं अबोध नादान।
कृपा करो मुझ पर प्रभो, होए आत्म कल्याण॥155॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. मान्यः आप त्रिलोक में, सर्व कर्म निर्लिप्त।
द्रव्य-भाव नोकर्म बिन, करिए मुझे पवित्र॥156॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्यः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. कर्त्ता बन परद्रव्य का, पाया है अति क्लेश।
कष्ट निवारण कीजिए,दिखला दो निज देश॥157॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. इच्छाओं का नाशकर, हुए आप जिनदेव।
सुर नर ऋषि मुनि से प्रभो, पूजित हैं अतएव॥158॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'इच्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. छत्र तीन सिर पर ढुरे, प्रातिहार्य से युक्त।
समवसरण महिमा अगम, प्रभु घातिया मुक्त॥159॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'छ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. तिरे स्वयं भवदधि प्रभो, तारे भव्य अनेक।
हृदय आज पुलकित हुआ, वीतराग छवि देख॥160॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. जन्म-मरण से मुक्त हो, पाया ब्रह्म स्वरूप।
निर्मल अनुपम पा लिया,अनन्त सुख का कूप॥161॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. पुनः न जग में लौटते, जिनवर शाश्वत शुद्ध।
सिद्धालय में ही रहें, सिद्ध बुद्ध अविरूद्ध॥162॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. सम्यक्दर्शन ज्ञान व्रत, रत्नत्रय कहलाय।
धारण कर प्रभु ने इसे, सारे कर्म जलाय॥ 163॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. हर लेती सब कष्ट है, मनहर छवि विशिष्ट।
लाखों भविजन शिव गए,करके कर्म विनष्ट॥ 164॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. साध्य सिद्धि की आपने, मैं साधन में लिप्त।
करके सम्यक् साधना, होऊँ निज में तृप्त॥ 165॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. अग्र आप तीर्थेश में, आदिनाथ जिनराज।
बनने को प्रभु आप-सा, करूँ भाव से जाप॥ 166॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. हीन-दीन बन सह रहा, तीव्र कर्म संताप।
मुक्त करो भव दु:ख से, परम दयालु आप॥ 167॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ही' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तुम्बी जल में तैरती, होवे यदि निर्लेप।
कर्म लेप बिन प्रभु तिरे, पहुँच गए शिव देश॥ 168॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तुम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

लघुता धर वन्दन करूँ, अबोध हूँ मैं बाल।
अनर्घ्य पद का लक्ष्य है, कटे कर्म जंजाल॥

ॐ ह्रीं मत्यादिसुज्ञानप्रकाशनाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 4

अवर्णनीय जिनवर गुण

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्क-कान्तान्
कस्ते क्षमः सुरगुरु - प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त - काल पवनोद्धत - नक्रचक्रं
को वा तरीतु - मलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्॥4॥

विष्णुपद छन्द

शशि समान उज्ज्वल गुणवाले गुणसागर भगवान।
वृहस्पति सम बुद्धिमान भी कर न सके गुणगान॥
प्रलयकाल से क्षुब्ध समन्दर भरे मच्छ जिसमें।
तेज वायु से लहराते हैं हिंस्र जन्तु उसमें॥
गहरे सागर में भुजबल से तिर सकता है कौन।
वैसे ही गुण वर्णन में असमर्थ प्रभु मैं मौन॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥4॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं।

जिनान् सर्वावधीनर्च्यान्, घात्यरातिक्षयङ्करान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वावधिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

चौपाई

1. **वक्ता प्रमुख कहाते स्वामी, भविजन सुनते प्रभु की वाणी।**
मैं भी श्रवण करूँ जिनवाणी, दुखहरणी वाणी कल्याणी॥169॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **स्तोतुं शक्य नहीं मैं स्वामी, फिर भी भक्ति करूँ गुणनामी।**
मुझमें यह शक्ति प्रकटा दो, अरज करूँ निज दर्श दिखा दो॥170॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तुम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **गुणानुवाद करूँ मैं कैसे, शब्द नहीं मैं ध्याऊँ मन से।**
सम्यक् बोध मुझे भी देना, मेरी नैया भगवन् खेना॥171॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **हो प्राणान्त प्रभु जब मेरा, नाम रटे रसना बस तेरा।**
यह नर जीवन सफल बनाऊँ, सम्यक्मरण समाधि पाऊँ॥172॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **गुरु गणधर भी तव गुण गाते, फिर भी पूर्ण नहीं कह पाते।**
सर्व गुणों के प्रभुवर धारी, श्रद्धा से पद में बलिहारी॥173॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **'णमो जिणाणं' कहकर ध्याते, ऋषि मुनिवर तव शरणा पाते।**
मैं छोटा-सा भक्त तिहारा, देना मुझको नाथ सहारा॥174॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **सत्यमूर्ति जिन छवि निहारूँ, हृदयासन पर प्रभु को धारूँ।**
करूँ अर्चना मन वच तन से, दूर करो प्रभु भव बन्धन से॥175॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मुक्तिदूत बनकर प्रभु आए, सारा जग ही महिमा गाए।
अति दुर्लभ है दर्श तिहारा, सिद्धालय गन्तव्य हमारा॥176॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. द्रव्य तत्त्व सब पदार्थ जाने, निजातमा को प्रभु पहचाने।
मैं अनजान बना निज से ही, बन जाऊँ अब सिद्ध विदेही॥177॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. शशि सम शीतल वचन तुम्हारे, रवि सम तेज मिटे अंधियारे।
मुझको मेरा लक्ष्य दिखा दो, सिद्धिरमा से मिलन करा दो॥178॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. शांत स्वरूप छवि अति प्यारी, छियालीस गुण गण के धारी।
सर्व जीव के शरणा दाता, तव चरणों में पाई साता॥179॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. करुणासागर कहलाते हो, सबको सत्पथ दिखलाते हो।
सत्पथ लाभ मुझे मिल जाए, शुद्धातम दर्शन मिल जाए॥180॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. शिवकान्ता का वरण किया है, अष्ट कर्म का क्षरण किया है।
इन्द्रादिक ने तुमको पूजा, नहीं आप सम जिनवर दूजा॥181॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. दुरितान्[1] क्षय करते हैं जिनवर, आप हमारे हो प्राणेश्वर।
पहुँचा दो भवसिन्धु किनारे, वीतराग प्रभु मात्र सहारे॥182॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. आकस्मिक हो वैद्य हमारे, रोग नाश हित आए द्वारे।
है विश्वास निरोग करोगे, निज सम हमको स्वस्थ करोगे॥183॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तेजस्वी अति वदन तुम्हारा, अनुपम अपलक देखनहारा।
तुम सम नहीं जगत में सुन्दर, अत: पूजते इन्द्र पुरन्दर॥184॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1 पापों के

17. **क्ष**णभर में अघ क्षय कर देते, जो भक्ति से संस्तव करते।
सद्-भक्ति मुझको भी करना, लक्ष्य यही भवसागर तरना॥185॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. **नमः** भक्त मन बोल रहा है, भावों से भी चाह रहा है।
प्रणम्य प्रभु को पल-पल ध्याऊँ, आर्त-रौद्र दुर्ध्यान भगाऊँ॥186॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. **सु**न्दर सुडौल काया धारी, परमौदारिक तन हितकारी।
फिर भी तन तज हुए विदेही, अतः हुआ तव गुण का स्नेही॥187॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. **र**ज अरि रहस नाश कर डाले, घाति कर्म पर डाले ताले।
अघातिया भी नाश किए हैं, सिद्धपुरी में वास किए हैं॥188॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. **गु**न्जन भक्त भ्रमर करते हैं, कीर्तन कर सुख अनुभवते हैं।
ध्यान आपका जो धरता है, पूर्णज्ञान वह पा लेता है॥189॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. **रु**ला रही इच्छाएँ मुझको, पुकारता हूँ जिनवर तुमको।
नाथ आपसे कुछ ना चाहूँ, चाह मिटे बस ये ही चाहूँ॥190॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. **प्र**बल मोह शत्रु के नाशी, हुए मोक्षपुर के प्रत्याशी।
नन्त पराक्रम धर वृषभेश्वर, त्रिजगपति के भी हैं ईश्वर॥191॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. **ति**मिर हटाया मिथ्यातम का, ज्ञान कराया शुद्धातम का।
कैसे प्रभु तव गुण को गाऊँ, तुम सम बन उपकार चुकाऊँ॥192॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. मोह कर्म से दुखिया प्राणी, मोह क्षयङ्कर प्रभु सुखदानी।
बिना कहे प्रभु मम दुख जानो, सद्भक्तों को तुम पहचानो॥193॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. कोऽपि नन्त गुण गा ना पाए, बड़े-बड़े ऋषि भी थक जाए।
जिह्वा रटती नाम तिहारा, रात-दिवस हो गान तुम्हारा॥194॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऽपि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. बुद्धी से ना जाने जाते, ध्यानी जन ही दर्शन पाते।
जो श्रद्धा से तुमको पूजे, वह संसार भ्रमण से छूटे॥195॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बुद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. ध्यान गम्य जिनवर शिवदाई, त्रिलोक में तव महिमा छाई।
हूँ अबोध ना तुमको जाना, पुण्योदय से अब पहचाना॥196॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. कल्याणी प्रभुवर की वाणी, सुनकर सुख पाता हर प्राणी।
दिव्य वचन इक बार सुना दो, करूँ अर्चना पास बुला लो॥197॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कल्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. पांडु[1] लेश्या के थे धारी, वृषभनाथ जन-जन हितकारी।
मेरा भी कल्याण करा दो, डूब रही मम नाव तिरा दो ॥198॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. तपो तेज से कर्म जलाये, मुरझाये भवि कुमुद खिलाये।
जयवन्तों वृषभेश्वर स्वामी, हृदय बसो मम अन्तर्यामी॥199॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. काम भोग निस्सार लखा है, निज रस परमानन्द चखा है।
पदानुगामी मुझे बना लो, सिद्धालय में मुझे बिठा लो॥200॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. सफेद रंग

33. **लगन लगी भव से मुक्ति की, त्रियोग से करूँ प्रभु की भक्ति।**
मानतुङ्ग मुनिवर की जय हो, मुनि सम मुझमें भक्ति प्रकट हो॥ 201॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. **परिणति तीन रूप बतलाई, अशुभ हेय शुभ शुद्ध सु-भाई।**
शुभ से शुद्ध दशा को पाऊँ, शिवफल पाए अमर हो जाऊँ॥ 202॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. **वस्तु स्वभाव जानते स्वामी, परम पवित्र हुए ध्रुवधामी।**
मैं अज्ञानी भटक रहा हूँ, कब से भगवन् द्वार खड़ा हूँ॥ 203॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. **नोकर्मों की सहायता से, कर्मों ने घेरा धोखा से।**
मैं बेचारा तड़प रहा हूँ, आश आपकी लगा रहा हूँ॥ 204॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. **उद्धत राग-द्वेष को नाशा, शुद्धातम में करे निवासा।**
तुम सम पराक्रमी ना दूजा, इसीलिए श्रद्धा से पूजा॥ 205॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. **तरह-तरह के खेल निराले, दुष्कर्मों ने मुझे खिलाये।**
अब तक हारा जीव खिलाड़ी, प्रभु दर आया अब यह प्राणी॥ 206॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. **नमन किया ना शुभ भावों से, अब तक ना पूजा श्रद्धा से।**
इसीलिए दुख ही दुख पाया,पुण्योदय से जिन-दर भाया॥ 207॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. **क्रम-क्रम से वह शिव को पाता, जो पूजन कर पुण्य कमाता।**
जिनशासन की शान तुम्हीं हो,भक्तों की पहचान तुम्हीं हो॥ 208॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. **चरित आपका जो पढ़ता है, आदिपुराण भव्य सुनता है।**
उसका बेड़ा पार हुआ है, पाप कर्म ना उसे छुआ है॥ 209॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. **क्रं**दन भव्यों का हरते हो, स्वार्थ रहित जग हित करते हो।
परम पिता के तुम अधिकारी, स्वार्थ भरे सारे संसारी॥ 210॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. **को**टि-कोटि हे नाथ नमोऽस्तु, भवदुख हारक तुम्हें नमोऽस्तु।
त्रिभुवन भूषण नाथ नमोऽस्तु, भवदधि शोषक तुम्हें नमोऽस्तु॥ 211॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'को' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. **वा**च्य नहीं तव गुण नन्ता हैं, शरणागत के अघ हन्ता हैं।
जिनवाणी से परिचय पाया, दुर्लभता से तव दर आया॥ 212॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. **त**पन विभावों की सब मिटती, कर्मों की जंजीरें कटतीं।
जिसको भक्ति का रस रुचता, भक्त कभी ना भव में रुलता॥ 213॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. **री**त यही है आदीश्वर की, प्रीत निजातम से ना जड़ की।
मैं भी ऐसी रीत निभाऊँ, प्रभु वंशज मैं भी कहलाऊँ॥ 214॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'री' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. **तु**लना योग्य नहीं जिनवर जी, जग से भिन्न निराले प्रभु जी।
कोटि दिवाकर सम आभा है,समवसरण अद्भुत शोभा है॥ 215॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. **म**हासन्त अर्हत् भी ध्याते, सिद्धप्रभु का ध्यान लगाते।
लोक अग्र में आप विराजे, वृषभनाथ प्रभु निज में राजे॥ 216॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. **ल**घुता से प्रभुता को पाया, अहंकार वश मैं भरमाया।
नाथ आपसे क्या मैं बोलूँ, विनम्र होकर शिव दर खोलूँ॥ 217॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. **मं**गलकारी दर्श तिहारा, सर्व अमङ्गल हरने वाला।
सब देवों में प्रमुख कहाते, आदिनाथ से जाने जाते॥ 218॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. बुधजन प्रथम आपको वन्दे, फिर वह राग भाव को खण्डे।
युग में सर्व प्रमुख कहलाते, बड़भागी जो शरणा पाते॥ 219॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. निर्विकार है जीवन सारा, चरण पड़े जहँ हो उजियारा।
मेरे हृदय विराजो स्वामी, सर्व विकार नशे जगनामी॥ 220॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. आधिं व्याधिं क्षय करणार्थं, शरण पड़ा मैं हे जिननाथं।
जन्म जरादिक व्याधि नशाने, आया भगवन् अर्घ्य चढ़ाने॥ 221॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धिं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. भुक्ति मुक्ति भक्ति से मिलती, बन्द ज्ञान की कलियाँ खिलतीं।
इसीलिए हम पूजन करते, बन्धन क्षय हित वन्दन करते॥ 222॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. जाल कर्म का काट दिया है, स्वतन्त्र होकर राज किया है।
शाश्वत काल सुखी हो स्वामी, दुःख हरो मम अन्तर्यामी॥ 223॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. निज कराभ्यां प्रभो वन्देऽहं, मेटो भव बन्धन बाधा मम।
आदीश्वर शुभ नाम सुहाता, तव गुण चिन्तन कर सुख पाता॥ 224॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्यां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

अनन्त गुण के सागर स्वामी, सुरगुरु कर न सके थुति स्वामी।
जिन महिमा मैं कह ना पाऊँ, श्रद्धा से पूर्णार्घ्य चढ़ाऊँ॥
ॐ ह्रीं नानादुःखसमुद्रतारणाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 5

उमड़ती हुई भक्ति प्रेरणा

सोऽहं तथापि तव भक्ति वशान् मुनीश
कर्तुं स्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म-वीर्य-मविचार्य मृगी मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्॥5॥

विष्णुपद छन्द

पहले ही कह चुका प्रभु मैं शक्ति बिन लाचार।
फिर भी भक्ति भरे मन से गुण गाने को तैयार॥
हिरणी जाने सिंह के आगे मैं हूँ अति बलहीन।
करे सामना फिर भी उससे शिशु से मोहाधीन॥
नाथ! आपका गुणानुरागी मैं गुणगान करूँ।
कर्म सिंह का करूँ सामना मोह विभाव हरूँ॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥5॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं।

अनन्तावधिलब्ध्यर्द्धीन्, जिनांस्तत्त्वविशारदान्।
यजेऽहं परया भक्त्या,नत्वा तद्गुणसिद्धये॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तावधिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

ज्ञानोदय छन्द

1. **सो**ते-सोते बीत गया मम, नन्त काल ही व्यर्थ गया।
मुझे जगाया करुणा करके, उपकृत हूँ परमार्थ दिया॥ 225॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. सो**ऽहं** सोऽहं रटन लगाकर, योगीजन भी ध्यान करें।
परम ध्येय हो वृषभ जिनेश्वर, श्रावक गण भी मनन करें॥ 226॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऽहं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **त**र्क योग्य न स्वभाव जिनका, वचन अगोचर जिनरायी।
सहज अकंप स्वरूप आपका, जान रहे ऋषि मुनिरायी॥ 227॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **था**ल सजाकर अष्ट द्रव्य का, चार निकायी सुर आए।
भक्ति भाव से ताल बजाकर,थिरक-थिरक पूजन गाए॥ 228॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'था' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **पि**या निजानुभूति का अमृत, अजर अमर पद पाया है।
आदीश्वर आराध्य हमारे , सिद्धालय मन भाया है॥ 229॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **त**त्त्वों का दिग्दर्शन स्वामी, दिव्यध्वनि में करवाया।
सब तत्त्वों में आत्म तत्त्व ही, सार रूप है समझाया॥ 230॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **व**तन आपका सिद्धालय है, कभी न जग में आएँगे।
एक बार घृत बना दुग्ध से, पुनः दूध ना पाएँगे॥ 231॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. भवतारक शिव सुखकारक हे नाथ भाव से नमन करूँ।
बहुत घूम ली चउ गतियाँ अब,पंचमगति में गमन करूँ॥ 232॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. शक्ति दो हे नाथ भक्त के, मोक्षमार्ग में कदम बढ़ें।
मानतुङ्ग स्वामी के जैसी, मन में भक्ति उमड़ पड़े॥ 233॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. वश कर मन को श्री जिनवर ने,मोह कर्म को जीत लिया।
राग-द्वेष में भटक रहे जो, उनको समकित दीप दिया॥ 234॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. शान्त भाव से आया भगवन्, मेरे संकट दूर करो।
सूर्य किरण से ज्यों तम मिटता, त्यों बाधा चकचूर करो॥ 235॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. मुक्ती सम्पादक होने से, मैंने तुम्हें पुकारा है।
दिखता कुछ गन्तव्य नहीं अब, भगवन् आप सहारा है॥ 236॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. नीति नियम आपके भगवन् , सब सिद्धान्त कहाते हैं।
सिद्धान्तों की डगर चले जो, निजानन्द को पाते हैं॥ 237॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. शत्रु न कोई मित्र न कोई, विभाव शत्रु मीत स्वभाव।
यह समझाया नाथ आपने, सूत्र यही जैसे हो नाव॥ 238॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. कर्त्ता बनकर पर का अब तक, कर्मों का ही बन्ध किया।
पराधीन सुख-दुख तज प्रभु ने, निजाधीन आनन्द लिया॥ 239॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तुम्हीं मेरे जीवन दाता, तुम्हीं पथ निर्देशक हो।
भूले भटके हम जीवों को, सुखकारक उपदेशक हो॥ 240॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तुम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. त्रस्त हुए अज्ञानी प्राणी, अपने विषय विकारों से।
अविकारी के नभ में गूँजे, नारे जय-जयकारों के॥ 241॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. वंदनीय हैं भूतल पर वे, जिनने विषयों को जीता।
विषय कषायी अज्ञ जनों का, जीवन है सुख से रीता॥ 242॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. विहार करते तीर्थङ्कर प्रभु, जग के कष्ट मिटाने को।
भक्त भक्ति से पूजन करते, वीतराग पद पाने को॥ 243॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. गमन किया है एक समय में, सिद्धशिला पर ठहर गए।
महा-अर्चना को आए हम, श्रद्धा की इक लहर लिए॥ 244॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तप कर सारे कर्म सुखाये, नन्त सिद्ध से मिलन हुआ।
गिरि कैलास शिखर से स्वामी, एक समय में गमन हुआ॥ 245॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. शल्य तीन ही क्षयकर प्रभु ने,निःशल्य हो त्रय रत्न धरे।
निष्ठा से जो प्रभु को सुमरे , वह अथाह भवसिन्धु तिरे॥ 246॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. आसक्ति होने से पर में, पराधीन दुख पाता है।
आदिनाथ की शरण प्राप्त कर, निजाधीन सुख पाता है॥ 247॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रक्षित हैं प्रभु निज स्वभाव से,बन्द किए सब आस्रव द्वार।
निरास्रवी निर्बन्ध प्रभु को, वन्दन मेरा बारम्बार॥ 248॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. कुपित कर्म ने नारक पशु में, मुझे बहुत ही कष्ट दिया।
जिनशासन की सुखद शरण ने, अनगिन को संतुष्ट किया॥ 249॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. प्रभाव लखकर नाथ आपका, राजा भोज विनम्र हुआ।
मानतुङ्ग मुनिवर के पद में, क्षमा माँग कर नमन किया॥ 250॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. वृक्ष अशोक तले प्रभु राजे, तरुभी शोक रहित होता।
प्रभु समीपता पाकर मानव, निश्चित ही विधिमल धोता॥ 251॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. मत्तः होकर पर परिणति में, लेश मात्र ना सुख पाया।
चिदानन्द की आशा ले अब, पूजन करने मैं आया॥ 252॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्तः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. प्रीत जगत की दुख का कारण, हर संयोग वियोग मयी।
अतः आपसे प्रीत जोड़ ली, शाश्वत सुख संयोग मयी॥ 253॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्री' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. त्याज्य विभाव भाव को तजकर, निजातमा को स्वच्छ किया।
केवलज्ञान रूप दर्पण में, सिद्धात्मा को देख लिया॥ 254॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. स्वात्म ज्ञान बिन राग-द्वेष से, अनेक भव में भरमाते।
जैसी संगत वैसी रंगत, प्रभु संगति से तर जाते॥ 255॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. वीर्य अनन्त प्राप्त करके प्रभु, कर्म शूर को ध्वस्त किया।
धन्य आपका श्रेष्ठ पराक्रम, लक्ष्यभूत शिव प्राप्त किया॥ 256॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वीर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. **यत्न मुक्ति का करने वाले, परम यतीश्वर कहलाते।**
क्षपक श्रेणी चढ़ आदिनाथ प्रभु, आप अनश्वर सुख पाते॥ 257॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. **मनोज्ञ मूरत ऐसी लगती, कोटि रवि -सी कान्ति हो।**
दिव्य तेज लखकर श्रद्धालु, पाता आत्मिक शान्ति को॥ 258॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. **विचरण करते स्वात्म गगन में, अनन्त गुण पंछी उड़ते।**
स्वस्थ रहें फिर भी अपने में, जैनागम में हम पढ़ते॥ 259॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. **श्री आचार्य मुनि पाठकगण, निजातमा में ध्याते हैं।**
परम पारिणामिक स्वभाव को, स्वातम में प्रकटाते हैं॥ 260॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चार्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. **यतिवर आतम स्वरूप लखकर, यथाख्यात चारित्र धरें।**
स्वात्म असंख्य प्रदेशों से प्रभु, परमानन्दी अमिय झरें॥ 261॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. **मृण्मय जाना पर पदार्थ को, चिन्मय निज को पहचाना।**
नन्त काल से छिपी आत्म निधि, मुझको भी अब प्रभु पाना॥ 262॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. **गी[1] अर्थात् प्रभु की वाणी, जो भावों से श्रवण करे।**
वह श्रोता श्रद्धालु भविजन, चउ गतियों का भ्रमण हरे॥ 263॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. **मृग तृष्णा के कारण मैंने, चारों गति के दु:ख सहे।**
जब से आया आप शरण में, पाप कर्म भी शान्त हुए॥ 264॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. **गेंदा आदिक सुमन महकते,उस पर अलिगण मँडराते।**
नाथ आपके गुण पुष्पों पर,भक्त भव्य अलि गुँजाते॥ 265॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गेन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. वाणी

42. इन्द्रं नाग नरेन्द्रं प्रभु-पद, शीश झुकाने आते हैं।
क्योंकि आप हो वन्द्य जिनेश्वर, वन्दन कर सुख पाते हैं॥ 266॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. नायक हो प्रभु भवि जीवों के, युगारम्भ में बोध दिया।
चरण-शरण का आश्रय लेकर, भव्यों ने निज शोध किया॥ 267॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. न अभ्येति किं यह लिखकर, मुनि ने भक्ति प्रदर्शित की।
मृगी भक्त सम कर्म सिंह सम, सद्भक्ति की युक्ति दी॥ 268॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तिरस्कार सहकर चौरासी, लाख योनि में भ्रमण किया।
किया न निज सम्मान अभी तक, आज आपका शरण लिया॥ 269॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. किंकर्त्तव्य विमूढ़ भक्त जब,जिन-गुण में खो जाता है।
दुनिया की परवाह छोड़कर, प्रभु का ही हो जाता है॥ 270॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'किम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. निराकार होकर भी भगवन्, भक्तों के मन बसते हो।
सिद्धालय में राजित होकर, मध्यलोक में आते हो॥ 271॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. जगन्नाथ कहलाते स्वामी, क्योंकि स्वयं के नाथ हुए।
अर्घ्य चढ़ाकर आज प्रभु जी, सफल हमारे हाथ हुए॥ 272॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. शिवनगरी के राजा भगवन् , निजातमा पर राज्य करें।
वहाँ नन्त सिद्धात्मा सब ही, स्वातम में ही मग्न रहें॥ 273॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. शिशोः भविजन जिन-जननी से,यही प्रार्थना करता है।
कर्म सिंह से मुझे बचा लो, इससे अति भय लगता है॥ 274॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शोः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. पतित जनों को उन्नत करने, स्वयं गए लोकाग्र शिखर।
लोकालोक चराचर जाने, भव्यों के संकट अघ हर॥ 275॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रिपु रहा न कोई आपका, अत: शस्त्र का काम नहीं।
सदा ज्ञान का उजियाला है,जहाँ सुबह और शाम नहीं॥ 276॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. पारसमणि सम आप प्रभु जी, भक्तों को कंचन करते।
नि:स्वारथ हैं करुणासागर, श्रद्धालु के दुख हरते॥ 277॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. लगन लगी भगवन् होने की,कब विभाव का क्षय होवे।
करूँ निवेदन नाथ चरण में, जगह मुझे भी मिल जावे॥ 278॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. ज्ञानार्णव कहलाते भगवन्, शान्त भाव के धनी महा।
आत्म शान्ति पाने को स्वामी, अर्घ्य चरण में चढ़ा रहा॥ 279॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नार्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. स्वार्थं मुक्तं परमार्थं प्रभु, निजात्म का अनुभवन किया।
धन्य-धन्य आदीश्वर स्वामी, मुक्तिपथ पर गमन किया॥ 280॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

गुणानुरागी भक्ति कर मैं, कर्म सिंह पर विजय करूँ।
श्लोकों के हर मन्त्राक्षर पर, शुभ भावों से अर्घ्य धरूँ॥

ॐ ह्रीं सकलकार्यसिद्धिकराय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 6

स्तवन में मात्र भक्ति ही कारण

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास धाम
त्वद् भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चाम्र - चारु कलिका निकरैकहेतु॥6॥

विष्णुपद छन्द

प्रसन्नता का पात्र बना हूँ यदपि अल्प शास्त्रज्ञ।
हूँ आनन्दपात्र उनका क्यों हास्य करें आत्मज्ञ॥
तव अनन्त गुणगण की भक्ति मुझको बुलवाती।
आम्र मञ्जरी के कारण ही कोयल ज्यों गाती॥
जिन भक्ति से निज भक्ति की वसन्त ऋतु आई।
आत्म कोकिला कुहुक रही दर्शन दो जिनराई॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥6॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं ।

कोष्ठबुद्धीनृषीन् विश्व, शास्त्रविस्तृतमानसान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 6॥

ॐ ह्रीं अर्हं कोष्ठबुद्धिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

विष्णुपद छन्द

1. **अल्पमति मैं पूर्णमति प्रभु आदिनाथ जिनराज।**
अनन्त आत्म गुणों का अनुपम पहन लिया प्रभु ताज॥ 281॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'अल्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **परद्रव्यों का कर्त्ता बनकर दुःख बहुत पाया।**
परेशान होकर अब मैं वृषभेश शरण आया॥ 282॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **श्रुत-पादप की छाँव तले आतम शान्ति मिलती।**
आदिप्रभु की दिव्यध्वनि सुन ज्ञान कली खिलती॥ 283॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **तंत्र यन्त्र सब व्यर्थ मन्त्र श्री णमोकार आगे।**
पाँच पदों के सुमिरन से सब दुख संकट भागे॥ 284॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **अश्रु बहाये मोहवशी हो सागर नीर समान।**
दुख में कोई साथ न देता स्वारथ भरा जहान॥ 285॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **तरंग उठती सरिता में जब कंकर गिरता है।**
अनुपम स्पंदन होता जब प्रभु दर्शन मिलता है॥ 286॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **वसुन्धरा के दिव्य सूर्य बन आदीश्वर आए।**
असि-मसि आदिक षट् कर्मों को जिनवर सिखलाए॥ 287॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. तांत्रिक तन्त्र मन्त्र करके भवकानन में भ्रमते।
महामन्त्र पाकर प्रभु से भविजन भवदधि तिरते॥ 288॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. परिणामों को सुधारने में भक्ति संबल है।
इसीलिए प्रभुवर की भक्ति कर लूँ पल-पल मैं॥ 289॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. रिश्ता भक्त और भगवन् का बड़ा अनोखा है।
प्रभु भक्ति भवदधि तिरने की अनुपम नौका है॥ 290॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. हार गया है मोह आपसे जिसने जग जीता।
प्रकट किया है नन्त वीर्य हे मेरे परम पिता॥ 291॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. सहस्र चक्षु करके देखे इन्द्र रूप जिन का।
क्योंकि जिनेश्वर से ही मिलता ज्ञान निजातम का॥ 292॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. धाम पा लिया प्रभु ने ऐसा कभी न लौटेंगे।
पंच परावर्तनमय भव में दुख ना पायेंगे॥ 293॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. मगन हुए श्री मानतुङ्ग मुनि भक्ति में ऐसे।
टूट गए ताले तड़तड़ ज्यों पत्ते तरुवर से॥ 294॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. त्वद् भक्ति ही एक सहारा हम संसारी को।
हाथ जोड़कर शीश झुकाते हम जिनरायी को॥ 295॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. भक्त कहे मेरी नैया के आप खिवैया हो।
हम अटके-भटके जीवों के पार लगैया हो॥ 296॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. भक्ति की अभिव्यक्ति कैसे कर लूँ शब्दों से।
आप जानते भाव बिना बोले ही वचनों से॥ 297॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. रेवा तट आ प्यास बुझें त्यों प्रभु निकट आ ताप।
जल से तन का ताप मिटे प्रभु से मिटता सन्ताप॥ 298॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. वर्णों से वर्णन ना हो सकता प्रभु के गुण का।
मैं अल्पज्ञ मात्र श्रद्धा से नाम जपूँ जिन का॥ 299॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. मुख मुद्रा आकर्षित करती सभी सभासद को।
बारह सभा भरी श्रोता से सुनने प्रवचन को॥ 300॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. खगपति नरपति सुरपति सब प्रभु-पद में नमते हैं।
प्रभु-पद प्रभाव से मुकुटों के रत्न चमकते हैं॥ 301॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. रीझ गई शिवनारी जिन का रूप दिगम्बर देख।
तीन लोक के अधिपति निरखे प्रभुवर को अनिमेष॥ 302॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'री' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. कुमति विनाशक सुमति प्रकाशक जिनशासन जयवन्त।
प्रथम तीर्थङ्कर वृषभनाथ जी हुए शुद्ध शिवकन्त॥ 303॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रुचि पूर्वक अनुकरण किया जिनने जिनवर पथ का।
मिला सहारा उन भव्यों को शिवपुर के रथ का॥ 304॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तेजोमय प्रभु वीतराग का मुख चउ दिश दिखता।
समवसरण में सब जीवों को अपना-सा लगता॥ 305॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. बहिर्मुखी होकर ही मैंने दु:ख सहे भारी।
अन्तर्मुख होने को भगवन् शरण गही तेरी॥ 306॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ब' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. इन अम्लान्[1] भव्य सुमनों को प्रभु से मिला प्रकाश।
वचनामृत के प्यासों को अब प्रभु वचनों की आश॥ 307॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. माम् पाहि[2] प्रभु दुष्कर्मों से अब रक्षा करिए।
दुखियारा मैं जनम-मरण का सब संकट हरिए॥ 308॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'माम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. यत् किञ्चित् जो मिला मुझे सुख नाथ आपसे ही।
रागी देवों से पाया है राग-द्वेष दुख ही॥ 309॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. कोई नहीं जगत में अपना स्वातम अपना है।
कहने के रिश्ते नाते सब झूठा सपना है॥ 310॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'को' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. किया न अब तक आत्म दर्श प्रभु दर्शन अब करना।
जिन दर्शन से निज दर्शन का लक्ष्य हृदय धरना॥ 311॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. अमल: अचल: आदि नाम कई नाथ आपके हैं।
ऋद्धिधर गणधर आदिक कई भक्त आपके हैं॥ 312॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1 खिला हुआ 2. रक्षा कीजिए

33. किरण ज्ञान की एक मुझे दो पूर्ण ज्ञानधारी।
आप परम दाता मैं याचक बनना अविकारी॥ 313॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. लक्ष्मी सरस्वती दोनों ही समीप में रहती।
नन्त चतुष्टय लक्ष्मी ज्ञान सरस्वती कहलाती॥ 314॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. महामुनि कहलाते भगवन् महामना वन्दन।
भक्तामर में मानतुङ्ग मुनि करते अभिनन्दन॥ 315॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मधौ ऋतु यानि वसन्त में कोयल कूक रही।
भक्ति बल से भक्त हृदय में स्तुति की गूँज उठी॥ 316॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. महाप्रज्ञ हे नाथ आपने ज्ञान काय धारी।
मैं अज्ञानी नन्त काल से भटका संसारी॥ 317॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. धुन लग जाए आप कृपा से निज शुद्धातम की।
और नहीं कुछ भाए राह चलूँ सिद्धालय की॥ 318॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. निरम्बरा हैं दिगम्बरा प्रभु जग जन उपकारी।
अनगिन का कल्याण किया प्रभु अब मेरी बारी॥ 319॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. विषय कषाय विमुक्त हुए निज आत्म निधि पायी।
इसीलिए जग कहता है आदीश्वर अतिशायी॥ 320॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. रौद्र ध्यान से नरकों में कई सागर दुखी रहा।
प्रभु पूजन से धर्म्यध्यान कर आतम सुखी हुआ॥ 321॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. पुरुषाकृति सिद्धों में रहती आगम कहता है।
नन्त सिद्ध पुरुषों को सारा ही जग नमता है॥ 322॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. तच्चारु जिनमूरत सारे जग को लुभा रही।
बिन बोले ही वीतराग छवि मानो बुला रही॥ 323॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तच्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. चाह दाह का कारण है यह जिनवर कहते हैं।
मुक्ति की चाहत से मुक्ति भी ना पाते हैं॥ 324॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. अताम्र चक्षु नाथ आपके नहीं क्रोध का काम।
दोष अठारह नष्ट किए हो गए आप निष्काम॥ 325॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. चारों गति से मुक्त हुए पंचम गति के दाता।
सिद्धधाम के अधिपति की मैं गाऊँ नित गाथा॥ 326॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. रुग्ण वही होते जो औषध दान नहीं देते।
परोपकारी सन्त व्याधि से सदा दूर रहते॥ 327॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. कर्मोदय में प्रभु की भक्ति कभी नहीं तजना।
गुरु कहते सब काम छोड़ पहले प्रभु को भजना॥ 328॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. लिप्त हुए जो जड़ वैभव में भव में ही भटके।
जिन्हें धर्म की लगन लगी वे ही शिवपुर पहुँचे॥ 329॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. कार्य नहीं कुछ रहा नाथ कृतकृत्य कहाते हो।
तुम सम और नहीं त्रय जग में मन को भाते हो॥ 330॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. निरास्त्रवी होकर आदीश्वर शिवपुर चले गए।
रहे ढूँढ़ते भक्त प्रभु नहीं दिखते कहाँ गए॥ 331॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. करूँ अर्चना अष्ट द्रव्य से अष्ट कर्म क्षय हो।
प्रथम तीर्थङ्कर आदिनाथ भगवन् की जय-जय हो॥ 332॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. रैन समान नन्त भव बीते मोह अंधेरे में।
मुझे बचा लो नाथ पड़ा कर्मों के घेरे में॥ 333॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कब होंगे प्रत्यक्ष दर्श यह भक्त चाहता है।
आओ हृदय वेदिका पर आराधन करता है॥ 334॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. हे पुरुदेव! आपको मेरा त्रियोग से वन्दन।
नाभिराय पितु माता मरुदेवी के हो नन्दन॥ 335॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. जग हेतु सब काम किए आतम हित नहीं किया।
इसीलिए भगवन् कहते सब करना व्यर्थ हुआ॥ 336॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

आम्र मञ्जरी के हित ज्यों कोयल मीठा बोले।
भक्त कोकिला अनर्घ्य पद हित भक्ति में डोले॥
ॐ ह्रीं याचितार्थप्रतिपादनशक्तिसहिताय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं० 7

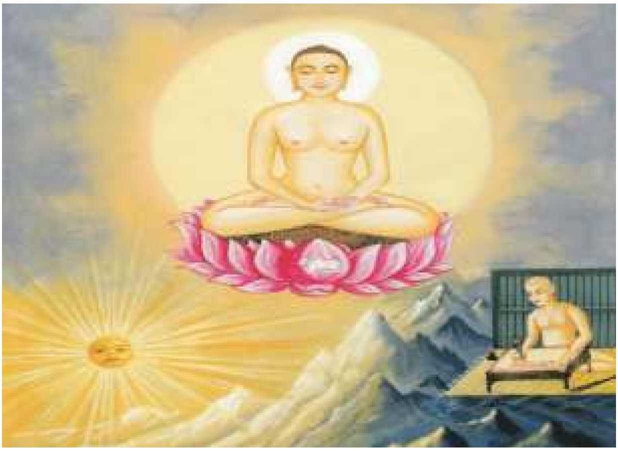

पापक्षयी जिनवर स्तुति

त्वत्संस्तवेन भवसन्तति - सन्निबद्धं
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त - लोकमलि - नीलमशेषमाशु
सूर्यांशु - भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम्॥7॥

विष्णुपद छन्द

प्रभु संस्तवन की महिमा का जो अनुभव करते हैं।
अनेक भव से संचित अघ भी पल में नशते हैं॥
ज्यों रात्रि का अलि-सम काला घना तमस भी हो।
किन्तु सूर्य की किरण मात्र से छिन्न-भिन्न ही हो॥
मोह अंधेरा शाश्वत लय हो यही भाव स्वामी।
चेतन में हो नित्य सबेरा हे अन्तर्यामी॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥7॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं।

बीजबुद्धीन् मुनीन् बीजा, क्षराज्जाताखिलागमान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 7॥

ॐ ह्रीं अर्हं बीजबुद्धिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

सखी छन्द

1. **त्वत्** पूजन मुक्ती देती, सारे विकल्प हर लेती।
जय प्रथम देव ध्रुवधामी, मैं वन्दूँ त्रिभुवननामी॥ 337॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **सं**कटहारी जिनरायी, हे वृषभनाथ सुखदायी।
भव्यों के पुण्य बढ़ाते, शिवडगर आप दिखलाते॥ 338॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. हो अ**स्त** रवि तब तम हो, अज्ञान मिटे अवगम[1] हो।
प्रभु विकार तम विनशाए, सब जिन में श्रेष्ठ कहाए॥ 339॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. सं**वे**ग हृदय जो धारें, वे मुक्तीनगर पधारें।
ऐसा कहते आदीश्वर, सर्वज्ञ परम क्षेमङ्कर॥ 340॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **न**भ में विहार करते हैं, सुरगण जय-जय कहते हैं।
हो गए आप शिवधामी, वन्दन हो अगणित स्वामी॥ 341॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **भ**य मुक्त भक्त रहता है,जो जिन-भक्ति करता है।
तव पूजा पावन करती,शिवपन्थ दिखा दुख हरती॥ 342॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **व**न्दन से बन्धन मिटते, सब कर्म जाल ही कटते।
वन्द्यों के वन्द्य जिनेशा, पूज्यों के पूज्य महेशा॥ 343॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1 ज्ञान

8. सन्मार्ग दिवाकर स्वामी,मम तिमिर हरो शिवगामी।
हे जिनवर मम उर आओ, या अपने पास बुलाओ॥ 344॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. तस्वीर प्रभु की लखता, मन में आनन्द उभरता।
साक्षात् प्रभु कब देखूँ, निज शुद्धातम अवलोकूँ॥ 345॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. तिर गए विशाल समन्दर, श्रीपाल प्रभु गुण गाकर।
जो तुमको पूजे ध्याए, वो तुम-सा ही हो जाए॥ 346॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. सच्ची भक्ति जब होती, कर्मों की बेड़ी कटती।
निर्बन्ध हुए ज्यों स्वामी, मुनि मानतुङ्ग गुणधामी॥ 347॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. सन्निधि आपकी पाता, वह आत्म निधि पा जाता।
ना श्रेष्ठ जगत में जिन-सा, मैं नमूँ वचन तन मनसा॥ 348॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

१3. बहुश्रुत का पठन किया हो, किन्तु आत्मज्ञ नहीं हो।
वह मोक्ष नहीं जा पाता, ऐसा ही जिनश्रुत गाता॥ 349॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ब' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. सिद्धं शुद्धं रटकर भी, नहीं आतम शुद्ध बनेगी।
अन्तर पुरुषार्थ करेगा, जिन कहते सिद्ध बनेगा॥ 350॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्धं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. पावन हैं आप जिनेश्वर, हम ठोकर खाते दर-दर।
आए हैं शरण तिहारी, तव चरणों में बलिहारी॥ 351॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. पंकज कीचड़ में रहकर,खिलता दिखता है मनहर।
मैं भी जग कीच फँसा हूँ,तव चरणन आन खड़ा हूँ॥ 352॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. **क्ष**ण-क्षण पर्यायें मिटतीं, आतम ना कभी बदलती।
यह जिनवाणी माँ कहती, सारे ही संशय हरती॥ 353॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. नि**ष्णात्** हुए निज में ही, पर से कुछ करें न नेही।
जो निज में तृप्त हुए हैं, उनकी हम शरण लिए हैं॥ 354॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णात्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. **क्ष**य किए कर्म सब अरिगण, कर जोड़ रहे मुनि ऋषिगण।
जीने की कला सिखाते, अत एव भक्त दर आते॥355॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. **य**म भी जिनवर से हारा, वह भाग गया बेचारा।
मृत्यु का मरण कराया, सब दोष रहित जिनराया॥ 356॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. **मु**ख से जब ध्वनि खिरती है, सब सभा वचन सुनती है।
मैं सुनूँ आपकी वाणी, अमृत झरिणी कल्याणी॥ 357॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. **पै**ठे अन्तर आतम में, प्रभु पहुँचे सिद्धालय में।
अब पुनः जन्म ना धारे, परिवर्तन पंच निवारे॥ 358॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. **ति**ल में ज्यों तेल भरा है, निज में भगवान बसा है।
यह बतलाया भगवन् ने, मैं धरूँ वचन यह मन में॥ 359॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. **श**रणा जो प्रभु की पाता, उसका मिट जाए असाता।
वह स्वयं स्वस्थ हो जाता, जन्मादिक रोग नशाता॥ 360॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. रीता उसका जीवन है, प्रभु बसे नहीं जिस मन में।
हम भक्तों के रखवाले, हे वृषभ जिनेश्वर प्यारे॥ 361॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'री' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. रस रहित अगन्ध अरूपी, नहीं वर्ण सु-सिद्ध स्वरूपी।
सब विश्व चराचर जानो, द्रव गुण पर्यय पहचानो॥ 362॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भारत यह नाम सुहाना, वृषभेश तनय से जाना।
सुत भरत पितु वृषभेशा, हो भक्तों के पूर्णेशा॥ 363॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. जाम्बूनद[1] सी द्युति तन की, श्री वृषभनाथ जिनवर की।
जिन सूरज उदित हुआ है, छवि लख मन मुदित हुआ है॥ 364॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. आगम अनुयोग मयी है, यह आदि देशना ही है।
प्रथमं करणं चरणं है, चौथा द्रव्यं आगम है॥ 365॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'आ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. आक्रान्त हुआ कर्मों से, प्रभु बचाईए दुःखों से।
हूँ अशरण तुम्हें पुकारूँ, यह जीवन तुम पर वारूँ॥ 366॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्रान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. तड़-तड़ ताले टूटे थे, जब भक्ति-स्वर गूँजे थे।
नृप भोज पड़े अचरज में, गिर गए मुनी चरणन में॥ 367॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. लोचन से ना दिखते हो, प्रभु ज्ञानगम्य रहते हो।
त्रय लोकालोक निरखते, हम श्री चरणों में नमते॥ 368॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. सोना

33. प्रभु कला बहत्तर ज्ञानी,भवतारक कला सु-ज्ञानी।
जय केवलज्ञान दिवाकर, हे पूर्ण शुद्ध रत्नाकर॥ 369॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मन इन्द्रिय वश कर ली है, सिद्धिरमणी वर ली है।
रागादिक मल को धोया,आतम-आतम में खोया॥ 370॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. लिख ना पाऊँ प्रभु गुण को, करूँ कागज सर्व धरा को।
सब तरु की कलम बनाऊँ,स्याही सब सिन्धु बना लूँ॥ 371॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. हैं नीलकमल सम नयना,बहता करुणा का झरना।
प्रभु सम ना श्रेष्ठ जगत में, मैं ध्याऊँ प्रभु को मन में॥ 372॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. लय लगी मुझे दर्शन की, साक्षात् प्रभु अर्चन की।
कब होगी पूरी आशा, जानूँ भक्ति की भाषा॥ 373॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. मणि रत्न चढ़ाकर नृपगण, पूजन करते हैं हर दम।
मैं करूँ भाव से पूजन, निज को ही करूँ समर्पण॥ 374॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. ना शेष रहा कुछ कारज, कृतकृत्य हुए धर धीरज।
प्रभु कोई जान सके ना, गुण अनन्त पार लहे ना॥ 375॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. षड्यन्त्र कर्म के क्षयकर, हो गए नाथ क्षेमङ्कर।
प्रभु ने जिनतीर्थ चलाया,शिवसुख का मार्ग दिखाया॥ 376॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. माने प्रभु को जग सारा, अनगिनत भव्य को तारा।
हे धर्मतीर्थ के मुखिया, मेरी भी खोलो अँखियाँ॥ 377॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. शुचितम है आतम न्यारा, अशुचि तन लगता प्यारा।
अतएव सदा दुख भारी, यह संग तजो दुखकारी॥ 378॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. जब सूर्य उदित होता है, सर[1] कमल मुदित होता है।
मम ज्ञानसूर्य प्रकटाओ, गुण नन्त कमल विकसाओ॥ 379॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सूर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. भक्ति शैय्यां प्रभु आओ, आकर फिर कभी न जाओ।
सब विकल्प पूर्ण नशाऊँ, अविकल्प दशा को पाऊँ॥ 380॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'याम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. शुद्धातम का अनुभव हो, स्वातम का ही अवगम हो।
भक्तों का यही निवेदन, ना हो विभाव का वेदन॥ 381॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. लख भिन्न-भिन्न जड़ चेतन,करते स्वातम संवेदन।
वे क्षपक श्रेणी चढ़ जाते, आठों ही कर्म नशाते॥ 382॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भिन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. नमते ऋषि मुनि जिनपद में, फिर रमते निज आतम में।
निज सम भक्तों को करते, प्रभु महिमा ना गा सकते॥ 383॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मिलती है आतम शान्ति, लखकर तव छवि की कान्ति।
कुछ और नहीं अब देखूँ, बस मात्र तुम्हें अवलोकूँ॥ 384॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. वरदान राग से ना दे, कभी श्राप द्वेष से ना दे।
प्रभु राग-द्वेष बिन जीते, आध्यात्मिक समरस पीते॥ 385॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. शार्दूल कहाते स्वामी, प्रभु अतुल शक्ति गुणनामी।
जयवन्त रहें भूतल पर, हे आदिनाथ परमेश्वर॥ 386॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शार्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1 सरोवर

51. वर्चस्व आपका भारी, सब जगती के हितकारी।
प्रभु अनन्त सुख भोक्ता हो, भव्यों के दुख हर्त्ता हो॥ 387॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रहते लोकाग्र शिखर पर, हे आदिनाथ परमेश्वर।
मुझको भी वहाँ बुला लो, अपना-सा मुझे बना लो॥ 388॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. मन्त्रादिक काम न आते, मृत्यु से बच ना पाते।
अमरत्व यदि है पाना, आदीश शरण में आना॥ 389॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. धर्माभिभूत होकर के, जिनवर की वाणी सुनते।
मैं समवसरण में आऊँ, प्रवचन सुन ध्यान लगाऊँ॥ 390॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. कामादिक शत्रु विजेता, हो प्रथम धर्म के नेता।
मुझको भी चरण-शरण दो, सम्यक् समाधि सु-मरण हो॥ 391॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. वह रंक राव बन जाता, श्रद्धा से जो प्रभु ध्याता।
जीने की कला सिखाई, इस जग में आप सहाई॥ 392॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

तम क्षय हो सूर्य किरण से, कर्म क्षय भक्ती किरण से।
क्षण में सब पाप नशाऊँ, पुरुदेव[1] को अर्घ्य चढ़ाऊँ॥

ॐ ह्रीं सकलपापफलकष्टनिवारणाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

1 आदिनाथ भगवान्

श्लोक नं० 8

प्रभु की प्रभुता का प्रभाव

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु धियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी - दलेषु
मुक्ताफल - द्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः॥ 8॥

विष्णुपद छन्द

बिन बुद्धि से स्वल्प बुद्धि को मैंने प्राप्त किया।
तव प्रभाव से सज्जन मनहर स्तव प्रारम्भ किया॥
कमलिनी के पत्तों पर जब जल की बूँद पड़े।
मोती-सम आभा के जैसी अद्भुत चमक दिखे॥
नीर बूँद-सम मेरी भक्ति प्रभु कमलिनी पात।
अनन्त गुण मुक्ता पाने को चरण नवाऊँ माथ॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥8॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं।

पादानुसारिप्राप्तर्द्धीन्, ज्ञातसर्वपदान् पदान् ।
यजेऽहं परया भक्त्या,नत्वा तद्गुणसिद्धये ॥ 8॥

ॐ ह्रीं अर्हं पदानुसारिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

सोरठा

1. मन्त्र जाप कर भक्त, विभाव क्षय निश्चित करे।
हो जाता भव मुक्त, मुझे सिद्धि की आश है॥ 393॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. ममत्वेन दुख होए, समत्वेन सुख सम्पदा।
सर्व कर्म मल धोए, आदीश्वर प्रभु ने कहा॥ 394॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. तिलक रूप जिन श्रेष्ठ, लोक अग्र पर जा बसे।
प्रथम तीर्थङ्कर ज्येष्ठ, श्रद्धा से पूजूँ प्रभो॥ 395॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. नाशे सर्व विभाव, स्वभाव में प्रभु अचल हैं।
दुख कारण दुर्भाव, अरज करूँ प्रभु मेटिए॥ 396॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. थल जल नभ से भक्त, करते सुमिरन आपका।
अरज करूँ भव मुक्त, मुझको भी करिए प्रभो॥ 397॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. तरणि समान जिनेश, तीर्थङ्कर वृषभेश हैं।
प्रभुवर आप विशेष, अगणित भव्य तिरा रहे ॥ 398॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वक्ता आप महान, असंख्य दिव्यध्वनि सुने।
वृषभनाथ भगवान, श्रोता बन ध्वनि मैं सुनूँ॥ 399॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. संस्कारों का नाद, अद्भुत प्रभुवर ने किया।
परम कृपालु नाथ, शत इन्द्रों से पूज्य हो॥ 400॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'संस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. तन से मुक्त चिदात्म, विदेह होकर शिव बसे।
प्रकट होय शुद्धात्म, यही भावना भक्त की॥ 401॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. वसन विकार हटाए, रूप दिगम्बर सुखद है।
प्रभु गुण लिखे न जाए, सागर की स्याही भरूँ॥ 402॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. नंत दुखों को पाय, अपने ही अज्ञान से।
दया करो जिनराय, मात्र शरण इक आपकी॥ 403॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. मनहर रूप जिनाय, चर्म चक्षु के गम्य ना।
नमः शुद्ध सिद्धाय, दर्शन हो प्रत्यक्ष अब॥ 404॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. येन-केन ही नाथ, अब तो पास बुलाईए।
बहुत सहा दुख त्रास, सहा न जाता अब प्रभो॥ 405॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. दश-दश जन्म व ज्ञान, चौदह अतिशय देवकृत।
अतिशय धरें महान, कुल चौंतिस जिनराज जी॥ 406॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. माणिक मोती लाए, अर्चन करते देवगण।
हाथ जोड़ सिर नाए, दिव्य द्रव्य नहीं पास है॥ 407॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. रक्षा करिए नाथ, कष्ट दे रहे कर्म अरि।
झुका रहा मैं माथ, कृपा दृष्टि कर दीजिए॥ 408॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. सभ्य बना कई बार, किन्तु सिद्ध ना हो सका।
यह ही दुःख अपार, करिए मम उद्धार प्रभु॥ 409॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. जीते अठरह दोष, वीतराग वृषभेश जिन।
मैं मूर्च्छित बेहोश, कैसे सिद्ध बनूँ प्रभो॥ 410॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तपा हुआ ज्यों स्वर्ण, रूप आपका दिव्य है।
महिमा को ना वर्ण, गुण बखान कैसे करूँ॥ 411॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. नुत-नुत नम्र प्रणाम, हो प्रणम्य तिहुँ लोक से।
पहुँचा दो निज धाम, अरज यही जिनदेव जी॥ 412॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. बोधि समाधि प्रदान, कर देना आदीश जी।
दाता आप महान, हृदय पात्र ले मैं खड़ा॥ 413॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. यात्री बन दिन-रात, चलूँ आपके पन्थ पर।
आश यही जिनराज, शाश्वत शिव में वास हो॥ 414॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. पिन्जर सम यह देह, कब विदेह पद प्राप्त हो।
पाकर मुक्ति देह, परम शान्ति से रह सकूँ॥ 415॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तमहर वचन जिनेश, सारभूत वाणी खिरे।
हर अज्ञान विशेष, स्वात्म ज्ञान का दान दो॥ 416॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वमन किए दुर्भाव, स्वभाव में रत हो गए।
प्रभु जीवन इक नाव, जिन सन्निधि पा तिर सकूँ॥ 417॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. प्रशस्त करके भाव, जिनवर निष्कर्मा हुए।
हो मम प्रकट स्वभाव, अतः शरण ली आपकी॥ 418॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भान न कोई ज्ञान, मैं अज्ञानी भक्त हूँ।
आप नन्त गुणखान, यह सुनकर दर आ गया॥ 419॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. स्वात्म तत्त्व का ज्ञान, नाथ देशना से मिले।
नशे सर्व अज्ञान, इसी भाव से शरण ली॥ 420॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वात्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. चेतो चेतन! जाग, कहकर आप जगा रहे।
दया कृपा अवतार, नन्त-नन्त उपकार है॥ 421॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तोरणद्वार बँधाए, करूँ प्रतीक्षा आपकी।
नयना रहे निहार, कब आओगे आदि जिन॥ 422॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. हरियाली चऊ ओर, विहार कर प्रभु आ रहे।
भक्ति का ही जोर, भक्त सभी जय-जय करें॥ 423॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. अरिहन्ताणं मन्त्र, पाप शत्रु का क्षय करे।
आतम होय स्वतन्त्र, यही मन्त्र का फल मिले॥ 424॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. भविष्य में भी नाथ, जिनशासन मुझको मिले।
यही अरज दिन-रात, छूटे कभी न जिन-शरण॥ 425॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. तिमिर मिटाकर सर्व, पूर्ण ज्ञानधर हो गए।
आत्म स्वभावी धर्म, पाने की मम कामना॥ 426॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. सकल लोक सरताज, पंच पदों में श्रेष्ठ हो।
भक्तों की अरदास, भव का भ्रमण मिटाईए॥ 427॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. कृतांत कर विधि अन्त, कर्मान्तक प्रभु हो गए।
कहें आदि भगवन्त, आध्यात्मिक हो जाईए॥ 428॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. नपा तुला संस्थान, समचतुरस्त्र शरीर है।
शिवपुर में प्रस्थान, किया आपने सिद्ध बन॥ 429॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. लिप्त हुआ मम आत्म, द्रव्य भाव नोकर्म से।
प्रकट किया शुद्धात्म, प्रभु ने आतम धर्म धर॥ 430॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. नीरादिक वसु द्रव्य, लेकर अर्घ्य चढ़ा रहा।
अर्पण है सर्वस्व, आदिप्रभु के चरण में॥ 431॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. दलन किया दुर्भाव, कर अन्तर पुरुषार्थ जिन।
प्रभु वचनों की नाव, लेकर भवदधि पार हो॥ 432॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. लेने का ना भाव, देते ज्ञान अपार हैं।
वीतराग की छाँव, पाकर मिटता ताप सब॥ 433॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ले' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. गुणिषु प्रमुदित भाव, धरकर नन्त गुणी हुए।
सब विभाव को टाल, बन जाऊँ मैं भी पवित्र॥ 434॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मुक्त स्वयं शिव शुद्ध, आदि जिनेश्वर को नमूँ।
हो मम भाव विशुद्ध, एक यही मम भावना॥ 435॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मुक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तार रहे जिनराज, अगणित भविजन स्वार्थ बिन।
डूब रहा मैं नाथ, कर अवलम्बन दो मुझे॥ 436॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. फलीभूत है जन्म, प्राप्त किया निर्वाण जिन।
दयामयी जिनधर्म, दुर्लभता से प्राप्त हो॥ 437॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'फ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. लगन लगी दिन-रात, सिद्धदशा मम प्रकट हो।
कर सम्यक् पुरुषार्थ , लक्ष्य प्राप्त मैं कर सकूँ॥ 438 ॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. द्युति लख तन की दीप्त, इन्द्र हजार नयन करे।
मैं अनादि से सुप्त, मुझको नाथ जगाईए॥ 439॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. तिरना है संसार, मोह मगर से जो भरा।
करिए प्रभु उद्धार, मैं भी सच्चा भक्त हूँ॥ 440॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. मुनीश कहते देव, सहस्त्रनामों से भजे।
अल्पमति मैं देव,अत: नमूँ बस भक्ति से॥ 441॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. पैनी छैनी ज्ञान, जिससे कर्म तरु कटे।
वीतराग विज्ञान, पाकर शिवफल चख सकूँ॥ 442॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. तिरस्कार का पात्र, भव-भव में बनता रहा।
शरण आपकी मात्र, यही मान पूजन करूँ॥ 443॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नग्न दिगम्बर भेष, मुक्ती का उपकरण है।
पाय चिदानन्द देश, अव्याबाध सुखी प्रभो॥ 444॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. नूतन लगता दर्श, जब-जब प्रभु को देखता।
मन में होता हर्ष, वीतराग छवि निरख कर॥ 445॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. दल बल धन परिवार, जल बुद्-बुद् सम क्षणिक है।
अतः तजा संसार, सिद्धालय में जा बसे॥ 446॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. बिन्दु मात्र सु-ज्ञान, पाने आया शरण में।
मिटे सर्व दुर्ध्यान, यही भावना भक्त की॥ 447॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बिन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. दुःसह कष्ट अपार, मोह कर्म से सह रहा।
आया जिनवर द्वार,भवदुख मम हरिए प्रभो॥ 448॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दुः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

नीर बूँद सम भक्त, प्रभु प्रभाव से मुक्त हो।
अर्घ्य बनाया श्रेष्ठ, चढ़ा रहा तव चरण में॥

ॐ ह्रीं अनेकसंकटसंसारदुःखनिवारणाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं० 9

षोडश दलकमल पूजा

कथा ही पाप नाशक

आस्तां तव स्तवन-मस्त-समस्त-दोषं
त्वत् सङ्कथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्र - किरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि॥9॥

विष्णुपद छन्द

नाथ! आपके संस्तव की तो बात रहे अति दूर।
नाम मात्र में पाप नाश की शक्ति है भरपूर॥
अठशत योजन दूर धरा से सूरज रहता है।
केवल रवि किरणों को छू कर सु-मनस खिलता है॥
सिद्धालय में बसे प्रभु का नाम मात्र ध्यावे।
स्वात्म सरोवर में रत्नत्रय कमल खिले पावे॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥9॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण-सोदाराणं।

मुनीन् संभिन्नश्रोत्रर्द्धीन्, विश्वशब्दप्रकाशकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 9॥

ॐ ह्रीं अर्हं संभिन्नश्रोतृभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. **आस्**था से हो शुद्ध आतमा, मिलती है शाश्वत शान्ति।
आदिनाथ प्रभु को जो ध्याये, फैले जग में यश कीर्ति॥ 449॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'आस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **तां**डव नृत्य करे सुरपति जब, प्रभु का जन्मोत्सव होता।
जो भी मनाये हर्ष भाव से, पाप कर्म को वह धोता॥ 450॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **त**लस्पर्शी है ज्ञान आपका, जगत् चराचर जान रहे।
इसीलिए तो सारे ऋषिवर, केवलज्ञानी मान रहे॥ 451॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **व**न भवनों के वासी सब ही, ध्यान आपका धरते हैं।
प्रभु बिना कुछ नहीं सूझता, पल-पल नाम सुमरते हैं॥ 452॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. प्रश**स्त** परिणामों से जो भी, प्रभु का आराधन करते।
पूजन कर वे स्वयं पूज्य हो, वन्दन से बन्धन कटते॥ 453॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **व**शीभूत कर इन्द्रिय मन को, महा मोह गिरि चूर किया।
जो भी आया भक्त शरण में, उसका दुख सब दूर किया॥ 454॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **न**न्हा-सा मैं भक्त तिहारा, मानतुङ्ग सम भक्ति नहीं।
अल्प बुद्धि वाला मैं भगवन्,गुण गाने की शक्ति नहीं॥ 455॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. महा मनोहर छवि आपकी, शाश्वत सुख दातारी है।
स्वयं तिरे संसार सिन्धु से, भविजन के भवतारी हैं॥ 456॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. ध्वस्त किया रागादि भाव का, जड़ से समूल नाश किया।
तपाग्नि को प्रज्वलित किया सब, कर्मेन्धन को जला दिया॥ 457॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. समकित ज्ञान चरित मणियों का, तेज आपमें अनुपम है।
कान्तिमान इस जग में दूजा, कोई नहीं आप सम है॥ 458॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. मदन पराजित हुआ आपसे, बेचारा वह दीन हुआ।
अप्रतिम तव प्रभाव आगे, प्रभाव उसका क्षीण हुआ॥ 459॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. निरस्त कर षड्यन्त्र कर्म के, ज्ञान गुफा में बैठ गए।
जिसने श्रद्धा सहित पुकारा, उसे स्वप्न में दर्श दिए॥ 460॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. दो मुझको जिनराज शरण अब, और नहीं कुछ चाह रही।
स्वारथ का जग देख लिया सब, पाऊँ अष्टम मोक्ष मही॥ 461॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. गुणकोषं कहकर पुकारते, ऋषि मुनि यतिवर गणधर हैं।
देवों के भी देव आप देवाधिदेव विमलेश्वर हैं॥ 462॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. त्वत् भक्ति से भक्तजनों के, बड़े-बड़े संकट मिटते।
पाप कर्म के पर्वत सारे, खण्ड-खण्ड होकर कटते॥ 463॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. संकल्पित होकर श्रद्धालु, प्रभु नाम जब जपता है।
रोगी हो जाता निरोग औ, निर्धन धन पा जाता है॥ 464॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. कथा कहूँ क्या नाथ व्यथा की,मैं पीड़ित जगवासी हूँ ।
दर-दर भटक रहा था अब मैं, शिवपद का अभिलाषी हूँ॥ 465॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. थापन करके हृदय कमल पर,अपलक तुम्हें निहारूँगा।
सिद्ध साक्षी में दीक्षा लेकर,परमातम प्रकटाऊँगा॥ 466॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'था' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. कल्पशतेऽपि मोक्षधाम में, कुछ परिवर्तन ना होगा।
ऐसे वचन कहे प्रभुवर ने, श्रद्धानी बनना होगा॥ 467॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऽपि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. जन्म कल्याणक के अवसर पर, सुमेरु पर सुर न्हवन करें।
श्रद्धा जल की धारा देकर, भक्त प्रभु-पद नमन करें॥ 468॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. गमनागमन रहित आदीश्वर, सिद्धस्थल पर अचल हुए।
भक्त प्रभु साक्षात् दर्श को, पाने मन से मचल गए॥ 469॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. जितांतकः प्रभु मृत्यु विजेता, पाया है निर्वाण महा।
अतः आपका मन्त्र जाप भी, अपराजित दुर्जेय कहा॥ 470॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. दुरित विनाशक शासन जिनका, श्रोता को संतुष्ट करे।
मिश्री सम प्रभुवर की वाणी, भव्यजनों को पुष्ट करे॥ 471॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रिपु रात-दिन पीड़ा देता, राग-द्वेष का वेष धरे।
भक्त सोचते प्रभु सहाय से, कब निज आत्म स्वतन्त्र करें॥ 472॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तारणहार हितङ्कर बनकर, युगादि में अवतरित हुए।
बड़भागी है वह भवि प्राणी, जिसने प्रभु के चरण छुए॥ 473॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. निराहार रहकर मुनिवर श्री, मानतुङ्ग ने ध्यान किया।
मोह अर्गला जिसने तोड़ी, प्रभुवर ने आ दर्श दिया॥ 474॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. हंसा मेरा कब उड़ जाए, दर्शन दो प्रत्यक्ष प्रभो।
धन दौलत कुछ भी ना मांगूँ, चाहूँ मुक्ति मार्ग विभो॥ 475॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तिर्यक् लोक मध्य में बसते, भरतक्षेत्र में आदीश्वर।
दशों दिशा में गूँज रहा है, जयवन्तों जय वृषभेश्वर ॥ 476॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. दूर बसे हो मध्यलोक से, सात राजू सिद्धालय में।
भक्त करे आह्वान आपका, आओ मम देहालय में॥ 477॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. रे मन अब तो ध्यान लगा ले, जिनवर पथ पर चलना है।
गुरु-वाणी कहती है चेतन, शीघ्र प्रभु-सा बनना है॥ 478॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. सजा रहे जो जड़ तन को वे, सजा दे रहे चेतन को।
आदिप्रभु कहते श्रृंगारित,कर लो निज परमातम को॥ 479॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. हर पल भ्रम से कर्म बाँधता, रो-रो उन्हें भोगता है।
प्रभु कहते तू अभी सँभल जा, कर्म बीज क्यों बोता है॥ 480॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. सहस्र बार नमन है प्रभु को, सहस्र पाप मिटाने को।
बढ़ता चलूँ नाम ले प्रभु का, वीतरागता पाने को॥ 481॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. कितनी बार नरक पशु गति में, जाकर दु:ख सहे भारी।
क्रोध मान छल तज दे प्राणी, प्रभु समझाते उपकारी॥ 482॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रमण कर रहे नित अपने ही, असंख्य आत्मप्रदेशों में।
हम अज्ञानी भटक रहे प्रभु, अनेक तन के भेषों में॥ 483॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. हितैषिणः कहते ऋषिराजा, क्योंकि सर्व जग हित करते।
सार्थक नाम आपके भगवन् , अतः चरण में हम नमते॥ 484॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. कुमति विनाशक ज्ञान प्रकाशक, भव्य कुमुद विकसित करते।
धर्म दिवाकर प्रथम जिनेश्वर, पद में हम वन्दन करते॥ 485॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. रुग्ण चेतना दुख पाती है, भवों-भवों से हे स्वामी।
भोग भाव ही रोग बढ़ाते, कहते प्रभु अन्तर्यामी॥ 486॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. तेरा-मेरा करके मैंने, अनेक जन्म गँवाए हैं।
नाथ आपसे ही अपनापन, अतः द्वार पर आए हैं॥ 487॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. प्रभा परम औदारिक तन की, कोटि रवि शशि से भी तेज।
कान्तिमान जग के पदार्थ सब, नाथ आप सम्मुख निस्तेज॥ 488॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. भैक्ष्य शुद्धि से भजन शुद्ध हो, ऐसा प्रभु ने बतलाया।
शुभ भावों से भजन करूँ मैं, शुद्ध भाव पाने आया॥ 489॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. वज्र समान कठोर मोह का, क्षयकर पाया मुक्ति द्वार।
अखण्ड सुख शान्ति पाऊँ मैं,अरज यही करिए उपकार ॥ 490॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. पद्मासन प्रभु समवसरण में, बारह सभा लगे प्यारी।
प्रभु ही प्रभु दिखते चउ दिश में, तव चरणों में बलिहारी॥ 491॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पद्' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. मानस्तम्भ बना पत्थर का, किन्तु बसी मूरत उसमें।
तव प्रभाव से मानी जन का, मद गल जाता है पल में॥ 492॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. कषाय करके अति दुख पाता, समझाती यों जिनवाणी।
निष्कषाय आदीश्वर प्रभु की,दिव्यध्वनि सब दुख हरणी॥ 493॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. सुरेन्द्र और नरेन्द्र सभी मिल, समवसरण में आते हैं।
बारह योजन समवसरण को, लख विस्मित हो जाते हैं॥ 494॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. सत्त्वेषु नित मित्र भाव हो, गुणी देख प्रमुदित होऊँ।
दुखी जनों पर करुणा होवे, विरोध लख माध्यस्थ रहूँ॥ 495॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. जगत् काय का स्वभाव लख संवेग और वैराग्य हुआ।
राजपाट सब छोड़ वनी में, प्रवेश कर संन्यास लिया॥ 496॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. लपटें जला रहीं आतम को, राग आग की धूँ-धूँ कर।
है विश्वास शान्त होगी ये, प्रभु आपके पद छू कर ॥ 497॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. जाल बिछा कर्मों का ऐसा, फँसकर मैं छटपटा रहा।
जाल काट दो ज्ञान धार से, नाथ आपको बुला रहा॥ 498॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. निमग्न होकर प्रभु सुमिरन से, अन्तर में आनन्द हुआ।
सद्भक्ति करने वालों को, आदिप्रभु ने दर्श दिया॥ 499॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. विविध वर्ण रूपी पुष्पों से, माला गूँथी मुनिवर ने।
अर्पण की श्रद्धा भावों से, आदिप्रभु के चरणन में॥ 500॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. काव्य श्रेष्ठ भक्तामर इसका, इक-इक शब्द मन्त्रमय है।
जो एकाग्रचित्त हो पढ़ता, पद पाता अजरामर है ॥ 501॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. समदृष्टि मुनि मानतुङ्ग जी, राजा पर न क्रोध किया।
अपना ही कर्मोदय समझा, भोज राज को बोध दिया॥ 502॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भांति[1] चराचर तीन भुवन के, पूर्णज्ञान में सर्व पदार्थ।
आदिप्रभु सर्वज्ञ देव के, पद में आज नवाऊँ माथ॥ 503॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. जिन आज्ञा के पालनहारे, मुनिवर का सम्मान रहे।
जब तक रवि शशि तारे नभ में, भक्तामर का नाम रहे ॥ 504॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

रवि रश्मि से कमल खिले त्यों, पाप नशें जिन नामों से।
ऐसे प्रभु आदीश चरण में, अर्घ्य चढ़ाऊँ भावों से॥

ॐ ह्रीं सकलमनोवाञ्छितफलदात्रे क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

1 प्रतिबिम्बित

श्लोक नं॰ 10

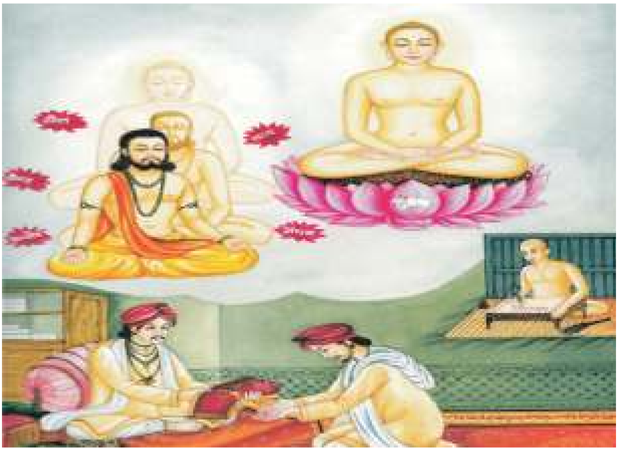

भक्ति का उदार फल

नात्यद् भुतं भुवन भूषण भूतनाथ!
भूतै - र्गुणै - र्भुवि भवन्त - मभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति॥10॥

विष्णुपद छन्द

हे त्रिभुवन के भूषण स्वामी! सब जीवों के नाथ।
तव सद्गुण का कीर्तन कर जो चरण नमावे माथ॥
प्रभु समान पद वह पा लेता इसमें क्या आश्चर्य।
जैसे निज आश्रय सेवक को निज सम करता आर्य॥
भक्त आपसे गुण संपद पा स्वयं नाथ बनता।
ऐसे वीतराग जिनवर को श्रद्धा से नमता॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥10॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं।

स्वयंबुद्धान् परिप्राप्तान्, व्रतीन् धर्मश्रुतैर्विना।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 10॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंबुद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

दोहा

1. **ना चाहूँ सुर सम्पदा, ना चाहूँ विष भोग।**
आदिप्रभु के दर्श का, हो प्रत्यक्ष सु-योग॥ 505॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **नित्य द्वार रहता खुला, शिवपुर जिनका धाम।**
यही भक्त की कामना, प्रभु-पद में विश्राम॥ 506॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्यद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **भुवन तिलक भगवान श्री, प्रथम जिनेश महान।**
सर्व दोष को नाशकर, हुए नन्त गुणखान॥ 507॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

4. **तं पुरुदेवं नित नमूँ, कोटि सूर्य सम तेज।**
अद्भुत पुरुषारथ किया, हुए नाथ निर्लेप॥ 508॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **भुला नहीं सकता कभी, अहो नन्त उपकार।**
असि आदिक षट् कर्म का, कर सर्वत्र प्रचार॥ 509॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **वल्लभ मुक्ती के हुए, तिहुँ जग के सरताज।**
भक्त प्रार्थना कर रहा, पाने शिवपुर राज॥ 510॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **नर काया को तरसते, सुरपति भी दिन-रात।**
सोच रहे संयम धरें, होवे नव्य प्रभात॥ 511॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. भूतकाल में हो गए, भविष्य में हों नन्त।
वर्तमान के प्रथम जिन, आदिनाथ भगवन्त॥ 512॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. षट्पद ज्यों गुंजन करे, पुष्प महकता देख।
भक्त भ्रमर गुण गा रहा, लखकर वृषभ जिनेश॥ 513॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

10. णमोकार सब मन्त्र का, माना है सरताज।
तीर्थङ्करों में आदि जिन, नाम परम विख्यात॥ 514॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. भूतल पर जयवन्त हैं, प्रभु भक्त मुनिराज।
मानतुङ्ग मुनि धन्य हैं, भवदधि तरण जहाज॥ 515॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

12. तपो गुणी मुनिराज जी, आदिप्रभु के भक्त।
पल भर में ही कर दिया, शत्रु पक्ष को ध्वस्त॥ 516॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. नाभिराय के तनय हैं, मरुदेवी के लाल।
वृषभदेव की शरण आ, चरण नवाऊँ भाल॥ 517॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. थर-थर कँपते कर्म हैं, वीतराग छवि देख।
कर्म काटने आ गया, चरण नमूँ सिर टेक॥ 518॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. भूमण्डल पर आप-सा, और नहीं धीमान्।
अत: आपको पूजते, सुरगुरु औ श्रीमान्॥ 519॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. व्रतैर्वन्द्य जगपूज्य हो, कहते आदि जिनाय।
शाश्वत सिद्ध विशुद्ध हो,जो निज आतम ध्याय॥ 520॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तैर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. गुण से सघन भरे हुए, दोष नहीं लवलेश।
अत: ऋषि मुनि आपको, निहारते अनिमेष॥ 521॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. ज्ञान किरणैर्भाति प्रभो, ज्ञान रश्मि घन आप।
शरणागत इस भक्त के, दूर करो अघ ताप॥ 522॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णैर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. भुजङ्ग लिपटा मोह का, दंश दे रहा तीव्र।
निर्विष हो तव ध्यान से, ध्याऊँ नाथ सदीव॥ 523॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. विश्व आपमें झलकता, अत: रहें अविकल्प।
अशुभ विकल्प मिटे सभी, ये ही मम संकल्प॥ 524॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. भजन करूँ मैं बस वही, जिसमें प्रभु का नाम।
नमन योग्य नाभेय को, मेरा नम्र प्रणाम॥ 525॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. वन्दे आदीश्वर जिनं, हाथ जोड़ सिर नाय।
भक्तिमय उपयोग हो, अरज यही जिनराय॥ 526॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तरु शोक से मुक्त हो, अत: अशोक कहाए।
मनुज निकटता प्राप्त कर, जिनवर ही हो जाए॥ 527॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. मयंक में भी दाग है, जिन मयंक बेदाग।
निष्कलंक जिनधर्म से, भविजन को अनुराग॥ 528॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. भिन्न-भिन्न जाना प्रभो, आतम और शरीर।
तभी सिद्ध पद पा लिया, नमूँ-नमूँ जिन धीर ॥ 529॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. वयं तोष्टुमः कह रहे, सूरीश्वर जिनसेन।
स्तुति करें हम आपकी, दिन हो चाहे रैन॥ 530॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष्टु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. वन्दित हैं ऋषिराज से, बिना द्रव्य ले भाव।
मैं पूजूँ वसु द्रव्य से, मिटे दुःख के घाव॥ 531॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. स्वतः आत्म पुरुषार्थ कर, हुए मोक्ष सम्राट्।
नारे भव्य लगा रहे, जयवन्तों जिनराज॥ 532॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तुलना योग्य नहीं रहे, अतुलनीय भगवन्त।
आप निराले जगत से, हुए सिद्ध शिवकन्त॥ 533॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. कल्याणक तीर्थेश के, पाँच तीन और दो।
भक्त करे यह प्रार्थना, निज प्रभु दिखला दो॥ 534॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल्या' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. भद्र रूप यदि भाव हो, शीघ्र दिखे भगवान।
धर्म दिखावे से करे, दुख पावे इन्सान॥ 535॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. वन्द्य बने जो भी करे, वन्दन श्रद्धा युक्त।
पूज्य बने जो पूजते, भक्ति से संयुक्त॥ 536॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. **तिथि गर्भ सु-जन्म की, तप सु-ज्ञान औ मोक्ष।**
पञ्च कल्याणक की घड़ी, मानी है निर्दोष॥ 537॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. **भव-भव में दुख भोग कर, आया प्रभु के द्वार।**
ठहर गया तव चरण में, प्रभु-पद ही इक सार ॥ 538॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. **वर्द्धन भव-भव का किया, व्यथित हुआ हर बार।**
पुनः-पुनः वही कार्य कर, हुआ नहीं उद्धार ॥ 539॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. **तोष[1] प्राप्त हो भक्त को, श्री जिनदेव समीप।**
निश्चित तम मिट जाएगा, पाकर ज्ञान सु-दीप॥ 540॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. **नमन किया जड़ देह से, नमा न मन जिनराज।**
यही दोष करता रहा, गुणी बना दो नाथ॥ 541॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. **नुपूर बाँध सुरियाँ नचें, करतीं प्रभु गुणगान।**
नाचत वे थकती नहीं, प्रभुवर महिमावान॥ 542॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नु' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. **तेल भरा तिल में सदा, आतम में परमात्म।**
जिनवाणी कहती अहो, पहचानो निज आत्म॥ 543॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. **नम्र स्वरूपी हो जरा, झुक जा प्रभु द्वय पाद।**
विनय भाव से प्राप्त हो, सिद्धपुरी का राज॥ 544॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. **आकिंचन व्रत धर्म से, कर्म शून्य हो आत्म।**
परम शुद्ध होकर वही, पा लेता परमार्थ॥ 545॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'किं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1.संतोष

42. वायु ज्यों निःसंग हो, बहती है स्वाधीन।
धरूँ भाव एकत्व का, होऊँ निज में लीन॥ 546॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. भूल हुई मुझ अज्ञ से, नाथ अनन्तों बार।
क्षमा करो इस बाल को, अरज करो स्वीकार॥ 547॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. त्याग किया सब संग का, हुए आप निःसंग।
मुझे चढ़े प्रभु रंग बस, और न कोई रंग॥ 548॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. श्रिताः शरण लेने प्रभो, पाया दुर्लभ द्वार।
सब कुछ पाया आपसे, किया महा उपकार॥ 549॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. तं वृषभेशं नित नमूँ, प्रणम्य हो जिनदेव।
धीर वीर गम्भीर हो, नमूँ-नमूँ सिर टेक॥ 550॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. यश ख्याति पाने प्रभो, किए अनेकों काम।
आत्म हितैषी ना बना, अतः हुआ बदनाम॥ 551॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. इष्ट मुझे शिवलोक है, पास बुला लो नाथ।
और नहीं कुछ चाहिए, नश्वर की ना चाह॥ 552॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'इ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. हर्षित है मम चेतना, जिनशासन को पाय।
जिनेन्द्र प्रभु की शरण बिन,कोई नहीं सुख दाय॥ 553॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. नाशवान जो द्रव्य हैं, करो न उनसे नेह।
प्रभु कहते हो जा सुखी, निरखो तत्त्व विदेह॥ 554॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. स्वात्म तत्त्व का भान कर, ज्ञानभानु दिख जाए।
परम प्रतापी सिद्ध हो, पुनः न जग में आए॥ 555॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. सक्षम है हर आतमा, करे योग्य पुरुषार्थ।
जैनागम का कथन यह, प्रकट होए परमार्थ॥ 556॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. मंदिर-मंदिर पूजता, दिखे नहीं भगवान।
अन्तर्मन में दिख गए, आदिनाथ भगवान॥ 557॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कलश हृदय का स्वच्छ कर, श्रद्धा नीर भराय।
त्रय धारा दूँ चरण में, जिन पूजन सुखदाय॥ 558॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रोमांचित तब भक्त हो, जब प्रभु दर्शन होए।
हर्षाश्रु की धार से, पाप कर्म मल धोए॥ 559॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तिरस्कार अब तक किया, दुष्कर्मों ने हाय।
अतः शरण में आ गया, सन्मति दो जिनराय॥ 560॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

जो सद्गुण चिन्तन करे, प्रभु -सा बनता भक्त।
अर्घ्य चढ़ाकर चरण में, होऊँ सदा प्रशस्त॥

ॐ ह्रीं अर्हज्जिनस्मरणजिनसम्भूताय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 11

जिनदर्शन की महिमा

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष - विलोकनीयं
नान्यत्र तोष - मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति दुग्धसिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत्॥11॥

विष्णुपद छन्द

अपलक दर्शन योग्य आपका वीतराग है रूप।
एक बार तुमको लखता वह कहीं न हो संतुष्ट॥
क्षीरसिन्धु के मीठे जल को जो पी ले इक बार।
क्या वह फिर पीना चाहेगा लवणोदधि जल क्षार॥
क्षीर समन्दर के समान प्रभु दर्शन जो पाए।
रागी लवणसिन्धु सम उनकी शरण कौन जाए॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥11॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं।

यतीन् प्रत्येकबुद्धान् सन्, निमित्तांल्लब्धसंयमान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 11॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्येकबुद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

स्रग्विणी छन्द

1. दृष्टि सम्यक् किए बिन नहीं मुक्त हो।
लोभ वश भक्त की न कभी भक्ति हो॥
नाथ वृषभेश को सर झुकाता रहूँ।
नित्य ही भक्तामर पाठ करता रहूँ॥ 561॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दृष्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

2. मुनि दृष्ट्वा भवन्तम् यहाँ लिख रहे।
मानो प्रत्यक्ष प्रभु के दरश कर रहे॥ नाथ ...॥ 562॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ट्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. भक्ति के भाव से हो गए सिद्ध हैं।
ये निरंजन निराकार अविरुद्ध हैं॥ नाथ...॥ 563॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. वन्दना से हुए वन्द्य अगणित प्रभो।
अर्चना से हुए भक्त अक्षय विभो॥ नाथ...॥ 564॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. तज दिया मोह माया नहीं शेष है।
वे हुए शान्त निर्मल नहीं क्लेश है ॥ नाथ...॥ 565॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. मत्त हो मोह मदिरा को पीता रहा।
यूँ ही कहने को मैं मात्र जीता रहा॥ नाथ...॥ 566॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. पा निमित्त प्रभु का परम ही प्रबल।
सिद्ध-आलय में जाकर हुए हैं अचल॥ नाथ...॥ 567॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मेरु सब पर्वतों में रहा श्रेष्ठ है।
सारे तीर्थङ्करों में प्रभु ज्येष्ठ हैं॥
नाथ वृषभेश को सर झुकाता रहूँ।
नित्य ही भक्तामर पाठ करता रहूँ॥ 568॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. परीषहों और उपसर्ग को जीतकर।
हो गए आप पावन परम तीर्थंकर ॥ नाथ...॥ 569॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. विबुध पूजे सभी आपको भाव से।
तिर गए बैठकर भक्ति की नाव से॥ नाथ...॥ 570॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. लोभवश पाप करता रहा रात-दिन।
निष्कषायी बना दो मेरे आदि जिन॥ नाथ...॥ 571॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. सब कलाएँ बहत्तर में निष्णात हैं।
दर्श से जिनके मिट जाए सन्ताप हैं॥ नाथ...॥ 572॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. देख नीलांजना का मरण आपने।
धार वैराग्य वन में चले नाथ हैं॥ नाथ...॥ 573॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. हूँ स्वयं मैं परिपूर्ण कहता रहा।
अनुभव ना किया शब्द रटता रहा॥ नाथ...॥ 574॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. नाथ लोकाग्र में राजते शाश्वता।
आपका नाम ही मैं जपूँ सर्वदा॥ नाथ...॥ 575॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. अन्य कोई नहीं आपसा विश्व में।
करूँ श्रद्धा समर्पण प्रभु चर्ण में॥
नाथ वृषभेश को सर झुकाता रहूँ।
नित्य ही भक्तामर पाठ करता रहूँ॥ 576॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्य' बीजाक्षरसंयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. त्रस व थावर की पर्याय को धारकर।
दु:ख सहता रहा द्वेष औ राग कर ॥ नाथ...॥ 577॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तोष होता नहीं सम्पदा प्राप्त कर।
तृप्त हो आतमा पाप का त्याग कर॥ नाथ॥...॥ 578॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. षट् रसी भोज्य से भूख मिटती नहीं।
प्रभु भक्ति बिना मुक्ति मिलती नहीं॥ नाथ...॥ 579॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. मुख्य हैं आप ऋषियों के भी नाथ हैं।
नर सुरेन्द्रों के झुकते सदा माथ हैं॥ नाथ...॥ 580॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. पर पदार्थों से होते प्रभावित नहीं।
कर सके आपको कोई बाधित नहीं॥ नाथ...॥ 581॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. यामिनी[1] मिथ्यातम की घनी छा रही।
दिव्य ज्योति मिले शर्ण में आपकी॥ नाथ...॥ 582॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तिर गए तीर्थंकर की शरण प्राप्त कर।
अर्चना हम करें चर्ण में माथ धर॥ नाथ...॥ 583॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1.रात्रि

24. जन्म मृत्यु का टूटा नहीं सिलसिला।
लक्ष्य है नाथ पाऊँ मैं सिद्धशिला॥
नाथ वृषभेश को सर झुकाता रहूँ।
नित्य ही भक्तामर पाठ करता रहूँ॥ 584॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. नर्क पशु देव नर काय नन्तों धरीं।
नाथ मुक्तीवधू नहीं मैंने वरी॥ नाथ...॥ 585॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. शिव रहस्य न जाना अभी तक प्रभो।
शिवनगर का पता पाने आया विभो॥ नाथ...॥ 586॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. चन्द्र से भी है सुन्दर प्रभु का वदन।
देखते हैं मेरे एकटक ही नयन॥ नाथ...॥ 587॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. ज्ञान चक्षुः खुलें मम यही भावना।
जड़ क्षणिक वस्तुओं की नहीं कामना॥ नाथ...॥ 588॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षुः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. पी रहे स्वानुभव की निरन्तर सुधा।
भक्त को भी पिलाते उदार मना॥ नाथ...॥ 589॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. भक्ति कृत्वा हुए भक्त भगवान ही।
पूजकर मैं बनूँ नाथ गुणवान ही॥ नाथ...॥ 590॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. पर्व लगता दीवाली प्रभु जो मिले।
मेरे बन्द नयन ज्ञान के अब खुले॥ नाथ...॥591॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. य:[1] भवि पूजे प्रभो पूज्यता प्राप्त हो।
शीघ्र ही वीतरागी परम आप्त हो॥
नाथ वृषभेश को सर झुकाता रहूँ।
नित्य ही भक्तामर पाठ करता रहूँ॥ 592॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. शत सहस्रों नमन कर मैं ध्याऊँ प्रभो।
आपका हूँ बनूँ आप-सा मैं विभो॥ नाथ...॥593॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. शिष्य हूँ मैं जगत के गुरु आप हो।
भक्त हूँ आप भगवन् मेरे नाथ हो॥ नाथ...॥ 594॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. कनक के दो सौ पच्चिस बिछाये कमल।
सुर व्यवस्था करें जब हुआ जिन गमन॥ नाथ...॥ 595॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. रज रहित हैं अरज नाथ अरजी मेरी।
नाश करिए प्रभो दोनों आवर्ण ही॥ नाथ...॥ 596॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. देह द्युति का न वर्णन कोई कर सके।
इन्द्र भी आपकी गुण स्तुति कर थके॥ नाथ...॥ 597॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. तिर गए नन्त तिर्यञ्च जिन दर्श कर।
मैं मनुज भक्त हूँ शर्ण में दु:ख हर॥ नाथ...॥ 598॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. दुग्ध में जल स्वत: है मिलावट नहीं।
जीव में कर्म हैं पर स्वभाव नहीं॥ नाथ...॥ 599॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दुग्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. धर्म के नाम पर कर्म बाँधो नहीं।
कहें जिनराय धर्म को साधो सही॥ नाथ...॥ 600॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. जो

41. सिंह ज्यों वन में एक अकेला रहे।
तीर्थङ्कर एक तमहर उजाला करें॥
नाथ वृषभेश को सर झुकाता रहूँ।
नित्य ही भक्तामर पाठ करता रहूँ ॥ 601॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सिं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. सिन्धोः ज्ञान विद्या से पूर्ण भरे।
आपकी भक्ति से कर्म चूर्ण करें॥ नाथ...॥ 602॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धोः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. क्षारसागर के जैसा कुधर्म रहा।
क्षीरसिन्धु के सम जैनधर्म कहा॥ नाथ...॥ 603॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. जिनवरं श्रेष्ठ हैं सर्व ही विश्व में।
तीन लोकों के स्वामी नमें चर्ण में॥ नाथ...॥ 604॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. जलधि में ज्यों अनेकों सु-रत्न भरे।
जिन कहें तुझमें गुण रत्न भी नन्त हैं ॥ नाथ...॥ 605॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. लम्बी है शिवनगर की डगरिया प्रभो।
थक गया हूँ दो संबल जरा-सा विभो॥ नाथ...॥ 606॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. जप रहा आपका नाम जो भाव से।
उसकी यशकीर्ति फहरा रही शान से॥ नाथ...॥ 607॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. लग गई है लगन मुक्ति के पन्थ की।
आपके मन्त्र में शक्ति है नन्त ही॥ नाथ...॥ 608॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. नित्य अंजन रहित आप परमातमा।
मैं निरंजन बनूँ बस यही भावना॥ नाथ...॥ 609॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. धेनु में श्रेष्ठ है कामधेनु महा।
नाथ में नाथ हैं श्रेष्ठ आप यहाँ॥
नाथ वृषभेश को सर झुकाता रहूँ।
नित्य ही भक्तामर पाठ करता रहूँ॥ 610॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. रत्न में आप हैं श्रेष्ठ रत्न महा।
छोड़ ऐसा रतन नाथ जाऊँ कहाँ ॥ नाथ...॥ 611॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. सिद्धि को तज प्रसिद्धि नहीं चाहता।
वीतरागी प्रभु से न कुछ माँगता ॥ नाथ...॥ 612॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. तुंग उन्नत है आलय प्रभु आपका।
करें सम्मान गणधर मुनि आपका ॥ नाथ...॥ 613॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तुं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कर्म कस-कस के जब भी प्रहार करें।
भक्तगण भक्ति की सख्त ढाल धरें ॥ नाथ...॥ 614॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. इक्षुरस का आहार लिया आपने।
कहें श्रेयांस नृप हूँ प्रभु दास मैं ॥ नाथ...॥ 615॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'इ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. कर्म उच्छेत् किए जग से अर्चित हुए।
आपके नन्त गुण सर्व चर्चित हुए ॥ नाथ...॥ 616॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च्छेत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

एकटक दर्श के योग्य आदीश्वरा।
क्षार ना आप हैं क्षीर के सागरा॥
वीतरागी प्रभु की शरण आ गया।
पद अनर्घ्य मिले यह हृदय भा गया॥

ॐ ह्रीं सकलतुष्टिपुष्टिकराय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं० 12

अनुपम सौन्दर्य

यैः शान्तराग - रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैक - ललामभूत!
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥12॥

विष्णुपद छन्द

तीन भुवन के अलंकार हे आदिनाथ भगवन्!
परम शान्त सुन्दर अणुओं से रचित आपका तन॥
वे परमाणु इस धरती पर बस उतने ही थे।
क्योंकि आपसे तन के धारी और न कोई थे॥
ज्ञान शरीरी होने को जिनवर को ही ध्याऊँ।
तनकारा के बन्धन से हे नाथ! मुक्ति पाऊँ॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥12॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं।

यतीन् बोधितबुद्धाख्यान्, गुरोर्निर्वेदधारिण:।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये ॥ 12॥

ॐ ह्रीं अर्हं बोधितबुद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली
चौपाई

1. **अन्यै: आप न जाने जाते, अन्य अज्ञ जन देख न पाते।**
केवल योगीगम्य तुम्हीं हो, ज्ञानचक्षु से रम्य तुम्हीं हो॥ 617॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यै:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **शान्ति वार्ता निज से कर ली, मुक्तिरमणी प्रभु ने वर ली।**
अमित प्रभावी जग हितकारी, आदिनाथ वन्दूँ त्रिपुरारि॥ 618॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **तलस्पर्शी प्रभु केवलज्ञानी, वीतराग पावन विज्ञानी।**
महाबोध मुझको भी देना, मेरी नैया प्रभुवर खेना॥ 619॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **राग रंग में काल गँवाया, इसे मिटाने तव दर आया।**
राग भाव है विभाव जाना, नाथ आपसे ही पहचाना॥ 620॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **गणनायक कहलाते स्वामी, भव्य सहाय नमूँ सुखनामी।**
सारे कर्म हुए असहायी, त्याग दिए तुमने जिनरायी॥ 621॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **रुचि अनुसारि वीर्य रहे है, ऐसा श्री आचार्य कहे हैं।**
मैं भी स्वात्म रुचि प्रकटाऊँ, अत: द्वार जिनवर के आऊँ॥ 622॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **चिन्तन में ना आ सकते हो, जीवन मङ्गलमय करते हो।**
ऐसे प्रभु का दर्शन चाहूँ, इस भव वन में कभी न आऊँ॥ 623॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. सुरभिः दुरभिः मुक्त हुए हैं, जिन भक्तों ने चरण छुए हैं।
गन्धकुटी पर आप विराजे, सद् भक्तों के मन में राजे॥ 624॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भिः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. परवश होकर अति दुख भोगा, अतःप्रभु संग नाता जोड़ा।
मम जीवन मङ्गलमय कर दो, सिद्ध बनूँ ऐसा वर दे दो॥ 625॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. रत्नत्रय का ध्वज लहराया, निजात्म का जयघोष कराया।
कर्मशत्रु को दूर भगाया, जय-जय आदिनाथ जिनराया॥ 626॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मार्दव भाव मान को नाशे, भव्य जीव में विनय प्रकाशे।
यही प्रभुवर ने समझाया, यह लघु भक्त शरण में आया॥ 627॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. अणु सम भक्त आपका स्वामी, आप महासागर गुणधामी।
श्री चरणों में जगह दीजिए, भव-समुद्र से तार दीजिए॥ 628॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. दुन्दुभिस्वनः सहस्रनाम में, लिखे सूरि जिनसेन नाम ये।
दुन्दुभि सम गम्भीर ध्वनि है, बड़भागी वे ध्वनि सुनी है॥ 629॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भिस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. त्वं निर्मापित जिन अणुओं से, थे उतने ही भू पर वैसे।
नहीं आप-सा दिखता कोई, तीर्थङ्कर जिनवर अतिशायी॥ 630॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. निर्भयता आतम का गुण है, भय विस्मय आदिक अवगुण हैं।
जिन पूजन से मिलती साता, प्रभु भक्ति कर मुक्ती पाता॥ 631॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'निर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. मानो जिनवाणी का कहना, मानतुङ्ग गुरु का यह कहना।
छोड़ो अब अपनी मनमानी, वृषभनाथ प्रभु की सुन वाणी॥ 632॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. **पि**च्छीधारी श्री मुनिरायी, मानतुङ्ग मुनिवर अतिशायी।
जैन धर्म का बिगुल बजाया, भूतल पर जयघोष कराया॥ 633॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. **तस्**कर मोह बड़ा बलशाली, देख प्रभु को प्रभावशाली।
भाग गया वह मोह बिचारा, क्षीणमोह को नमन हमारा॥ 634॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. **त्रि**धा नमूँ मैं हे परमेश्वर, हो प्रभाव ऐसा जिन मुझ पर।
नाथ आप बिन कुछ ना सूझे, हर पल भावों से मन पूजे॥ 635॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. **भु**ज्यमान आयु जब तक है,इकटक देखूँ प्रभु तब तक मैं।
भरो रोशनी इन नयनों में, कभी थके ना इस जीवन में॥ 636॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. **व**सुधा भी यह धन्य हुई है, जिन आतम अवतरित हुई है।
पन्द्रह मास रतन बरसे हैं, प्रभु को पा सब जन हरषे हैं॥ 637॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. **नै**न दर्श को अकुलाए हैं, आँसू बरस-बरस आए हैं।
आदिप्रभु कब दर्शन देंगे, निज समान मुझको कर लेंगे॥ 638॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. **क**था व्यथा से भरी हमारी, भव अनन्त दुख सहकर भारी।
आज आपकी शरण मिली है,स्वातम में सुख ज्योति जली है ॥ 639॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. **ल**गन लगी कहता मेरा मन, शीघ्र देख लूँ मेरे भगवन्।
धनुष पाँच सौ तन ऊँचाई, पूर्णज्ञान पा मुक्ती पाई॥ 640॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. **लाली सुबह शाम की होती, एक जगाती एक सुलाती।**
जिन धर्मानुराग सुख दाता, विषय राग भव-भव दुख दाता॥ 641॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ला' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. **मरुदेवी के सुत तीर्थङ्कर, सर्व जीव के आप हितङ्कर।**
विघ्न विनाशक मङ्गल कर्त्ता, सुख देते दुख मेटे त्राता॥ 6४2॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. **भूतल पर ना तुम-सा नामी, सूर्य समान जगत के स्वामी।**
अतः प्रभु पूजन को आया, आकर आत्म शान्ति को पाया॥ 643॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. **तपन मिटी भव-भव की स्वामी, वचनामृत सुनकर शिवधामी।**
चन्दन चन्द्र किरण से शीतल,दिव्य वचन सुन लूँ मैं प्रतिपल॥ 644॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. **तारे अनगिन नभ में रहते, एक चन्द्र को घेरे रहते।**
आदिनाथ प्रभु चन्द्र समाना, ऋषि मुनियों को तारा माना॥ 645॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. **वन्दित चरण आपके अघहर, वचन आपके मिथ्या तमहर।**
तुम्हें छोड़ मैं कहीं न जाऊँ, ऐसी शरण कहीं न पाऊँ॥ 646॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. **तन निर्मुक्त हुए हो स्वामी, दिखे न नयनों से शिवगामी।**
बिन देखे कैसे गुण गाऊँ, जिनवाणी से सुनकर ध्याऊँ॥ 647॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. **एक तुम्हीं आधार हमारे, दिखा रहे भव-सिन्धु किनारे।**
नहीं आप-सा कोई यहाँ पर, आदिनाथ जय-जय अखिलेश्वर ॥ 648॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ए' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. वचन अगोचर नाथ आप हो, अत: नमूँ जिन नाम जाप को।
नाथ आपको वन्दन मेरा, सिद्धालय में होवे डेरा॥ 649॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. खड्ग ध्यान की लेकर जिनवर, किया प्रहार कर्म पर जमकर।
अनन्त ज्ञानी देख रहे थे, कैसे भगवन् जीत रहे हैं॥ 650॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. लुब्ध विषय भोगों में प्राणी, अज्ञ जीव की दुखद कहानी।
तीव्र पुण्य संयोग हमारा, जैन-धर्म पाया अति प्यारा॥ 651॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तेरा-मेरा करते-करते, बीते जन्म कई दुख सहते।
आप कृपा से समझ गया हूँ, मैं केवल चिन्मय चिदात्म हूँ॥ 652॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. प्राप्य न कोई वस्तु जगत में,मोक्ष तत्त्व हो प्रकट स्वात्म में।
अब तक सब नश्वर को पाया, तत्त्व अनश्वर पाने आया॥ 653॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. प्राणनाथ आदीश्वर मेरे, मिटा दीजिए भव के फेरे।
अशरण जग में शरण न कोई, एकमात्र प्रभु आप सहाई॥ 654॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. गुरव: शिवपथ पर चलते हैं, जिनवर शिवपद अनुभवते हैं।
वीतराग जिनशासन जय हो, मेरे दुष्कर्मों का क्षय हो॥ 655॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. पृथक्-पृथक् सब द्रव्य रहे हैं, लगता जैसे घुले मिले हैं।
नीर क्षीर सम तन चेतन है, समझाते यह जिन भगवन् हैं॥ 656॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. थिर होना है सिद्धालय पर, शुद्ध बुद्ध त्यों नन्त जिनेश्वर।
इसीलिए मैं पूज रचाता, नाम आपका ही मन भाता॥ 657॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. सर्व पृथिव्यां तुम जैसा ना, अप्रतिम आदीश महाना।
मैं अबोध लघु भक्त तुम्हारा,दिखला दो भवसिन्धु किनारा॥ 658॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्यां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. यत्न मुक्ति का मुनिवर करते, षट् आवश्यक पालन करते।
मन को स्थिर कर ध्यान लगाते, हम उन पद में पूज रचाते॥ 659॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तेजस्वी मुख देख तिहारा,शरमाते शशि रवि औ तारा।
अज्ञानी नित देह संवारे,देह राग कर दुख से हारे॥ 660॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. समयसार मय जीवन सारा, भक्ति ही इक मात्र सहारा।
मानतुङ्ग मुनिराज धन्य हैं, आदिप्रभु जिनराज वन्द्य हैं॥ 661॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मानवता का पाठ पढ़ाया,फिर शिवपुर का पन्थ दिखाया।
प्रभु कहते स्वातम पहचानो, सारभूत सबमें यह जानो॥ 662॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. नव प्रभात की नई किरण है,आदिप्रभु की मिली शरण है।
सर्व कर्म का क्षरण करूँगा,शिवपद का मैं वरण करूँगा॥ 663॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मनन करूँ प्रभु के प्रवचन का, चिन्तन हो पल-पल भगवन् का।
शिवपथ में बाधा ना आवे, जिन अर्चा का यह फल पावे॥ 664॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. पदार्थ सारे जान लिए हैं, पूर्णज्ञान प्रभु प्राप्त किए हैं।
मिथ्या मोह तमस मम हर लो,सिद्ध रूप में विकसित कर दो॥ 665॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. चतुरंगुल धरती के ऊपर, विहार करते वृषभ जिनेश्वर।
नभ से सुर जय-जय उच्चारे, हर्ष भाव अति मन में धारे॥ 666॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. नर्तन गायन करें देवियाँ, दर्शन को मम तरसें अँखियाँ।
कब मैं समवसरण में आऊँ, कर साक्षात् दर्श सुख पाऊँ॥ 667॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. हितोपदेशी आगम वाणी,जग जीवों की है कल्याणी।
बिन स्पन्दन प्रभु तुम्हें निहारूँ,वाणी सुनकर जनम सुधारूँ॥ 668॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. रूपातीत अवस्था पा ली, लक्ष्यभूत मुक्ती को वर ली।
नाथ आप ही पथ दिखला दो, शिव मंजिल तक ही पहुँचा दो॥ 669॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. परम्परा यह धर्मतीर्थ की, आदिनाथ प्रभु ने प्रवर्त्त की।
धर्म नदी में आज नहाऊँ, मोहादिक का मैल छुड़ाऊँ॥ 670॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. मति सन्मति मेरी कर देना, मुझे शरण में प्रभु रख लेना।
शब्द नहीं यह मात्र हमारे, सच्ची श्रद्धा उर में धारे॥ 671॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. नास्तिक आस्था से भर जाते, जो श्रद्धा से शरणा पाते।
आदिनाथ प्रभु की सब महिमा, नमूँ जहाँ पर हैं प्रभु प्रतिमा॥ 672॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

देह आप सम नहीं किसी की, वे अणु भू पर थे उतने ही।
आदिप्रभु अनुपम तनधारी, अर्घ्य चढ़ाऊँ शिव सुखकारी॥

ॐ ह्रीं वाञ्छितरूपफलशक्तये क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 13

अनुपम मुख सौन्दर्य

वक्त्रं क्व ते सुर नरोरग - नेत्रहारि
नि:शेष - निर्जित - जगत् त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम्॥13॥

विष्णुपद छन्द

नर सुर औ नागेन्द्र नयन को जिन ने हरण किया।
तीन जगत की उपमाओं को जिनने वरण किया॥
ऐसा सुन्दर अनुपम मुख है आदीश्वर जिन का।
कैसे मैं कह दूँ जिनमुख को मलिन निशाकर-सा॥
जो पलाश पत्ते-सा दिन में फीका पड़ जाता।
सदा प्रकाशी निर्मल मुख श्री जिनवर का रहता॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥13॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं।

ऋषीनृजुमतीन् सूक्ष्म, पदार्थानेकसंविदः।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 13॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋजुमतिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

विष्णुपद छन्द

1. **वक्ता श्रेष्ठ कहाते भगवन् खिरते दिव्य वचन।**
द्वादश सभा सुने श्रद्धा से करें चरण वन्दन॥ 673॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **मन्त्रं जपति भक्त्या जो भी वह नर तर जाता।**
मन पवित्र हो मन्त्र जाप से शिवसुख वह पाता॥ 674॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **क्व सर्वज्ञ वीतरागी और रागी की तुलना।**
धरा गगन-सा अन्तर प्रभु के गुण की ना गणना॥ 675॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **तेरस बेरस लगे उन्हें जिनने तुमको ध्याया।**
वीतराग जिनधर्म लगा सच्चा मन में भाया॥ 676॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **सुरंग भक्ति की खोदी अब भक्त पुकार रहा।**
आ जाओ आदीश्वर दिखला दो शिवमार्ग महा॥ 677॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **रसनेन्द्रिय के वशीभूत हो बाँधे कर्म घने।**
पंचेन्द्रिय विजयी प्रभुवर ने सारे कर्म हने॥ 678॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **नरपुंगव सुर इन्द्र सभी जीवों से पूज्य हुए।**
घाति कर्म को क्षयकर स्वामी मुक्तिदूत हुए॥ 679॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. रोचक प्रभु की जीवन गाथा सुन पुण्यार्जन हो।
प्रभु कथा सुनने वालों को निजानन्द सुख हो॥ 680॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. रग-रग से बहती सु-ज्ञान की धारा अविरल है।
हम भक्तों को ज्ञानधार में बहना प्रतिपल है॥ 681॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. गर्हा हो अपने दोषों की तभी होए निर्दोष।
भूल नहीं स्वीकारें अपनी कभी न हो गुणकोष॥ 682॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. नेत्रेन्द्रिय के वशीभूत जो देह रूप लखता।
ज्ञान चक्षु खोले बिन वह भव वन में ही भ्रमता॥ 683॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. छत्र तीन सिर पर धारे हैं हे त्रिभुवन के नाथ।
कृपा छाँव प्रभु बनी रहे मैं जोड़ूँ दोनों हाथ॥ 684॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. हार्दिक यही भावना मेरी निरखूँ बारम्बार।
कहाँ गए आदीश्वर मेरे इस जगती के पार॥ 685॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. रिक्त हुए सारे विकार से हुए पूर्ण अविकार।
स्व-पर तत्त्व का भेदज्ञान कर छोड़ दिया संसार॥ 686॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. नि:संदेह भक्त हो जाता भवसमुद्र के पार।
दिव्य सुधा बरसाने वाले वन्दूँ बारम्बार॥ 687॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. शेष नहीं अवशेष आपका इस जग में कुछ भी।
परमातम हैं आप नन्त गुण संग लिए प्रभु जी॥ 688॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. षट् लेश्या में एक शुक्ल लेश्या ही धारण की।
चौदहवें गुणथानक[1] में उसको भी प्रभु तज दी॥ 689॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. निर्निमेष रहते हैं स्वामी पलकें ना झपके।
क्योंकि आप निष्काम प्रभु जी कभी नहीं थकते॥ 690॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'निर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. जिनेन्द्र मेरे हृदय बसो अब यही निवेदन है।
जिन समीपता से कर लूँ निज का संवेदन मैं॥ 691॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तन्मय होकर करे धर्म का अनुष्ठान जो भी।
कालान्तर में धर्म रूप ही हो जाता वह भी॥ 692॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. जड़ पुद्गल में रत होकर भव व्यर्थ गँवाए हैं।
दुर्लभता से गुरु वचनामृत सुन दर आए हैं॥ 693॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. जगत्पति वृषभेश्वर को श्रद्धा से नमन करूँ।
यही भावना है मेरी निज में ही रमण करूँ॥ 694॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. त्रिगुप्ति में थे आप सुरक्षित सन्त दशा में भी।
सिद्ध हुए तब पूर्ण सुरक्षित अतः शरण ले ली॥ 695॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तपोधनी ने इक हजार कुल वर्ष तपस्या की।
कर्म क्षयङ्कर प्रभु चरणों में मेरी धुन लागी॥ 696॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. गुणस्थान

25. योगीजन निर्जन वन में प्रभु गुण चिन्तन करते।
चिन्तन करते-करते प्रभुवर अचिन्त्य बन जाते॥ 697॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. परिग्रह पाप पिशाच आपने पल में दूर किया।
स्वातम को जो दुख दे उन कर्मों को चूर किया॥ 698॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. माला फेरे हाथ और मन बाहर भाग गया।
ऐसी धर्म क्रिया करके कुछ भी न लाभ लिया॥ 699॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. नंदन वन जैसी शान्ति तव पद में मिलती है।
बन्द हृदय की सारी कलियाँ युगपत् खिलती हैं॥ 700॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. बिम्ब वीतरागी का अद्भुत ऊर्जा देता है।
द्वार आपके आकर चेतन शान्ति पाता है॥ 701॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बिम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. बंधन सारे कट जाते हैं जिनके वन्दन से।
मुनिवर को अनुभवन हुआ था बेड़ी कटने से॥ 702॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. कण्ठ मेरा अवरुद्ध न हो जब अन्त समय आवे।
आदीश्वर की जय बोलूँ बस यही भक्त चाहे॥ 703॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. विलंब क्यों हो रहा प्रभु जब आई मम बारी।
लाखों तार दिए अब मुझको तारो भवतारी॥ 704॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. कदम-कदम पर मुझे प्रभो दुष्कर्म सताते हैं।
आप धर्मनेता होने से व्यथा सुनाते हैं॥ 705॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मनमराल मम झूम उठा है प्रभु भक्ति करके।
भक्त कहीं ना जाएगा अब नाथ तुम्हें तज के॥ 706॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. लिखते-लिखते कलम घिस गई सारे ही वन की।
किन्तु नहीं लिख पाए ज्ञानी महिमा तव गुण की॥ 707॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. अभिनंदन के योग्य नाथ मैं कैसे स्तुति करूँ।
अतः मौन हो श्रद्धा की आँखों से ही निरखूँ॥ 708॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. जिन परिपक्व दशा को पाकर शुद्ध हुए स्वामी।
मुझको दो आवाज चलूँ मैं तव पथ सुखधामी॥ 709॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. निन्दित होता वह जो प्रभु का विनय नहीं करता।
जड़ धन दौलत पाकर भी वह सुखी नहीं रहता॥ 710॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. शान आपकी बड़ी निराली सबसे उन्नत हो।
लोक अग्र पर रहकर भी हम सबके ज्ञायक हो॥ 711॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. कलश हृदय मम निष्ठा का शुभ नीर भरा इसमें।
आ जाओ आह्वान करूँ मैं प्रभु चेतन गृह में॥ 712॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. रवि की सहस्र किरणावलियाँ बाह्य उजाला दें।
पूर्णज्ञान रवि की किरणें अन्तर उजियाला दें॥ 713॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. हो उपास्य प्रभु आप भक्त मैं लघु उपासक हूँ।
नायक हो प्रभु भक्ति करने के मैं लायक हूँ॥ 714॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. यशोधरा है वह धरती जहाँ प्रभु ने जन्म लिया।
नगर अयोध्या में आकर देवों ने नमन किया॥ 715॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. द्वादशाङ्ग के पाठी भी तव पद में नमते हैं।
क्योंकि सभी के परम गुरु प्रभु आप कहाते हैं॥ 716॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. समरस करते पान निरन्तर तृप्त नहीं होते।
शान्त आपकी मुद्रा लख भविजन विधिमल धोते॥ 717॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. रे चेतन! तू सोया कबसे अब तो जाग जरा।
आदीश्वर प्रभु की पूजा कर नाशो जन्म जरा॥ 718॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. भला सोचकर करो भलाई यही साथ जाए।
बार-बार प्रभु की वाणी यह सबको समझाए॥ 719॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वसुधा भी प्रभु का विहार लख पुलकित हो जाती।
छह ऋतुओं के फल फूलों को एक साथ देती॥ 720॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. पति कहाते त्रिभुवन के पर कर्त्ता भाव नहीं।
अगाध भवदधि तिरने की हे जिनवर नाव तुम्हीं॥ 721॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. पांतु[1] माम् आदीश्वर कर्मों से रक्षा करिए।
भक्त आपका ही हूँ मैं सारे बन्धन हरिए॥ 722॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1.रक्षा कीजिए

51. डुबा न सकते कर्म यदि है उपादान मजबूत।
दोष न दो पर को प्रभु कहते बनो मुक्ति के दूत॥ 723॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'डु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. पवित्र के संग रहकर आतम पवित्र हो जाता।
जैसी संगति वैसी ही मति अपनी कर लेता॥ 724॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. लायक बनना मुझे कभी भी नायक ना बनना।
परदृष्टि तज निज आतम सम्मुख दृष्टि रखना॥ 725॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ला' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. शक्र[1] स्वयं ही स्वर्ग लोक से आकर भक्ति करे।
प्रभु के पंच कल्याण मनाकर नर बन मुक्ति वरे॥ 726॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. कल्पकाल बीते अनन्त पर अब तक भटक रहा।
है विश्वास मिला अब मुझको सम्यक् मार्ग यहाँ॥ 727॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कल्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. पंकज कीचड़ में रहकर भी नित खिलता रहता।
भक्त आपको जग में रहकर भी भजता रहता॥ 728॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

अनुपम मुख सौन्दर्य तिहारा जीती सब उपमा।
अर्घ्य चढ़ाऊँ आप चरण में लक्ष्य रहा शिव का॥

ॐ ह्रीं लक्ष्मीसुखविधायकाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

1. इन्द्र

श्लोक नं॰ 14

जिनाश्रय की महिमा

सम्पूर्ण- मण्डल- शशाङ्क- कलाकलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास् त्रिजगदीश्वर नाथमेकं
कस्तान् निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम्॥14॥

विष्णुपद छन्द

पूर्णचन्द्र की कला युक्त हे उज्ज्वल गुणवाले।
नाथ! आपके शुद्धातम के आश्रय गुण सारे॥
त्रिभुवनपति के आश्रित हैं जो उन्हें कौन रोके।
यथेष्ट विचरण करे गुणों को कहो कौन टोके॥
भक्त आपके ही आश्रित है सिद्धालय चाहे।
कर्म और नोकर्म इसे ना कोई रोक पावे॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥14॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं।

मुनीन् विपुलमत्याख्यान्, मनःपर्ययविद्युतान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं विपुलमतिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

शेर चाल

1. सम्बन्ध आपसे करे तो बन्ध ही टले।
संवर व निर्जरा करें वे मोक्ष ही चले॥
प्रभु आदिनाथ की करूँ भक्ति से अर्चना।
हो जाए भक्त अमर आज यही प्रार्थना॥ 729॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. प्रभु पूर्णिमा के चाँद हो दो ज्ञान चाँदनी।
छाई है भक्त में अज्ञान की अमा घनी॥ प्रभु...॥ 730॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पूर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. प्रण है ये आज भक्त का न दर से जाएगा।
इक बार दो प्रत्यक्ष दर्श लौट जाएगा॥ प्रभु...॥ 731॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. मण्डप रचा आराधना का नाथ आपने।
मुक्तिवधू को वर लिया इक पल में आपने॥ प्रभु...॥ 732॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मण्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. डगमगा रही है नाव तार दीजिए।
करुणा के सिन्धु अर्ज यह उद्धार कीजिए॥ प्रभु...॥ 733॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ड' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. है लक्ष्य भक्त का यही मैं आपसा बनूँ।
पाकर विदेह पद को मैं निजात्म में रमूँ॥ प्रभु...॥ 734॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. शक्ति दो नाथ ऐसी कर्म क्षय करूँ सभी।
है भावना यही मैं दर्श कर सकूँ अभी॥ प्रभु...॥ 735॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. हे शांत मूर्ति देख आपको न मन भरे।
ये नैन आपको ही एकटक निरख रहे॥
प्रभु आदिनाथ की करूँ भक्ति से अर्चना।
हो जाए भक्त अमर आज यही प्रार्थना॥ 736॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. कनकाभ देह आपकी मन को लुभा रही।
बोले बिना भी भक्त को समीप ला रही॥ प्रभु...॥ 737॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. कर्त्तव्य से अनजान था अब भान हो गया।
हे नाथ आपकी कृपा से ज्ञान हो गया॥ प्रभु...॥ 738॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. लायक नहीं था भक्त को लायक बना दिया।
ज्ञानी प्रभु ने भक्त को ज्ञायक बना दिया॥ प्रभु...॥ 739॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ला' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. कमजोर भक्त को प्रभु ने पुष्ट कर दिया।
शुद्धात्म ज्ञान सौख्य का अमृत पिला दिया॥ प्रभु...॥ 740॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. है लालसा यही प्रभु प्रत्यक्ष दर्श हो।
जिन दर्श मात्र भावना से मन में हर्ष हो॥ प्रभु...॥ 741॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ला' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. पद पंकजों में हाथ जोड़ सिर झुका रहा।
दाता हो मानकर यही मैं माँगता रहा॥ प्रभु...॥ 742॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. शुभ कर्म के बिना ही लाभ चाहता रहा।
अज्ञानता से तीव्र कर्म बाँधता रहा॥ प्रभु...॥ 743॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. भ्रान्ति से ही परद्रव्य का संचय किया प्रभो।
जो नित्य स्वात्म द्रव्य था समझा नहीं विभो॥
प्रभु आदिनाथ की करूँ भक्ति से अर्चना।
हो जाए भक्त अमर आज यही प्रार्थना॥ 744॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. गुरु मानतुङ्ग स्वामी ने प्रभु से मिला दिया।
रच स्तोत्र आदिनाथ का जीवन सफल किया॥ प्रभु...॥ 745॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तृष्णा स्वयं इच्छा से ही उत्पन्न हो रही।
इच्छा से आतमा अनन्त दुःख पा रही॥ प्रभु...॥ 746॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णास्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. त्रिजग में आपके समान कोई भी नहीं।
शुभ लक्षणों से युक्त देह आपकी रही॥ प्रभु...॥ 747॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. भुजबल से बाह्य शत्रुओं को दूर कर सके।
पर अन्तरङ्ग शत्रुओं का कुछ न कर सके॥ प्रभु...॥ 748॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वरदान वीतराग आप दे नहीं कभी।
न राग किसी से न द्वेष पालते कभी॥ प्रभु...॥ 749॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. नंदन हैं नाभिराय के श्री आदिजिन परम्।
शिवगामी आपके चरण में कोटि वन्दनम्॥ प्रभु...॥ 750॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तत्त्वज्ञ आप हो तथापि मान ना करें।
गतमान आपको जिनेन्द्र वन्दना करें॥ प्रभु...॥ 751॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. वसु द्रव्य ले प्रभु की आज अर्चना करूँ।
वसु कर्म नाश हो ये नाथ प्रार्थना करूँ॥
प्रभु आदिनाथ की करूँ भक्ति से अर्चना।
हो जाए भक्त अमर आज यही प्रार्थना॥ 752॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. लंकेश मान करके नर्क में चला गया।
मद करके चेतना को हाथ में क्या आ गया॥ प्रभु...॥ 753॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. घनघोर घटा मोह की मुझ पे घनी छाई।
हे शक्तिमान आप मिले शुभ घड़ी आई॥ प्रभु...॥ 754॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'घ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. ये यन्त्र मन्त्र तन्त्र भी मरते न बचावे।
अतएव भक्त आपकी ही शर्णा में आवे॥ प्रभु...॥ 755॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. अतिशय हुए जनम व ज्ञान देवकृत प्रभो।
मेरी नजर से आप कभी दूर ही न हो॥ प्रभु...॥ 756॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. प्रत्येक भक्त आतमा में आप ही बसे।
वे भक्त तीन योग से जिन नाम ही जपे॥ प्रभु...॥ 757॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. संधि की मुनिराज ने श्री आदिनाथ से।
दर्शन दिए प्रभु ने बेड़ियों को काट के॥ प्रभु...॥ 758॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. प्रभु आश्रिता जो आतमा परमातमा बने।
वह स्वात्म पराक्रम से चारों घातिया हने॥ प्रभु...॥ 759॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. त्रातास्त्वमेव भव्य जीव के हृदय बसे।
जिनवर के ध्यान खड्ग से सारे रिपु नशे॥
प्रभु आदिनाथ की करूँ भक्ति से अर्चना।
हो जाए भक्त अमर आज यही प्रार्थना॥ 760॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तास्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. त्रिभुवन की सारी सम्पदा तव चर्ण में रहे।
हे आदिप्रभु आप निर्ममत्व ही रहे॥ प्रभु...॥ 761॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जगजाल में फँसा हूँ नाथ बन्ध काटिए।
अब आपके समान नाथ मीत चाहिए॥ प्रभु...॥ 762॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. गणधर नरेन्द्र इन्द्र सबके नम्र माथ हैं।
प्रभु कोटि सूर्य चन्द्र से भी दीप्त आप हैं॥ प्रभु...॥ 763॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. हे दीनबन्धु आदिनाथ आपको प्रणाम।
जग छोड़ किया शाश्वता ही मोक्ष में विराम॥ प्रभु...॥ 764॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. परमेश्वरं कहें सभी मुनिराज आपको।
कभी दूर कीजिए नहीं इस खास दास को॥ प्रभु...॥ 765॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. रहते हो मोक्षधाम जहाँ नन्त सिद्ध हैं।
इक में अनन्त सिद्ध जिन विराजमान हैं॥ प्रभु...॥ 766॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. नायक हो तीन लोक के जेता हुए जिनेश।
हम वीतराग देव के ही भक्त हैं सदैव॥ प्रभु...॥ 767॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. थकते नहीं नयन प्रभु जी आप दर्श कर।
प्रथमेश आप ज्येष्ठ हो जिनधर्म तीर्थंकर॥ प्रभु...॥ 768॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. मेरु ज्यों पर्वतों में उच्च मानते मुनी।
वृषभेश जिनवरों में श्रेष्ठ हैं ध्वनि सुनी॥
प्रभु आदिनाथ की करूँ भक्ति से अर्चना।
हो जाए भक्त अमर आज यही प्रार्थना॥ 769॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. कंपायमान आपके न मन को कर सकें।
देवाङ्गनाएँ हाव भाव से भले नचें॥ प्रभु...॥ 770॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. कस्तूरी मृग की नाभि में ही ज्यों बसी रहे।
परमातमा निज आतमा में ही सदा रहे॥ प्रभु...॥ 771॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. मुक्तान् सिद्ध नन्त की आराधना करूँ।
प्रथमेश श्री जिनेश की मैं अर्चना करूँ॥ प्रभु...॥ 772॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. निग्रह किया है आपने चारों कषाय का।
मैंने लिया है शर्ण निष्कषाय नाथ का॥ प्रभु...॥ 773॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. वाणी प्रभु श्रवण से सर्व विघ्न ही टले।
ज्यों नभ में रवि रश्मि से सरवर कमल खिले॥ प्रभु...॥ 774॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. रति राग से हो दुःख औ विरति से मोक्ष हो।
जो वीतरागता धरें अखण्ड सौख्य हो॥ प्रभु...॥ 775॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. यश कीर्ति नाथ आपकी फैली त्रिलोक में।
सुर इन्द्र को नमें औ इन्द्र आपको नमें॥ प्रभु...॥ 776॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. हे तिमिर हर मुनीश आपको सदा नमूँ।
बस आदिनाथ का ही नाम मैं सदा जपूँ॥ प्रभु...॥ 777॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. संपूर्ण ज्ञान के धनी धीमान् आप हो।
द्रव्य लक्ष्मी के निधान से श्रीमान् आप हो॥
प्रभु आदिनाथ की करूँ भक्ति से अर्चना।
हो जाए भक्त अमर आज यही प्रार्थना॥ 778॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. चरणाम्बुजों की वन्दना सौभाग्य से मिले।
उन भव्य आत्माओं के संकट सभी टले॥ प्रभु...॥ 779॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रमणीय समोसर्ण की बारह सभा लगी।
प्रभु के वचन सुने सुषुप्त आतमा जगी॥ प्रभु...॥ 780॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. तोरण बँधे रंगोलियाँ दीपक सजे हुए।
कब आएँ प्रभु भक्त बाट जोहते रहे॥ प्रभु...॥ 781॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. यतिवर श्री मानतुङ्ग की भक्ति का चमत्कार।
जन-जन में हो गया था जैन धर्म का प्रचार॥ प्रभु...॥ 782॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. थेरं का अर्थ है स्थविर ज्ञान खान हैं।
ज्ञानादि गुण से वृद्ध प्रभु को प्रणाम है॥ प्रभु...॥ 783॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. इष्टं है महा मोक्ष और कुछ भी चाह ना।
दिखला दो आदिनाथ पन्थ मुक्ति धाम का॥ प्रभु...॥ 784॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष्टं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

जग छोड़ आदिनाथ के आश्रय में जो रहें।
रोके न उन्हें कर्म भी वे मोक्ष को वरें॥
प्रभु आदिनाथ की करूँ भक्ति से अर्चना।
हो जाए भक्त अमर नाथ यही प्रार्थना॥

ॐ ह्रीं भूतप्रेतादिभयनिवारणाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 15

अखण्ड ब्रह्मचर्य

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभिर्
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्॥15॥

विष्णुपद छन्द

प्रलयकाल की तीव्र वायु से पर्वत हिल जाते।
किन्तु पवन ये मेरु शिखर को हिला नहीं पाते॥
विकार पैदा करने वाली सुराङ्गना आई।
इसमें क्या आश्चर्य प्रभु का मन न डिगा पाई॥
अचल मेरु-सी थिरताधारी आदिनाथ जिनराज।
ब्रह्मचर्य व्रत अखण्ड धरकर पाया शिव साम्राज्य॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥15॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वियाणं।

दशपूर्वधरान् विश्व, सिद्धान्ताब्धिप्रपारगान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥१५॥

ॐ ह्रीं अर्हं दशपूर्वधरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. **चित्त आपके गुण चिन्तन में, मन निशदिन गुण गाता है।**
क्योंकि आप तीर्थङ्कर पदधर, पावन जीवन गाथा है॥ 785॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **स्तोत्रं भक्त पूर्ण निष्ठा से, नितप्रति प्रातः काल पढ़े।**
ज्ञान चरित्र वृद्धि हो उसकी, मोक्षमार्ग पर शीघ्र बढ़े॥ 786॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **किरण प्राप्त करके समकित की, ज्ञानसूर्य की लगन लगी।**
मिथ्यातम में सोई आतम, प्रभु सन्निधि से आज जगी॥ 787॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **महा मनोहर रूप आपका, एक बार जो लखता है।**
गौतम मुनि सम छोड़ प्रभु को, और कहीं ना जाता है॥ 788॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **त्रस होकर भी त्रास मिटी ना, अतः द्वार पर आया हूँ।**
शुद्ध सिद्ध पर्याय प्राप्त हो, यही भावना लाया हूँ॥ 789॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **यत्र-तत्र सर्वत्र घूमकर, दुर्लभता से द्वार मिला।**
नाम लिया जब मुख से मैंने, मुकुलित मन का फूल खिला॥ 790॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **दिग् दिगन्त तक फैली कीर्ति, धन्य आपकी यश कीर्ति।**
नाम स्मरण से संकट टलते, पाते भविजन सुख शान्ति॥ 791॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. तेज पुंज लख नाथ आपको, रवि पश्चिम में छिप जाता।
नयन मूँदकर भी भक्तों को, रूप आपका दिख जाता॥ 792॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. त्रिनेत्रों के धारी भगवन्, सर्व चराचर जान रहे।
इसीलिए तव वच प्रामाणिक, अक्षरशः हम मान रहे॥ 793॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. दश प्राणों से रहित आदि जिन, चेतन प्राणों से जीते।
शाश्वत जीवित रहने वाले, अनन्त सुख रस को पीते॥ 794॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. प्रशांत रूप दिगम्बर प्यारा, सद्यः जात बाल सम है।
बालक में होती कषाय पर, आप जिनेश्वर निर्मम हैं॥ 795॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. गर्भोत्सव में हर्षित होकर, देवी मङ्गल गान करे।
जिनगुण पूजा सुख की दाता, सर्व अमङ्गल नाश करे॥ 796॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. नास्तिकता तजकर आस्तिक हो, दर्श आपका पाते ही।
जिन सन्निधि से जिन हो जाते,शरण आपकी आते ही॥ 797॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नाथ सुधीभिर्पूज्य आप हैं, इसीलिए हम पूजेंगे।
एक बार जिनवच सुन लूँ फिर, कर्ण कुहर में गूँजेंगे॥ 798॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भिर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. नीलमणि की वृत्त शिला पर, समवसरण की है रचना।
धर्मसभा में दिव्यध्वनि सुन, मुझको भव से है बचना॥ 799॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तं प्रथमं आदीश्वर जिन का, निवास अष्टम मही रहे।
ज्ञानसूर्य बन उदित हुए प्रभु, कर्म उपद्रव नहीं रहे॥ 800॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. महाश्रवण श्रम मुक्त हुए हैं, अतुलबली कहलाते हैं।
कर्मबली को पल में क्षयकर, निष्कर्मा मन भाते हैं॥ 801॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. नाथ त्रिलोकी भवदधि शोषक, दुखहारक जिनदेव नमूँ।
तीन योग से अविचल होकर,आदिनाथ का नाम जपूँ॥ 802॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. गहरा यह संसार समन्दर, चारों तरफ कर्म पहरा।
फिर भी तैर तीर को पाया, धन्य-धन्य जय जिनराया॥ 803॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. पिछली निशि में पूरे सोलह, सपने देखे सुखकारी।
मरुदेवी माँ धन्य हो गई, पाकर सुत जग हितकारी॥ 804॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. ममता मोह भाव से होती, अतः आप समता धारें।
मोह क्षीण कर निर्भय होकर, पहुँच गए शिव के द्वारे॥ 805॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. मनोज्ञ रूप देख जिनवर का, अपनी सुध आ जाती है।
अहो-अहो अप्रतिम छवि को, मेरी अँखियाँ तकती हैं॥ 806॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. नर ही उस भव से विमुक्त हो,आप नराधिप हो जिनराज।
ज्ञान चेतना युक्त जिनेश्वर, तीन लोक के हो सम्राट्॥ 807॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. विमुख हुए परद्रव्यों से प्रभु, स्व सम्मुख हो सुख पाया।
तत्त्वों में शुद्धात्म तत्त्व ही, सारभूत है बतलाया॥ 808॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. कारागृह में भोज राज ने, मानतुङ्ग मुनि को जकड़ा।
मैं निर्बन्ध स्वरूपी हूँ चिन्तन से बन्धन टूट पड़ा॥ 809॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. रवि रोशनी तुमसे हारी, नित्य प्रकाशित ज्योति धरे।
बन्द नयन हैं हमें जगा दो, भक्त आपसे अरज करे॥ 810॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. मार्ग आपका सारे जग से, बिल्कुल न्यारा लगता है।
रागी और वीतरागी की, तुलना ना कर सकता है॥ 811॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मार्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. गम्य नहीं मम अल्प ज्ञान के, आदिनाथ पावन भगवन्।
चलूँ आपके बतलाए पथ, पाऊँ अक्षय सौख्य सदन॥ 812॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. कल्पकाल नन्तों बीते हैं, कैसे हो मेरा कल्याण।
यही सोचकर शरण आपकी, पाने आया हूँ निर्वाण॥ 813॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कल्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. पांडव पाँचों समता धरकर, उपसर्गों को सहन करें।
प्रभु स्मरण कर दो स्वर्गों में, तीन मुक्ति का वरण करें॥ 814॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. तरुणाई में राज्य किया फिर, मुनि बन शिव सम्राट् हुए।
भव्यों को शिव पन्थ दिखाकर, हे जिनवर जिननाथ हुए॥ 815॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. काल्पनिक यह नहीं कहानी, भक्तामर की सत्य कथा।
मानतुङ्ग स्वामी ने गाई, वृषभनाथ की शुभ गाथा॥ 816॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. ललाट तेजोमय सूरज-सा, कान्तिमान आभा बिखरी।
असंख्य नर सुर पशुगण निरखें, जब प्रभुवर की ध्वनि खिरी॥ 817॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मनन करे जो प्रभु गुणगण का,उसकी बुद्धि विकसित हो।
जो विकल्प जालों में उलझा,कभी नहीं वह प्रमुदित हो॥ 818॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रुधिर राध मल से मैला तन, तजकर भगवन् हुए विदेह।
विभाव परिणति तजूँ शीघ्र ही, पाऊँ स्वात्म चतुष्टय गेह॥ 819॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तारण-तरण कहाते स्वामी, स्वयं तिरे पर को तारे।
नरभव होता सफल उन्हीं का, जो जिनमूरत उर धारे॥ 820॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. चरणाम्बुज का ध्यान धरे जो, पलभर में अघ क्षय होता।
हृदय धरा को पावन करके, बीज मोक्ष तरु का बोता॥ 821॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. लिपि एक ब्राह्मी प्रसिद्ध है, वृषभेश्वर पुत्री के नाम।
सर्व सुता सुत छोड़ गए वन, ऐसे प्रभु को नम्र प्रणाम॥ 822॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. तारामण्डल भरा गगन में, किन्तु चन्द्रमा एक रहा।
ऋषि मुनि तारे सम जिन शशि का,मुख मण्डल अति दमक रहा॥ 823॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. चक्र चलाकर शुक्लध्यान का, विभाव अरि का हनन किया।
सभी देखते रहे प्रभु ने, शीघ्र मोक्ष में गमन किया॥ 824॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. ले लो अपनी शरण भक्त को, नन्त काल से दुखिया हूँ।
तीर्थंकरों के मुखिया हो प्रभु, यह सुनकर दर आया हूँ॥ 825॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ले' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नशा मोह मदिरा का छाया, नन्त काल से होश नहीं।
पिला दीजिए वचन-सुधा प्रभु, आप शर्ण है और नहीं॥ 826॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. आकिंचन्य धर्म के धारक, सर्व परिग्रह त्याग दिया।
चैत्र कृष्ण नवमी के दिन ही, आदिप्रभु वैराग्य लिया॥ 827॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'किं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. मंडप दश धर्मों का अनुपम, वीतराग गुण से सज्जित।
सुन्दरता लख माला डाले, मुक्तिवधू होकर लज्जित॥ 828॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. दल-दल है विकार भावों का, उसमें आतम फँस जाता।
निर्विकार प्रभु की सन्निधि से,सब विकार ही नश जाता॥ 829॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. राग भाव ही दु:ख मूल है, अत: राग क्षय कर डाला।
ज्ञान शक्ति से प्रभु ने खोला, मोक्षमहल का दृढ़ ताला॥ 830॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. ज्ञानाद्रि से फूट पड़ी है, द्वादशाङ्ग वाणी गंगा।
जिसने डूब नहाया इसमें, हुआ वही आतम चंगा॥ 831॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. शिथिल हो गईं सर्व बेड़ियाँ, कर्म और नोकर्मों की।
स्पर्श किए बिन टूट गईं सब, मानतुङ्ग श्री मुनिवर की॥ 832॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. 'खम्मामि सव्व जीवाणं' यह, सूत्र द्वेष को नष्ट करे।
जीव मात्र से क्षमा भाव हो, आदिप्रभु यह वचन कहें॥ 833॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. रंगमंच संसार समूचा, जीव नन्त पर्याय धरे।
जो पर्याय मूढ़ता छोड़े, वही सिद्ध पद प्राप्त करे॥ 834॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. चउ आराधन के स्तम्भों पर, परमानन्दी भवन बना।
वहाँ प्रभु आदीश विराजे, करते अनुभव सौख्य घना॥ 835॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. लिप्त हुआ मैं कर्म मलों से, कैसे शुद्ध दशा धारूँ।
नाथ आप ही सूत्र बता दो, तव पद में जीवन वारूँ॥ 836॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. हो परतंत्र आज तक मैंने, निजाधीन सुख ना पाया।
परम उदार आप हो स्वामी, सुनकर तव शरणे आया॥ 837॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. करुणार्णव हे वृषभनाथ प्रभु, करुणा के कुछ छीटें दो।
मुझे बुला लो हे सुखसागर, आनन्दामृत पीने दो॥ 838॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. दावानल धूँ-धूँ कर जलता, राग और द्वेषाग्नि का।
जिनपादप की छाँव मिले यह, फल पाऊँ जिन भक्ति का॥ 839॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. चित्चैतन्य चमत्कारी श्री, आदिनाथ की जय होवे।
लगा रहे उपयोग आपमें, निश्चित ही विधिमल धोवे॥ 840॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चित्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

प्रलयकाल की पवन मेरु का, शिखर हिला ना पाती है।
सुराङ्गनाएँ हाव भाव कर, तुम्हें डिगा ना पाती हैं॥
हजार अठरह शील धरें प्रभु, मेरु समान अकम्पित हैं।
ऐसे वृषभनाथ प्रभु -पद को, श्रद्धा अर्घ्य समर्पित है॥

ॐ ह्रीं मेरुवत्मनोबलकरणाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 16

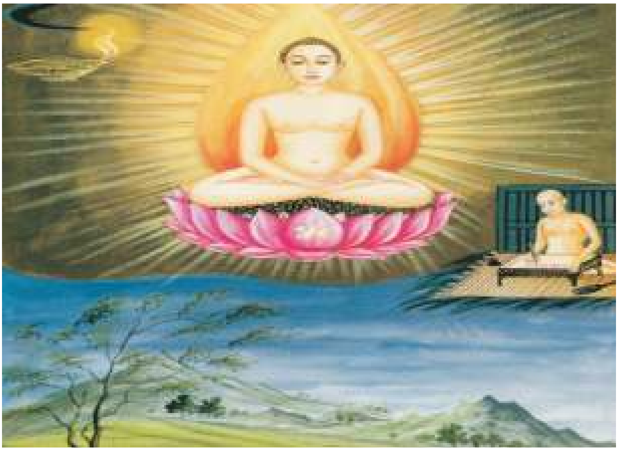

अपूर्व दीपक

निर्धूम - वर्तिरपवर्जित - तैलपूरः
कृत्स्नं जगत् - त्रयमिदं प्रकटी करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाशः ॥16॥

विष्णुपद छन्द

राग बाती और तेल शून्य प्रभु द्वेष धुएँ से दूर।
त्रिभुवन को इक साथ प्रकाशित करते हो भरपूर॥
गिरि को चला सके जो ऐसी चलती तेज बयार।
बुझा न सकती प्रभु दीपक को माने अपनी हार॥
जगत प्रकाशक अपूर्व दीपक शाश्वत हो जिननाथ।
मेरे मन को सदा प्रकाशित करते रहना आप॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥16॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो चोद्दसपुव्वियाणं।

चतुर्दशमहापूर्व, धरान् विद्याविशारदान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 16॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वधरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

सखी छन्द

1. **निर्मूल मोह क्षय करके, प्रभु सिद्धीरमणी वर के।**
नित सिद्धलोक में रहते, हम मध्यलोक से नमते॥ 841॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'निर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

2. **मैं धूप चढ़ाऊँ पद में, सब पाप नष्ट हो क्षण में।**
जग वैभव कुछ ना चाहूँ, क्या वीतराग से मांगूँ॥ 842॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **मन बार-बार यह चाहे, बतला दो शिव की राहें।**
नव पदार्थ के उपदेशक, मैं नमन करूँ भवतारक॥ 843॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **वर्चस्व आपका भारी, त्रिभुवन के हो हितकारी।**
क्षेमङ्कर आप कहाते, नहीं लौट जगत में आते॥ 844॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **तिर्यञ्च जीव भी ध्याते, क्रम से वे मुक्ती पाते।**
नर ही शिवपद को पाता, नरश्रेष्ठ प्रभु को ध्याता॥ 845॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

6. **रसना यह रटन लगाए, कब प्रभु महिमा गुण गाए।**
ना करूँ किसी की निन्दा, करूँ वीतराग जिन पूजा॥ 846॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

7. **पद्मासन से शिव पाए, वदि माघ चतुर्दशी भाए।**
प्रभु अनन्त गुण अधिकारी, श्रद्धा से धोक हमारी॥ 847॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

8. वर्धन सुख का होता है, दुख कल्मष सब धोता है।
आदीश गुणों का चिन्तन, प्रकटाता है आतम धन॥ 848॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

9. जिज्ञासा नहीं रही है, प्रभु केवलज्ञान धनी हैं।
करते जग में उजियारा, प्रभु दर्श भव्य को प्यारा॥ 849॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

10. तत्त्वों का ज्ञान कराते, सब श्रोता तव गुण गाते।
आदीश्वर स्तुत्य हमारे, हम सबके भाग्य सम्हारे ॥ 850॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

11. तैयार हुआ भक्ती को, निश्चित पाना मुक्ती को।
मैं हूँ लघु भक्त तिहारा, हे आदिनाथ जिनराया॥ 851॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

12. लवलीन आप अपने में, फिर भी दिखते सपने में।
वह मङ्गलमय ही दिन था, जब दर्श हुआ था जिन का॥ 852॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

13. मम पूर्ण मनोरथ करिए, सब मोह राग रति हरिए।
छाया अज्ञान अंधेरा, चेतन में करो सबेरा॥ 853॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।

14. शंकरः शान्ति के दाता, प्रभु शरणा मुझे सुहाता।
प्रभु नाम मन्त्र अर्चन से, स्वातम में सम सुख प्रकटे॥ 854॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. कृत्संकल्पित मैं स्वामी, अब नहीं बनूँ भवगामी।
इक या दो भव को पाकर, बन जाऊँ नन्त सुखाकर ॥ 855॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कृत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. कृत्स्नं कर्म विनशार्थं, शरणागत हूँ परमातम्।
मम अव्यय पद प्रकटा दो, सिद्धिपथ को दिखला दो॥ 856॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्नं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. जय हो आदीश जिनोत्तम, त्रिभुवन में हो सर्वोत्तम।
सब त्रेसठ पुरुष शलाका, उनमें जिनवर विख्याता॥ 857॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. मैं जगतपाल को वन्दूँ, अपने पापों को खण्डूँ।
सारे अनन्त गुण प्रकटे, दर्पण सम सब जग झलके ॥ 858॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. त्रय शत त्रेसठ मत सारे, जिनमत से हैं सब न्यारे।
प्रभु का मत जन उद्धारक, जग जीवों को सुखकारक॥ 859॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. यम भी तुमसे डरता है, नहीं निकट कभी आता है।
मृत्यु को जीत लिया है, अजरामर पद पाया है ॥ 860॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मिटता बनता रहता हूँ, चउ गतियों में भ्रमता हूँ।
आओ आदीश पधारो, भव दुख से मुझे उबारो॥ 861॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. दंभी दुनिया को देखा, हर तरफ स्वार्थ की रेखा।
अब जाऊँ कहाँ मैं स्वामी, निस्वार्थ आप गुणधामी॥ 862॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. मेरा प्रणाम स्वीकारो, मेरे अवगुण न चितारो।
श्रद्धा से भरकर पूजूँ, तव सम गुण पाने वन्दूँ॥ 863॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. कर्त्तृत्व भाव से दुख हो, कर्त्तव्य करे सो सुख हो।
मैं पूजूँ भव दुख हरिए, मम हृदय कलश सुख भरिए॥ 864॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. प्रकटी अनन्त निधि स्वामी, हो प्रसिद्ध प्रभु जगनामी।
हे नन्त ज्ञेय के ज्ञायक, जय सकल विश्व के नायक॥ 865॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'टी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. कपटी को दर्श मिले ना, आतम गुण कली खिले ना।
सब विश्व प्रभु गुण गाए, श्रद्धा से अर्घ्य चढ़ाए॥ 866॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. मम रोम-रोम पुलकित है, पाए प्रभु जग पूजित हैं।
हे आदिप्रभु उर आओ, मेरा भवचक्र मिटाओ॥ 867॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. कृषि आदिक षट् कर्मों को, प्रभु समझाते भव्यों को।
पहले शुभ कर्म कमाओ, नर जीवन सफल बनाओ॥ 868॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. गणना के योग्य नहीं हो, प्रभु अगणित गुणधारी हो।
प्रभु नन्त गुणात्मक रूप, नित शुद्ध गुणी शिव भूप॥ 869॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. जन्म्यो व मर्‍यो बहु बारी, दुख पाए हैं अति भारी।
प्रभु अव्याबाध सुखी हो, शाश्वत परमानन्दी हो ॥ 870॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म्यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नयनोत्सव आज हुआ है, प्रभु तेरा दर्श हुआ है।
हो गया जन्म मम धन्य, प्रभु पाए त्रिभुवन वन्द्य ॥ 871॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. जागूँ अब ऐसा भगवन् , कभी सुप्त न हो मम चेतन।
था नन्त काल से सोया, सोते से मुझे जगाया ॥ 872॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. तुष मास भिन्न सम जानो, जड़ चेतन भिन्न पिछानो।
संतोष सुखामृत पीओ, प्रभु कहें शाश्वता जीओ॥ 873॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मन्दार नमेरु सुन्दर, सुर बरसाते अति मनहर।
वसु प्रातिहार्य के धारी , वन्दूँ तिहुँ जग उपकारी॥ 874॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रुधिरादिक से तन मैला, तन से रति कर दुख झेला।
चैतन्य धर्म चिद्रूपी, प्रभु अनन्त धर्म स्वरूपी॥ 875॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तांत्रिक सब विस्मित होकर,प्रभु को निरखें सुध खो कर।
अहो सम्मोहित करती है, छवि सबका मन हरती है॥ 876॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. चरितार्थ किया सब जीवन, भव्यों को दें संजीवन।
उपकार अनन्त किया है, प्रभु ने सर्वस्व दिया है॥ 877॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. लिपिबद्ध न हो शब्दों से, प्रभु पूजित हो भक्तों से।
कुछ देने योग्य नहीं मैं, श्रद्धा से नाथ नमूँ मैं॥ 878॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. तात्कालिक रचना प्यारी, गुरु मानतुङ्ग की न्यारी।
हर श्लोक सु-मन्त्र स्वरूपा, म न त र सबमें सुख रूपा॥ 879॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. चट्टान कर्म की चूरी, शिवयात्रा कर ली पूरी।
अब कभी न जग में आएँ, हम भरतक्षेत्र से ध्याएँ॥ 880॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. लाचार सु-भक्त तिहारा, भव का ना दिखे किनारा।
भवदधि तट तक पहुँचा दो, मेरा उद्धार करा दो॥ 881॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ला' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. साधूनां दर्शन देकर, ऋषि मुनि ने शरणा पाकर।
निज सम ही उन्हें बनाया, शिव शुद्ध रूप प्रकटाया॥ 882॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. दीपक बाहर के जलते, पर मोह तमस ना हरते।
प्रभु ऐसा दीप जलाया, सब मिटा मोह अंधियारा॥ 883॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. पोषण करते चेतन का, रस पीते चिन्मय सुख का।
है निराबाध अनुभूति, ऐसी हो मुझे प्रतीति॥ 884॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. दीपोऽपर अपूर्व दीपक, प्रभु शुद्धातम संवेदक।
प्रभु पर शिववधू रिझाई, सिद्धालय में ले आई॥ 885॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऽप' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. करके निरस्त षड्यन्त्र, कर्मों के सारे तन्त्र।
सारा भ्रम जाल नशाया, निष्कर्म हुए शिव पाया॥ 886॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. धर समत्व ऋद्धि पाई, प्रभु शाश्वत सिद्धि उपाई।
मुझमें हो साम्य सबेरा, दुष्टाष्ट कर्म ने घेरा॥ 887॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मरुनन्दन को वन्दन है, श्रद्धा से अभिनन्दन है।
भववर्द्धक भाव नशाए, अन्तर प्रभुता प्रकटाए॥ 888॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. सिद्धान्त आपका न्यारा, सब भव्यों को हितकारा।
प्रभुवर आनन्द सरोवर, पूजूँ प्रभु महा मनोहर॥ 889॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. प्रभु नाभ्य आप कहलाये, पितु नाभिराय के जाये।
व्यवहार नयाश्रित नाता, निश्चय शुद्धात्म सुहाता॥ 890॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. थर-थर दुष्कर्म कँपे हैं, जो प्रभु का नाम जपे हैं।
पाकर प्रभुवर तव शरणा, मुझे जन्म-मरण ना करना॥ 891॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. जगदीश आपको कहते, जग जीव चरण में नमते।
स्वाभाविक सहज सरलता, जय आदिनाथ भगवन्ता॥ 892॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. दुर्गत् होती है उनकी, कुमति होती है जिनकी।
शास्त्रों में यही लिखा है, ऐसा प्रत्यक्ष दिखा है ॥ 893॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. प्रत्यक्ष पूर्ण ज्ञानी हैं, आदीश महादानी हैं।
प्रभु जैन धर्म के चालक, रथ धर्मतीर्थ संचालक॥ 894॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. हे कालजयी जगजेता, हो प्रमुख धर्म के नेता।
परिवर्तन पंच नशाए, भव-अन्तक आप कहाए ॥ 895॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. शतशः प्रभु नमन हमारा, वृषभेश नाम अति प्यारा।
हे त्रिविध कर्म मल नाशी, पुरुदेव आप शिववासी॥ 896॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

अनुपम दीपक तम नाशे, प्रभुवर त्रिभुवन परकाशे।
पद में पूर्णार्घ्य चढ़ाऊँ, प्रभु आरति कर हर्षाऊँ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवशङ्कराय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 17

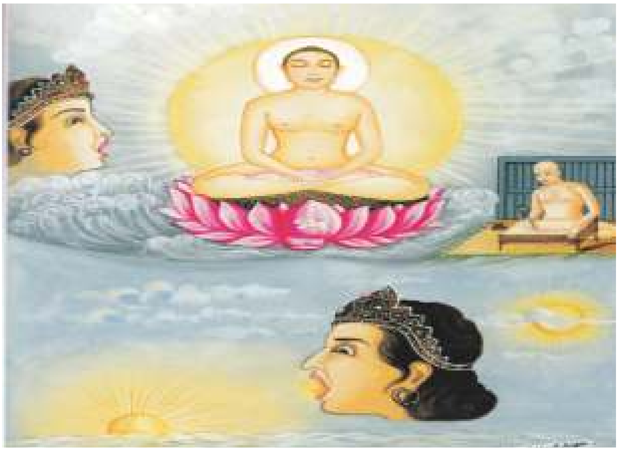

अपूर्व सूर्य

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर - निरुद्ध - महाप्रभावः
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र! लोके॥17॥

विष्णुपद छन्द

अस्त कभी ना होता जिनरवि ग्रसे न राहु प्रबल।
छिपा न पाते तेज आपका कोई बादल दल॥
युगपत् तीनों लोक प्रकाशी पूर्णज्ञान रवि आप।
गगन सूर्य से भी अतिशायी महिमाशाली नाथ॥
कर्म राहु से ग्रसित ज्ञान मम शक्ति दो भगवान।
विभाव घन से छिपे आत्म को प्रकट करूँ धर ध्यान॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥17॥

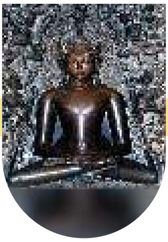

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं।

अष्टमहानिमित्तांग, कुशलान् सन्मुनीश्वरान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 17॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टांगमहानिमित्तकुशलेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अडिल्ल छन्द

1. नास्तिकता को तजकर प्रभु का दर्श कर।
तीन योग से पूज रहा वह हर्ष धर ॥
भक्तामर की महिमा अगम अपार है।
आदिप्रभु को वन्दन बारम्बार है॥ 897॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नास्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. तंत्र मन्त्र कुछ काम ना आ पाते हैं।
अन्त समय में कोई बचा न पाते हैं॥भक्ता...॥ 898॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. कनक कान्ति से अधिक कान्ति जिन देह की।
छवि निरख मम लगी लगन शिव गेह की॥भक्ता...॥ 899॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. दारुण दुख भोगा है मैंने राग से।
नाता जोड़ा अब प्रभु आदिनाथ से॥भक्ता...॥ 900॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. चिन्तन से भी दूर हो गए आप हैं।
अचिन्त्य जिनवर आप सदा निष्पाप हैं॥भक्ता...॥ 901॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. दुर्गम है वृषभेश गुणों का चिन्तवन।
आप सिवा अब कहीं न मन करता रमण॥भक्ता...॥ 902॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. पर्यंकासन से ही मुक्त हुए प्रभो।
गिरि कैलास प्रसिद्ध हुआ तुमसे विभो॥भक्ता...॥ 903॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. दयामयी दूती को यह संदेश दे।
मुक्तिवधू से कहना वरने आ रहे॥
भक्तामर की महिमा अगम अपार है।
आदिप्रभु को वन्दन बारम्बार है॥ 904॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. सिद्धशिला पर आप विराजित हो गए।
संसारी के नयन अगोचर हो गए॥भक्ता...॥905॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. नव प्रभात-सी नई किरण उग आई है।
जबसे जिनवर शर्ण आपकी पाई है॥भक्ता...॥906॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. राजर्षि ब्रह्मर्षि कहते आपको।
शुद्ध ब्रह्म हो मिटा दिया भवताप को॥भक्ता...॥907॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. हुलास मेरे मन में आज पूजन कर।
स्वात्म असंख्य प्रदेश पुलकित वन्दन कर ॥भक्ता...॥908॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. हे गम्भीर धीर वीर जिनराज जी।
करूँ आरती प्रभुवर आदिनाथ की॥भक्ता...॥909॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. यः स्मरेत् आदीश्वर जिन को सौख्य हो।
दोष मिटें उसके सारे ग्रह सौम्य हो॥भक्ता...॥910॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. स्पन्दन प्रभु के नयनों का होता नहीं।
परमौदारिक देह कभी थकता नहीं॥भक्ता...॥911॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

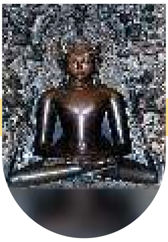

16. संतुष्टी हो जाती प्रभु को देखकर।
और न कोई सुहाय जिनवर को लखकर॥
भक्तामर की महिमा अगम अपार है।
आदिप्रभु को वन्दन बारम्बार है॥912॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष्टी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. कर्मभूमि के पूर्व तीजे काल में।
प्रभु जन्मे औ मोक्ष गए उस काल में॥भक्ता...॥913॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. रोग मुक्त होने का यही उपाय है।
जिन वचनामृत औषध जो भी पाय है॥भक्ता...॥914॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. हर्षित हो जिन-दर्शन जिनने पा लिया।
द्रव्य-भाव रागादि मल को धो दिया॥भक्ता...॥915॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. समवसरण में भव्य जीव ही आ रहे।
आदिप्रभु की पूजा से यश पा रहे॥भक्ता...॥916॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. हर्ष भाव से आदिप्रभु की जय उच्चरें।
वह अन्तर्यात्री बनकर निज में विचरें॥भक्ता...॥917॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. सात माह दिन आठ बाद विधि मिल गई।
नृप श्रेयांस गृह प्रभु पारणा हो गई॥भक्ता...॥918॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. युगारम्भ में मुक्ति द्वार खोला है।
भक्तों ने भक्ति से जय-जय बोला है॥भक्ता...॥919॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. गम्य नहीं छद्मस्थों के प्रभु आप हैं।
कभी-कभी सपने में दिखते आप हैं॥
भक्तामर की महिमा अगम अपार है।
आदिप्रभु को वन्दन बारम्बार है॥ 920॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. पज्जुवासं[1] जिनवर की मैं करता हूँ ।
तीव्र पुण्य से आज अर्चना करता हूँ ॥भक्ता...॥921॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पज्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. महा जलोदर रोग भक्ति से नष्ट हो।
विधान करके सब भविजन सन्तुष्ट हो॥भक्ता...॥922॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. गन्धोदक की वृष्टि रिमझिम होती है।
प्रभु विहार में सुरियाँ प्रभु गुण गाती हैं॥भक्ता...॥923॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. शांति मिलती प्रभु की दिव्य छवि लखकर।
अनन्त गुण भण्डार प्रभु जी जग हितकर॥भक्ता...॥924॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. जीवानां शरण्यः शरणा दे सबको।
धनी निर्धनी का कुछ भेद नहीं जिनको॥भक्ता...॥925॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. भोक्ता बुद्धि छोड़ निजातम भोगकर।
शुद्ध हुए जग के नाते सब तोड़कर॥भक्ता...॥926॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. धरा करें सुर समतल कई योजनों तक।
प्रभु विहार में बहे पवन भीनी महक॥भक्ता...॥927॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. तीन योग से उपासना

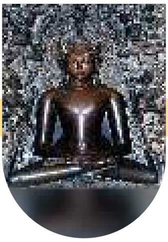

32. रोष भाव तज कर्मशत्रु कैसे तजे।
अचरज है यह सोच प्रभु हम पूज रहे ॥
भक्तामर की महिमा अगम अपार है।
आदिप्रभु को वन्दन बारम्बार है॥ 928॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. दश हजार मुनि संग आपके शिव गए।
श्री कैलास गिरिवर को पावन किए॥भक्ता...॥929॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रण में योद्धा ढाल पहन रक्षा करें।
ध्यान कवच धर मुनि कर्मों का क्षय करें ॥भक्ता...॥930॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. निरुपम हो प्रभु उपमाओं से मुक्त हो।
परमानन्द कक्ष में नित्य विराजित हो॥भक्ता...॥931॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. रुक जाएगी इक दिन तन की श्वास भी।
तब तक बसो हृदय में अरजी दास की॥भक्ता...॥932॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. शुद्ध हुए सारे विकार का नाश कर।
निराबाध निर्बन्ध हुए सुख प्राप्त कर॥भक्ता...॥933॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. मनवाञ्छित पाता भक्तामर पाठ से।
रोगी होए निरोग मन्त्र के जाप से॥भक्ता...॥934॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. हाथ जोड़कर करता हूँ हार्दिक नमन।
हो जाऊँ मैं स्वस्थ मोह का हो वमन॥भक्ता...॥935॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. प्रबल प्रभावी तीन लोक में आदि जिन।
व्यर्थ रहा यह जीवन प्रभु की भक्ति बिन॥भक्ता...॥936॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. भाव-भक्ति के बिन पढ़ना बेकार है।
प्रभु भक्ति ही मुक्ति का आधार है॥
भक्तामर की महिमा अगम अपार है।
आदिप्रभु को वन्दन बारम्बार है॥ 937॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. वः अर्थात् आपके ही हम भक्त हैं।
कहा आपने निश्चय से हम मुक्त हैं॥भक्ता...॥938॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. सूर्योदय के समय प्रभु ने जन्म लिया।
तीन लोक में उस पल सबको सुख मिला॥भक्ता...॥939॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सूर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. याद आपकी हर पल नाथ बनी रहे।
श्रद्धा आप चरण में नित्य घनी रहे॥भक्ता...॥940॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. रतिपति[1] भी प्रभु आगे हार मानता।
नाम आपका सर्व जीव को तारता॥भक्ता...॥941॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. शास्ता आप कहाते अनुशासन रखें।
निजानुशासन से पर भी शासित रहे॥भक्ता...॥942॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. अतिशायि प्रभु चौंतिस अतिशय युक्त हैं।
पर आकर्षण से जिनराज विमुक्त हैं॥भक्ता...॥943॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. महन्त आदिनाथ हमारे साध्य हो।
मैं आराधक आप परम आराध्य हो॥भक्ता...॥944॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. हितेच्छु आतम हित हेतु वन्दन करे।
दिव्य द्रव्य ले श्रद्धा से अर्चन करे॥भक्ता...॥945॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. कामदेव

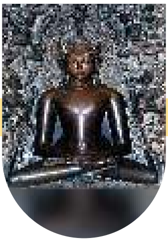

50. माया काया क्षयकर शिवनारी वरी।
इसीलिए कहलाते मुक्ती भरतारी॥
भक्तामर की महिमा अगम अपार है।
आदिप्रभु को वन्दन बारम्बार है॥ 946॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. सिद्धेश्वर की अर्चना सुख देती है।
आगत कष्टों को पल में हर लेती है॥ भक्ता...॥947॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. मुकुटों की मणि जिन प्रभाव से चमकती।
वीतराग की महिमा मन को मोहती॥ भक्ता...॥948॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. नीलकमल सम नयन प्रभु के मनहारी।
पूजन कर हर्षित हो सर्व नर-नारी॥ भक्ता...॥949॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. नरेन्द्र भी आ आदिप्रभु को पूजता।
प्रभु भक्ति बिन जीव भवोदधि डूबता॥ भक्ता...॥950॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्द्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. लोकालोकालोकित होते ज्ञान में।
फिर भी रहते मगन प्रभु जी स्वात्म में॥ भक्ता...॥951॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. केवलज्ञान कृष्ण फाल्गुनी ग्यारस को।
शुक्लध्यान से चार घातिया नाश हो॥ भक्ता...॥952॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'के' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

अपूर्व जिनरवि कर्म राहु से ग्रसित ना।
अर्घ्य चढ़ाऊँ प्रभु चरणों में मुदित मना॥
भक्तामर की महिमा अगम अपार है।
आदिप्रभु को वन्दन बारम्बार है॥

ॐ ह्रीं पापान्धकारनिवारणाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 18

अपूर्व चन्द्रमा

नित्योदयं दलितमोह - महान्धकारं
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्व - शशाङ्कबिम्बम्॥18॥

विष्णुपद छन्द

अद्भुत है मुखचन्द्र आपका नित्य उदित रहता।
मोह महान्ध मिटाने वाला राहु न ग्रस सकता॥
मेघ आवरण रहित नित्य प्रभु जगत प्रकाशक आप।
अनन्त कान्ति युक्त जिनेश्वर शान्ति विधायक नाथ॥
मेरे सम्यक् श्रद्धा नभ के चाँद निराले हो।
पूर्णज्ञान की कला युक्त भविजन को प्यारे हो॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥18॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वणइड्ढिपत्ताणं।

विक्रियर्द्धिपरिप्राप्तान्, संयतान् नाकिपूजितान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं विक्रियर्द्धिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

दोहा

1. **निर्मद होकर ही प्रभो, ऊँचे उठे मुनीश।**
आदिनाथ जिनदेव के, धरूँ चरण में शीश॥953॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **नित्योदित हो आदि जिन, बहे साम्य रसधार।**
कोटि रवि शशि सम द्युति, महिमा अपरम्पार॥954॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **दया पूर्ण चर्या करें, आदि जिनेश महान।**
करें नाम का जाप जो, बन जाए भगवान॥955॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **हृदयंगम प्रभु वचन को, जो भी करें पुमान्।**
दोष अठारह मुक्त हो, होए नन्त गुणखान॥956॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **दशलक्षण हैं धर्म के, धारे श्री मुनिराज।**
मुनि के धर्म प्रभाव से, हुई सर्व जयकार॥957॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **लिप्त नहीं प्रभु भक्त से, कमल भिन्न ज्यों नीर।**
अनासक्त होकर प्रभो, हर लेते भव पीर॥958॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **तनिक परिग्रह भी रखें, उसे विकल्प सताए।**
इक चिनगारी आग से, सारा वन जल जाए॥959॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मोहनीय सब कर्म में, मुख्य कहा सरदार।
वृषभनाथ पुरुदेव जी, सर्व जगत सरताज॥960॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. हर्त्ता दुख के आप ही, सुख कर्त्ता जिनराज।
आप शरण में हूँ खड़ा, सफल करो मम काज॥961॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. महावीर बन आपने, किया मोह पर वार।
बिना शस्त्र निज ध्यान से, हुई कर्म की हार ॥962॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. महान् हो तिहुँ लोक में, मद माया से दूर।
जो विभाव का क्षय करे, वह ही है अति शूर॥963॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. धन कुबेर रचना करे, समवसरण की श्रेष्ठ।
प्रथम तीर्थङ्कर राजते, कमलासन उत्कृष्ट॥964॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. काया रहित हुए प्रभो, ज्ञान शरीरी आप।
आदिप्रभु की अर्चना, करे दूर सब ताप॥965॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. परम्परा जिनधर्म की, प्रथम चलाई आप।
प्रतिपल हित की भावना, रखते श्री जिननाथ॥966॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. गहरे पैठे स्वात्म में, शिवरमणी के काज।
मुक्ति को पाकर प्रभो, हुए मोक्ष सम्राट्॥967॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. नाथ अगम्यं सिद्ध हो, जान सके ना अज्ञ।
जान रहे प्रत्यक्ष ही, केवलज्ञानी विज्ञ॥968॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म्यं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. **न**मस्कार के योग्य हो , अचिन्त्य महिमा युक्त।
अत: नमोऽस्तु आपको, मोक्ष तत्त्व संयुक्त॥969॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. **रा**जा रंक सभी भजें, झुक-झुक करें प्रणाम।
नाथ आपके द्वार पर, धनी निर्धनी समान॥970॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. **हु**आ अभी तक मैं दुखी, क्योंकि मिले ना आप।
अनेक भव के पुण्य से, मिले आदि जिनराज॥971॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. **व**क्र बुद्धि जो धारते, आत्मिक सुख ना पाए।
जाप पाठ कुछ भी करे, धर्म न सच्चा होए॥972॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. **द**रिद्र भी पढ़ स्तोत्र को, बने धर्म धनवान।
जड़ धन की क्या बात है, निश्चित हो भगवान॥973॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. **न**यनोत्सव कब आएगा, निरखूँ जिन छवि शान्त।
भूला भटका मैं प्रभो, पाऊँ मुक्ति प्रान्त॥974॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. शुभ: पुण्य**स्य** कहा गया, सूत्र ग्रन्थ के मध्य।
शुभ भावों से पुण्य हो, कहें मुनि जग वन्द्य॥975॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. **न**भ में दुन्दुभि बज रहे, सुरगण करें प्रचार।
विहार कर प्रभु आ रहे, तजो मोह उठ जाग॥976॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वाचन बहुत किया प्रभो, घटा न किञ्चित् पाप।
पाचन हो आचरण हो, यही भावना नाथ॥977॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. रिक्त रहा गुण कोष से, दोषों से परिपूर्ण।
अठरह दोषों में प्रभो, हुआ न इक भी दूर ॥978॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. दाता जग में श्रेष्ठ जिन, दिया ज्ञान का दान।
क्षायिक नव लब्धि महा, रत्नों से धनवान॥979॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. नन्त गुणानां खान हो, वन्दन करूँ जिनाय।
हम संसारी दोष युत, पल-पल सुख छिन जाय॥980॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. विजयी होकर आपने, शिवपुर किया प्रवेश।
भव्यों के कल्मष हरें, चन्द्र समान जिनेश॥981॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. भ्रान्ति मिटी मिथ्यात्व की, जिनशासन को पाय।
सर्व प्रियङ्कर वृषभ जिन, सबको नाम सुहाय॥982॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. जलज रहे जल भिन्न ज्यों, त्यों पर से निर्लिप्त।
निजाधीन सुख के धनी, जिनवर परम पुनीत॥983॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तेज युक्त तन आपका, किन्तु न तन से राग।
मात्र आत्म संवेदना, करें आदि जिनराज॥984॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. तलाश जिनकी थी मुझे, वही मिले जिनदेव।
आश हुई मम पूर्ण अब, बनूँ नाथ स्वयमेव॥985॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. वनिता धन सुत औ सुता, छोड़ सर्व परिवार।
आदिनाथ प्रभु संग में, दीक्षित चार हजार॥986॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मुक्त पुरुष युग में प्रथम, हुए आपके पुत्र।
अनन्तवीर्य जिन को नमूँ, पाने मुक्ति सूत्र॥987॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. खास दास की अरज है, अक्षय सुख हो प्राप्त।
बन्धोदय जड़ कर्म का, होवे पूर्ण समाप्त॥988॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'खा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. मुखाब्ज प्रभु का शोभता, लज्जित रवि का तेज।
प्रथम देव वृषभेश को, नित्य नमूँ सिर टेक॥989॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ब्ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. मन मयूर मम झूमता, ज्ञानमेघ प्रभु देख।
भक्त अनेकों आपके, वृषभनाथ प्रभु एक॥990॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. नवधा भक्ति कर रहे, नृप श्रेयांश औ सोम।
जातिस्मरण उनको हुआ, पुलकित तन के रोम॥991॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. कल्पकाल से कर रहा, नाथ प्रतीक्षा भक्त।
श्रद्धा गृह मम आईए, करिए जग से मुक्त॥992॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल्प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. कान्ति आपके देह की, जग से न्यारी नाथ।
आप शरण अब मिल गई, पा जाऊँ परमार्थ॥993॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. तिमिरारि वृषभेश को, जो पूजे मन लाए।
परमारथ सुख प्राप्त हो, भवसागर तिर जाए॥994॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. विफल रहा अब तक प्रभो, मिला न मुक्ति राज।
शिवसुख पाने आ गया, नाथ शरण में आज॥995॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. उद्योगी आरम्भ औ, संकल्पी व विरोध।
चउ हिंसा का त्याग कर, कर लूँ अन्तर्शोध॥996॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तपसी जन भी आपका, करते अहर्निशि ध्यान।
निजाधीन सुख प्राप्त कर, होने को निष्काम॥997॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. परित्यज्य को त्याग कर, स्व में स्थित हो आप।
स्वात्म ध्यान कर शिव गए, आदिनाथ ऋषिनाथ॥998॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यज्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. जन्म-मरण कर थक गया, आया अब प्रभु पास।
नाम रटूँ दिन-रात मैं, भक्त आपका खास॥999॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. गलती की जो पूर्व में, खेद मुझे दिन-रात।
पड़ूँ न अब भ्रम जाल में, यही नाथ अरदास ॥1000॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. दशा भक्त की देखकर, करिए कृपा जरूर।
सिद्धदशा अब प्राप्त हो, विनती हो मंजूर ॥1001॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. पूर्ण मुक्ति से पूर्व जिन, चित्स्वरूप में लीन।
भक्त निवेदन कर रहा, सर्व पाप हो क्षीण॥1002॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पूर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. वस्त्र अस्त्र ना शस्त्र है, रहित अठारह दोष।
शान्त छवि लख आपकी, मन में हो संतोष॥1003॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. शमन किया दुर्भाव का, स्वभाव से भरपूर।
नन्त वीर्य के हो धनी, आदिप्रभु अति शूर ॥1004॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. शांत युक्त कर वार्ता, किया कर्म का अन्त।
बिना क्रोध असि हाथ ले, जपा शान्ति का मन्त्र॥1005॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कमल खिले तालाब में, सूर्य योजनों दूर।
भव्य कमल यह खिल रहा, नाथ आप अति दूर ॥1006॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. बिम्ब दर्श से निधत्ति औ, कर्म निकाचित नष्ट।
जिन-दर्शन महिमा अगम, लिखने को ना शब्द॥1007॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बिम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. बंदीगृह में बैठकर, लिखा गया यह स्तोत्र।
दिगम्बरी श्वेताम्बरी, पढ़े भक्त सर्वत्र॥1008॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

अनुपम शशि को नित नमूँ, हो विभाव मम नाश।
ले आया पूर्णार्घ्य मैं, चढ़ा रहा जिनराज॥

ॐ ह्रीं चन्द्रवत्सर्वलोकोद्योतनकराय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 19

सूर्य चन्द्र से अधिक प्रकाशी

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा
युष्मन् मुखेन्दु दलितेषु तमःसु नाथ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके
कार्यं कियज्जलधरै - र्जलभारनम्रैः॥19॥

विष्णुपद छन्द

नाथ आपका मुख मण्डल जब तम का नाशक है।
तब दिन में रवि रात्रि में शशि क्यों आवश्यक है॥
फसल धान्य की पकी हुई जब खेतों में चउ ओर।
तब जलपूरित मेघ व्यर्थ जो शोर मचाते घोर॥
मुझे प्रयोजन मात्र आपसे जग से कुछ ना काम।
आत्म प्रकाशी आदीश्वर को बारम्बार प्रणाम॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥19॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं।

विद्याधरान् प्रलब्धर्द्धीन्, विश्वतत्त्वोपदेशकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 19॥

ॐ ह्रीं अर्हं विद्याधरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

विष्णुपद छन्द

1. **किंकिणी आदिक वाद्य बज रहे सुरगण के द्वारा।**
आदिप्रभु के विहार में हो हर्षित जग सारा॥1009॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'किं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **शर्मिन्दा हूँ नाथ कर्म मल से मैं गन्दा हूँ।**
पूर्णज्ञान चक्षु न खुले जिनवर मैं अन्धा हूँ॥1010॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **वस्तु स्वरूप विचार मुनि ने परीषह सहन किए।**
पूर्णज्ञान पाकर अनन्त गुण प्रभु ने प्रकट किए॥1011॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **रीत भक्ति की मैं ना जानूँ मैं हूँ नाथ अबोध।**
समीपता पाकर जिनवर की जागा अन्तर्बोध॥1012॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'री' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **गुणिषु प्रमुदित भाव रहे नित यही भावना है।**
ईर्ष्या मद मात्सर्य नशें बस यही कामना है॥1013॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **शक्तिमान होकर भी भगवन् सदा शान्त रहते।**
इसीलिए तो बुधजन सारे तव पद में नमते॥1014॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **शिविका नाम सुदर्शन जिस पर बैठ चले वन में।**
प्रथम उठाते मनुज बाद में ले ली सुरगण ने॥1015॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. नायक धर्मतीर्थ के स्वामी ज्ञायक हो मेरे।
इक दो भव में मिटा दीजिए मेरे भव फेरे॥1016॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. वह्नि जलती राग-द्वेष की नन्त काल से नाथ।
मुझे बचा लो कर्म आग से मेरे आदिनाथ॥1017॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह्नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. विनयशील ही प्रभुवर का प्रत्यक्ष करे दर्शन।
पतझड़ को भी भक्त बना देता पावन मधुवन॥1018॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. वनिता वस्त्र सभी वस्तुएँ तजकर दीक्षा ली।
थिर हो जाऊँ स्वातम में मैंने यह शिक्षा ली॥1019॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. स्वर्ग सुखों की नहीं कामना बनूँ स्वयं परमेश।
चिन्मय मूर्ति रूपादिक से रहित प्रथम वृषभेश॥1020॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. ताज राज कुछ काम न आता निज में शान्ति अपार।
जड़ वैभव सब विभाव जाने क्षण में त्यागे आप॥1021॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. वादी सारे जीत लिए हैं परम ज्ञान द्वारा।
मिथ्यातम को मिटा मिटाकर करते उजियारा॥1022॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. थी आयुष्य वर्ष चौरासी लाख पूर्व प्रभु की।
सफल किया नर जन्म अन्त में पाकर के मुक्ती॥1023॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'युष्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. मन्त्र जाप करने वालों के मन में आप बसे।
भक्ति की शक्ति से क्षण भर में संताप नशे॥1024॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. मुरली वीणा वाद्य बज रहे मधुर-मधुर नभ में।
देव बुलाते आओ भविजन प्रभु के चरणन में ॥1025॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. नखेन्दव: प्रभु के चरणों के नख चन्दा माने।
मुनिवर जिनके तन को उपमा देकर गुण गाएँ॥1026॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'खेन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. दुष्कर्मों का दोष नहीं कुछ कर्म सभी जड़ हैं।
उपादान निज का सम्भालो कहते श्री जिन हैं॥1027॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. दम्भ द्वेष अवगुण आत्मा की शान्ति हरते हैं।
द्वेष निमित्तों से विज्ञानी सुदूर रहते हैं॥1028॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमावन्त 'द' बीजाक्षर संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. अलिगण मँडराते सुमनों पर सुगन्ध कण पाने।
भव्य अलिगण आप निकट आए जिनगुण गाने॥1029॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तेरे-मेरे के घेरे में भव के फेरे हों।
मैं औ भगवन् दो ही बस मेरी दुनिया में हों॥1030॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. सत्त्वेषु मैत्री करके ही निज से मैत्री हो।
प्रभु कहते वह ही भव्यात्मा मुक्ति यात्री हो॥1031॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तरुवर भी प्रभु सन्निधि पाकर शोक रहित होता।
कालान्तर में वह तरुवर भी जिनवर हो जाता॥1032॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. नमो नमः श्री आदीश्वर जिन आओ मम उर में।
तोरणद्वार बँधाए मैंने श्रद्धा आँगन में॥1033॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. सुगन्ध युत जल बरसा कर सुरगण हर्षाते हैं।
यह देवोपनीत अतिशय कर प्रभु को ध्याते हैं॥1034॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. नारायण प्रतिनारायण चक्री बलधर सारे।
श्री देवाधिदेव की वाणी निज उर में धारे ॥1035॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. थलपति भी जिनचरणों में आ शीश नवाते हैं।
सारी जगती के जिनवर आराध्य कहाते हैं॥1036॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. हो निष्णात आप सिद्धि का द्वार खोलने में।
अतः युगादि में तप करने चले प्रभु वन में॥1037॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'निष्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. पन्थी बनकर मोक्षनगर तक अविरल चलना है।
पथ में प्रभु का नाम जाप कर कहीं न रुकना है॥1038॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नवीन स्वर्ण कमल की रचना सुरगण ही करते।
विहार में कमलों के चउ अंगुल ऊपर चलते॥1039॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. शान प्रभु की अजब निराली सारे जग से भिन्न।
नहीं किसी पर प्रसन्न होते नहीं किसी से खिन्न॥1040॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. लिखने में गुण अयोग्य प्रभु के क्योंकि अनन्त रहें।
शब्द रहे संख्यात मात्र हम कैसे गान करें॥1041॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. वसु विधि कर्म नाशकर सम्यक्त्वादिक गुण पाए।
क्षायिक ज्ञानादिक गुण पाने चरण-शरण आए॥1042॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. नव जागृति पाई भव्यों ने दर्श किए जब नाथ।
आप दर्श के पहले भगवन् मैं था स्वयं अनाथ॥1043॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. शाकिनी डाकिनी शान्त रहे प्रभु तव समीपता से।
करुणासागर से सब प्राणी अभयदान पावे॥1044
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. हो निर्लिप्त आप में शान्ति का झरना बहता।
डूब- डूबकर ऋषियों का आतम पाता समता॥1045॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. निन्दित कार्य कभी ना करना नश्वर सुख पाने।
गुरु समझाते धीरज रखना अनन्त सुख पाने॥1046॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. जीवन-मुक्ति पाकर फिर शाश्वत सिद्धि पाते।
सादि नन्त काल वहाँ रहते लौट न प्रभु आते॥1047॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. वरदानी प्रभु-कृपा छाँव में मुझको रहना है।
अनुकूल-प्रतिकूल क्षणों में समता रखना है॥1048॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. लोचन विस्तृत हैं प्रभुवर के लोकालोक दिखे।
प्रभु का अवलोकन करने से सारे पाप मिटे॥1049॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. केशरिया-केशरिया गाते भाव नहीं शुभ हो।
बिन विशुद्ध भावों के कैसे आतम को सुख हो॥1050॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'के' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. कार्य मुक्ती का करके नरभव धन्य किया स्वामी।
परमानन्दी सुख पाया है हे अन्तर्यामी॥1051॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कार्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. स्वयं हुए निज विशुद्ध भावों से आदीश जिनेश।
शुक्लध्यान के द्वारा काटे आठों कर्म क्लेश॥1052॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. किरण पूर्णज्ञान सूरज की अनन्त ही होती।
प्रभु कहते छद्मस्थों को इक किरण नहीं मिलती॥1053॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. यज्ज्ञानामृत पिला दिया जिनको वे अमर हुए।
जिनवच सुधा नहीं पी जिसने जन्मे और मरे ॥1054॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यज्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. जयवन्तों आदीश्वर स्वामी देव करें जयकार।
जय -जय के नारों से संचित करते पुण्य अपार ॥1055॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. ललक लगी है समवसरण प्रत्यक्ष देखने की।
प्रभु दर्शन कर आश लगी अब भवदधि तिरने की॥1056॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. धर्मेश्वर प्रभु आदिनाथ जी सबमें परम प्रधान।
गणधर ऋद्धीधर भी नमते मानें अपना प्राण॥1057॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. नरैर्नुति स्तुति प्रभु की हो गुण महिमा गा करके।
मणि रत्नों से पूजन करते वाद्य बजाकर के ॥1058॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रैर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. जहाँ-जहाँ प्रभु विहार करते भूतल हो पावन।
प्रभु सन्निधि से लगता मानो बरस रहा सावन॥1059॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. ललचाया है मेरा मन इक बार दर्श कर लूँ।
मानतुङ्ग मुनिवर के जैसे नाथ तुम्हें पा लूँ॥1060॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. भाषा अर्द्धमागधी में प्रवचन भविजन सुनते।
निज स्वभाव के बल पर ही वे भवसागर तिरते॥1061॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. रसास्वाद ले निजातमा का जड़ का स्वाद नहीं।
ऐसे योगीजन ही पाते निश्चित मोक्ष मही॥1062॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. नत मस्तक हो स्वयं विज्ञ प्रभु पद में झुक जाते।
विनयवान होकर ही वे सिद्धालय तक जाते॥1063॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. नम्रै :लिखकर मानतुङ्ग मुनि नम्रीभूत हुए।
कारागृह में आदिप्रभु के दर्शन उन्हें हुए॥1064॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म्रै:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

रवि शशि का क्या काम प्रभु मुख तम का नाशक है।
अर्घ्य चढ़ाऊँ आदीश्वर को जो दुखहारक हैं॥

ॐ ह्रीं सकलकालुष्यदोषनिवारणाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं० 20

श्रेष्ठ ज्ञानी

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु।
तेजो स्फुरन् मणिषु याति यथा महत्त्वं
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि॥20॥

विष्णुपद छन्द

स्वाभाविक ज्योतिर्मय मणि में जो कान्ति होती।
चमकदार वह काँच खण्ड में कभी नहीं होती॥
जो कैवल्यज्ञान प्रभुवर में स्व-पर प्रकाशी है।
वैसा ज्ञान नहीं हरिहर में ये जगवासी हैं॥
प्रभु ज्ञान का अनन्तवाँ भी भाग नहीं इनमें।
कैसे तुलना करे अल्पमति जन में और जिन में॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥20॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं।

यतीन्द्रांश्चारणान् पोतसमान् नृणां भवार्णवे।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 20॥

ॐ ह्रीं अर्हं चारणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. **ज्ञानानन्दी ज्ञान शरीरी, आदिनाथ प्रभु को वन्दन।**
असंख्य आत्मप्रदेशों से मैं, करूँ भाव से अभिनन्दन॥1065॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज्ञा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **परमानंदी आदिनाथ प्रभु, कितने अच्छे लगते हो।**
शब्द अल्प हैं गुण गाने को, क्यों ना पास बुलाते हो॥1066॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **यथायोग्य मैं भक्ति करता, किन्तु दर्श बिन तड़प रहा।**
एक बार छवि दिखला दो प्रभु, करे निवेदन भक्त यहाँ ॥1067॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **थाह नहीं मैं पाता भगवन् , नन्त आपके गुणगण का।**
अत: करूँ मैं मात्र अर्चना, लक्ष्य रहा मम शिवपुर का॥1068॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'था' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **समत्व की पावन धारा से, ममत्व का सब पंक धुला।**
अंतर्दृष्टि करने से ही, भविजन हित शिवद्वार खुला॥1069॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **कायिक धर्म कार्य करके ही, धर्मी निज को मान लिया।**
तीन योग से धर्म करो यह, प्रभु ने सबको ज्ञान दिया॥1070॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **विद्या का सागर लहराता, अनन्त गुणमय मीन बसे।**
ऐसे पूर्णज्ञान सिन्धु प्रभु, आदीश्वर को नमन घने॥1071॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. **भा**रत की इस वसुन्धरा पर, मानतुङ्ग मुनिराज हुए।
धन्य पूत 'विद्यासागर' गुरु, सर्व जगत से वन्द्य हुए॥1072॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. **ति**ल तुष मात्र परिग्रह दोनों, जिनके पास नहीं रहता।
ऐसे गुरु प्रभु के अनुगामी, सारा जग उनको नमता॥1073॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. **कृ**ष्ण अशुभ लेश्या हो जिसकी, प्रभु पूजन का भाव न हो।
शुभ लेश्या धर सद्दृष्टि को, अर्चन से जग चाह न हो॥1074॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. **ता**रक हैं उनके प्रभुवर, जिनने प्रभुवर का ध्यान किया।
दिव्यध्वनि से सदुपदेश दें, प्रभु ने अनुपम दान दिया॥1075॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. **व**ज्र समान कर्म भी भगवत् भक्ति से क्षय हो जाते।
वीतरागता के प्रभाव से, सारे संकट कट जाते॥1076॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. **का**लकूट विष खाना अच्छा, किन्तु नहीं मिथ्यात्व भजो।
अनन्त भव दुखदा मिथ्यातम,प्रभु कहते हैं शीघ्र तजो॥1077॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. **शं**कादिक पच्चीस दोष से, रहित शुद्ध सम्यक्त्व धरा।
रत्नत्रय के प्रकाश से ही, पाई प्रभु ने मोक्ष धरा॥1078॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. **नै**यायिक आदिक मत वाले, हार गए प्रभु के आगे।
ज्यों मयूर को देख सर्प सब, बन्धन ढीले कर भागे॥1079॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. **वं**श सिद्धप्रभु का मैं वंशज, फिर भी जग में घूम रहा।
मुझको खलता यही रात-दिन,क्यों ना शिवपुर पहुँच रहा॥1080॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. तन्मय होकर जब भी मैंने, गहन हृदय से ध्याया है।
यही भक्त की अनुभूति है, मनवाञ्छित फल पाया है॥1081॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. थाम लीजिए नाथ भक्त को, कर्मों के इस दल- दल से।
जग में कोई नहीं रक्षक है , दुष्कर्मों के तस्कर से॥1082॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'था' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. हल मिलता हर एक प्रश्न का,नाथ आपकी भक्ति से।
शाश्वत सुख मैं भी पा जाऊँ, सर्व दुखों की मुक्ति से॥1083॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. रिक्त रहा मैं अखण्ड सुख से, आप सौख्य भरपूर रहे।
खाली झोली भरिए भगवन्, भक्त आपसे अरज करे ॥1084॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. हरि कहकर मैं तुम्हें पुकारूँ, मेरे दुख सब हर लेना।
सब कुछ सौंप दिया प्रभु तुमको, जो करना वह कर देना॥1085॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. राजाओं के राजा प्रभु जी, नाथों के भी नाथ महा।
करूँ निवेदन नाथ आपसे, मिले शाश्वता साथ अहा॥1086॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. दिवान्ध सूरज देख सके ना, मिथ्यात्वी ना पूज सके।
क्रिया भले कर ले पूजा की, किन्तु न मन से देख सके॥1087॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. जीवेषु नित कृपा-परत्वम्, गुरु करते औ कहते भी।
चले प्रभु के बतलाए पथ, मंजिल पावे शिवपुर की॥1088॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. **नाशवान जड़ पदार्थ को सब, छोड़ दिए प्रभु ने पल में।**
संकट पर संकट सहता मैं, दुनिया की इस कल-कल में॥1089॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. **यथार्थ तत्त्वों का निरूपण कर, मोक्षपुरी में पहुँच गए।**
कहाँ मिलेंगे फिर आदि जिन, भक्त सभी हम सोच रहे ॥1090॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. **केशर अक्षत जल फलादि ले, पूजन करने आया हूँ।**
मन्त्र रूप इस भक्तामर की, महिमा गाने आया हूँ॥1091॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'के' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. **गुणिषु भाव प्रमोदं होवे, यही भावना है मेरी।**
कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ मैं, मिट जाए भव की फेरी॥1092॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. **तेजोमय तन पाकर भी प्रभु, राग नहीं करते तन से।**
इसीलिए तन छूट गया है, निर्ममत्व आदि जिन से॥1093॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. **जो साधक हो लीन स्वयं में, गुप्त साधना करता है।**
वह त्रिभुवन में प्रसिद्ध होकर, स्वयं सिद्धि को वरता है ॥1094॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. **स्फुरन् देह में होता जब प्रभु भक्ति का रस पाता हूँ।**
निरख -निरख कर अन्तर्मन में, फूला नहीं समाता हूँ॥1095॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्फु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. **निरन्तरं सुख अविनश्वर प्रभु, हर पल वेदन करते हैं।**
आदिनाथ प्रभु आनन्दित हो, स्वात्म भवन में रहते हैं॥1096॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. मख[1] अर्थात् अर्चना करके, हृदय तृप्त हो जाता है।
किया आज शुभ कार्य महा, यह दिन भर ही मन गाता है॥1097॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मणि रत्नों में प्रकाश हो पर, अन्तर्तम ना मिटता है।
अनन्त गुण मणि प्रभु समीपता से आलोकित होता है॥1098॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रत्नेषु ज्यों श्रेष्ठ रत्न इक, समकित सब दुखनाशक है।
रत्नत्रयधारी आदीश्वर, भव्य जनों के शासक हैं॥1099॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. याचक बनकर आया भगवन्, वीतरागता उर भर दो।
पूर्व काल में गलती की जो, पाप ताप वह सब हर लो॥1100॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. तिलाञ्जली दे दी कर्मों को, नन्त काल से दुखदायी।
अमित अखण्ड विदेही सिद्धि, पाई प्रभु ने सुखदायी॥1101॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. यथाजात मुनि मुद्रा धारी, कारागृह में शान्त रहे।
आदिप्रभु का गुण चिन्तन कर, चिदातमा में स्वस्थ हुए॥1102॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. थावर त्रस पर्यायें धरकर, विपदाएँ कई भोगी हैं।
सादि नन्त पर्याय सिद्ध की, पाने की धुन लागी है॥1103॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'था' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. महिमा मण्डित जीवन जिनका, कैसे महिमा मैं गाऊँ।
क्षयोपशम मम अति अल्प है, शब्द कहाँ से मैं लाऊँ॥1104॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. हत्यारा भी प्रभु समीप आ, परम अहिंसक बन जाता।
आप निकटता की महिमा यह, पामर पावन पद पाता॥1105॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. पूजा

42. अस्तित्वं वस्तुत्वं आदिक, गुण सामान्य सभी में हैं।
आप विशेष प्रभु जी सम्यक्त्वादिक वसु गुण तुममें हैं॥1106॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. नैया डगमग डोल रही है, कर्मों के तूफानों में।
मात्र शरण है प्रभु की वाणी, गूँज रही है कानों में॥1107॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. वंदेऽहं आदीश्वर स्वामी, भव बन्धन मेरा हरिए।
सारा जग स्वारथ का मेला, पार मुझे जग से करिए॥1108॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तुलना योग्य नहीं हो स्वामी, अतुलनीय कहलाते हो।
क्यों प्रत्यक्ष दर्श ना देते, सपनों में ही आते हो॥1109॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. कारक पर का मान स्वयं को, मानी होकर भटक रहा।
मात्र स्वयं भावों का कर्त्ता, प्रभु वाणी ना समझ रहा॥1110॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. चउ षष्ठी सुर चँवर ढुराएँ, हौले-हौले श्रद्धा से।
हृदय कमल विकसित हो जाता, आदीश्वर की पूजा से॥1111॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. शत -शत वन्दन करें आपको, चतुर्निकायी देव सभी।
प्रथम देव श्री आदिप्रभु की, पूजा की बस लगन लगी॥1112॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. कहूँ नाथ क्या दुखद कहानी, जानो सब सर्वज्ञ तुम्हीं।
इसीलिए मैं कुछ ना बोलूँ, मेरे तो सर्वस्व तुम्हीं॥1113॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. लेशमात्र भी कष्ट रहा ना, कर्म नाश हो जाने से।
आराधन करके आराधक, विमुक्त होता पापों से॥1114॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ले' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. कितनी बार आपको पूजा,किन्तु न चैन मिला मुझको।
क्योंकि श्रद्धा से ना पूजा, अत: कर्म दुख दें मुझको॥1115॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रत्नाकर हो नाथ आप ही, अनन्त अनुपम गुणखानी।
सागर में जड़ रत्न भरे सब, राग जनक हैं दुखदानी॥1116॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. 'णाणं णरस्स सारं' कहकर, ज्ञान रूप की महिमा की।
चिन्मय एक ज्ञान गुण माना,यही जिनेश्वर की वाणी ॥1117॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कुसंस्कार मिटा भव-भव के, नाथ बसो उर में मेरे।
आप सिवा प्रभु और न कोई, बसे हृदय में ना मेरे ॥1118॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. लेश्या कषाय अनुरंजित से, योग प्रवृत्ति होती है।
षट् लेश्या से रहित प्रभु की, मूरत कल्मष धोती है॥1119॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ले' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. स्वप्नेऽपि ना भूलूँ जिनवर, ऐसी स्मृति मुझे देना।
झूठे रिश्ते नातों को अब, सुमिरन करके क्या मिलना॥1120॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऽपि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

रागी देव काँच सम जिनवर, मणि सम पूर्ण ज्ञानधारी ।
अतुलनीय आदीश प्रभु जी , करूँ अर्चना सुखकारी॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रकाशितलोकालोकस्वरूपाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 21

अलंकार पूर्वक स्तुति

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन् मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि॥21॥

विष्णुपद छन्द

हरिहरादि अच्छे हैं ऐसा मानूँ मैं जिनराज।
क्योंकि उन्हें देखकर मन संतुष्ट आपमें नाथ॥
प्रभु आपके दर्शन से क्या लाभ मुझे होगा।
अन्य देव भव-भव में अब ना मन हर पाएगा॥
ब्याजोक्ति इस अलंकार में कहना यह चाहूँ।
सर्वश्रेष्ठ प्रभु मात्र आपको त्रियोग से ध्याऊँ॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥21॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं।

मुनीन् प्रज्ञाश्रमणाख्यान्, सर्वप्रज्ञागुणान्वितान् ।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 21॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञाश्रमणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

सोरठा

1. मदन विजेता आप, शीलेश्वर कहते मुनि।
सुलभ काम दुर्भाव, दुर्लभ स्वातम दर्श है॥1121॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. मन्येऽहं जिनधर्म, दया धर्म का मूल है।
लखूँ धर्म का मर्म , ये ही अन्तर भावना॥1122॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. वसुविध कर्म नशाय, सिद्ध अष्ट गुण पा गए।
वन्दन अनघ जिनाय, सारे अघ का नाश हो॥1123॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. रंगमंच संसार, जीव स्वयं नाटक करे।
आदीश्वर भव पार,खेल कर्म का मिट गया॥1124॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. हर्षित होता चित्त, प्रभु तव मूरत देखकर।
चेतन होए पवित्र, जब जिनवर भक्ति करूँ॥1125॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. रिपु भयंकर मोह, साध सकूँ ना आत्म-हित।
मोह नाश सुख होए, जिनआगम कहता यही॥1126॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. हलन चलन हो नित्य, आत्मदेश में योग से।
योग नाशकर सिद्ध, सिद्धालय में थिर हुए॥1127॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. रागात्मक सब कार्य, छोड़ वीतरागी हुए।
भाव शुद्ध रख आर्य, मलिन कार्य करता नहीं॥1128॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. दयावान हो आप, सब की ही रक्षा करें।
कहलाते निष्पाप, पाप-पुण्य से दूर हैं॥1129॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. यत्नाचार विवेक, मुनि बनकर रखते सदा।
आगम में उल्लेख, कहा प्रथम तीर्थेश ने॥1130॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. एकात्मा ही सार, शेष द्रव्य में सार ना।
होवे बेड़ा पार, निजात्म की बस धुन रहे॥1131॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ए' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. वर्तमान के आप, प्रथम तीर्थङ्कर हो गए।
पूर्व किया पुरुषार्थ, उसका सम्यक् फल मिला॥1132॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. दृष्टि अगोचर सिद्ध, नयनों से दिखते नहीं।
फिर भी परम प्रसिद्ध, यही विशेषण आपमें॥1133॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दृष्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. टाले सर्व विभाव,निज स्वभाव की धुन लगी।
स्वभाव ही इक नाव, अथाह भवसागर तिरें ॥1134॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'टा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. दृष्टि स्वसन्मुख होए, विमुख होए परद्रव्य से।
कष्ट न होवे कोए, स्वातम से यदि प्रीत हो॥1135॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दृष्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. टेर रहा है भक्त, अब तो आओ नाथ जी।
तीर्थङ्कर शिवकन्त,ध्यान धरूँ नित आपका॥1136॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'टे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. शीलेषु प्रभु श्रेष्ठ, सहस्र अठदस शील धनी।
शील झील में तैर, अपार भवसागर तिरें॥1137॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. ध्येय बिना मैं नाथ, राग आग में जल रहा।
करिए निज सम आप, चाह हृदय में बस यही॥1138॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. गृहादिषु कर राग, विकल्प अग्नि में जला।
धारूँ तप वैराग्य, यही भावना मात्र है॥1139॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. हृदयांगन है रिक्त, श्री वृषभेष पधारिए।
विभाव में मन लिप्त, स्वभाव में होवे रमण॥1140॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. दण्ड दे रहे कर्म, अनन्त भव से हे प्रभो।
त्रियोग से प्रभु वन्द्य, बचाइए वसु कर्म से॥1141॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. व्यंजन विविध प्रकार, खाकर भी मन तृप्त ना।
भक्ति मम स्वीकार, करके तृप्ति दीजिए॥1142॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. त्वरित[1] करिए न्याय, कर्म मुझे दुख दे रहे।
भवि जीवों के भाग्य, श्री आदीश संवारते॥1143॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. अतिशायि तव दर्श, शोक रहित हो भव्य जिन।
शोक रहित हो वृक्ष , औरों की क्या बात है॥1144॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. शीघ्र

25. तोषक पोषक आप, तीर्थ चलाया आपने।
प्रथम पुरु जिनराज, वन्दूँ शाश्वत शान्ति हित॥1145॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. षट् कालों में आज, यद्यपि पंचमकाल है।
फिर भी भक्ति प्रवाह, प्रभु नाम का बह रहा॥1146॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. मेरु रहे अकंप, तीव्र पवन से ना डिगे।
नमूँ-नमूँ निष्कंप, सुमेरु से भी दृढ़ अधिक॥1147॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तिरे दुखद भव-सिन्धु, वृषभनाथ युग आदि में।
नमन करें रवि इन्दु, शत इन्द्रों से वन्द्य जिन॥1148॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. किंकर हूँ मैं नाथ, हाथ जोड़ चरणन खड़ा।
करिए मम उद्धार, त्रिभुवन का हित कर रहे॥1149॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'किं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. वीतशोक हैं आप, रोग शोक से मुक्त हैं।
जपूँ नाम का जाप, निरोग शाश्वत कीजिए॥1150॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. क्षिप्र[1] दर्श हो नाथ, अँखियाँ मेरी तरसतीं।
मम उर करिए वास, एक बार यह आश है॥1151॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तेरह विध चारित्र, धारण करते आप हैं।
चेतन हुआ पवित्र, शुद्ध शिरोमणि हो प्रभो॥1152॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. शीघ्र

33. नय प्रमाण का ज्ञान, हुआ आपसे ही हमें।
अनुपम आप समान, और न दाता जगत में॥1153॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. भव-भव से हूँ भीत, अभय मुझे कर दीजिए।
प्रभुवर सच्चे मीत, और शरण जाऊँ कहाँ॥1154॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. वन्दूँ बारम्बार, वन्दन से बन्धन कटे।
शाश्वत सुख करतार, आत्मिक सुख दे दीजिए॥1155॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तार्किक होते शान्त, वीतराग छवि देखकर।
पूर्णज्ञान से व्याप्त, मैं भी होना चाहता॥1156॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. भुवि पर जय-जयकार, वृषभ प्रभो की गूँजती।
जग के तारणहार, प्रभु गुण चिन्तन सुलभ ना॥1157॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. विमल त्रिविध मल मुक्त,कर्मशत्रु जय कर लिए।
नाथ नन्त गुण युक्त, वास करो मम हृदय में॥1158॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. येन केन हे नाथ, आप द्वार तक आ गया।
हे आदीश जिनाय, ज्ञान उजाला दीजिए॥1159॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. नमूँ अनन्तों बार, यही भावना मम रही।
चिन्तामणि जिनराय, नित प्रभु का चिन्तन करूँ॥1160॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. नाशवान जो द्रव्य, उनसे आप विरत हुए।
शाश्वत स्वातम सत्य,इसका ही शरणा लिया॥1161॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. मान्यः आप जिनेश, सारे जगवासी नमें।
पाया चिन्मय देश, त्रियोग से वन्दन करूँ॥1162॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्यः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. कश्ती है मँझधार, भवदधि तट ले जाइए।
करिए प्रभु उपकार, करूँ प्रार्थना आपसे॥1163॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कश्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. चिन्मय चेतन जान, समा गए शुद्धात्म में।
क्षायिक शक्ति महान,नाथ आपने प्राप्त की॥1164॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चिन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. महक रहे गुण नन्त, शुद्धातम उद्यान में।
भव्य भँवर मकरन्द पीने आए चरण में॥1165॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मनोभावना नाथ, मन नित ही निर्मल रहे।
करूँ त्रियोग प्रणाम,अपलक नाथ निहार लूँ॥1166॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. हरिए भव दुख जाल,फँसा हुआ जंजाल में।
झुका रहा निज भाल,भव व्याधि मेरी हरो॥1167॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. रमते निज शुद्धात्म, पर परिणति से मुक्त हो।
प्रकट होए अध्यात्म, यही भावना भक्त की॥1168॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिमिर विनाशक ज्योति, जली आपमें शाश्वता।
मम जीवन उद्योत, करिए जिन वृषभेश जी॥1169॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. नाते नश्वर जान, मोड़ लिया मुख सर्व से।
आदिप्रभु का नाम, भक्तों के मन भा गया॥1170॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. थल जल नभ के जीव,श्रेष्ठ आपको मानते।
पाते सौख्य अतीव, नाथ स्मरण से आपके॥1171॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. भस्म किए दुष्कर्म, शुक्लध्यान के अनल से।
जयवन्तों जिनधर्म, कर्म विजेता मैं बनूँ॥1172॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. वांछित फल दातार , वीतराग की अर्चना ।
सर्व सौख्य करतार,परम अतीन्द्रिय सौख्य कर ॥1173॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तप मण्डप कमनीय, शिवरमणी प्रभु को वरे।
जिनमूरत रमणीय,बलि-बलि जाएँ भक्तगण॥1174॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रे आतम अब सोच, नन्त काल से क्या किया।
पाकर अन्तर्बोध, परमातम का शोध हो॥1175॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. भवान्तरेऽपि नाथ, आप शरण छूटे नहीं।
थाम लीजिए हाथ, डूब रहा तव भक्त यह ॥1176॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऽपि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

जिन दर्शन के बाद, और न देव बसे हृदय।
सर्वश्रेष्ठ प्रभु आप, अर्घ्य चढ़ाऊँ भाव से॥

ॐ ह्रीं सर्वदोषहरशुभदर्शनाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं० 22

अपूर्व माता

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्॥22॥

विष्णुपद छन्द

जग में कई सैकड़ों नारी पुत्र जन्म देती।
किन्तु आपसे सुत की माँ सामान्य नहीं होती॥
एकमात्र ही मरुदेवी माँ महान् कहलाई।
प्रथम तीर्थङ्कर जिनशासन की शान पुत्र पाई॥
पूर्व दिशा ही एक अनोखी दिनकर उदित करे।
सभी दिशा-विदिशाएँ ग्रह तारों को प्रकट करें॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥22॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं।

आकाशगामिनो धीरान्, कृत्स्नसत्त्वहितोद्यतान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 22॥

ॐ ह्रीं अर्हं आकाशगामिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

स्रग्विणी छन्द

1. **स्त्री नपुंसक पुरुष वेद को नाशकर।**
हो अवेदी प्रभु आप ही क्षेमकर॥
गिरि कैलास वृषभेश का धाम है।
भक्त मुक्त हुए आपका नाम ले॥ 1177॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त्री' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **हे गुरुणां प्रभो आपकी वन्दना।**
अष्ट द्रव्यों से करता रहूँ अर्चना॥ गिरि...॥1178॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **शक्तिशाली सभी आपका नाम ले।**
नन्त शक्ति को धारण करें शीघ्र वे॥ गिरि...॥1179॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **तारती आपकी दिव्य वाणी प्रभो।**
सुन समोसर्ण में भव्य प्राणी अहो॥ गिरि...॥1180॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **निष्प्रयोजन नहीं कुछ मुनिवर करें।**
आपकी ही छवि वे हृदय में धरें॥ गिरि...॥1181॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **शल्य त्रय मानतुङ्ग मुनि क्षय करें।**
हो निशल्य प्रभु का ही ध्यान धरें॥ गिरि...॥1182॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **तथ्य कुछ भी नहीं झूठे संसार में।**
नाथ आदीश आए हमें तारने॥ गिरि...॥1183॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. शोचनीय दशा है प्रभु भक्त की।
शोक मेरा मिटा दो हे आदीश जी॥
गिरि कैलास वृषभेश का धाम है।
भक्त मुक्त हुए आपका नाम ले॥ 1184॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. जल्प से आप निर्मुक्त ही हो गए।
लोक के अग्र जा स्वात्म में खो गए॥ गिरि...॥1185॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. नम्र भावों से ही मोक्ष मिलता सदा।
वो भटकता रहे जो न झुकता कदा॥ गिरि...॥1186॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. यन् निर्वाण सुख पा लिया आपने।
भक्त शिव सौख्य पाने खड़ा सामने॥ गिरि...॥1187॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. तिष्ठ-तिष्ठ कहे राजा श्रेयांश जी।
आओ-आओ प्रभु मेरे आदीश जी॥ गिरि...॥1188॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. पुण्य आत्मा ही दर्शन करे आपका।
भाव से दर्श करके बनूँ आपसा॥ गिरि...॥1189॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. जन्म पुत्रान् को दे कई नारियाँ।
मात मरुदेवी-सी है न कोई यहाँ॥ गिरि...॥1190॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. नारकी भी प्रभु जन्म से हों सुखी।
जो कुधी जीव थे हो गए वे सुधी॥ गिरि...॥1191॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. न्यायमूर्ति करें दूर अन्याय हैं।
कर्म क्षयकर धरें सिद्ध पर्याय हैं॥
गिरि कैलास वृषभेश का धाम है।
भक्त मुक्त हुए आपका नाम ले॥ 1192॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. हो सुमङ्गल जहाँ आपके पग पड़े।
भक्त जन आपको देख शिवमग बढ़े॥ गिरि...॥1193॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तं मुनि मानतुङ्गं नमामि सदा।
आपसे भक्ति का पाठ सीखें यहाँ॥ गिरि...॥1194॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. हो त्वमेव पितु मात बन्धु सखा।
आपने शुद्ध चैतन्य अमृत चखा॥ गिरि...॥1195॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. दु:ख देने से पर को दुखी हो सदा।
देख पर को सुखी सौख्य हो सर्वदा॥ गिरि...॥1196॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. परम पावन हो पुण्य प्रकाशक प्रभो।
आत्मशासक तुम्हीं ज्ञानदायक विभो॥ गिरि...॥ 1197॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. मंगलाचार में आपका नाम ले।
सर्व कल्याण कर विघ्न संकट टले॥ गिरि...॥ 1198॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. जयवन्तों सदा हे जगत के पिता।
अर्ज है पाप की अब जला दो चिता॥ गिरि...॥ 1199॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. नग्न वेष दिगम्बर धरा आपने।
सिद्धिरमणी प्रभु आ गई सामने॥
गिरि कैलास वृषभेश का धाम है।
भक्त मुक्त हुए आपका नाम ले॥ 1200॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. नीर से चेतना का न ताप मिटे।
पीर श्रद्धा के जल से तुरत ही नशे॥ गिरि...॥ 1201॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. प्रतिकार नहीं पर का करते श्रमण।
ऐसे समता के सागर को मेरा नमन॥ गिरि...॥ 1202॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. सूक्ष्म लोभ उदय दशवें गुणथान में।
क्षीणमोही हो अरहन्त फिर सिद्ध ये॥ गिरि...॥ 1203॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तामसिक वृत्तियाँ पाप का हेतु हैं।
वृत्ति अध्यात्म की मोक्ष का सेतु है॥ गिरि...॥ 1204॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. सर्व शान्ति हो ये भावना भा रहा।
आप ही विश्व में एक दाता महा॥ गिरि...॥ 1205॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. सर्वावधि ज्ञान को आपने पा लिया।
अन्त में ज्ञान कैवल्य को पा लिया॥ गिरि...॥ 1206॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. ज्यों दिवान्ध नहीं दिन में देख सके।
त्यों ही मिथ्यात्व में धर्म रुच न सके॥ गिरि...॥ 1207॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. शोक कर आतमा व्यर्थ पीड़ा सहे।
नाथ गतशोक हो निज में क्रीड़ा करे ॥
गिरि कैलास वृषभेश का धाम है।
भक्त मुक्त हुए आपका नाम ले॥ 1208॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. दक्ष हैं आप अपने ही सु-ज्ञान में।
भक्त श्रद्धा से भरकर खड़ा सामने॥ गिरि...॥ 1209॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. धड़कनों में बसे आप ही आप हैं।
तन व चेतन में मेरे आदिनाथ हैं॥ गिरि...॥ 1210॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तिथि पाँचों कल्याणक की पावन हुई।
सर्व शुभ कार्य में माङ्गलिक हो गई॥ गिरि...॥ 1211॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. भारती माँ जगत्पूज्य जन हितकरी।
द्वादशाङ्गी दे सु-ज्ञान शिव सुखकरी॥ गिरि...॥ 1212॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. निर्जरा मात्र हो अन्त गुणस्थान में।
मोक्ष हो फिर प्रभु जी रमे स्वात्म में॥ गिरि...॥ 1213॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. आप सर्वार्थसिद्धि से आए यहाँ।
श्री अयोध्या में जन्मे जिनेश्वर महा॥ गिरि...॥ 1214॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. हर्ष औ खेद का भाव आता नहीं।
मोक्ष में शाश्वता काल साता रही॥ गिरि...॥ 1215॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. कर सहस्र नयन देव तुमको नमें।
आपके नाम का जाप मन से जपें॥ गिरि...॥ 1216॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. रश्मियाँ सूर्य की होए लज्जित यहाँ।
देख आदीश की देह कान्ति महा॥
गिरि कैलास वृषभेश का धाम है।
भक्त मुक्त हुए आपका नाम ले॥1217॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रश्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. अहमिंद्र औ इन्द्र सभी धन्य हैं।
दर्श करके प्रभु के जो जगपूज्य हैं॥ गिरि...॥ 1218॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मिं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. प्राण आधार हो मेरे प्रिय आदि जिन।
एकटक बस निहारूँ तुम्हें रात-दिन॥ गिरि...॥ 1219॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. स्वात्मरुच्येव ही हो गए सिद्ध हैं।
आतमा की रुचि से हुए शुद्ध हैं॥ गिरि...॥ 1220॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च्ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. वज्रनाभि सु चक्री के भव में प्रभो।
तीर्थंकर प्रकृति बंध कर ली विभो॥ गिरि...॥ 1221॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. दिग्विजयी हुए जब दिगम्बर हुए।
नाथ निर्ग्रन्थ ने ग्रन्थ सब तज दिए॥ गिरि...॥ 1222॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दिग्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. श्री जगन्नाथ के चर्ण में माथ है।
मैं हूँ निर्भय प्रभु आपका साथ है॥ गिरि...॥ 1223
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. नम्रता से अरि भी बने मीत हैं।
मान से मित्र शत्रु बने शीघ्र हैं॥ गिरि...॥ 1224॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. यज्ञ करता रहूँ ना थकूँगा कभी।
नाथ संबल दो कर्म जलाऊँ सभी॥ गिरि...॥ 1225॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. तिनका जैसे पवन जोर से उड़ रहा।
भक्ति से भक्त आगे ही बढ़ता गया॥
गिरि कैलास वृषभेश का धाम है।
भक्त मुक्त हुए आपका नाम ले॥ 1226॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. स्फुट[1] कहें साधु को मन विमल जो रखे।
आत्म निर्मल करे साम्य रस हम चखे॥ गिरि...॥ 1227॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्फु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रम रहे मानतुङ्ग मुनि स्वात्म में।
चित्त शुद्धि से दर्शन किए आपने॥ गिरि...॥ 1228॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. दंग है जग चमत्कार को देखकर।
स्तोत्र करता है सद्भक्त को ही अमर ॥ गिरि...॥ 1229॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. शुभ्र भावों से शुद्धोपयोगी बने।
सन्त अरहन्त बन सारे कर्म हने॥गिरि...॥ 1230॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. जागृति ही रहे नित यही भावना।
अन्त सम्यक् समाधि यही कामना॥ गिरि...॥ 1231॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. लम्पटी को मिले आत्म शान्ति नहीं।
मन विकारों से पाता सदा दुःख ही॥ गिरि...॥ 1232॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

पूर्व दिश सम प्रभु माँ से जिनसुत हुए।
अर्घ्य पद में चढ़ा भक्तजन नत हुए ॥
गिरि कैलास वृषभेश का धाम है।
भक्त मुक्त हुए आपका नाम ले ॥

ॐ ह्रीं अद्भुतगुणाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

1. निर्मल

श्लोक नं॰ 23

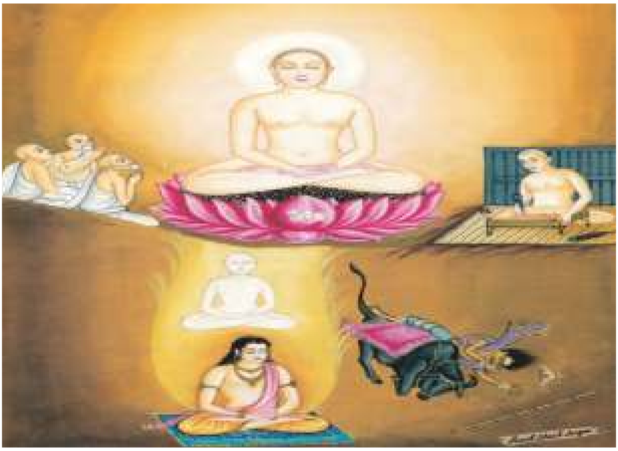

मोक्षमार्ग दर्शक

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस
मादित्य - वर्णममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ॥23॥

विष्णुपद छन्द

नाथ! आपको मुनिजन मानें परम पुरुष महान्।
मोहतमस निर्मुक्त विमल रवि से भी तेजोमान॥
सम्यक् उपासना करके वे मृत्युञ्जयी होते।
नाथ! आपको तजकर सुखकर शिवपथ ना पाते॥
वीतराग जिनवर की भक्ति मुक्ति का पथ है।
मोक्षमहल तक जाने का यह ही सम्यक् रथ है॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥23॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं।

आशीर्विषर्द्धिसंयुक्तान्, समर्थान् क्षमयाचलान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 23॥

ॐ ह्रीं अर्हं आशीर्विषेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

चौपाई

1. **सम्यक्त्वादिक गुण को धारे, सिद्धालय में आप सिधारे।**
कर्म क्षयङ्कर शुद्ध हुए हो, लोक अग्र में पहुँच चुके हो॥1233॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **मानतुङ्ग मुनि के सुमिरन से, मान चूर होता कुछ पल में।**
ऐसी अद्भुत भक्ति करूँ मैं, विधि बन्धन को शीघ्र हनूँ मैं॥1234॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **महारथी भी झुक जाता है, जब प्रभु की छवि को लखता है।**
तीन योग से करूँ नमोऽस्तु , स्वीकारो वृषभेश नमोऽस्तु॥1235॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **नन्दन नाभिराय के प्यारे, मरुदेवी के नयन सितारे।**
जन्म समय इन्द्रासन कँपा, जिनवर को लख लगा अचम्भा॥1236॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **तिलाञ्जलि दे दी जड़ धन को, प्राप्त किया प्रभु चिन्मय धन को।**
मुझ निर्धन को धनी बना दो, अव्यय गुण से सौख्य घना हो॥1237॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **मुखारविन्द रुचिर है जिनका,सुमरूँ नाम उन्हीं जिनवर का।**
मधुरिम जिनकी अमृत वाणी, पिला रहे प्रभु अनुपम दानी॥1238॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **नरभव उसने सफल किया है, जिसने संयम धार लिया है।**
मुझको भी संयम पथ भाया, आत्म हितार्थ शरण तव आया॥1239॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. य: स्मर्यते सर्व ऋषि मुनि से, मिटा महातम जिनकी ध्वनि से।
ऐसे आदीश्वर को ध्याऊँ, अर्घ्य चढ़ाकर शीश नवाऊँ॥1240॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. पराक्रमी वृषभेश हमारे, भवदधि से पलभर में तारे।
जो भी इनका ध्यान धरेगा, वह निश्चित भवसिन्धु तिरेगा॥1241॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10 रजनी में ही चाँद चमकता, जिन शशि शाश्वत काल दमकता।
प्रभु चन्दा को नित प्रति वन्दूँ, पूजन कर पापों को खण्डूँ॥1242॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मंडित अष्ट गुणों से स्वामी, आठों कर्म विनाशक नामी।
आप पूर्ण निर्दोष जिनेशा, जानो सर्व जगत अखिलेशा॥1243॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. पुरुषाकार सदैव रहेंगे, विदेह हो जब सिद्ध बनेंगे।
मैं भी यही भावना भाऊँ, परम शुद्ध शाश्वत पद पाऊँ॥1244॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. मांगलिक प्रभु आप कहाते, मङ्गल कार्यों में हम ध्याते।
श्रद्धा से हम शीश झुकाएँ, आदिनाथ प्रभु के गुण गाएँ॥1245॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. सर्व कर्म को चूर किए हैं, विजयोत्सव में तूर बजे हैं।
ऋजुगति से प्रभु मोक्ष पधारे, अनगिन भव्यजनों को तारे॥1246॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. माटी चन्दन बन जाती है, जब धरती प्रभु-पद छूती है।
एक बार तव विहार देखूँ, निजातमा में विचरण कर लूँ॥1247॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. जिनादित्य को नमन हमारा, इक रवि नभ में अनगिन तारा।
प्रभुवर की आभा है प्यारी, दर्शन कर बनते अविकारी॥1248॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दित्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. यतीन्द्र वन्दन कर ध्याते हैं, जिनगुण का चिन्तन करते हैं।
शुद्धातम का मैं अभिलाषी, मनवाञ्छित पूरो शिववासी॥1249॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. वर्तमान के प्रथम जिनेशा, शत इन्द्रों से पूज्य हमेशा।
भवसागर का मिले किनारा, एक मात्र प्रभु आप सहारा॥1250॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. प्रणम्य तीन लोक से स्वामी, अव्याबाध नन्त गुणधामी।
भव्य जीव को ज्ञान प्रकाशे, प्रभु ही सब दुष्कर्म विनाशे॥1251॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. मलयाचल का शीतल चन्दन,उससे भी शीतल तव वचनम्।
वाणी उर में जो भी धारे , कर्म शान्त कर मोक्ष पधारे॥1252॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मनोज्ञ मूरत हृदय समाई, आदिप्रभु की छवि मन भाई।
ऐसे मानतुङ्ग मुनिरायी,धर्म प्रभावक हैं अतिशायी॥1253॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. सालंकृत हो सुरगण आए, श्री जिनपद में शीश झुकाए।
दिव्य अष्ट द्रव्यों की थाली, पूजन करें बजाकर ताली॥1254॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तमहर दिव्य रूप अति प्यारा, जगत जनों से है अति न्यारा।
पाप कर्म कृश मेरे करना, मोह तमस क्षयकर शिव वरना॥1255॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. मनन करे जो भी तव गुण का, पथ दिख जाता है शिवपुर का।
मुक्ति के साधन जिनराजा, लोक अग्र राजे सिरताजा॥1256॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. नभसः दिव्य सुमन बरसाते, देव भक्ति करके हर्षाते।
हृदय कमल खिल-खिल जाते हैं, जब प्रभु का दर्शन पाते हैं॥1257॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. पुलक-पुलक भविजन मन करता, जिनमुख दर्शन कल्मष हरता।
आदिप्रभु की आभा न्यारी, छवि दर्शन कर हो अविकारी॥1258॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. निरस्त[1] कर्म किए वसु सारे, अतः आपके आए द्वारे।
भवों-भवों के पुण्योदय से, भक्त करे सुमिरन थिर मन से॥1259॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तात्कालिक न हो त्रैकालिक, परिणति मेरी हो स्वाभाविक।
यही प्रभो पूजन फल चाहूँ, और नहीं कुछ भी मैं मांगूँ॥1260॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तात्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. जित्वा राग-द्वेष को जीते, नाथ निरन्तर समरस पीते।
विभाव परिणति दूर करूँ मैं, त्रिविध कर्म को चूर करूँ मैं॥1261॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. मेधावी वे हो जाते हैं, जो जिन वचनामृत सुनते हैं।
मेरी बुद्धि निर्मल कर दो, शीश नवाऊँ सुख से भर दो॥1262॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. वतन आपका सिद्धालय है, हुआ सर्व कर्मों का क्षय है।
मुझको भी गन्तव्य दिला दो, परमानन्दी सुधा पिला दो॥1263॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. सकल ज्ञेय ज्ञायक होकर भी, निजानन्द में लीन प्रभु जी।
जयवन्तों श्री आदिनाथ जी, शरणा दो यह अर्ज भक्त की॥1264॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. नष्ट

33. प्रणम्य हो तपधर ऋषियों से, अर्चित हो सुरगण सुरियों से।
हे आदीश्वर पूज्य हमारे, श्रद्धा से बोलूँ जयकारे॥1265॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. गुणग्राही ही विनम्र होता, अपने सारे विधिमल धोता।
दोष नहीं पर के मैं देखूँ , निज के दोष स्वयं अवलोकूँ॥1266॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. परमामृत नित पीते रहते, फिर भी निराहार कहलाते।
अजब निराली शान तुम्हारी, गा न सकें प्रभु महिमा भारी॥1267॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. लघिमा आदि ऋद्धिधारी, अंतिम आप वरी शिवनारी।
मैं अनादि से भव-भव भटका, दर्श किया ना अखण्ड सुख का॥1268॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. अनुपलभ्य जिन दर्श तिहारा, दिखे नहीं प्रभु दिव्य नजारा।
पंचमकाल महा दुखदाई, ऋद्धि सिद्धिधर दर्श न होई॥1269॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. जन्म अन्त कर दिया आपने, पुनः नहीं आएँगे जग में।
कैसे दर्श करूँगा स्वामी, पास बुला लो अन्तर्यामी॥1270॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. यन्त्र तन्त्र कुछ काम न आता, आयु कर्म जब पूरा होता।
कोई नहीं बचावन हारा, वृषभनाथ तव नाम सहारा॥1271॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. तिर्यक् लोक बहुत घूमा है, स्वात्म लोक को नहीं छुआ है।
अन्तर्जगत् मुझे पहुँचा दो, इतनी कृपा भक्त पर कर दो॥1272॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. मृदुतम नाथ आपकी वाणी, सुनकर सुख पाता हर प्राणी।
श्रद्धा के सुमनों से पूजूँ, अर्घ्य चढ़ा भावों से अर्चूं॥1273॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. मृत्युंजयी कहाते स्वामी, जन्म-मरण नाशे गुणनामी।
पाप कर्म कृश मेरे करना, करूँ प्रार्थना भव दुख हरना॥1274॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्युं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. नाविक सरिता तट पहुँचाता, त्यों जिनपथ पा भव तर जाता।
मेरी नैया डगमग डोले, तीर दिला दो हौले-हौले॥1275॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. अन्य: जिन बिन कोई न शरणा, मुझको भव वन में ना भ्रमना।
इन्द्रिय सुख है सुख आभासा, सौख्य अतीद्रिय धर जिनराजा॥1276॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्य:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. शिरोधार्य जिन आज्ञा कर लूँ, जिनेन्द्र पद पा मुक्ति वर लूँ।
जग के नाशवान पद सारे, नमूँ उन्हें अक्षय पद धारे॥1277॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. पुनर्भव: प्रभु कभी न पाए, सिद्धालय से लौट न आए।
जले बीज से वृक्ष उगे ना, शुद्ध बने फिर जन्म धरे ना॥1278॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. शिवलक्ष्मी के मुनि प्रत्याशी, श्रेष्ठ भक्त जिनधर्म प्रकाशी।
भक्त बने बिन मोक्ष न जावे, अत: भक्ति मेरे मन भावे॥1279॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वरिष्ठ हो तीनों लोकों में, बसे भक्तजन की आँखों में।
मेरे नयन दर्श के प्यासे, प्रभु ही मेरे दोष विनाशे॥1280॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. पथिक बनूँ मुक्ति मारग का, भाव रहा इस खास भक्त का।
भावलिङ्गी मुनि ही बनना है, अगले भव मैंने ठाना है॥1281॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. दलन किया जड़ दुष्कर्मों का, नाम निशान रहा ना उनका।
शूरवीर वृषभेश नमोऽस्तु, हाथ जोड़कर करूँ नमोऽस्तु॥1282॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. उपास्य हूँ मैं आप उपासक, प्रभु आराध्य भक्त आराधक।
सच्चे मन से उपासना हो, पावे निश्चित सिद्धिरमा वो॥1283॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. मुमुक्षु जन चरणों में आते, मुक्ति के इच्छुक शिव पाते।
सिद्धालय पर सुख से रहते, देह रहित हो निज में रमते॥1284॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. नीति नियम सब आप बनाए, असि आदिक षट् कर्म सिखाए।
सार तत्त्व प्रभु ने समझाया, शिवपथ पर चलना सिखलाया॥1285॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. इन्द्र लिए परिवार साथ में, अष्ट द्रव्य का थाल हाथ ले।
तीन योग से पूजा करता, अतिशय पुण्य इसी से बँधता॥1286॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्द्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. पंडित विद्वज्जन नमते हैं, श्रद्धा से पूजन करते हैं।
दिव्य द्रव्य नहीं पास हमारे, किन्तु हृदय में निष्ठा धारें॥1287॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. निर्ग्रन्थाः हैं मुनिवर प्यारे, ग्रन्थ परिग्रह सर्व निवारे।
मैं भी पाप ग्रन्थियाँ तोड़ूँ, निज से निज में नाता जोड़ूँ॥1288॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

मोक्षमार्ग दर्शक मुनि माने, अनेक गुण गण से पहचाने।
मोक्षमहल को मैं भी पाऊँ, अर्घ्य चढ़ाकर शीश झुकाऊँ॥

ॐ ह्रीं मनोवाञ्छितफलदायकाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 24

प्रभु के पर्यायवाची नाम

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्य - मसंख्यमाद्यं
ब्रह्माण - मीश्वरमनन्त - मनङ्गकेतुम्।
योगीश्वरं विदितयोग - मनेकमेकं
ज्ञानस्वरूप - ममलं प्रवदन्ति सन्तः॥24॥

विष्णुपद छन्द

सज्जन कहें आपको अव्यय विभो अचिन्त्य अनन्त।
ब्रह्मा ईश्वर आद्य अमल औ असंख्य हो भगवन्त॥
मदनविजेता योगीश्वर प्रभु एकानेक जिनेश।
ज्ञान स्वरूपी विदितयोग हो आदिनाथ परमेश॥
समवसरण में सहस्रनाम से भक्ति इन्द्र करे।
अल्प शक्तिधर अल्प नाम से हम गुणगान करें॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥24॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं।

दृष्टिविषर्द्धियोगीन्द्रान्, सर्वकोपातिगान् क्षमान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 24॥

ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिविषेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

15मात्रिक पद्धरि छन्द

1. कृत्वा सर्व कषाय विनाश, करें आप मुक्ती में वास।
सिद्धदशा जिनवर प्रकटाय,आदिनाथ को शीश नवाय॥1289॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. मनोज्ञ मूरत हृदय समाय, ऐसे आदिनाथ जिनराय।
तव गुण में मम जागी प्रीत, यदपि आप हो देहातीत॥1290॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. व्यक्त नहीं दिखते जिनराय, फिर भी सबके पाप मिटाय।
कर्म नाश के कारण आप, नाथ हरो मेरा संताप॥1291॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. व्यंतर आदिक पूजे आप, भक्तों को करते निष्पाप।
मुझको दो ऐसा वरदान, सिद्धालय में होय प्रयाण॥1292॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. विश्ववन्द्य जिनवर आदीश, ऋषि मुनि नित्य नवाते शीश।
वन्द्यों से भी वन्द्य जिनाय, पूज्यों से भी पूज्य कहाय॥1293॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. भुवनत्रय के पूजे जीव, मन में धारे हर्ष अतीव।
प्रभु में बहे ज्ञान रसधार, वन्दन करता बारम्बार॥1294॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. महागुणी आदीश महान, अक्षय आत्म गुणों की खान।
श्रद्धा से पूजूँ वसु याम, हाथ जोड़कर करूँ प्रणाम॥1295॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. चिन्तन योग्य न गुण जिनदेव, अतः आप पद में सिर टेक।
जन्म-मरण से हुए विमुक्त, छियालीस गुण से संयुक्त॥1296॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चिन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. प्रत्यय पाँच बन्ध के जान, क्षयकर हुए सिद्ध भगवान।
अचिन्त्य महिमा युक्त जिनेश, अर्घ्य चढ़ाऊँ हे परमेश॥1297॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. महाव्रती भी पूजें नाथ, तव चरणों में रखते माथ।
घाति अघाति द्वय कर नाश, मोक्षनगर में किया निवास॥1298॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. संवर करके पाया मोक्ष, अविनाशी अक्षय निज सौख्य।
पहुँचे चिन्मय देश महान, जय-जय आदिनाथ भगवान॥1299॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. ख्याति खातिका दोय समान, ख्याति रहित हुए भगवान।
अतः जगत में आप प्रसिद्ध,हुए शुद्ध आदीश सुसिद्ध ॥1300॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. मायाजाल जगत का जान, त्याग दिया सारा जंजाल।
जन्म दिवस ही गृह को छोड़, किए पंचमुष्टि कचलोंच॥1301॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. आद्यं आप कहाते नाथ, प्रथम तीर्थङ्कर आदिनाथ।
भव्यजनों को देकर बोध, सहज करे निज आतम शोध॥1302॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्यं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. ब्रह्म तत्त्व में रहते लीन, जर्जर हो वसु कर्म विलीन।
निर्विकार चिन्मय चिद्रूप, सिद्धदेश के जिनवर भूप॥1303॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ब्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. ब्रह्मा स्वयं कहाते आप, अठरह सहस शील के नाथ।
प्राप्त किया तुमने ध्रुवधाम, स्वीकारो मम नम्र प्रणाम॥1304॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह्मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. **ण**मोकार अपराजित मन्त्र, पढ़कर होता भव्य पवित्र।
प्रथम द्वितीय पद में प्रभु नाम, शेष पदों में गुरु गुणखान॥1305॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. **मी**न तड़पती ज्यों बिन नीर, आप दर्श बिन मेरी पीर।
हृदय बसो मेरे जिनदेव, नित्य नमूँ तव पद सिर टेक॥1306॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. ई**श्व**र सबके ईश कहाय, भक्तों से ना राग कराय।
राग-द्वेष से रहित जिनाय, वीतराग वन्दूँ जिनराय॥1307॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. **र**सिक स्वानुभूति के आप, शुद्धातम में कोई न ताप।
सुनिए अरज महा मुनिनाथ, कब से खड़ा दर्श के काज॥1308॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. **म**मता तजकर समता धार, लाखों का करते उद्धार।
पहुँचा दो मुझको शिवधाम, हो जाऊँ मैं भी कृतकाम॥1309॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. **नन्**त काल से दु:ख अनन्त, भोग रहा हूँ मैं भगवन्त।
शाश्वत सुख हित शरणा पाय, मन वच तन से पूज रचाय॥1310॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. **त**टस्थ रहते नित मुनिराज, भवदधि तट पाते ऋषिराज।
अत: धर्म का करें प्रचार, हो सदैव उनकी जयकार ॥1311॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. **म**नोज्ञ मूरत है मनहार, विराग छवि जग की हितकार।
ऋषि यति गणधर के भी नाथ, जिनवर मुझको करो सनाथ॥1312॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. आनंदित नित रहें मुनीश, स्व सम्मुख उपयोग सदीव।
पर परिणति से सदा विमुक्त, स्वातम संवेदन संयुक्त॥1313॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. गगनांगन में गूँजे शब्द, प्रभु आ रहे जागो भक्त।
देव दुन्दुभि करते नाद, जय हो जय नाथों के नाथ॥1314॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. केतन गुणगण के भण्डार, जिनगुण का ना पारावार।
चेतन गृह में किया प्रवेश, प्राप्त किया स्वातम शिवदेश॥1315॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'के' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तुम्बी तैरे ज्यों जल बीच, भवदधि तिर जाते वे जीव।
जो हो जाते हैं निर्बन्ध, नमूँ-नमूँ मैं मुक्तिकन्त॥1316॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तुम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. योजन तक है स्तोत्र प्रभाव, भक्तामर इक अनुपम नाव।
भवदधि का पाना यदि तीर, पढ़ो इसे मिट जाए पीर ॥1317॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. गीतारम्भ करूँ जब नाथ, द्वय चरणों में जोड़ूँ हाथ।
मङ्गल भक्तामर के काव्य, विघ्न टले जो पढ़ता आर्य॥1318॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. विश्व व्याप्त है प्रभु का ज्ञान, भव्यों का नाशे अज्ञान।
निज पर का करते कल्याण, अतः आप ही श्रेष्ठ पुमान्॥1319॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. रंचमात्र ना जिनको खेद, भोग भाव से रहित अवेद।
जाने द्वादशाङ्ग संपूर्ण, अष्ट कर्म को करके चूर्ण॥1320॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. विख्याता हैं आप विशेष, सर्व जानते कुछ ना शेष।
ज्ञान चेतना जिनवर युक्त, पुद्गल कर्म फलों से मुक्त॥1321॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. दिशाबोध देकर ही आप, हुए दिगम्बर श्री मुनिराज।
घाति नाश अर्हत् पद पाय, नमन करूँ मैं सिद्ध जिनाय॥1322॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तनाव में जो तुमको ध्याय, निश्चित ही वह शान्ति पाय।
तन्मयता से कर लूँ ध्यान, करिए मम आतम कल्याण॥1323॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. योग निरोध करें मुनिनाथ, होय अयोगी पा सुख राज।
नन्त सिद्ध के संग जिनेश, नन्त काल तक रहें हमेश॥1324॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. गणी कहाते जिन भगवान,ऋषि यति मुनि अनगार प्रधान।
इन चारों के प्रमुख कहाय, जिनपुंगव को शीश झुकाय॥1325॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. महल मसान जिन्हें है एक, गृह-कारा में ना है भेद।
ऐसे मानतुङ्ग मुनिराज, भक्तामर के लेखक आप॥1326॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. नेता धर्मतीर्थ के आदि, दूर करें सारी भव व्याधि।
भव -समुद्र है अगम अपार, आप हमारे तारणहार ॥1327॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. करने योग्य किए सब कर्म, हो कृतकृत्य पाए शिव शर्म।
मैं अनन्त दुख भोगूँ क्लेश, दुख मेटो मम सर्व महेश॥1328॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. मेघ गर्जना सम जिन बैन, खिरे फूल सम दिन औ रैन।
जिनवच सुन होवे कल्याण, अन्त समय पावें निर्वाण॥1329॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. कंपित कभी न मेरु होय, प्रलयकाल की पवन जु होय।
त्यों प्रभु मन ना डिगने पाय, कितनी ही सुन्दरियाँ आय॥1330॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. ज्ञाता कभी नहीं दुख पाए, कर्त्ता भाव महा दुःख दाए।
कर कर्तृत्व भाव को चूर, निज कर्त्तव्य करूँ भरपूर॥1331॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज्ञा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. नमन नाथ करिए स्वीकार, मुक्ति के तुम ही आधार।
पाना मुझको चिन्मय देश, मुझमें ही रहिए नित्येश॥1332॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. स्वर-लहरी से गाऊँ गीत, आप नाम का ही संगीत।
भक्तामर का करके पाठ, बन जाऊँ शिवसुख का पात्र॥1333॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. रूप आपका शान्त स्वरूप, नमन करूँ चिन्मय चिद्रूप।
शिवमग का करते उद्योत, पूर्णज्ञान की पावन ज्योत॥1334॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. परम पारिणामिक जिन भाव, अनुभवते हैं स्वात्म स्वभाव।
धन्य-धन्य अद्भुत पुरुषार्थ, मुझको भी प्रभु देना साथ॥1335॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मनरंजन का कोई न काम, बनना है मुनि को निष्काम।
मनोभाव से प्रभु को ध्याय, कारागृह मन्दिर बन जाय॥1336॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. महा यशोधर नगरी धार, भक्तामर लिखते हितकार।
भक्ती-रस में कलम डुबाय, अनुपम स्तोत्र लिखे मुनिराय॥1337॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. लम्पटता से दुख ही पाए, भव-भव में वह गोता खाए।
निज सम्मुख मम दृष्टि होय, प्रभु भक्ति ही सब दुख खोय॥1338॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. प्रतीन्द्र इन्द्र चरण में आए, सब परिवार साथ में लाए।
सातिशय हो सुकृत बन्ध, नरभव पा हो मुनि निर्बन्ध॥1339॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. वरदहस्त पाता जो जीव, गुरु से मिलता सौख्य अतीव।
मैं भी इक पाऊँ वरदान, पा जाऊँ इक केवलज्ञान॥1340॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. भदन्त करते विधि का अन्त, पूजित जग से हो शिवकन्त।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति समेत, लखकर कोटि रवि शशि तेज॥1341॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तिष्ठ-तिष्ठ मेरे जिनराज, करूँ स्थापना मन में आज।
सन्निधि मिले आप जिनराज, पाऊँ शिवपुर का साम्राज्य॥1342॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. सन्मति देते आदि जिनेश, रहा न कुछ भी जानन शेष।
स्वात्म ज्ञान में जिनवर दक्ष, मुनियों के प्रभुवर अध्यक्ष॥1343॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. प्रातः भजूँ आपका नाम, दिन बीते अच्छे हो काम।
दिन-रात्रि शुभ हो यह वर्ष, आदिप्रभु से ये ही अर्ज॥1344॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

अव्यय आदिक प्रभु के नाम, पूजें सुर नर कर गुणगान।
अर्घ्य चढ़ाऊँ तव पद नाथ, पाऊँ मैं मुक्ति साम्राज्य॥
ॐ ह्रीं सहस्रनामाधीश्वराय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 25

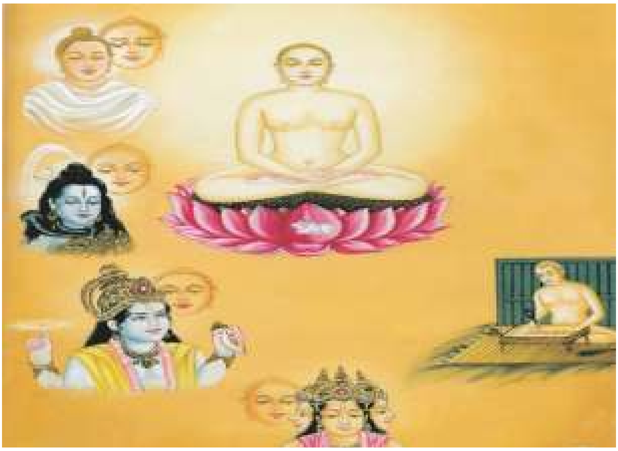

चतुर्विंशतिदल कमल पूजा

बुद्ध शिव शंकर आप ही

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धिबोधात्
त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रय - शङ्करत्वात्।
धातासि धीर! शिवमार्ग विधे - र्विधानाद्
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि॥ 25॥

विष्णुपद छन्द

केवलज्ञानी सुर पूजित होने से बुद्ध तुम्हीं।
त्रिभुवन में सुख करने वाले शंकर नाथ तुम्हीं॥
मोक्षमार्ग की विधि बतलाते ब्रह्मा कहलाते।
सारे जग में श्रेष्ठ विष्णु पुरुषोत्तम पद पाते॥
दोष अठारह रहित बुद्ध शिव शंकर ब्रह्मा आप।
वीतराग सम देव न दूजा नमूँ-नमूँ नत माथ॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥25॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं।

गृहीततपसोऽत्यक्तान्, मुनीनुग्रतपोयुतान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 25॥

ॐ ह्रीं अर्हं उग्रतपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

सखी छन्द

1. **बुधजन पूजन को आते, झुक-झुक कर शीश नवाते।**
   कर अष्ट द्रव्य से पूजा, तुम सम आराध्य न दूजा॥1345॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. **हे शुद्ध बुद्ध जिनरायी, होकर विदेह सुखदायी।**
   मैं भी सिद्धासन पाऊँ, बन जैनागम श्रद्धालु॥1346॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. **शिव मार्गस्त्वया प्रणीतं, मैं चलूँ वही पथ नित्यं।**
   निशदिन मैं नाम रटूँगा, जब तक शिवसुख न वरूँगा॥1347॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. **मेधावी भी सिर नाते, प्रभु से सम्यक् श्रुत सुनते।**
   जो भक्ति से प्रभु पूजे, वे पाप तमस से छूटे॥1348॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. **वह बोधि लाभ को पावे, जो आप शरण में आवे।**
   आदीश विधाता मेरे, सद्भक्त आपको टेरे॥1349॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. **विपदाएँ जिनने झेली, वे करें निजातम केलि।**
   प्रभु समता से जीते हैं, निज अनुभव रस पीते हैं॥1350॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. **बुद्धि सार्थक तब होती, जब पाप मलों को धोती।**
   हो सदुपयोग बुद्धी का, तो अधिकारी मुक्ती का॥1351॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. **धा**र्मिक बनकर जीना है, जिनवचन सुधा पीना है।
सब कर्मों को खोना है, अब अजर-अमर होना है॥1352॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त ‘धार्’ बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. अ**र्चि**त हैं ऋषि मुनियों से, स्वर्गों के सुर-सुरियों से।
जग के सब देव नमे हैं, पर निज में आप रमे हैं॥1353॥
ह्रीं अर्हं महिमायुक्त ‘चि’ बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. **त**रसा है मनवा मेरा, भक्तों ने तुमको टेरा।
सर्वत्र स्वर्ग-सा लगता, जिनदर्शन से सुख मिलता॥1354॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त ‘त’ बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. **बु**द्धि विशुद्धि वर्धक हो, शिव सुखकर दुखहारक हो।
मैं करूँ रात-दिन भक्ती, दो ऐसी जिनवर बुद्धी॥1355॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त ‘बु’ बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. मन शु**द्धि** वच तन शुद्धि, होवे यदि आत्म विशुद्धि।
निश्चित वह पाए मुक्ती, जैनागम की यह युक्ती॥1356॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त ‘द्धि’ बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. **बो**धित कर बुद्ध हुए हैं, प्रभु स्वयं विशुद्ध हुए हैं।
हे कुशल कला के धारी, वश कर ली मुक्ती नारी॥1357॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त ‘बो’ बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. क्रो**धात्** मिले ना शान्ति, मन बोध धरो तज भ्रान्ति।
यह प्रभु का है उद्बोधन, कर लूँ निजात्म का शोधन॥1358॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त ‘धात्’ बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. **त्वम्** आदिनाथ जिन वन्दन, त्रिभुवन नेता अभिनन्दन।
सारे जग में यश फैला, मैं जपूँ नाम की माला॥1359॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त ‘त्वम्’ बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. **शं**कादिक दोष निवारे, प्रभु निःशङ्क मोक्ष पधारे।
नहीं पार गुणों का पावें, सब झुक-झुक शीश नमावें॥1360॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त ‘शं’ बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. कलशों में जल भर लाए, सुर-नर अभिषेक कराए।
प्रभुवर अनन्त गुण धारे, भविजन जय-जय उच्चारें ॥1361॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. रोमांचित होता तन मन, भविजन करते गुण चिन्तन।
बिन माँगे सब मिल जाता, प्रभु कल्पतरु सम दाता॥1362॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. वृषभोऽसि जग के नेता, पंचेन्द्रिय मन के जेता।
प्रभु श्रेष्ठ शील गुणधारी, जयवन्त सदा जिनरायी॥1363॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऽसि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. भुक्ति से मिले न मुक्ती, कहते यह आदीश्वर जी।
उपवास किए छह मासी, हो गए मोक्षपुर वासी॥1364॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वर्चस्व आपका भारी, गुण गाती दुनिया सारी।
प्रभु की तन आभा प्यारी, दर्शन कर हो अविकारी॥1365॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. नभ से पुष्पाञ्जलि करते, सुरगण प्रभु नाम सुमरते।
श्रद्धा से तुमको देखे, अन्तर्मन से अवलोके॥1366॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. त्रय ताप मिटाने वाले, समरस बरसाने वाले।
शिव के साधन जिनराजा, लोकाग्र बसे सरताजा॥1367॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. यम देख आपको भागे, बेचारा नजर झुकावे।
संयम से यम को जीता, मैं गाऊँ प्रभु गुण-गीता॥1368॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. शंकर कहलाने वाले, सुख शान्ति दिलाने वाले।
सिरमौर आप त्रिभुवन के, उद्धारक मम जीवन के॥1369॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. कवि कालिदास ईर्ष्यालु, मुनि मानतुङ्ग श्रद्धालु।
कवि ने नृप को भड़काया, पर नृप ने शीश नवाया॥1370॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रहे तीन दिवस बन्धन में, चौथे दिन के अतिशय में।
कमरे के ताले टूटे, तन बन्धन सारे छूटे॥1371॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. नित्यत्वात् आदि जिनेश्वर, नहीं आएँगे धरती पर।
अतएव यहीं से पूजूँ, आठों द्रव्यों से अर्चूं॥1372॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वात्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. धारण पालनहारे हो, प्रभु ही तारणहारे हो।
डूबत अनगिन भवि तारे, प्रभु हो प्राणों से प्यारे ॥1373॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. ताले मजबूत भले हो, बिन शस्त्र स्वयं टूटे वो।
हो मानतुङ्ग सम भक्ती, बन्धन से मिलती मुक्ती॥1374॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. सिद्धान्त पार कर डाला, खोला शिवगृह का ताला।
कैसे गुण गाऊँ स्वामी, अल्पज्ञ रहा तुम ज्ञानी॥1375॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. धीरज धारी जिनराई, चिन्मय स्वातम निधि पाई।
मेरे भगवन् प्राणेश्वर, पूजा के योग्य जिनेश्वर ॥1376॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. रत्नाकर सच में तुम हो, गुण अनन्त प्रकट किए हो।
प्रभु पूर्ण गुणों के आलय, पूजत पाऊँ सिद्धालय॥1377॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. शिशु प्रभु से अरज करे हैं, असहाय पुकार रहे हैं।
अब संबल दो जिनरायी, मेटो सब अघ दुखदायी॥1378॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. वचनामृत मुझे पिला दो, प्रभु अनन्त काल जिला दो।
मैं जब तक मोक्ष न पाऊँ, तव सन्निधि कभी न त्यागूँ॥1379॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मालव के धार नगर में, श्री भोज राज शासन में।
भक्तामर लिखा गया है, भव्यों के मन भाया है॥1380॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. दुर्गम है मार्ग तिहारा, मुश्किल से मिले किनारा।
प्रतिपल मम समीप रहना, मुक्ती तक दूर न करना॥1381॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र्ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. विपरीत डगर ना चलना, प्रभु कहते सत्पथ चुनना।
निश्चित भगवान बनोगे, शाश्वत सुख प्राप्त करोगे॥1382॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. प्रभु विधेर्विरत हैं शाश्वत, हैं देह रहित जिन भास्वत।
यह भक्त मोक्ष ही चाहे, चल सकूँ सत्य की राहें॥1383॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धेर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. विमलेश्वर हो जिनरायी, दो मोक्षधाम सुखदायी।
ना सुर सम्पद मैं चाहूँ, शिव सम्पद ही मैं चाहूँ॥1384॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. धारे ना वस्त्राभूषण, नहीं रहे अठारह दूषण।
ऐसी कृतकृत्य दशा हो, पा जाऊँ श्रेष्ठ कला वो॥1385॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. है **नाद्** आपका अनुपम, सुनकर हो सिद्ध मुनीजन।
प्रभु पूर्ण विज्ञ तेजस्वी, मैं पूजूँ परम यशस्वी॥1386॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. अ**व्य**य सुख के धारी हो, जननी सम हितकारी हो।
सब दूर असाता करते, बिन चाहे सब कुछ देते॥1387॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. त्य**क्तं** वसनं निर्दोषं, निर्ग्रन्थ नन्त गुणकोषं।
गुण समुद्र आप विशेषा, तुमसा ना जग में देखा॥1388॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्तं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. **त्व**त् प्रसाद से सुख पाता, वृषभेश्वर नाम सुहाता।
बिगड़े मम काम बना दो, शिवधाम मुझे पहुँचा दो॥1389॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. ज्यों **मे**घ बरसते नभ से, त्यों दिव्यध्वनि प्रभु मुख से।
प्रत्यक्ष सुनूँ जिनवाणी, हो जाऊँ केवलज्ञानी॥1390॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. **व**नवास करें सब त्यागा, तन पर इक रहा न धागा।
इक सहस वर्ष तप करके, आनन्दित मुक्ती वर के॥1391॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. **भ**व रोग लगा अति भारी, मैं भोग रहा संसारी।
जित इन्द्रिय आप हुए हो, शूरों में शूर तुम्हीं हो॥1392॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. **ग**णधर गूँथे जिन वचना, जिनवच सुन भव से बचना।
सन्मति देकर अपनाओ, सन्मार्ग मुझे दर्शाओ॥1393॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. **वन्**दे तव सम गुण पाने, वसु विधि सब कर्म मिटाने।
मैं आया शरण तिहारी, वन्दन जिनेन्द्र त्रिपुरारि ॥1394॥
ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. पुण्यात्मा दर्शन पाते, पूजन करने को आते।
पापी को भाव न होवे, प्रभु की भक्ति ना भावे॥1395॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रुचि जब निज हित में लागे, कुमति तब झटपट भागे।
सब विभाव हनन करूँ मैं, शिवपथ पर गमन करूँ मैं॥1396॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. षोडश कारण प्रभु भाई, तीर्थङ्कर पदवी पाई।
हो गए सिद्धपुर नेता, सब मोह मल्ल के जेता॥1397॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. उत्तम कुल चार जगत में, सिद्धार्हत् साधु धरम ये।
मैं नमूँ चार लोकोत्तम, पद पाना है सर्वोत्तम॥1398॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. मोक्षेच्छु होकर भगवन्, सब मिटा दिया मिथ्यातम।
मेरे मन प्रभु पधारो, तम मिटा ज्ञान उजियारो॥1399॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. परमोऽसि हो आदीश्वर, मेरु सम दृढ़ परमेश्वर।
ऐसी दृढ़ता मैं पाऊँ, अरजी कर अर्घ्य चढ़ाऊँ॥1400॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऽसि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

हो बुद्ध विधाता शंकर, मैं नित्य नमूँ वृषभेश्वर।
श्रद्धा से अर्घ्य बनाया, जिन चर्ण चढ़ाने लाया॥

ॐ ह्रीं षड्दर्शनपारङ्गताय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 26

मध्यम मंगलाचरण

तुभ्यं नमस् त्रिभुवनार्तिहराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षितितलामल - भूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधिशोषणाय॥26॥

विष्णुपद छन्द

तीन जगत के दुख हर्त्ता हे प्रभुवर तुम्हें प्रणाम।
पृथ्वीतल के निर्मल भूषण जिनवर तुम्हें प्रणाम॥
त्रिभुवन के परमेश्वर तुमको बारम्बार प्रणाम।
अपार भवदधि शोषणहारे आदि जिनेश प्रणाम॥
मध्यम मङ्गल करूँ भाव से सारे बन्ध नशें।
मेरी ज्ञान वेदि पर आदि जिनेश्वर नित्य बसें॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥26॥

(ऋद्धि)ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं।

प्रदीप्ततपसा युक्तान्, भानुतेजोऽधिकप्रभान् ।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 26॥

ॐ ह्रीं अर्हं दीप्ततपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. **तुम्हें छोड़कर किसको देखूँ, दर्शन के कुछ योग्य नहीं ।**
पल-पल रहती यही भावना, पा जाऊँ कब मोक्ष मही॥1401॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **अभ्यंतर परिग्रह तजते ही, त्वरित वेग से आप बढ़े ।**
ज्ञानचक्षु को खोल शीघ्र ही, मुक्ति के सोपान चढ़े॥1402॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्यं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **नत हूँ बारम्बार चरण में, नमते ही सुख मिलता है।**
मोक्षमहल का दृढ़ दरवाजा, आप कृपा से खुलता है॥1403॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **महा महोत्सव लगा मुझे जब, एक झलक प्रभु की पाई।**
लगा मुझे उस पल तो मानो, मुक्ति ही मैंने पाई॥1404॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **नमस्त्रिलोकी नाथ आपको, वन्दन से मन हर्षित हो।**
जिन सूरज के दर्शन करके, भव्य कमल ही विकसित हो॥1405॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **भुवनत्रय में आप श्रेष्ठ हो, त्रिकालज्ञानी कहते हैं।**
इसीलिए तो तीन लोक के, अधिपति पद[1] में झुकते हैं॥1406॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **वर्तमान के प्रथम तीर्थङ्कर, आदीश्वर को वन्दन हो।**
भटके हुए भव्य जीवों के, मिटा रहे प्रभु क्रन्दन को॥1407॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. चरण

8. ज्ञानार्णव परिपूर्ण भरा है, प्रभुवर ज्ञान सुधाकर हो।
मेरे तो सर्वस्व आप ही, दुखहर सौख्य दिवाकर हो॥1408॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नार्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. तिरना भव से नहीं जानता, प्रभु अब तिरना सिखला दो।
पिता पुत्र को क्या न सिखाता, सुत का नाता दिखला दो॥1409॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. हजार बार द्वार पर आया, किन्तु न श्रद्धा नयन खुले।
सम्यग्दृष्टि होकर देखा, प्रभु प्रत्यक्ष सु-दर्श मिले॥1410॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. राम राज्य में जो सुख होता, उससे ज्यादा तव पद में।
किया भक्त ने ऐसा अनुभव, लिख न सके वह अक्षर में ॥1411॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. यश गाथा को सुनकर मेरु, स्वयं नम्र हो जाता है।
सुध पा लेता बुधजन अपनी, या सुध-बुध खो देता है ॥1412॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. नाम मन्त्र की अतिशय महिमा, गूँथ सकूँ ना शब्दों में।
आदिप्रभु जी बसे हुए मम, चेतन के शुभ भावों में॥1413॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. थर-थर काँप रहा बेचारा, मोह आपकी शक्ति देख।
जिसने सब पर विजय प्राप्त की, भाग गया वह सिर को टेक॥1414॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. तुमको पूजे सुरपति अहिपति, नरपति भावों से भरकर।
मैं आया हूँ शीश झुकाकर, हाथ जोड़कर तव दर पर ॥1415॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. बाह्याभ्यंतर इक हजार कुल, वर्ष प्रभु ने ध्यान किया।
हो एकाग्र शान्त भावों से, शिवललना से मिलन किया॥1416॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्यं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. नमता जो भी तव चरणों में, मिला संयमाचरण तभी।
मन कहता तव पद में झुककर, करूँ मुक्ति का वरण अभी॥1417॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. नमः प्रथम वृषभेश तीर्थंकर, लोकालोक विलोकी हो।
मैं अज्ञानी अबोध हूँ प्रभु, त्रिभुवननाथ त्रिलोकी हो॥1418॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. क्षिति तल पर जयवन्त नाम प्रभु, स्वर्णाक्षर से अंकित है।
मेरी हृदय वेदि पर जिनवर, श्रद्धाक्षत से पूजित हैं॥1419॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तिलक लगा लेने से केवल, धर्मात्मा ना होता है।
सम्यक् भावों से अर्चा कर, धर्मी ही कहलाता है॥1420॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तपन विभाव अनल की भगवन्, नन्त काल से जला रही।
पुण्योदय से लगा मुझे अब, जिनवाणी माँ बुला रही॥1421॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. लाभान्वित होता है निश्चित, मन से भक्त करे भक्ति।
केवल कायिक क्रिया करे तो, कैसे हो भव से मुक्ति॥1422॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ला' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. मरना जीना नन्त काल से, अनन्त बार किया मैंने।
अजर अमर पद पाने भगवन्, द्वार आ गया हूँ अब मैं॥1423॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. लहराया ध्वज जैन धर्म का, आदिप्रभु के कारण ही।
अष्टम वसुन्धरा पहुँचे प्रभु, जहाँ दुःख का काम नहीं॥1424॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. भूत भविष्यत वर्तमान को, जाने सर्व चराचर ही।
शाश्वत जीवित रहते भगवन्, सुखानन्द रस पीकर ही॥1425॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. षट् लेश्या से विरहित होकर, योग रहित आदीश्वर हैं।
कषाय रंजित योग प्रवृत्ति, लेश्या मुक्त जिनेश्वर हैं॥1426॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. 'णाणी णाण सहावो' कहते, कुन्द-कुन्द आचार्य महा।
आत्मा ज्ञान स्वभावी इसमें, चेतन गुण यह मुख्य रहा॥1427॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. यक्ष शीश पर चक्र धारकर, समवसरण में खड़े रहें।
निज को बड़भागी मानें वे, अपलक प्रभु को देख रहे॥1428॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तुम बिन मैं व्याकुल हूँ भगवन्, जैसे जल बिन मीन रहे।
जिनको मिली आपकी शरणा,उनके अघ सब क्षीण हुए॥1429॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. लभ्यं नहीं सुलभ शिवपथ यह, अति दुर्लभता से पाते।
शिवगामी हो वही सहज जो, प्रभुवर के द्वारे आते॥1430॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्यं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नगर बनारस काशी में मुनि, मानतुङ्ग का जन्म हुआ।
भक्तामर की रचना करके, जिनशासन को धन्य किया॥1431॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. मनपर्यय सु -ज्ञान प्रभु ने, दीक्षा लेते ही पाया।
शुक्लध्यान बल के द्वारा फिर, पूर्णज्ञान को प्रकटाया॥1432॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. नमस्त्रिधा श्री वृषभनाथ को,मन वच तन से नमन करूँ।
विरत रहूँ इन्द्रिय विषयों से, अर्ज यही निज रमण करूँ ॥1433॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जपता है नित नाम आपका, फिर भी पाप नहीं घटते।
जिनवाणी कहती है क्योंकि, श्रद्धा से तुम ना जपते॥1434॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. गर्व ज्ञान का कभी करो ना, स्वातम गरिमा पहचानो।
मानतुङ्ग मुनिवर समझाते, जिन से निज को तुम जानो॥1435॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. दीप्तः दिखते कान्तिमान प्रभु, किन्तु श्वास उच्छ्वास नहीं।
अचरज होता अज्ञ जनों को, प्रभु दर्शन मम आश रही॥1436॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. परम पूज्य श्री वृषभनाथ जी, मुझ पर धर्म-वृष्टि करिए।
पाप पंक से मलीन हूँ मैं, मलीनता मेरी हरिए॥1437॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. रत्नपुरी के राजा भगवन्, अनन्त गुण रत्नों की खान।
धर्मतीर्थ के प्रथम प्रवर्तक, जैन-धर्म की पहली शान॥1438॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. मेरी भूल क्षमा कर देना, मैं दोषों का पुंज प्रभो।
हितोपदेशी आदिप्रभु की, शरण मिली सौभाग्य अहो॥1439॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. पूर्णेश्वर की शरण ग्रहण कर, निज दोषों का भान हुआ।
स्वभाव का अवभास हुआ औ, विभाव का अवसान हुआ॥1440॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. राग-द्वेष द्वय आतम शत्रु, नन्त काल से सता रहे ।
समवसरण में शोभित जिनवर, दिव्यध्वनि से बता रहे॥1441॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. यश प्राप्ति के लिए अज्ञ जन, मनमाने षड्यन्त्र करें।
खाई समान ख्याति कहलाती, ऐसा श्री जिनदेव कहें॥1442॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. तुमसा जग में दिखा न कोई, परम वीतरागी भगवन्।
इसीलिए मैं रागी दर तज, नाथ आ गया तव चरणन॥1443॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. अभ्यंतर तप करके स्वामी, कर्म काष्ठ को जला दिया।
जिनने सुमिरन किया तिहारा, समीप उनको बुला लिया॥1444॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्यं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. नगर कारकल में दीक्षा ली, मानतुङ्ग श्री मुनिवर ने।
गुरु थे उनके चारुकीर्ति यति, नमूँ उन्हें जोडूँ कर मैं॥1445॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मोती माणिक लाकर पूजे, सुरगण नर चक्री सारे।
भक्त चाहता चरण चढ़ाऊँ, नभ के रवि शशि औ तारे॥1446॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. जिनभक्ति में चित्त लगे तो, और नहीं कुछ मन भाए।
ज्यों रावण नस तोड़ हाथ की, वाद्य बजाकर रम जाए॥1447॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. नवा रहे जो माथ चरण में, ज्ञान तन्तु विकसित होते।
सद् विचार सद्भक्ति से ही, भविजन आनन्दित होते॥1448॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. भटक-भटक कर भक्त आपका, बहुत थक गया है स्वामी।
जर्जर हुई चेतना इसकी, कुछ उपचार करो स्वामी॥1449॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. सर्वोत्तम जिनधर्म दया का, मूल मन्त्र सिखलाता है।
नाथ आपने बतलाया यह, जैन-धर्म सुखदाता है॥1450॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. **द**र्शनार्थ जो आए भगवन्, दर्शनीय बन गए सभी।
निजदर्शन है लक्ष्य भक्त का,दर्श प्राप्त हो आज अभी॥1451॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. **धि**क् धिक् है धिक्कार भोग को, भुजङ्ग सम ही डँसते हैं।
भोग समय अच्छे लगते पर, कर्मोदय में रोते हैं॥1452॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. **शो**षक प्रभु संसार सिन्धु के, सहज भाव से पार हुए।
नैया और खिवैया बनकर, असंख्य भविजन तार दिए॥1453॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. **ष**ट् रस त्याग किए आदीश्वर, इक्षुरस आहार लिए।
पंचाश्चर्य किए देवों ने, नृप श्रेयांस को धन्य किए॥1454॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. **णा**णी अपनी ज्ञान गुफा में, शान्तमना निज ध्यान धरें।
पर पदार्थ का करें न चिन्तन, स्वातम का ही ज्ञान करें॥1455॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. **य**न्त्र तन्त्र की नहीं जरूरत, मनोभाव यदि पावन है।
भाव शुद्धि से बीहड़ वन भी, लगता जैसे मधुवन है॥1456॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

प्रभु दुख हर्त्ता जग के भूषण, त्रिभुवन के परमेश्वर हैं।
भवदधि शोषक आदिप्रभु को, सविनय अर्घ्य समर्पण है॥

ॐ ह्रीं नानादु:खविलीनाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰27

पूर्ण निर्दोष

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैस्-
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश।
दोषै - रुपात्त - विविधाश्रय - जातगर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि॥27॥

विष्णुपद छन्द

सर्व गुणों को मिल ना पाया और कहीं आवास।
अतः सभी गुण शरणागत हो बने आपके दास॥
अन्य विविधजन का आश्रय पा दोष करें अभिमान।
स्वप्न मात्र में भी ना देखें दोष तुम्हें भगवान्॥
इसमें कुछ आश्चर्य नहीं निर्दोष स्वभावी आप।
दोष रहित गुण कोष रहूँ मैं मात्र यही अभिलाष॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥27॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं।

विडादिरहितान् धीरान्, यतींस्तप्ततपोऽन्वितान्।
यजेऽहं परया भक्त्या,नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 27॥

ॐ ह्रीं अर्हं तप्ततपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

दोहा

1. **कोटि-कोटि वन्दन करूँ, वचन सिद्धि के नाथ।**
इक भव में ही मुक्ति हो, कह दो प्रभु इक बार॥1457॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'को' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **विमुख हुए भव भोग से, स्व सम्मुख उपयोग।**
ऐसे प्रभु की भक्ति का, पाया आज सु-योग॥1458॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **स्मरण रहे नित आपका, ऐसी मति हो नाथ।**
दुर्लभता से प्रभु मिले, कभी न छोड़ूँ हाथ॥1459॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **योजन इक तक वच सुने, समवसरण में जीव।**
प्रभु की पाकर निकटता, हो आनन्द अतीव॥1460॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **कोऽत्र जगत में हैं सुखी, दुख दायक संसार।**
धर्म बिना सुख है नहीं, जिन वचनों का सार ।।1461॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऽत्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **यमी दमी हो उद्यमी, किया कर्म को शान्त।**
धन्य आत्म पुरुषार्थ को, मिटा मोह का ध्वान्त॥1462॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **दिशाबोध देते रहे, समवसरण के बीच।**
करके योग निरोध जिन, हुए आप सिद्धीश॥1463॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. **नामकर्म का नाम ही, मिटा दिया प्रभु आप।**
जग में नाम प्रसिद्ध है, किन्तु सिद्ध हैं नाथ॥1464॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. **मनुजलोक से मैं प्रभो, भक्ति करूँ दिन-रात।**
भक्ति से मुक्ती मिले, जग प्रसिद्ध सिद्धान्त॥1465॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. **गुप्ति समिति व्रत धारकर, पाले पंचाचार।**
ऐसे गुणधर सन्त को, वन्दन बारम्बार॥1466॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. **क्षणै-क्षणै मैं स्मरण कर, आदिप्रभु का नाम।**
निजात्म में क्रीड़ा करूँ, ऐसा दो वरदान॥1467॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. **रस गन्धादिक से रहित, ज्ञान दर्श से युक्त।**
पुद्गल से दृष्टि हटा, शुद्धातम संयुक्त॥1468॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. **शेर हिरण आदिक पशु, समवसरण में आए।**
मौन सहित अपलक लखे, वचन सुने सिर नाए॥1469॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. **पुरुषै स्त्वं अभिषिक्त हैं, फिर पूजे नर-नार।**
भव्यजनों के हृदय में, बहे ज्ञान रसधार॥1470॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षैस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. **त्वम् आदीशं पावनं, पूजे प्रतिदिन भक्त।**
जो आतम निर्मल करे, अति शीघ्र हो मुक्त॥1471॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. **संकल्पित हो शीघ्र ही, लिया मोह को जीत।**
देह रहित होकर प्रभो, रहते देहातीत॥1472॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. आश्रित रहते भव्यजन, उन्हें मुक्ति मिल जाए।
प्रभु संगति से प्रभु बने, लक्ष्य पूर्ण हो जाए॥1473॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तोल-तोलकर बोलिए, पर को दुख ना होए।
वचनों में मिश्री घुले, अरिगण सु-मित्र होए॥1474॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. निरूपण करते तीर्थंकर, सप्त तत्त्व का मर्म।
पाप भाव से अधर्म हो, पुनीत भाव से धर्म॥1475॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. रसिक आप निज आत्म के, दृष्टि न पर में जाए।
ऐसे साधक को नमूँ, सविनय शीश झुकाए॥1476॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वसंततिलका छन्द में, रचा स्तोत्र सुखकार।
इक-इक अक्षर भाव से, पढ़े तो सौख्य अपार॥1477॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. कामदेव का रूप भी, प्रभु आगे निस्तेज।
क्योंकि आपने ध्यान से, पाया स्वयं चिदेश॥1478॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. शरद पूर्णिमा का शशि, जिनछवि लख शरमाए।
कहाँ काँच हीरा कहाँ, तुलना करी ना जाए॥1479॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तन्मय हो प्रभु देखते, सिद्धवधू का देश।
स्वातम दर्पण में दिखे, असंख्य आत्मप्रदेश॥1480॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. **या**त्रा करके मोक्ष की, कभी न लौटे सिद्ध।
पंच परावर्तन मिटा, हुए शाश्वता सिद्ध॥1481॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. **मु**खरित होते हैं प्रभु, भविजन के हो भाग्य।
मैं भी प्रभु वाणी सुनूँ, कब जागे सौभाग्य॥1482॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. **नी**ति नियम बतला दिए, युगादि में जिन आप।
जो नियमानुसार चले, मिटे सकल संताप॥1483॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. **श**ल्य त्रय क्षयकर प्रभो, हुए श्रेष्ठ व्रत धार।
व्रती बने बिन मोक्ष ना, कहते हैं आचार्य॥1484॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. **दो**षारोपण अन्य पर, मत करना रे जीव।
प्रभु कहते निज को लखो, पाओ सौख्य सदीव॥1485॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. गुण को**षै**: गुण से भरे, दोष हरो मम नाथ।
निर्दोषी होकर प्रभो, बसूँ आपके पास॥1486॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. **रु**का हुआ दुर्गन्ध युत, जल पीवे ना कोए।
रुके यदि तुम जगत में, कैसे मुक्ति होए॥1487॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. **पा**मर हूँ मैं परम जिन, करिए पावन आप।
शक्ति निज सम करन की, तुममें है जिनराज॥1488॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. चित्त सदा चंचल प्रभो, थिर ना हो उपयोग।
जिन औ निज में थिर करो, यही अरज कर जोड़॥1489॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. विशालकाय पन शत धनु, तप्त स्वर्णमय दीप्त।
दिव्य छवि लख थिर हुआ, भव्यजनों का चित्त॥1490॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. विषाद विस्मय आदि सब, दोष अठारह मुक्त।
जिन रवि किरणों से खिले,अनगिन भविजन पुष्प॥1491॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. धाम आपका श्रेष्ठ है, सिद्धालय शुभ नाम।
शाश्वत रहते सिद्ध जिन, आने का ना काम॥1492॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. श्रवण करूँ जिनवचन ही, सार्थक हो यह कर्ण।
निन्दा सुनूँ न और की, यही भक्त की अर्ज॥1493॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. यह वह करते हो चुका, अब तक काल अनन्त।
अब जिन निज की सुन कथा, करूँ कर्म का अन्त॥1494॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. जागो-जागो प्राणियों, जगा रहे जिनराज।
मोह चँदरिया त्याग दो, पाना यदि शिव राज॥1495॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. तपोनिष्ठ मुनिराज ही, करे कर्म की राख।
तपधर मुनि का दर्श हो, खुले ज्ञान की आँख॥1496॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. गर्भ समय के पूर्व ही, बरसे रत्न अपार।
सुरगण में उल्लास था, नमते बारम्बार॥1497॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. सर्वैः सबसे वन्द्य हैं, वीतराग जिन रूप।
नमें नहीं नास्तिक कभी, भोगे भव दुख कूप॥1498॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वैः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. स्वर पाया तो कर भजन, लगा प्रभु में चित्त।
मानतुङ्ग मुनिवर कहें, होगा हृदय पवित्र॥1499॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. स्वप्नान्तर में भी नहीं, पापी मुक्ती पाय।
अतः पाप तज जाप कर, मिले मुक्ती सुखदाय॥1500॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्नान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तत्त्वान्वेषी जीव ही, करें स्वात्म कल्याण।
छिद्रान्वेषी परमति, भव भटके नादान॥1501॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. अरे! जीव क्या कर रहा, जिनवर रहे पुकार।
पर परिणति को छोड़कर, अपनी मति सुधार॥1502॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. सोऽपि रतिपति देख प्रभु, भय से भागा शीघ्र।
तीर्थङ्कर आदीश की, द्युति लख देह पवित्र॥1503॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऽपि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. नन्दा सुनन्दा पत्नियाँ, तजकर दीक्षा धार।
तृतीय काल में ही किया, सिद्धनगर में राज॥1504॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. कषाय अति दुखकार है, अतः तजी जिनराय।
निष्कषाय निज भाव से, हुए सिद्ध गणराय॥1505॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. दाता जग में श्रेष्ठ जिन, दिए वचन हितकार।
सुनकर लाखों तिर गए, अब है मेरी बार॥1506॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. चिन्मय चेता आपको, वन्दन बारम्बार।
वृहस्पति भी गा रहे, तव गुण अपरम्पार॥1507॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. दलितों का उद्धार कर, आश्रय देते आप।
प्रतिपल हित की भावना, रखते आदीनाथ॥1508॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. पीर हरो मम धीर दो, मैं हूँ बाल अधीर।
आप मात औ तात सब, पहुँचा दो भव तीर॥1509॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. क्षितिज के भी पार को, देख रहे हैं आप।
केवलज्ञान नयन खुले, दिखता सब संसार॥1510॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. तोरणद्वार सजा रहे, जब हो प्रभु विहार।
हर्षित हो नर-नारियाँ, सुख का रहे न पार॥1511॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. शुद्धोऽसि वृषभेश जिन, महिमा लिखी न जाए।
नन्त सिद्ध जहाँ राजते, दर्शन को ललचाए॥1512॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऽसि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

शरणागत गुण दास बन, रहे आपके पास।
दोष रहित आदीश जिन, अर्घ्य चढ़ाऊँ आज॥

ॐ ह्रीं सकलदोषविनिर्मुक्ताय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 28

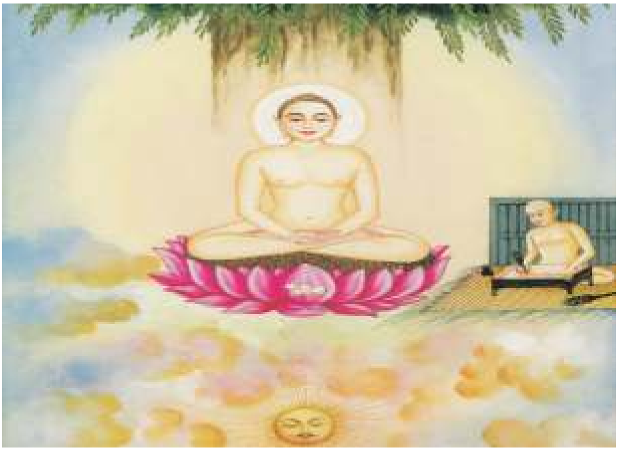

अशोक वृक्ष प्रातिहार्य

उच्चै - रशोकतरु - संश्रित मुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्किरण- मस्ततमो- वितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति॥28॥

विष्णुपद छन्द

बारह गुना प्रभु से ऊँचा वृक्ष अशोक विशाल।
उसके नीचे प्रभु विराजे तरुवर हुआ निहाल॥
ऊर्ध्व किरण से मण्डित उज्ज्वल रूप आपका है।
ज्यों बादल के निकट तेजमय सूर्य शोभता है॥
समवसरण में भवि जीवों को मोहतमस नाशी।
प्रातिहार्य धारी प्रभु का मैं दर्शन अभिलाषी॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥28॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं।

महातपोयुतान् षण्मा, सादिप्रोषधकारकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये ॥ 28॥

ॐ ह्रीं अर्हं महातपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

विष्णुपद छन्द

1. **उद्बोधन देकर भव्यों पर किया नन्त उपकार।**
इसीलिए श्री आदिप्रभु का गुण गाता संसार॥1513॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'उ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **चिच्चैतन्य रूप के धारी भक्त हृदय आओ।**
बुला रहा यह भक्त भाव से अब ना तरसाओ॥1514॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च्चै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **रवि शशि को भी प्रभु कान्ति लख होता है आश्चर्य।**
आत्म शान्ति पाने को पूजे प्रभुवर को हर आर्य॥1515॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **शोभित होते आदिप्रभु जी समवसरण के बीच।**
मुझे बचा लो फँसा हुआ हूँ जहाँ कर्म का कीच॥1516॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **कहर ढा रहे हैं मुझ पर दुष्कर्म बचा लो नाथ।**
महा पराक्रम धारी मेरा पकड़ लीजिए हाथ॥1517॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **तप्त लोह ज्यों पानी को आकर्षित करता है।**
विषय कषायासक्त जीव ही बन्धन करता है॥1518॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **रुदन किया अब तक आँसू कई सागर भर जाएँ।**
फिर भी सँभल नहीं पाया अनगिन ही दुख पाए॥1519॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. सन्मति देकर नाथ चतुर्गति भ्रमण विनाश करो।
श्रद्धालु मैं भक्त आपका सारे दोष हरो॥1520॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. आश्रित जो भी रहे प्रभु के बेड़ापार हुआ।
जो प्राणी अभिमान करे उनका सुख चूर हुआ॥1521॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. तड़-तड़ टूट गए सब बन्धन मुनि की भक्ति से।
जैनधर्म स्वीकार किया नृप भोज झुका पद में॥1522॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मुन्डन किया केश का किन्तु क्लेश मिटा न लेश।
नन्त काल से परदृष्टि रख मिला न चिन्मय देश॥1523॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मुन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. मनचाहा न होता फिर भी चाह करे प्राणी।
शिव की राह चलूँ भगवन् यह भक्त करे अरजी॥1524॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. मयूर मन का नाच उठा है जिनदर्शन पाकर।
वचनामृत पीकर हो जाऊँ अब तो अजरामर॥1525॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. खगधर मुनिवर गणधर सारे जिनपद में नमते।
शान्त अलौकिक मुद्रा लखकर निज में खो जाते॥1526॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. मान विनाशक स्तोत्र मुनि श्री मानतुङ्ग रचते।
श्रद्धा से पढ़कर तन मन चेतन के दुख मिटते॥1527॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. भाव-भासना बिन यह आतम जग में भरमाया।
अर्थ सहित भावों से पढ़कर मनवाञ्छित पाया॥1528॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. तिरछी चाल व तिरछी दृष्टि श्रेष्ठ नहीं मानी।
सादा जीवन सम्यक् दृष्टि रखो कहें ज्ञानी॥1529॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. स्वरूप निज का जान सका ना अत: भटकता है।
प्रभु गुण के अनुरागी को वैराग्य झलकता है॥1530॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. परमोल्लास भाव से भगवन् चरणों में आया।
जनम-मरण मिटाने का सत्पथ तुमसे पाया॥1531॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. मणि-कांचन का योग मिल गया आज आप दर पर।
सद्भक्तों को मिले आज श्री आदिनाथ जिनवर॥1532॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मगन हुए जो नाथ आपके पावन चरणों में।
दूर हो गए वे निश्चित आठों ही कर्मों से॥1533॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. आलम्बन पर्याप्त मुझे है एक नाथ तेरा।
सारी दुनिया भले छोड़ दे साथ यदि मेरा॥1534॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. भगवन् मुझे भरोसा तुम पर भव से तारोगे।
डूब गया तो कैसे तारणहार कहाओगे॥1535॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. वशीकरण ना करते फिर भी भक्त हुआ वश में।
श्वास-श्वास में तुम्हें सुमरता रात और दिन में॥1536॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तोड़ दिए कर्मों के बन्धन हुए नाथ निर्बन्ध।
प्रभु आपसे है मेरा कई जन्मों का सम्बन्ध॥1537॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. निर्भय होकर भक्त आपके धर्माचरण करें।
क्योंकि आप हैं नित्य संग में यह अवभासन है॥1538॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. नितान्त हर्षित होता हूँ मैं आप छवि लखकर।
कहीं न जाना अच्छा लगता नाथ तुम्हें तजकर॥1539॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तं वृषभादि जिनेश्वर मेरे तम का हरण करो।
दिखती नहीं मुझे छवि भगवन् अब तो दर्शन दो॥1540॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. स्पन्दन होता है अपूर्व जब प्रभु मन में बसते।
यों ही बसे रहो आदीश्वर ओझल क्यों होते॥1541॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तव इष्टोपदेश ने ही भवि जीवों को तारा।
आगत विघ्नों को पल-भर में तुमने ही टाला॥1542॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष्टो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. हुआ उल्लसित मन यह मेरा भक्तामर पढ़कर।
मन कहता पल-पल गाऊँ श्वासों की सरगम पर॥1543॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल्ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. सत्स्वरूप मेरा दिखलाया जिससे था अनजान।
नन्त कृपा कर आज करा दी आतम की पहचान॥1544॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. **कितने-कितने दर पर ढूँढ़ा मिले नहीं भगवान।**
भक्तामर भक्ति से पाए आदिनाथ भगवान॥1545॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. **रचनाकार धन्य हैं स्तुति के मानतुङ्ग मुनिराज।**
काव्य अनूठा लिखा किया इस जगती का उद्धार॥1546॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. **णमो वृषभ आदि तीर्थेशा सबमें परम प्रधान।**
तुम्हें मानते भक्त सदा ही प्राणों के भी प्राण॥1547॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. **मण्डित हो सारे गुण से अवगुण ना एक रहा।**
इसीलिए शिवगामी पद में सिर को टेक रहा॥1548॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. **मस्तक झुका-झुकाकर सारे देव नमन करते।**
किन्तु वीतरागी जिनवर आशीष नहीं देते॥1549॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. **तन्मयता से जो भक्तामर सिद्धि मन्त्र जप ले।**
मन्त्रों से आकर्षित होकर मुक्ती उन्हें वर ले॥1550॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. **मोक्षार्थी होना दुर्लभ है कहते श्री जिनदेव।**
भक्त करें अर्चा अब केवल पाने मुक्ती देश॥1551॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. **विशेष ज्ञानी विज्ञानी भी करें प्रभु जयगान।**
जिनशासन पाया है मैंने यह सौभाग्य महान॥1552॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. **ताला तप का लगा कर्म पर संवर अपनाया।**
कर्म निर्जरा कर अंतिम में प्रभु शिवपद पाया॥1553॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नंत सिद्ध हो गए अनन्ता आगे होएँगे।
नाथ कहो सद्भक्त आपके कब तक भटकेंगे॥1554॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. जिनबिम्बों के दर्श मात्र से संबल मिलता है।
सोया भाग्य प्रभु वन्दन से तत्क्षण जगता है॥1555॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बिम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. बंध समय पर सावधान होने से बन्ध कटे।
सत्ता के भी कर्म प्रभु-भक्ति से शीघ्र मिटे॥1556॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. रमणी के आकर्षण में भव नन्त गँवाए हैं।
धन्य प्रभु जी सिद्धालय निज गृह में आए हैं॥1557॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. वेद पुराण सभी में आदीश्वर का नाम लिखा।
रसना सार्थक उनकी है जिनने प्रभु नाम रटा॥1558॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. रिश्ते नाते जग के सब स्वारथ के ही मानो।
निस्वारथ प्रभु और गुरु का नाता पहचानो॥1559॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वर्ण नहीं अब लिखने को कैसे महिमा लिख दूँ।
मात्र आपको इकटक देखूँ और मौन रख लूँ॥1560॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49 परमाह्लाद मुझे होता जब भक्तामर गाता।
गाते-गाते तन नहीं थकता मन पाता साता॥1561॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. योगीश्वर भी निज औ जिन का ध्यान लगाते हैं।
शुभ या शुद्ध भाव में ही उपयोग रमाते हैं॥1562॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. **ध**वल-धवल भावों से मुनि ने संकट मिटा दिया।
प्रभु चरणों में मिथ्यात्वी जन को भी झुका दिया॥1563॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. **र**णनीति में आदिनाथ प्रभु थे अतीव निष्णात।
पलभर में रिपु मोहनीय का करते पूर्ण विनाश॥1564॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. **पा**ती भेजी एक भक्त ने प्रभु आपके नाम।
पढ़कर इसे बुला लेना आदीश्वर अपने धाम॥1565॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. पा**र्श्व** भाग या अग्र भाग में रहो कहीं पर भी।
भक्त ढूँढ़ कर आ जाएगा करने प्रभु-भक्ती॥1566॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र्श्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. **व**सुन्धरा वह हुई स्वर्ग-सी जहाँ चरण पड़ते।
मेरे हृदय धरा पर आओ प्रभो अरज करते॥1567॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. की**र्ति** तीन लोक में फैली किन्तु प्रभु निज लीन।
धन्य आपकी वीतरागता पूजत हो अघ क्षीण॥1568॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र्ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

जिस तरु तल पर नाथ विराजे तरुवर हुआ अशोक।
प्रातिहार्य धर प्रभु की पूजन पहुँचाती शिव लोक॥

ॐ ह्रीं अशोकतरुविराजमानाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 29

सिंहासन प्रातिहार्य

सिंहासने मणिमयूख - शिखाविचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्विलसदंशु - लतावितानम्
तुङ्गोदयाद्रि - शिरसीव सहस्ररश्मेः॥29॥

विष्णुपद छन्द

रत्न किरण के अग्र भाग से जड़ित सिंहासन है।
चउ अंगुल उस पर स्वर्णिम तनधारी भगवन् हैं॥
उदयाचल के उच्च शिखर पर ज्यों रवि शोभ रहा।
सुन्दर सिंहासन पर जिनरवि भवि मन मोह रहा॥
मेरे स्वच्छ हृदय आसन पर आदीश्वर आओ।
भक्ति के उदयाचल पर प्रभु आकर बस जाओ॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥29॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं।

त्रिकालयोगिनो घोर, तपस्यर्पितमानसान्।
यजेऽहं परया भक्त्या,नत्वा तद्गुणसिद्धये ॥ 29॥

ॐ ह्रीं अर्हं घोरतपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अडिल्ल छन्द

1. **सिंहासन पर रूप प्रभु का भा रहा।**
तन कान्ति लख रवि भी तव गुण गा रहा॥
भक्तामर का पाठ अर्थ युत जो पढ़े।
आदिप्रभु सम मुक्तिपथ पर वो बढ़े॥1569॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सिं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **हार जीत का काम रहा ना शेष है।**
हार गए सब कर्म मिटा सब क्लेश है॥भक्ता...॥1570॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **सहस आठ लक्षण के धारी जिनवरा।**
ज्ञान रूप ज्योति में सर्व झलक रहा॥भक्ता...॥1571॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **नेत्र ज्ञान बिन प्रभो पूर्ण ज्योति धरे।**
संसारी में ऐसी ज्योति ना रहे॥भक्ता...॥1572॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **मतलब का संसार साथ देता नहीं।**
अतः आपकी ही मैंने शरणा गही॥भक्ता...॥1573॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **णिक्कम्मा कहलाते प्रभु निष्कर्म हैं।**
लक्ष्यभूत पाया जिनने शिव शर्म है॥भक्ता...॥1574॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **महा मोह का ताप मिटाना चाहता।**
मोहजयी को सब कुछ अपना मानता॥भक्ता...॥1575॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मयूर जैसे मेघ देख कर नाचता।
भव्य मयूरा देख प्रभु को पूजता॥
भक्तामर का पाठ अर्थ युत जो पढ़े।
आदिप्रभु सम मुक्तिपथ पर वो बढ़े॥1576॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. खचित रत्न से सिंहासन सुन्दर लगे।
उस पर जिनवर मूरत अति मनहर लगे॥भक्ता...॥1577॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. शिरोमणि सब देवों में प्रभु आप हैं।
वीतराग देवाधिदेव निष्पाप हैं॥भक्ता...॥1578॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. खाली हाथ न कोई द्वार से जाता।
जो भी श्रद्धा भाव से भर कर आता॥भक्ता...॥1579॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'खा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. विश्वदर्शी कह करके ऋषि पुकारते।
क्योंकि अनन्ता एक समय में देखते॥भक्ता...॥1580॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. चिरंजीव निश्चय से निश्चित आप हैं।
मरण कभी ना पाएँगे जिनराज हैं॥भक्ता...॥1581॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. त्रेता आप कहाए रक्षक सर्व के।
तीर्थ प्रवर्तक प्रथम आप जिनधर्म के॥भक्ता...॥1582॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. विरक्त तन धन भोग विरागी हो गए।
समवसरण में चौरासी लख मुनि रहें॥भक्ता...॥1583॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. भ्रामक करे प्रचार जो मिथ्यातम में।
भटक रहे वे मिथ्यामत से भव-वन में॥
भक्तामर का पाठ अर्थ युत जो पढ़े।
आदिप्रभु सम मुक्तिपथ पर वो बढ़े॥1584॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. जयतु-जयतु की ध्वनि हो रही गगन में।
तरह-तरह के सुर बरसाते सुमन हैं॥भक्ता...॥1585॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तेला बेला करके भी जग में रुला।
भूखा रहकर लक्ष्य निजात्म का भूला॥भक्ता...॥1586॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तन मन वच से करूँ प्रभु की वन्दना।
अर्ज यही है हो पापों का बन्ध ना॥भक्ता...॥1587॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वही देह-दृष्टि रख करके मैं सदा।
कष्ट सहन कर नाना गतियों में भ्रमा॥भक्ता...॥1588॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वज्रजंघ पर्याय पूर्व में प्राप्त की।
अहार देकर प्रभु ने शिव की राह ली॥भक्ता...॥1589॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. रिपु: कहीं बाहर में ना मुझमें बसे।
सोच रहे अब विकार से कैसे बचे॥भक्ता...॥1590॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पु:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. कर्म बड़ा कर्मठ है नष्ट ना होवे।
चउ गति की गलियों में मुझको भटकावे॥भक्ता...॥1591॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. नमन करूँ त्रय योग से भगवान को।
प्राप्त करूँ मैं अतिशीघ्र शिवधाम को॥
भक्तामर का पाठ अर्थ युत जो पढ़े।
आदिप्रभु सम मुक्तिपथ पर वो बढ़े॥1592॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. काम बन्ध की व्यथा कथा को दूर कर।
शीलेश्वर का पद पाया है दुःख हर॥भक्ता...॥1593॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. वनितादिक सुख नश्वर है निश्चित मिटता।
परम अतीन्द्रिय सौख्य ही शाश्वत रहता॥भक्ता...॥1594॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. दान देकर दाता मन में हर्ष धरे।
पात्र दान से परम्परा से शिव वरे॥भक्ता...॥1595॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तं प्रगटाता शब्द प्रभु से प्रेम है।
गृहिणी ज्यों तं उनको कहती प्रेम से॥भक्ता...॥1596॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. बिम्ब रवि शशि में अकृत्रिम असंख्य हैं।
भक्ति भाव से नमूँ उन्हें सब वन्द्य हैं॥भक्ता...॥1597॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बिम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. बंधन आत्म स्वभाव नहीं यह जानकर।
बन्ध मुक्त हो गए प्रभु श्री आदीश्वर॥भक्ता...॥1598॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. विग्रहगति से रहित ऋजुगति से गए।
शिवाङ्गना से मिलने प्रभुवर चल दिए ॥भक्ता...॥1599॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. **य**शस्वती नन्दा पत्नी का नाम है।
परिजन तजकर प्रभु पाते निर्वाण हैं॥
भक्तामर का पाठ अर्थ युत जो पढ़े।
आदिप्रभु सम मुक्तिपथ पर वो बढ़े॥1600॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. **द्वि**धा नमूँ मैं द्रव्य-भाव से आपको।
शान्त कीजिए प्रभु मेरे भव ताप को॥भक्ता...॥1601॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. **ल**ज्जित हूँ मैं राग-द्वेष के भार से।
प्रभु सम होकर भी क्यों ढोता भार ये॥भक्ता...॥1602॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. **स**र्व जगत के जीव स्वामी मानते।
क्योंकि आप चराचर सबको जानते॥भक्ता...॥1603॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. **दं**भ करे अज्ञानी भव वृद्धि करे।
सहज सरल भावों से प्रभु सिद्धि वरे॥भक्ता...॥1604॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. **शु**भाशीष भी देते ना जिनराज हैं।
हुए सर्व कृतकृत्य नहीं कुछ काम है॥भक्ता...॥1605॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. **ल**गन लगी है मुझको अब निज धाम की।
चाह रहे ना मन में तन के नाम की॥भक्ता...॥1606॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. **ता**र्किक चाहे कितने भी दे तर्क को।
हरा न सकता जिनशासन जिनधर्म को॥भक्ता...॥1607॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. **वि**घटित होता तन जब मुक्ती प्राप्त हो।
धन्य भाग्य कब जगे ममातम आप्त हो॥भक्ता...॥1608॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. तारक हो प्रभु क्योंकि स्वयं भी तिर गए।
हम अज्ञानी पाप पंक से घिर गए॥
भक्तामर का पाठ अर्थ युत जो पढ़े।
आदिप्रभु सम मुक्तिपथ पर वो बढ़े॥1609॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नम्बर पहला तीर्थंकरों में आपका।
अत: प्रतिदिन करूँ जाप तव नाम का॥भक्ता...॥1610॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. तुंग बड़ी प्रतिमाएँ जग में आपकी।
बड़वानी मांगीतुंगी में नाथ की॥भक्ता...॥1611॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तुं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. गोम्मटेश विख्यात बाहुबली सुत हुए।
श्रवणबेलगोला में भविजन नत हुए॥भक्ता...॥1612॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. दयामूर्ति के गुण का ओर ना छोर है।
लूट सके ना गुण को कोई चोर है॥भक्ता...॥1613॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. यापन मात्र नहीं करूँ इस जीवन का।
लक्ष्य यही पथ पा जाऊँ मैं मोक्ष का॥भक्ता...॥1614॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. एकेन्द्रिय द्वि त्रि चतुरिन्द्रिय मैं बना।
तिर्यञ्च गति में कष्ट उठाया है घना॥भक्ता...॥1615॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. शिक्षा दी है षट् कर्मों की आपने।
जन्म लिया है हम भव्यों को तारने॥भक्ता...॥1616॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. रसिक भक्त यह रात-दिवस भक्ति करें।
एक नजर करिए प्रभु हम मुक्ती वरें॥भक्ता...॥1617॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. सीमातीत आपने सुख को पा लिया।
अक्षय सुख पाने मैंने शरणा लिया॥
भक्तामर का पाठ अर्थ युत जो पढ़े।
आदिप्रभु सम मुक्तिपथ पर वो बढ़े॥1618॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. वक्षस्थल पर चिह्न बना श्रीवत्स का।
नन्त चतुष्टय लक्ष्मी का संकेत था॥भक्ता...॥1619॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. सचेत होकर शरण आपकी आ गया।
आज लगा मैंने मनचाहा पा लिया॥भक्ता...॥1620॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. हम तुम में अब भक्त और भगवान हैं।
मात-पिता सुत स्वारथ भरा जहान है॥भक्ता...॥1621॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. स्रष्टा कहते जगत्पिता आदीश्वर को।
जीवन जीना सिखा दिया है भविजन को॥भक्ता...॥1622॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रश्मियाँ सूरज की आती जाती हैं।
पूर्णज्ञान किरणें आकर न जाती हैं॥भक्ता...॥1623॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रश्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. ज्ञान रश्मेः पूर्णज्ञान की रश्मियाँ।
लोकालोक सभी में ज्ञान व्याप्त किया॥भक्ता...॥1624॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मेः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

रत्नासन से अंगुल चार अधर रहें।
अर्घ्य चढ़ाकर श्री जिनवर को उर धरें॥
भक्तामर का पाठ अर्थ युत जो पढ़े।
आदिप्रभु सम मुक्तिपथ पर वो बढ़े॥

ॐ ह्रीं मणिमुक्ताखचित-सिंहासनप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं-महाबीजाक्षर-सम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 30

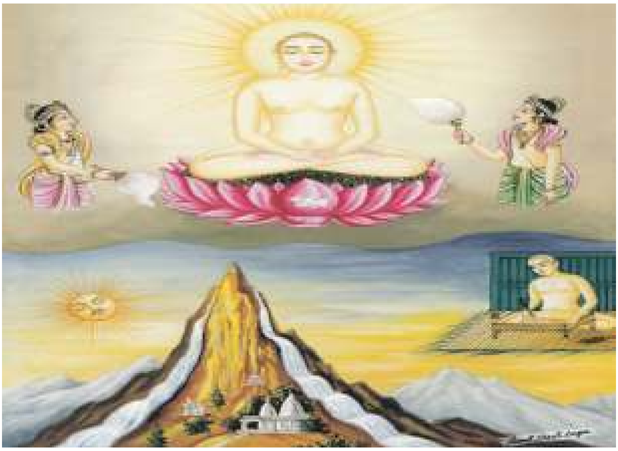

चँवर प्रातिहार्य

कुन्दावदात - चलचामर - चारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क - शुचिनिर्झर - वारिधार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्॥30॥

विष्णुपद छन्द

प्रभु के दोनों ओर चँवर चौंसठ पावन ढुरते।
कुन्द पुष्प सम स्वच्छ चँवर ये सब जन-मन हरते॥
श्वेत चँवर से स्वर्णिम तन प्रभु का ऐसा लगता।
स्वर्ण मेरु के दोनों तट पर झरना ज्यों बहता॥
उदित चन्द्रमा से भी सुन्दर तनधारी भगवान्।
चँवर सिखाते विनम्र होकर करो कर्म का हान॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥30॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं।

ऋषीन् घोरगुणान् शक्तान्, परीषहविनिर्जये।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 30॥

ॐ ह्रीं अर्हं घोरगुणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

सोरठा

1. **कुन्दन जैसी देह, तजकर हुए विदेह जिन।**
प्रभु गुण से कर नेह, दोष अठारह मुक्त हो॥1625॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कुन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **दास करे अरदास, छोड़ दिया क्यों जगत में।**
दर-दर ठोकर खाए, इसे बुला लो पास ही॥1626॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **वल्लभ हैं जिनराज, शिवाङ्गना के आप ही।**
सिद्धालय के द्वार, खोल दर्श देना प्रभो॥1627॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **दाम बिना दुख पाए, निर्धन धनी सभी दुखी।**
चिन्मय धन मिल जाए, यही प्रार्थना आपसे॥1628॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **तत्त्वबोध दें नाथ, तुम सम दानी और ना।**
सिद्धिवधू भरतार, ज्ञान लक्ष्मी दे दो मुझे॥1629॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **चरम शरीरी नाथ, वर्तमान के प्रथम जिन।**
तीर्थङ्कर अवतार, आदिनाथ पद माथ है॥1630॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **लघु किंकर मैं नाथ, शंकर मुझे बनाईए।**
जग के मालिक आप, सुनकर यह शरणा लिया॥1631॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. **चामर चौंसठ देव, दो तरफा से ढोरते।**
ऋद्धि का संकेत, देते यह चौंसठ चँवर॥1632॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. **मर्त्य लोक से नाथ, मेरा नम्र प्रणाम है।**
सफल करो शिव काज, भावों से पूजा करूँ॥1633॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. **रखवाले हो आप, मुझ जैसे कई भक्त के।**
हुआ निडर मैं आज, साथ आप सम तात हैं॥1634॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. **चातक पक्षी समान, टुकुर-टुकुर मैं देखता।**
दर्शन दोगे नाथ, मुझको पूरी आश है॥1635॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. **रुचिकर आतम तत्त्व, और तत्त्व में रुचि नहीं।**
त्यागूँ सर्व ममत्व, ऐसी शक्ति दीजिए॥1636॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. **शोभा अपरम्पार, समवसरण की अप्रतिम।**
ऋषिपति यति अनगार, इनके अधिपति आप हैं॥1637॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. **भंजन कर रति राग, वीतराग प्रभु हो गए।**
मैं हूँ नाथ अनाथ, पर का दास नहीं बनूँ॥1638॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. **विभु कहलाते आप, विभव आपका अद्वितीय।**
श्रेष्ठ आप कविराज, द्वादशाङ्ग बतला दिया॥1639॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. भ्रान्ति मिटाते आप, काल अनादि की प्रभो।
भक्त हृदय में व्याप्त, मम मन मन्दिर आईए॥1640॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. जगप्रिय आदि जिनाय, जिन संपत्ति दो मुझे ।
प्राणी मात्र हिताय, विहार करते आप हो॥1641॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तेजवान जिन देह, अनुपम आकर्षण रहा।
देखे सब अनिमेष, किन्तु प्रभु तन से विरत॥1642॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तरणि सम जिनराज, भव्य जनों को तारते।
प्रभु आप निस्वार्थ, तव उपकार अनन्त हैं॥1643॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वसुधा पर वर्चस्व, सर्वाधिक जिनराज का।
भक्तों के सर्वस्व, आदिनाथ भगवान ही॥1644॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वतन आपका शुद्ध, जहाँ नन्त हैं सिद्ध जिन।
करके भाव विशुद्ध, आना चाहूँ मैं वहाँ॥1645॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. वपुः रिपुः तज मीत, वीतरागता प्राप्त की।
स्वानुभूति का गीत, सुनते प्रभु एकाग्र हो॥1646॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पुः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. कर्म कलंक मिटाए, परम पूत परमातमा।
तव पद अर्घ्य चढ़ाए, अनर्घ्य पद पाना मुझे॥1647॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. ललक लगी है नाथ, मुझे आपके दर्श की।
प्रकटे केवलज्ञान, दर्श करूँ साक्षात् मैं॥1648॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. दु:ख भवाब्धौ तीव्र, पाए अनादिकाल से।
आया चरण समीप, आश्रय दो जिनराज जी॥1649॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. तरंग रही न एक, निर्विकल्प प्रभु हो गए।
स्वात्म चतुष्टय गेह, अपने में ही खो गए॥1650॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. कांचन सम है देह, किन्तु देह से प्रीत ना।
पाकर चिन्मय गेह, चिदानन्द सुख पा रहे॥1651॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. स्तम्भ लगाकर चार, आराधन मण्डप बना।
मुक्तिवधू से ब्याह, किया प्रभु आदीश ने॥1652॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. उच्च गोत्र भी नाश, सबसे ऊँचे राजते।
नाम मन्त्र का जाप, भव से तारेगा मुझे॥1653॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'उ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. पद्य आठ चालीस, भक्तामर में लिख दिए।
नमूँ नाथ आदीश, मुनिवर भी स्तुति कर रहे॥1654॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. आच्छादित मम ज्ञान, ज्ञानावरणी कर्म से।
मिटे मोह अज्ञान, अरज यही प्रभु से करूँ॥1655॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च्छ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. शांति मन्त्र का जाप, करके आतम शान्त हो।
जनम-जनम के पाप, धुल जाएँ जिन भक्ति से॥1656॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. कल्मष हर्त्ता आप, भक्तों को निर्मल करें।
परम पूर्ण पद प्राप्त, करने अर्घ्य चढ़ा रहा॥1657॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. शुभ चिन्तक हे नाथ, शुभ से भी अब विरत हो।
विशुद्ध हो जगनाथ, दर्शन दुर्लभ हो गया॥1658॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. चित्त हुआ कमजोर, व्यर्थ विकल्प किए बहुत।
प्रभु तुम-सा ना और, निर्विकल्प करिए मुझे॥1659॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. निर्बल है तव भक्त, ज्ञानामृत की भूख है।
तत्त्व ज्ञान से रिक्त, रमूँ निजातम तत्त्व में॥1660॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'निर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. झरे ज्ञान का नीर, पूर्णज्ञान गिरि से प्रभो।
पीने हुआ अधीर, प्यास अनादिकाल की॥1661॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'झ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. रहें भले प्रभु दूर, समीप ही लगते मुझे।
प्रभुता से भरपूर, जब ध्याऊँ तब दीखते॥1662॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वादिराज मुनिराज, स्तुति करे आदीश की।
मानतुङ्ग यतिराज, भक्तामर लिख धन्य हैं॥1663॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. अरिहन्तों में मुख्य, तीर्थङ्कर को मानते।
वचन आपके पूज्य, दिव्य-सुधा बरसाईए॥1664॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. धान्यादिक से पूर्ण, प्रभु विहार में हो धरा।
गुण गण से संपूर्ण, जिनवर को लख हर्ष हो॥1665॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. रत्नदीप सम ज्ञान, निजाधीन ना नष्ट हो।
भिन्न-भिन्न सब जान, लोकालोक सु-तत्त्व को॥1666॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मुदित हुआ है भक्त, पढ़कर भक्तामर स्तुति।
अब एकत्व विभक्त, निज स्वरूप पाना मुझे॥1667॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. उच्चैस्तट से स्वच्छ, ज्यों जल का झरना बहे।
त्यों सुरगण प्रत्यक्ष, ढुरा रहे चौंसठ चँवर॥1668॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च्चैस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तटस्थ रहते आप, शत्रु मित्र कोई नहीं।
मिटा सर्व संताप, मैं भी समता धर सकूँ॥1669॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. टंकोत्कीर्ण स्वभाव, प्रकट हो गया शाश्वता।
विभाव ही दुर्भाव, मिटा दीजिए भक्त का॥1670॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'टं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. सुयश गा रहे देव, पार न गुण का पा सके।
मौन हुए अतएव, चले गए निज स्थान पर॥1671॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. रक्षित होय सदैव, जो भविजन भक्ति करे।
रक्षा करते देव, जिनभक्तों की नित्य ही॥1672॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. गिरि कैलास महान, प्रथम जिनेश्वर शिव गए।
श्रद्धा सहित प्रणाम, कर्महीन करिए मुझे॥1673॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. **रेखांकित जिन नाम, हृदय पृष्ठ पर कर लिया।**
वन्दूँ आठों याम, कर्मों की रेखा मिटे॥1674॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. **रिझा चुके जिनराज, शिवललना को वर लिया।**
अनुपम रवि शशि आप, अम्बर से भी उच्च हो॥1675॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. **वहम् अहम् दो चोर, चुरा रहे गुण आत्म का।**
मोह अमा तम घोर, नाथ उजाला दीजिए॥1676॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. **शास्ता आप विशेष, मोक्ष पन्थ दिखला दिया।**
भक्तों का उद्देश्य, आप पूर्ण कर दीजिए॥1677॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. **तन्मय होकर भव्य, जब प्रभु की पूजा करे।**
पूजक होवे पूज्य, त्रिविध कर्म को नाश कर॥1678॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. **कौम्कुम तिलक लगाए, देह राग से सहित हो।**
चन्दन तिलक लगाए, भक्त भक्ति के वश सदा॥1679॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कौम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. **भंगोत्पाद व ध्रौव्य, सत् का ही लक्षण कहा।**
तत्त्व जानकर सौम्य, शान्त भाव रखना मुझे॥1680॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

चौंसठ चँवर ढुराए, सुरगण हर्षित हृदय से।
जिनपद अर्घ्य चढ़ाए, पुरु[1] जिन की महिमा अगम॥

ॐ ह्रीं चतुः-षष्ठिचामरप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

1 आदिनाथ भगवान्

श्लोक नं० 31

छत्रत्रय प्रातिहार्य

छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित भानुकरप्रतापम्।
मुक्ताफल - प्रकरजाल - विवृद्धशोभं,
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥31॥

विष्णुपद छन्द

मुक्ता की लड़ियों से शोभित तीन छत्र मनहर।
गुरु लघु लघुतम क्रम से हैं ये सूर्य किरण तपहर॥
तीन जगत के नाथ शीश पर तीन छत्र रहते।
तीनों जग के स्वामी हैं ये यही प्रकट करते॥
वीतराग प्रभुवर की मुझ पर रहे छत्र छाया।
कर्म तापहारी जिनवर-सी मिले ज्ञान काया॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥31॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरक्कमाणं।

कर्मारिघातनेऽत्यन्तोद्यतान् घोरपराक्रमान्।
यजेऽहं परया भक्त्या,नत्वा तद्गुणसिद्धये ॥ 31॥

ॐ ह्रीं अर्हं घोरपराक्रमेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

घत्ता

1. **छद्मस्थ न जाने, मन से माने, प्रथम तीर्थङ्कर पहचाने।**
   पूजन को आया, शीश नवाया, नाथ आप सम गुण पाने॥1681॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'छ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. **त्रय शल्य विनाशक, निज के शासक, कोई आपका स्वामी ना।**
   आदीश्वर भगवन् , मेरा जीवन, तव पद में अर्पण करना॥1682॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. **त्रय छत्र सुशोभित, जन मन मोहित, समवसरण में शोभ रहे।**
   प्रभु दिव्य छवि है, मानो रवि है, भविजन के मन मोह रहे॥1683॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. **यंत्रों-तंत्रों में, महामन्त्र में, नाम आपका प्रथम रहा।**
   जिन नाम को जपकर, पाप से बचकर, सहज भाव से नमन किया॥1684॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. **तत्त्वज्ञ कहाते, शिवसुख पाते, भव्यों के अघ हर्त्ता हो।**
   प्रभु आप आप्त हो, ज्ञान व्याप्त हो, धर्मतीर्थ के कर्त्ता हो॥1685॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. **वन भवन समाना, अरि मीत ना, सब जीवों में आत्म लखे।**
   नित ज्ञान कक्ष में, निज समक्ष में, स्वानुभूति रस शुद्ध चखें॥1686॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. **विश्वेश्वर प्यारे, भव्य पुकारे, एक बार प्रभु दर्शन दो।**
   मुनि मानतुङ्ग सम, भक्त सभी हम, आए हैं प्रभु पूजन को॥1687॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. **भा**मण्डल प्यारा, सुखद नजारा, समवसरण का लगता है।
चउमुख छवि दिखती, जन मन हरती, प्रभु पद में मन रमता है॥1688॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. **ति**र गए भवार्णव, भव्य अरज यह, मुझको भी भव से तारो।
यह भक्त निबल है, आप सबल हैं, आगत संकट को टारो॥1689॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. **श**शि से भी उज्ज्वल,वन्दन पल-पल,अर्घ्य चढ़ाने हूँ आया।
जिन छवि दुखहारी, अतिशयकारी, दर्शन कर मन हर्षाया॥1690॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. प्रभु **शां**त सरोवर, महा मनोहर, वीतराग प्रभु सुख दाता।
दुख जग में जितने, प्रभु ने मेटे, विघ्न विनाशक जिनराजा॥1691॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. **क**ल्याण करोगे, कष्ट हरोगे, यही भाव से दर आया।
प्रभु बन्धन नाशो, ज्ञान प्रकाशो, सिद्धनगर पाने आया॥1692॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. **कां**चन सी कान्ति, मिलती शान्ति, परमौदारिक तन पाया।
मम अरजी सुनिए, भव दुख हरिए, करिए मुझमें उजियारा॥1693॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. **त**प करके स्वामी, आतम ध्यानी, होकर कर्म विनाश किए।
जिनने भी ध्याया,कर उजियारा, भक्तों के मन वास किए॥1694॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. **मु**निगण नमते हैं, स्तुति करते हैं, गुण का पार न पा सकते।
गुण लिखे न जाएँ, कहे न जाएँ, सुरगुरु भी गाकर थकते॥1695॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. **उच्चैः शिखर पर, लोक अग्र पर, शाश्वत आप विराज रहे।**
इक बार पधारो, मम उर आओ, भक्त यही बस आश धरे॥1696॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च्चैः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
17. **स्थिर हो अपने में, पर सपने में, कभी-कभी दिख जाते हो।**
मैं भक्त तिहारा, दुखी बिचारा, क्यों ना पास बुलाते हो॥1697॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्थि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
18. **तं वन्दे जिनवर, गुण रत्नाकर, विपद विनाशक हो स्वामी।**
दो निज संपत्ति, हरो विपत्ति, आदिनाथ प्रभु सुखदाता॥1698॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
19. **प्रभु तटस्थ रहते, निज में रमते, सबके नाथ कहाते हो।**
प्रभु मङ्गलकारक, सब दुखहारक, भव का ताप मिटाते हो॥1699॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
20. **गिरना औ उठना, भव में भ्रमना, नन्त काल से ही करता।**
अब सिद्धशिला पर, मुझे बिठाकर, थिर करिए अरजी करता॥1700॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
21. **तजकर विभाव सब, निज स्वभाव लख, सिद्धालय को पाया है।**
शिव लक्ष्य बनाकर, आशा लेकर, भक्त दर्श को आया है॥1701॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
22. **भावों से पूजूँ, त्रियोग वन्दूँ, एक आप आधार प्रभो।**
भवसुख ना चाहूँ, चाह मिटाऊँ, पूर्ण करो यह भाव विभो॥1702॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
23. **नुपुरादिक बाजे, साज सजा के, भक्ति से सुर पूज रहे।**
ले दिव्य द्रव्य सब, ऊर्ध्व लोक तज, मध्यलोक में आन खड़े॥1703॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. कल्याण कीजिए, पार कीजिए, भवदधि में दुख सहते हैं।
भविजन दुख हर्त्ता, शिवसुख कर्त्ता, आदिप्रभु को नमते हैं॥1704॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. रमते हो निज में, भक्त हृदय में, फिर भी नाथ झलकते हैं।
जब-जब प्रभु झलके, मूँदे पलकें, भविजन तुम्हें निरखते हैं॥1705॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. प्रभु प्रखर प्रभाकर,नन्त गुणाकर,अजर अमर अविकारी हो।
मैं जिन गुण गाऊँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ, सर्व जगत हितकारी हो॥1706॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. तारो भवसागर, धर्म उजागर, चार संघ गणनाथ नमन।
तव नाम जापकर,अघ से बचकर,सिद्धमहल में करूँ गमन॥1707॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. पंडित जन आते, शीश झुकाते, पूजन कर अति हर्षाते।
भविजन जिन बनने,तव चरणन में,अरजी लेकर नित आते॥1708॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. मुक्ती के स्वामी, अन्तर्यामी, कोई आपका स्वामी ना।
बस यही भावना,करूँ प्रार्थना,मुझको भी निज सम करना॥1709॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. वक्ता हो अनुपम, कोई न तुम सम, जग में प्रवचन कर सकता।
मुख से ध्वनि खिरती,सुमन सी पंक्ति,सुन वचनामृत शिव बनता॥1710॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. फल चरण चढ़ाऊँ, शिवफल चाहूँ, यही आपसे मैं मांगूँ।
मैं हूँ अति स्वार्थी,प्रभु परमार्थी,किन्तु ना भव सुख को चाहूँ॥1711॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'फ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. लय लगी आपकी, आदीश्वर जी, नयन दर्श को तरस रहे।
प्रभु मुझे बुलाओ, या उर आओ, जो कह दो प्रभु वही करे॥1712॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
33. प्रत्याशी शिव के,भव दुख तज के,अविनाशी सुख पाया है।
पूजा का अतिशय, अनन्त गुणमय, अक्षय सुख को पाना है॥1713॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
34. कर्मों के हन्ता, हे शिवकन्ता, क्षायिक नव निधियाँ पाईं।
निधि नाथ कहाते, सब गुण गाते, पूजत आतम हर्षाई॥1714॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
35. रति राग हटाकर, मोह मिटाकर, पुष्प ज्ञान का खिला दिया।
प्रभो प्रथम तीर्थङ्कर, जग क्षेमङ्कर, भार कर्म का मिटा दिया॥1715॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
36. जाग्रत नित रहना, पाप न करना, आदिप्रभु ने समझाया।
जो प्रभु की माने, निज को जाने, उसने अव्यय सुख पाया॥1716॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
37. लम्बी शिवयात्रा, प्रभु ही त्राता, पथ के विघ्न हटा देना।
प्रभु का संबल ले,भक्त निबल है,फिर भी शिव को पा लेगा॥1717॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
38. विद्या के दाता, देते साता, अत: चरण में नमते हैं।
हो भाव भद्रता, दया आर्द्रता, वहीं जिनेश्वर बसते हैं॥1718॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
39. वृष धर्म धार हैं, वृषभ नाम है, सार्थक नाम धरे स्वामी।
प्रभु जन्म धन्य है, जगत वन्द्य हैं, हुए नाथ शिवपथ गामी॥1719॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
40. जग में प्रसिद्ध हैं, हुए सिद्ध हैं, त्रिविध कर्म को मिटा दिया।
जो शर्णा में आए, कष्ट मिटाए, पुण्य सातिशय कमा लिया॥1720॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. **शो**भा अति प्यारी, जग से न्यारी, समवसरण की महिमा है।
ऋषि मुनि सुर आते, शीश नवाते, चतुर्मुखी जिन गरिमा है॥1721॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. **भं**डार तिहारा, ज्ञान उजाला, नन्त गुणों के धनी महा।
पंचेन्द्रिय जेता, सद्धर्म नेता, मिटा दिए हैं जन्म जरा॥1722॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. **प्र**वचन दुखहारी, शिव सुखकारी, पूजन को मन करता है।
मम हृदय समाओ, कभी न जाओ, त्रियोग से मन नमता है॥1723॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. **ख्या**ति की चाह ना, मोक्ष भावना, लेकर भक्त चला आया।
जग में सब स्वार्थी, भरी अशान्ति, शान्त रूप ही मन भाया॥1724॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. **प**रिषद जिनवर की, अनुशासित ही, बारह सभा लगी भारी।
सुर असंख्य आते, प्रवचन सुनते, आदिप्रभु जग उपकारी॥1725॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. सब प्र**यत्**न करके, आया दर पे, खाली झोली भर देना।
जिनशासन भाया, जग ठुकराया, नाथ मुझे अपना लेना॥1726॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. **त्रि**भुवन के नायक,शिवसुख दायक,लायक मुझे बना देना।
किस दर पर जाऊँ, समझ न पाऊँ, निज से नाथ मिला देना॥1727॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. **ज**य-जय उच्चारे, सुरगण सारे, गुण अनन्त को गा न सके।
मजबूर भक्त है, दूर बहुत है, सिद्धालय तक आ न सके॥1728॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. **ग**ति पंचम पाना, मैंने ठाना, अतः आपके गुण गाऊँ।
रागी के द्वारे, दुख ही पाए, नाथ कहो किस दर जाऊँ॥1729॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. प्रभु यतः ततः सब, दिखते हो अब, मन न जगत में लगता है।
प्रभु आप विदेही, मन है नेही, नाथ आप में रमता है॥1730॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. परमोत्तम पदधर, वृषभ जिनेश्वर, तृतीय काल में मोक्ष गए।
तव पद में आकर,नित पूजा कर,भविजन अव्यय सौख्य धरे॥1731॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रक्षक भविजन के, कष्ट मिटा के, मोक्ष सुरक्षित पहुँचाते।
जिन महिमा सुनकर, श्रद्धा धरकर,अर्घ्य चढ़ाने हम आते॥1732॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. मेरु से ऊँचे, शिवपुर पहुँचे, नहीं यहाँ से दिख पाते।
निज को ही निरखूँ, पर को परखूँ, यही भाव ले हम आते॥1733॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. विश्वेश्वर स्वामी, त्रिकाल ज्ञानी, धन्य भाग्य मम प्रभु मिले।
प्रभु दुःख निवारे, सुख उजियारे, पूजत मन के सुमन खिले॥1734॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रत्नत्रय धारी, अरज हमारी, एक रत्न मुझको दीजे।
दो सुख संपत्ति, तजूँ राग रति, निज समान मुझको कीजे॥1735॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. वंशज होकर भी, सहूँ विपत्ति, मुझ पर तनिक कृपा करिए।
प्रभु करुणासागर, हे वृषभेश्वर, भक्त हृदय सुख से भरिए॥1736॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

त्रय छत्र मनोहर, सूर्य ताप हर, त्रिभुवनपति के सूचक हैं।
मम अनर्घ्य पद दो, शाश्वत सुख हो, अतः भव्य जन पूजत हैं॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 32

दुन्दुभि प्रातिहार्य

गम्भीरतार - रवपूरित - दिग्विभागस्
त्रैलोक्यलोक - शुभसङ्गम - भूतिदक्षः।
सद्धर्मराज - जयघोषण - घोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी॥32॥

विष्णुपद छन्द

दशों दिशा में उच्च और गम्भीर शब्द करता।
प्रभु सत्संग की महिमा दुन्दुभि सबको बतलाता॥
जयवन्तों तीर्थङ्कर स्वामी यूँ जयघोष करें।
दुन्दुभिवाद्य सु-यश जिनवर का नभ में प्रकट करें॥
स्वानुभूति का वाद्य बजाकर प्रकटाऊँ परमात्म।
श्वास-श्वास में प्रभु भक्ति का गूँजे अनहद नाद॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥32॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभयारिणं।

स्त्र्युपसर्गसहिष्णून्, घोरगुणब्रह्मचारिणः।
यजेऽहं परया भक्त्या,नत्वा तद्गुणसिद्धये ॥ 32॥

ॐ ह्रीं अर्हं घोरगुणब्रह्मचारिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

सखी छन्द

1. गंगा-सा निर्मल मन है, प्रभु पद में कोटि नमन है।
शिवरमणी आप वरी है, झर-झर सुख शान्ति झरी है॥1737॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. 'भी' अनेकान्त का वाचक, 'ही' है एकान्त सुखान्तक।
जिनशासन मुझको प्यारा, जिनवर ने ही उजियारा॥1738॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. रमना अब निज में ही है, अतएव शरण प्रभु ली है।
सुख शान्ति धर्म से मिलती, यह अनुभूति है सबकी॥1739॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. तात्कालिक सुख भोगों में, है अनन्त दुख विषयों में।
इसलिए भोग को त्यागे, प्रभु शुद्धातम अनुरागे॥1740॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. रहते सिद्धालय में जिन, मन लगे नहीं दर्शन बिन।
जपता हूँ नाम यहीं से, करिए प्रभु-कृपा वहीं से॥1741॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. रग-रग में आप बसे हैं, नहीं दूजा देव दिखे हैं।
देवाधिदेव जिन प्यारे, वन्दन मेरा स्वीकारे॥1742॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वश करते नहीं किसी को, फिर भी माने सब तुमको।
मैं मोह वशी दुख पाता, निर्मोह करो जिनराजा॥1743॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. पूजित हो सर्व जगत से, तन मन से और वचन से।
प्रभु को वसु द्रव्य चढ़ाऊँ, श्रद्धा से शीश झुकाऊँ॥1744॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. अरि रज रहस्य क्षय करके, मुक्तीरमणी को वर के।
पावन सिद्धों का अर्चन, अर्पण मेरा सब तन-मन॥1745॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. तत्त्वों का सार बताते, श्रोतागण शीश नवाते।
सुर नर पशु समझे वाणी, सुखकरणी है कल्याणी॥1746॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. दिग्दर्शक आप हमेशा, भ्रमितों के पन्थ प्रणेता।
ध्यानी को शान्ति प्रदाता, मैं चरण नवाऊँ माथा॥1747॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दिग्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. विनती है मेरी भगवन्, पावन करिए मेरा मन।
श्री आदिप्रभु की जय-जय, हो सारे पापों का क्षय॥1748॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. भावों से सुख-दुख पाता, ऐसा जैनागम कहता।
मैं पल-पल भाव सुधारूँ, तव पद में जीवन वारूँ॥1749॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. योग स्तुति का पाया है, अति पुण्य उदय आया है ।
जिन भक्त मोक्ष में जाता, ऐसा कहते जिनराजा॥1750॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्रायऽर्घ्यं...।

15. शस्त्रैर्विमुक्त जिनराई, अब शत्रु रहा न कोई।
प्रभु ने सब दोष निवारे, हम आए शरण तिहारे॥1751॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. लोकाग्र करे जिन वासा, सद् भक्त करे यही आशा।
कब सिद्धालय में जाऊँ, फिर लौट न जग में आऊँ॥1752॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. मैं वाक्य बना ना पाऊँ, प्रभु गुण को ना लिख पाऊँ।
फिर भी अबोध अज्ञानी, भक्ती वश गुणानुरागी॥1753॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. लोचन अति हर्षित होते, दीक्षोत्सव देव मनाते।
मैं पंच कल्याण मनाऊँ, ऐसा कब अवसर पाऊँ॥1754॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. कर्मों का बन्ध दुखद है, फल चाहे जीव सुखद है।
करनी जैसी भरनी है, यह जिनवर की कथनी है॥1755॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. शुद्धोपयोग का फल है, होते अरहन्त सकल हैं।
उपयोग अशुभ न धारूँ, शुभ धार शुद्धता पाऊँ॥1756॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. भयभीत हुआ मैं भव से, अब रखो नाथ चरणन में।
तज आप कहाँ मैं जाऊँ, तव पद का ध्यान लगाऊँ॥1757॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. संक्षिप्त रूप भी वर्णन, नहीं कर सकते हैं ऋषिगण।
भगवन् की महिमा न्यारी, सिद्धालय नगरी प्यारी॥1758॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. गगनांगन गूँज उठा है, देवों ने नाद किया है।
देवाधिदेव प्रभु आए, आओ हम पूज रचाएँ॥1759॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. मकरन्द झरे सुमनों से, जिनवचन खिरे हैं मुख से।
आओ जिनवाणी धारें, प्रभु वचनों ने कई तारे॥1760॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. भू-मण्डल हुआ प्रकाशित, प्रभु वाणी सुन आध्यात्मिक।
दिन-रात करें आराधन, प्रभु आदिनाथ को वन्दन॥1761॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. तिल-तिल सम देह के खण्ड, दुख नारक पाय प्रचण्ड।
कभी रौद्र भाव न धारो, प्रभु कहते भाव सुधारो॥1762॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. दम दया भाव उर लाओ, स्वर्गों के सुख को पाओ।
गुरु कहते प्रभु गुण गाओ, नरभव को सफल बनाओ॥1763॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. दक्षः प्रभु शिव पाने में, शुद्धातम को ध्याने में।
यह भक्त दक्षता पाए, अतएव अर्घ्य ले आए॥1764॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. सर्वज्ञ आप कहलाते, सोलह कारण को भाते।
तीर्थङ्कर पद को पाया, भवदधि का तट दिखलाया॥1765॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. सद्धर्म कहा जिनवर ने, जो भी जन आए दर पे।
जिन अर्चा है दुखहारी, वन्दूँ जिनवर त्रिपुरारि॥1766॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्धर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. मर्मज्ञ आप जिनराजा, सब कर्म मर्म के ज्ञाता।
जिनधर्म मर्म सिखला दो, शिवपन्थ नाथ दिखला दो॥1767॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. **रा**गादिक दोष भयङ्कर, हे वीतराग तीर्थङ्कर।
निर्दोष प्रभु की जय हो, मेरे विभाव सब लय हों॥1768॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. **ज**य जिनेन्द्र कहकर भविजन, आपस में करते वन्दन।
प्रभु नाम जाप करते हैं, सुमिरन जिन का करते हैं॥1769॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. **ज**ल प्रासुक चरण चढ़ाऊँ, अर्चन करके हर्षाऊँ।
एकाग्र करूँ मन चंचल, पद पाना सिद्ध अविचल॥1770॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. **य**म नाशक हैं जिनराई, पर वृत्ति अहिंसक पाई।
समता से ममता हारी, जय हो आदीश तुम्हारी॥1771॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. **घो**षणा देव करते हैं, आ रहे प्रभु कहते हैं।
गृह आँगन सर्व सजाते, जिन दर्शन कर हर्षाते॥1772॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'घो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. **ष**ष्ठम गुणस्थानक वाले, मुनि मानतुङ्ग जग न्यारे।
चारित में अडिग रहे हैं, जिनधर्म प्रचार करे हैं॥1773॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. प्र**ण** ज्ञानी का दृढ़ होता, चाहे वह प्राण गँवाता।
किन्तु प्रण कभी न तोड़े , प्रभु से वह नाता जोड़े॥1774॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. **घो**रान्धकार घिर आवे, जिन भक्त नहीं भय खावे।
उर में धारे जिनवर को, पहुँचे वह मोक्षनगर को॥1775॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'घो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. **ष**ट्पद[1] गुँजन करता है, पुष्पों का रस पीता है।
मम रसना तव गुण गाए, प्रभु बिन कुछ और न भाए॥1776॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. भौरा

41. कः ब्रह्मा मुनिजन कहते, आदि ब्रह्मा को नमते।
विष्णु महेश जिनरायी, भव्यों के परम सहायी॥1777॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. सन्ताप कर्म के मेटे, भक्तों को शिवसुख देते।
मम कर्म जनित दुख हरना, मुझको शिवलक्ष्मी वरना॥1778॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. खेचर खगधर सब आते, प्रवचन सुनकर सुख पाते।
वे समवसरण में आकर, प्रभु को वन्दे हर्षा कर॥1779॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'खे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. दुन्दुभि नभ में गुँजाए, सुन दौड़-दौड़ जन आए।
देखे सब उच्च गगन में, प्रभु पधारिए मम उर में॥1780॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दुन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. दुर्दशा हुई कर्मों से, हो गया व्यथित दुःखों से।
निस्वारथ आप जिनेशा, मम उर आओ परमेशा॥1781॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मुनिभिर्नमितं जिनदेवं, सुर पूज रहे ले द्रव्यं।
प्रभु महिमा के गुण गाने, मैं आया शिवसुख पाने॥1782॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भिर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. ध्वज सु-धर्म की फहराते, भवि जीव शरण में आते।
ध्यानी के हृदय समाते, सब ममता मोह नशाते॥1783॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. नर चतुर्गति जा सकता, नारायण भी बन सकता।
पुरुषारथ से शिव पाए, ऐसा आचार्य बताए॥1784॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिहुँ जग में मारा-मारा, मैं भटक रहा बेचारा।
सब स्वारथ के हैं भाई, प्रभु ने सद् राह दिखाई॥1785॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. तेरह विध चारित धारा, सच्चा जिनधर्म प्रचारा।
मुनि मानतुङ्ग जगवन्द्य, हम भक्त जनों से पूज्य॥1786॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. यति भी भक्ति करते हैं, कुछ चाह नहीं रखते हैं।
बिन चाहे सब मिल जाता, श्रद्धा से जो भी आता॥1787॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. शरणागत को शरणा दें, उसका भव भ्रमण मिटा दें।
कर्त्ता न बने जिनरायी, पर सुख देते अतिशायी॥1788॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. मानसः प्रभो मन भीतर, आ जाओ हे करुणाकार।
मैंने मन स्वच्छ किया है, आमन्त्रण नाथ दिया है॥1789॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. प्रमुदित होता है चेतन, जब प्रभु का ध्यान धरे मन।
सुन्दर मृग नयन तिहारे, प्रभु लोकालोक निहारे॥1790॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. वात्सल्य भरा भगवन् में, है श्वेत रक्त जिन तन में।
जननी से भी अतिशायी, उपकार किया जिनरायी॥1791॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. दीनों के बन्धु तुम्हीं हो, भटकों के पन्थ तुम्हीं हो।
हे वचन अगोचर स्वामी, जयवन्तों हे सुखधामी॥1792॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

दुन्दुभि दश दिश में गूँजे, भविजन सब आकर पूजे।
मैं भी प्रभु अर्घ्य चढ़ाऊँ, जयघोष करूँ सुख पाऊँ॥

ॐ ह्रीं दुन्दुभिप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 33

पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य

मन्दार सुन्दर - नमेरु सुपारिजात-
सन्तानकादि - कुसुमोत्कर - वृष्टिरुद्धा।
गन्धोदबिन्दु - शुभमन्दमरुत् - प्रपाता
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा॥33॥

विष्णुपद छन्द

सन्तानक सुन्दर नमेरु और पारिजात मन्दार।
तरह-तरह के सुमन बरसते नभ से दिव्य अपार॥
सुगन्ध जल औ मन्द पवन संग पुष्प लगे ऐसे।
तव वचनों की कतार नभ से बरसी हो जैसे॥
ऊर्ध्वमुखी सुमनों की वर्षा मानो यह कहती।
प्रभु चरणों में वन्दन से बन्धन बाधा मिटती॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥33॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं।

आमर्द्धीनामसंस्पर्द्धीन्, कृत्स्नरुग्नाशकान् नृणाम्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं आमौषधर्द्धिप्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

स्त्रग्विणी छन्द

1. मंगलों में प्रथम हैं वृषभ जिनवरम्।
पूज्य प्रभुवर बसे मेरे मन मन्दिरम्॥
नाथ आदीश की वन्दना मैं करूँ।
भक्त होवे अमर भावना मैं करूँ॥1793॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. दान दे तीर्थङ्कर को वे मुक्ति वरें।
होए भगवन् जो जिनवर की भक्ति करें॥नाथ...॥1794॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. रम रहे आप अपने में ही शाश्वता।
क्योंकि परद्रव्य में कुछ नहीं सार था॥नाथ...॥1795॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. सुन्दरं शिवसुखं आपने पा लिया।
भक्त सौभाग्य से द्वार पे आ गया॥नाथ...॥1796॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सुन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. दम्भ से कोई शान्ति नहीं पा सके।
भाव निश्छल रखें वे सुखी हो सके॥नाथ...॥1797॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. रत्न जड़ पुद्गलों से ना शान्ति मिले।
रत्नत्रय धारने से ही मुक्ती मिले॥नाथ...॥1798॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. नम्रता से भरा भक्त भक्ति करे।
एक या दो भवों में ही मुक्ति वरे॥नाथ...॥1799॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मेरे अन्तिम समय आप हो पास में।
आपका ध्यान हो नाथ मम आत्म में॥
नाथ आदीश की वन्दना मैं करूँ।
भक्त होवे अमर भावना मैं करूँ॥1800॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. रुष्ट हो पर से जो रौद्र ध्यान करे।
दूर हो धर्म से मोक्ष को न वरे॥नाथ...॥1801॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. सुरगति में भी इन्द्रिय सुख ही रहा।
मानसिक दु:ख को भोगता मैं रहा॥नाथ...॥1802॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. पा गया आज भगवन् शरण आपकी।
अब तो अग्नि जले शुक्ल ही ध्यान की॥नाथ...॥1803॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. रिपु बाहर में कोई भी मेरा नहीं।
राग-द्वेषादि शत्रु मेरे भीतरी॥नाथ...॥1804॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. जागरण तीन दिन तक किया मुनिवरा।
रात-दिन आदि जिन का ही ले आसरा॥नाथ...॥1805॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. तन्मयी चेतना आपकी आप में।
भावना है रहूँ आपके चर्ण में॥नाथ...॥1806॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. सन्मति दीजिए दुर्विचार ना हो।
आपका भक्त हूँ नाथ रक्षा करो॥नाथ...॥1807॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तारिकाएँ सभी चन्द्र को देखतीं।
भक्त की आतमा आपको देखती॥
नाथ आदीश की वन्दना मैं करूँ।
भक्त होवे अमर भावना मैं करूँ॥1808॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. है नमोस्तु प्रभो आपको भाव से।
पार भवसिन्धु करिए मुझे नाव से॥नाथ...॥1809॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. काललब्धि मेरी आ गई है लगा।
मिल गया द्वार भगवन् मुझे आपका॥नाथ...॥1810॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. दिन औ रात्रि में चिन्तन तुम्हारा रहे।
भावना है प्रभो अब किनारा मिले॥नाथ...॥1811॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. कुल चुरासी थे गणधर प्रभु आपके।
जाप करते थे वे भी प्रभु नाम के॥नाथ...॥1812॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. सुर करें दिव्य सुमनों की वृष्टि अहा।
नीचे डण्ठल हुए ऊपरी मुख हुआ॥नाथ...॥1813॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. उत्तमोत्तम वसु द्रव्य ले हाथ में।
देव परिवार आया प्रभो पूजने॥नाथ...॥1814॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मोत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. कल्पवासी का सौधर्म नायक रहा।
श्री समोसर्ण में देवों के अग्र था॥नाथ...॥1815॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रतिपति सामने शूरमा झुक गए।
काम के नैन प्रभु देखकर झुक गए॥
नाथ आदीश की वन्दना मैं करूँ।
भक्त होवे अमर भावना मैं करूँ॥1816॥

ॐ ह्लीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वृषभादिक चतुर्विंशति जिन नमूँ।
अर्घ्य से पूजकर भव समन्दर तिरूँ॥नाथ...॥1817॥

ॐ ह्लीं अर्हं महिमायुक्त 'वृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. दृष्टि सम्मुख रहे स्वात्म के नित्य ही।
मैं चलूँ शिवडगर पे हे वृषभेश जी॥नाथ...॥1818॥

ॐ ह्लीं अर्हं महिमायुक्त 'ष्टि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रुद्र भावों से नरकों के दुख ही सहे।
भाव है ज्ञानधारा में अब तो बहे॥नाथ...॥1819॥

ॐ ह्लीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. होगा उद्धार मेरा ये विश्वास है।
क्योंकि जिनभक्ति ही अब मेरी श्वास है॥ नाथ...॥1820॥

ॐ ह्लीं अर्हं महिमायुक्त 'द्धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. गन्धोदक स्पर्श कर कष्ट ही नष्ट हो।
आदिजिन हैं विमल आप ही इष्ट हो॥नाथ...॥1821॥

ॐ ह्लीं अर्हं महिमायुक्त 'गन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. धो दिया सारे कर्मों को निज आत्म से।
हो मिलन प्रार्थना शीघ्र शुद्धात्म से॥नाथ...॥1822॥

ॐ ह्लीं अर्हं महिमायुक्त 'धो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. दश दिशाएँ प्रभु नाम से गूँजतीं।
स्वर लहरियों से मानो तुम्हें पूजतीं॥नाथ...॥1823॥

ॐ ह्लीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. बिन्दु संयुक्त ओकार का नाद कर।
आत्म शान्ति मिले भक्तामर पाठ कर॥
नाथ आदीश की वन्दना मैं करूँ।
भक्त होवे अमर भावना मैं करूँ॥1824॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बिन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. दुर्गुणों का ये नेता है मिथ्यात्व ही।
मुक्ती का मार्ग भी सूझता ही नहीं॥नाथ...॥1825॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. शुद्ध भावों को पाने की है भावना।
नित रहूँ शुभ में छोड़ूँ अशुभ कामना॥नाथ...॥1826॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. भक्त सच्चा हूँ भगवन् ना कुछ चाहता।
मेरा मन रात-दिन आपको पूजता॥नाथ...॥1827॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मन्दतर हो कषायें यही चाह है।
आप मंजिल मेरी आप ही राह हैं॥नाथ...॥1828॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. दर से प्रभु के न कोई भी खाली गए।
आए जो भक्त निज के ही मालिक हुए॥नाथ...॥1829॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. मन का मन्दिर सजाया बड़े भाव से।
आईए नाथ है प्रार्थना आपसे॥नाथ...॥1830॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. जो गुरुत्व प्रभु आपमें है दिखा।
वो जगत में किसी में भी दिखता कहाँ॥नाथ...॥1831॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रुत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. प्रभु आदीश का मोक्ष ही धाम है।
हो गए नाथ शाश्वत ही निष्काम हैं॥नाथ...॥1832॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. पाप औ पुण्य को नाश मुक्ति वरी।
आत्म बल पर ही कर्मों की शक्ति हरी॥
नाथ आदीश की वन्दना मैं करूँ।
भक्त होवे अमर भावना मैं करूँ॥1833॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. तारते आप उनको जो निर्दोष हो।
आप तीर्थेश हो नन्त गुणकोष हो॥नाथ...॥1834॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. दिव्यता आपने जन्म से प्राप्त की।
दिवि पाताल भू में हो जय आपकी॥नाथ...॥1835॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. व्याप्त हैं ज्ञान से लोक अलोक में।
पूजता हूँ प्रभु तीनों ही योग से॥नाथ...॥1836॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. दिवाकर रोशनी आपसे माँगता।
कोटि रवि सम प्रभु तेज है आपका॥नाथ...॥1837॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. प्रभवः पांतु नो नित्यं अर्ज करूँ।
आपकी ही कृपा से भवार्णव तिरूँ॥नाथ...॥1838॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. परिवर्तन नहीं हो कभी आपका।
सिद्धपुर से ना संसार में लौटना॥नाथ...॥1839॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. तम से अन्धों को देते उजाला तुम्हीं।
डूबती नाव के हो किनारा तुम्हीं॥नाथ...॥1840॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिरस्कृत मैं हुआ अब तलक कर्म से।
जिन-कृपा से है सम्बन्ध अब धर्म से॥नाथ...॥1841॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. तेरी शरणा मिली मैं निडर हो गया।
तत्त्व को जानकर अब सबल हो गया॥
नाथ आदीश की वन्दना मैं करूँ।
भक्त होवे अमर भावना मैं करूँ॥1842॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. वन्दनं वन्दनं कह रहे भक्त हैं।
आपके नन्त गुण से ये अनुरक्त हैं॥नाथ...॥1843॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. चरितार्थ किया नर जनम आपने।
आपने आपको वर लिया आपमें॥नाथ...॥1844॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. साम्य रस चख रहे आप अनुपम सदा।
चख न पाया प्रभु मैं ये समरस कदा ॥नाथ...॥1845॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'साम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तव भक्ति में मन को लगाता रहूँ।
भक्त की चाह बस पूजता ही रहूँ॥नाथ...॥1846॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. धार तिर्यञ्च पर्याय दुख को सहा।
आज सौभाग्य से द्वार प्रभु के खड़ा॥नाथ...॥1847॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तिर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. वास्तविक सौख्य अनुभव किया आपने।
भक्त दुख से भरा है प्रभो सामने॥नाथ...॥1848॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

कल्पवृक्षों के पुष्पों की वर्षा करें।
देव औ देवियाँ सर्व हर्षा रहे॥
नाथ आदीश की वन्दना मैं करूँ।
भक्त होवे अमर भावना मैं करूँ॥

ॐ ह्रीं समस्त जातिपुष्पवृष्टिप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 34

भामण्डल प्रातिहार्य

शुम्भत्प्रभावलय - भूरिविभा विभोस्ते
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्दिवाकर - निरन्तरभूरिसंख्या
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम्॥34॥

विष्णुपद छन्द

प्रभु का आभामण्डल चारों ओर चमकता है।
त्रिभुवन के द्युतिमय पदार्थ को लज्जित करता है॥
कोटि सूर्य युगपत् उगने पर जो दीप्ति होती।
प्रभु के भामण्डल में उससे अधिक कान्ति होती॥
ज्योतिर्मय होकर भी इसमें ताप नहीं होता।
शरद पूनम के चन्दा जैसा शीतलता देता॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥34॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं।

क्ष्वेलर्द्धीन् विश्वजन्तूनां, प्रोपकारादिकारिणः।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्वेलौषधर्द्धिप्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. **शुंभत् शिखर समान सुशोभित, आदीश्वर जिन उन्नत हैं।**
समवसरण में सुर नर ऋषि सब, प्रभु के चरणों में नत हैं॥1849॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शुं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

2. **तन बीभत्स पिटारा मल का, नौ द्वारों से बहता है।**
नाथ आपके शुद्धातम से, सुख का झरना झरता है॥1850॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

3. **प्रक्षालित करते पापों को, अतः भक्तगण आते हैं।**
आतम हो निष्पाप शीघ्र ही, यही भावना भाते हैं॥1851॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **भास्वत भास्कर भी प्रभु को लख, पश्चिम में खो जाता है।**
देख आपकी दिव्यात्मा को, शर्मिन्दा हो जाता है॥1852॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **वर्तमान के प्रथमेश्वर को, तीन लोक ही नमता है।**
क्योंकि आपको झुकने से सब, अहंकार ही मिटता है॥1853॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **लघु कंकर भी डूबे जल में, बड़ा काष्ठ भी तिरता है।**
मानी भवसागर में डूबे, विनम्र तीर पहुँचता है॥1854॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **यथार्थ सब कुछ जानें भगवन्,असत्य कुछ भी नहीं कहें।**
पूर्णज्ञान में सर्व झलकता, अनजाना कुछ नहीं रहे॥1855॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. भूतल पर जन्मे भगवन् पर, तीन लोक यश फैला है।
रागादिक दुर्भावों से प्रभु, मेरा चेतन मैला है॥1856॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. रिमझिम-रिमझिम सावन बरसे, ऐसी प्रभु की ध्वनि खिरे।
सुन करके एकाग्रचित्त हो, भवदधि से कई भक्त तिरें॥1857॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. विधि शुद्ध होने की भगवन्, हम भक्तों को समझा दो।
सिद्धनगर की पगडंडी का, पता जिनेश्वर बतला दो॥1858॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. भाव-भासना नहीं हुई तो, मात्र पठन-पाठन से क्या।
गुरु कहें पढ़ जीवकाण्ड पर, जीव नहीं जाने तो क्या॥1859॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. विषाद हर्ष भाव नहीं प्रभु के, क्योंकि राग औ द्वेष नहीं।
वन्दनीय तव वीतरागता, दोष आपमें रहे नहीं॥1860॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. भोर हुई ना अब तक मेरी, मोह निशा में भटक रहा।
मोह मिटाकर विभोर होऊँ, रत्नत्रय को ललक रहा॥1861॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. रास्ते मुक्ती के लम्बे हैं, सूक्ष्म दिखाई ना देते।
प्रभु पद चिह्न देखकर मुझको, चलना है उस ही पथ पे॥1862॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. लोकेषणा नहीं मुनिवर को, मानतुङ्ग यति मौन रहे।
आत्म साधना में दृढ़ता से, परमातम को खोज रहे॥1863॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. कला अनुपम भव तिरने की, आदिप्रभु ने सिखलाई।
धन दौलत ख्याति पाने की, कला बिना सीखे आई ॥1864॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. त्रय निदान से विरत व्रती हो, महाव्रती जिनलिङ्ग धरें।
द्रव्य भाव द्वय लिङ्ग धारकर, कालान्तर में सिद्धि वरें॥1865॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. ध्येय बनाया प्रथम आपने, तदनुरूप आचरण किया।
जैनागम अनुसार चरित लख, शिवाङ्गना ने वरण किया॥1866॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. द्युति देह की लख प्रभुवर की, सुरगण विस्मित हो जाते।
अपलक देख रहे बेचारे, निज की ही सुध-बुध खोते॥1867॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तिलाञ्जलि दे दी दोषों को, बेचारे वे भाग गए।
अनन्त गुण की कान्ति लखकर, वापिस दोष न आ पाए ॥1868॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मनभावन जिनवर की मूरत, जिन-मन्दिर में जहाँ-जहाँ।
तन मन और वचन से भगवन्, अर्घ्य चढ़ाऊँ वहाँ-वहाँ॥1869॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. ताम्बूल वसनाभूषण त्यागे, राजपाट सब छोड़ दिया।
धन्य-धन्य आदीश्वर स्वामी, जग से नाता तोड़ लिया॥1870॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ताम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. विद्युत सम नश्वर जग वैभव, शाश्वत कभी नहीं रहते।
यही जानकर नाथ आप सम, विज्ञ निजातम में रमते॥1871॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तिरस्कार निज का करवाया, स्वयं कर्म के द्वारा ही।
वीतराग जिनरूप न भाया, मुझे न निज की सुध आई॥1872॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. मानादिक का मर्दन करके, मार्दव धर्म मुनि धारें।
सहज स्वभावी सन्तजनों की, देव स्वयं जय उच्चारें॥1873॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. रक्षित हैं प्रभु भक्त सदा ही, देव स्वयं रक्षा करते।
ज्यों मुनिवर को कैद मुक्त कर, बाह्य शिला तल पर रखते॥1874॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. पंगु भी पर्वत चढ़ जाता, गूंगा मुखरित हो जाता।
भावों से जो प्रभु को भजता, स्वयं प्रभु सम हो जाता॥1875॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तीक्ष्ण बुद्धि ना चाहूँ भगवन्, पवित्र बुद्धि बनी रहे।
निज आतम को जान सकूँ बस, श्रद्धा प्रभु में घनी रहे॥1876॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ती' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. प्रोत्साहित ना करें किसी को, क्योंकि राग से रहित हुए।
हतोत्साह भी नही करें प्रभु, क्योंकि द्वेष से रहित हुए॥1877॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. वैद्य मात्र तन को औषध दे, धन लेकर ही रोग हरे।
किन्तु आप निस्वार्थ वैद्य जिन, चेतन के भी रोग हरें॥1878॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. मुनि उद्दिष्ट आहार न करते, निराहार ही रह जाते।
वन्दनीय मुनिवर की चर्या, गुरु सेवा कर सुख पाते॥1879॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. वाच्य नहीं प्रभु गुण अनन्त हैं, किन्तु भक्ति वश कहता हूँ।
बार-बार शब्दों को कहने, अल्प बुद्धि शर्माता हूँ॥1880॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. कर्मठ हो जिनराज आप ही, सबल कर्म को हरा दिया।
असंख्य आत्मप्रदेशों से अब, नाम मूल से मिटा दिया॥1881॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. हो रणजीत आप ही स्वामी,विकार अरि का हनन किया।
रत्नत्रय भाला संयम की, ढाल लगा शिव गमन किया॥1882॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. निरख-निरख कर दिव्य छवि को, नयन कहीं ना जाते हैं।
तुम्हें देखकर अब क्या देखूँ, मन में आप समाते हैं॥1883॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. हो रंजायमान 'पर' से मैं, दुख का भार बढ़ाता हूँ।
दुख का कारण जान रहा पर, छोड़ नहीं प्रभु पाता हूँ॥1884॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. तत्त्व ज्ञान हो गया शब्द से, क्षयोपशम के कारण ही।
तदनुरूप आचरण हुआ ना, रुचि न जागी आतम की॥1885॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. रसना के वश होकर अब तक, बहु दुष्कर्म किए स्वामी।
भक्ष्याभक्ष्य न जान सका औ, व्यर्थ प्रलाप किया स्वामी॥1886॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. भूषण आप तीन लोकों के, यद्यपि आप विदेही हैं।
फिर भी विश्वनाथ कहलाते, चिन्मय रूप अनेही हैं॥1887॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. रिक्त हो गया कर्म कोष सब, फिर भी परम धनी स्वामी।
नाथ आपकी अनुपम वृत्ति, मैं ना जानूँ अज्ञानी॥1888॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. संगी मिला नहीं प्रभु तुम सा, अतः रहा मैं संसारी।
मानतुङ्ग मुनिराज कृपा से, शरण मिली तव त्रिपुरारि ॥1889॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. ख्याति और प्रसिद्धि पाने, रात-दिवस श्रम बहुत किए।
किन्तु आत्म शान्ति पाने को, नहीं एक पल शान्त हुए॥1890॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. प्रदीप्त नन्त काल तक रहते, अक्षय पूर्णज्ञान धारी।
है स्वाधीन उजाला शाश्वत, जय हो मोह तमस हारी॥1891॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दीप्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. त्यागोत्सव में लौकान्तिक सुर, ब्रह्म स्वर्ग से आए थे।
दीक्षा का अनुमोदन करके, प्रभु पद शीश झुकाए थे॥1892॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. जगती के उद्धारक प्रभु जी, भक्तों के परमेश्वर हैं।
रोम-रोम में बसे हुए हो, मेरे तो पूर्णेश्वर हैं॥1893॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. यज्ञ आत्म शान्ति का करके, श्री जिनवर धनि धन्य हुए।
जो करना था सर्व कर चुके, वृषभनाथ कृतकृत्य हुए॥1894॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. नित्य अनित्य भावना भाकर, नश्वर से ना राग किया।
शाश्वत स्वातम से नाता रख, सर्व परिग्रह त्याग दिया॥1895॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. पिया बहुत विषयों का प्याला, दुख ही दुख को बढ़ा दिया।
आज मिला वचनामृत प्याला, पीकर प्रभु सुख घना हुआ॥1896॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. नियमित पढ़कर भक्तामर जो, महा विधान यह करता है।
उसके सारे विघ्न चूर हों, भक्तों का मन कहता है॥1897॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. शास्त्र ज्ञान हो क्षयोपशम से, आत्मज्ञान हो श्रद्धा से।
भेदज्ञान से पूर्णज्ञान हो, चाह वचन मन वपुषा से॥1898॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. मन्दिर-मन्दिर ढूँढ़ लिया पर, श्रद्धालय में आप मिले।
बिन समकित ज्योति के कैसे, बन्द ज्ञान का कमल खिले॥1899॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. पिता जगत के आप प्रभु जी, क्योंकि पाप क्षय करते हैं।
इसीलिए सब रिश्ते तज हम, तव चरणों में नमते हैं॥1900॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. सोना बन जाता लोहा भी, पारसमणि से यदि छू ले।
मुक्ती पाए वह जो प्रातः, भक्तामर विधान कर ले॥1901॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. महल मसान मीत शत्रु में, भेद नहीं किञ्चित् जिनको।
नमूँ उन्हें मैं हाथ जोड़कर, मानतुङ्ग सूरीश्वर को॥1902॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. सौम्य परम रस पीकर प्रभुवर, आदीश्वर क्यों चले गए।
रहे भटकते हम भूतल पर, नयन आपको खोज रहे॥1903॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सौम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. यांति विघ्नौघाः प्रलयं प्रभु, इसीलिए तव दर आया।
विघ्न समूह नष्ट हो जाए, शिव मंजिल पाने आया॥1904॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

प्रभु आभा मण्डल से द्युतिमय, सब पदार्थ लज्जित होते।
ज्योतिर्मय प्रभु अतः ऋषि मुनि,सुर नर से पूजित होते॥

ॐ ह्रीं कोटिभास्कर-प्रभामण्डितभामण्डलप्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं० 35

दिव्यध्वनि प्रातिहार्य

स्वर्गापवर्ग - गममार्ग - विमार्गणेष्टः
सद्धर्मतत्त्व - कथनैक - पटुस्त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनि - र्भवति ते विशदार्थ सर्व
भाषास्वभाव - परिणामगुणैः प्रयोज्यः॥35॥

विष्णुपद छन्द

स्वर्ग मोक्ष का पथ बतलाती जिनवर की वाणी।
सम्यक् धर्म कथन में पटु है वाणी कल्याणी॥
स्पष्ट अर्थ युत सब भाषा में परिणत गुणवाली।
तीन लोक के सब जीवों का दुख हरने वाली॥
दिव्यध्वनि को नमन करूँ प्रभु वचनों को ध्याऊँ।
प्रभु वचनामृत पीकर अजर-अमर पद पा जाऊँ॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥35॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं।

जल्लर्द्धीन् मलतोऽशेष, दुष्टव्याधिक्षयङ्करान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं जलौषधर्द्धिप्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

चौपाई

1. स्वर्ग लोक से सुरगण आते, प्रभु की पूजा कर सुख पाते।
मैंने पूजा थाल सजाया, प्रभु चरणों में अर्घ्य चढ़ाया॥1905॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्वर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

2. गाथा बहुत बड़ी दुःखों की, सर्व जानते आप प्रभु जी।
अतः सुनाना कुछ ना चाहूँ, मात्र वचन तव सुनना चाहूँ॥1906॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

3. पलकें प्रभु की नहीं झपकतीं, देह आपकी कभी न थकती।
क्योंकि आप कृतकृत्य हुए हैं, जो करना था पूर्ण किए हैं॥1907॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

4. वर्णन गुण का हो ना सकता, अल्प बुद्धि मैं तव गुण नन्ता।
फिर भी भक्ति वश गाता हूँ, गुण गाकर पाता साता हूँ॥1908॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

5. गणधर तव वचनों को गूँथे, जिनवाणी को भविजन पूजे।
जिन वच औषध अमर बनाती,जो आतम श्रद्धा से खाती॥1909॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

6. गगनांगन में वाद्य बजाकर, सुरगण जन को जगा-जगाकर।
बुला रहे हैं प्रभु के द्वारे, आओ-आओ प्रभु पधारे॥1910॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

7. मनमानी अब कभी न करना, जिनवाणी ही उर में धरना।
प्रभु वच ही शिव पता बताए, भूले भटकों को पहुँचाए॥1911॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

8. मार्ग प्रदर्शक जिनवाणी है, दीपक जैसी तम हरिणी है।
नित होवे स्वाध्याय शास्त्र का, पता जान लूँ शिवमारग का॥1912॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मार्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

9. गतियाँ चार बहुत घूमी हैं, अब पंचमगति ही पानी है।
जहाँ प्रभु आदीश गए हैं, वहाँ भक्तगण चाह रहे हैं॥1913॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

10. विधिवत् तप से संधि कर ली, फिर प्रभुवर ने मुक्ती वर ली।
देव शास्त्र गुरु की भक्ती कर, हो जाऊँ मैं ज्ञान दिवाकर॥1914॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

11. मायावी दुनिया है सारी, स्वारथ के सारे संसारी।
जग के फंदे प्रभु ने काटे, फिर प्रभु ज्ञान रोशनी बाँटे ॥1915॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

12. मार्ग मोक्ष का बहुत कठिन है, पहुँच गए जहाँ आदि जिन हैं।
उसी पन्थ पर चलना चाहूँ, ध्वनि सुनकर मैं चलता जाऊँ॥1916॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र्ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

13. शरणे आया भक्त आपकी, जड़े काट दो नाथ पाप की।
निष्पापी बनने आया हूँ, यही निवेदन मैं लाया हूँ॥1917॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

14. तुष्टः पुष्टः आप करोगे, भक्त जनों के कष्ट हरोगे।
यह सुनकर तव दर आया हूँ, अर्घ्य चढ़ाने को लाया हूँ॥1918॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष्टः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

15. सरस सु-निर्मल प्रभु की वाणी, जगत जनों की है कल्याणी।
बिन इच्छा के ही खिरती है, भव्यों का कल्मष हरती है॥1919॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

16. सद्धर्मेश्वर श्री जिनरायी, दुर्लभ शिवललना को पायी।
कठिन कार्य को सुलभ करा दो, मेरा मुझसे मिलन करा दो॥1920॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्धर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

17. मत्सर भाव नहीं लाना है, गुणियों से प्रमुदित होना है।
विभाव निज को ही दुख देते, आतम के गुण विकृत करते॥1921॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

18. तत्पर हो श्रद्धा से पूजा, लगा आप सम ना है दूजा ।
कहाँ वीतरागी औ रागी, एक सुधा है एक जहर सी॥1922॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

19. पृथक्त्व माना परद्रव्यों को, लक्ष्य बनाकर शुद्धातम को।
नाथ आपने सिद्धि पा ली, अक्षय सौख्य निधि अपना ली॥1923॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

20. कठोर ज्ञान कुदाली लेकर, आठों कर्मों पर प्रहार कर।
निष्कर्मा हो गए जिनेश्वर, नाम आपका जपूँ निरन्तर॥1924॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

21. थक जाते हैं कषाय करके , फिर भी बार-बार क्यों करते।
ज्ञान जानकर कभी न थकता, क्योंकि आत्म स्वभाव कहाता॥1925॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

22. नैना कब से तरस रहे हैं, रह-रह करके बरस रहे हैं।
एक बार प्रत्यक्ष दर्श दो, पूजन करके परम हर्ष हो॥1926॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

23. कलश हृदय श्रद्धा का भरकर, करूँ न्हवन भावों से भरकर।
मन में बहती भक्ती धारा, नाथ बहा दो करुणा धारा॥1927॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

24. पर्व दिवाली-सा लगता है, प्रभु विधान में मन लगता है।
तन की सुध तब खो जाती है, चेतन की सुध आ जाती है॥1928॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

25. कटु स्वर नहीं सुहाते जग को, मधुर वचन की चाह श्रवण[1] को।
हितमित मिष्ट प्रभु की वाणी, धारण कर सुख पाएँ प्राणी॥1929॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'टुस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

26. त्रिभुवन के प्रभु नाथ कहाए, पूर्णज्ञान की ज्योति जलाए।
तव सन्निधि में जो भी आते, आत्मज्ञान का प्रकाश पाते॥1930॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

27. लोकेश्वर आदीश्वर स्वामी, बनूँ आपका पदानुगामी।
ब्रह्म स्वरूप जानने वाले, आतमज्ञान कराने वाले॥1931॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

28. नाथ त्रिलोक्या: सुख के दाता,भक्तजनों के भाग्य विधाता।
मेरे मन मन्दिर में बसिए, इतनी-सी मम अरजी सुनिए॥1932॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्या:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

29. दिनकर कान्ति फीकी लगती, जब आदिप्रभु की छवि दिखती।
प्रभु जी रहते ज्ञान गगन में, विजय ध्वजा फहरी त्रिभुवन में ॥1933॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

30 व्यतीत जो क्षण हुए भक्ति में, सार्थक मानूँ उनको ही मैं।
भक्ति से ही मुक्ती मिलती, ऋषि मुनि गणधर की मति कहती॥1934॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

31. ध्वज फहराया जिनशासन का, पाठ पढ़ाया अनुशासन का।
ऐसे मुनि को नमन हमारा, साधु पाए सिद्ध पद प्यारा॥1935॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

1. कान

32. निर्मलता के झरने फूटे, कर्म कलंक सर्वथा छूटे।
यही निवेदन नाथ हमारा, अरज करे यह भक्त तिहारा॥1936॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'निर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

33. भविष्य भूत संप्रति जानो, आप चराचर को पहचानो।
सिद्धालय पर आप विराजे, मोक्ष-भवन में शाश्वत राजे॥1937॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

34. वतन आपका अति सुखकारी, नन्त सिद्ध भगवन् अविकारी।
तन जब तक हो सिद्ध न होते, देह रहित जिन सिद्ध कहाते॥1938॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

35. तिल में तेल भरा ज्यों रहता, आतम में परमातम बसता।
ध्यान यन्त्र से तुम प्रकटाओ, जिनवर कहते वक्त न खोओ॥1939॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

36. तेजपुंज जिन तन अविकारी, सर्वोत्तम शक्ति के धारी।
युगादि में जन्मे तीर्थेशा, पुरु नाम पावन परमेशा॥1940॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

37. विनय भाव जो भी रखता है, सिद्धमहल में पग धरता है।
सहज सरल मन होवे मेरा, आप चरण में हो मम डेरा॥1941॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

38. शकुन श्रेष्ठ वह ही कहलाए, प्रभु का दर्श यदि मिल जाए।
प्रातः उठकर तुम्हें निहारूँ, और किसी का दर्श न चाहूँ॥1942॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

39. दार्शनिक जिन श्रेष्ठ कहाते, क्योंकि केवलदर्शन पाते।
जग जन देख थका हूँ स्वामी, स्वात्म दर्श दे दो जगनामी॥1943॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दार्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

40. अथ औ इति नहीं कुछ जानूँ, मात्र आपको मैं पहचानूँ।
आतम तत्त्व अनादि अनन्ता, कहा आपने श्री भगवन्ता॥1944॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

41. सर्वप्रथम वन्दन करना है, फिर प्रभु की पूजन करना है।
तदुपरान्त सुनकर जिनवाणी, हो जाऊँ मैं स्वातम ध्यानी॥1945॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

42. वसुधा पुलकित हो जाती है, कण-कण से वह हर्षाती है।
प्रभुवर ने जब जन्म लिया था,त्रिभुवन में आनन्द हुआ था॥1946॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

43. भाग्यवान वह कहलाता है, जो भगवत् भक्ति करता है।
प्रभुवर मेरा भाग्य सँवारो, निर्बल हूँ मैं नाथ उबारो॥1947॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

44. अभिलाषा मम एक यही है, जो भी तुमने नाथ कही है।
उसको अक्षरशः मैं धारूँ, अपना जीवन स्वयं सुधारूँ॥1948॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

45. स्वराज्य को प्रभुवर ने पाया, मेरा मन भी है अकुलाया।
कब स्वतन्त्र मैं भी हो जाऊँ, इसी भाव से प्रभु को ध्याऊँ॥1949॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

46. भागीरथ सम प्रभु निर्मल हैं, मिटी कर्म की सब कल-कल है।
स्वर्ग मोक्ष के हो निर्माता, तव चरणन में शीश नवाता॥1950॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

47. वपु को भी प्रभु दूर किया है,निज आतम अब शुद्ध हुआ है।
ममता भी प्रभु तुमसे हारी, जिन चरणों में है बलिहारी॥1951॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

48. पर परिणति कर दुख ही पाया,परमारथ को समझ न पाया।
यों ही मैंने जन्म गँवाएँ, सोच-सोच आतम पछताए॥1952॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

49. रिपुता करके भी क्या पाया, कितनों से अति वैर बढ़ाया।
निज का ही मैं मीत हुआ ना, हाथ रहा है बस पछताना॥1953॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

50. '**णा**णं णेय पमाणं' माना, जैनागम से ही यह जाना।
ज्ञानावरण नशे मम स्वामी, स्वातम ज्योति जगे जगनामी॥1954॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

51. **म**न-मोहक है छवि विरागी, प्रभु दर्शन की धुन अब लागी।
नाथ मुझे प्रभुता पाना है, अरुक अथक शिवपुर जाना है॥1955॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

52. **गु**ण ग्रहण का भाव रखूँ मैं, चिन्मय गुण का स्वाद चखूँ मैं।
यही हृदय में भाव हुए हैं, जब से प्रभु के दर्श हुए हैं॥1956॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

53. गु**णैः** प्रभु ने दोष मिटाए, विद्वज्जन भी शीश नवाए।
वन्दन से विधि बन्धन कटते, तत्क्षण ही सब संकट मिटते॥1957॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णैः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

54. **प्र**वीण हैं जो तप करने में, त्रिविध कर्म का क्षय करने में।
दृढ़ मन से वे ही सुख पाते, सत्ता के सब कर्म नशाते॥1958॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

55. **यो**गीजन जब ध्यान लगाते, उनके ज्ञान कक्ष में आते।
मुनि मुद्रा तब लगती प्यारी, प्रभु समीपता की बलिहारी॥1959॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

56. पू**ज्यः** पद धारे जिनराया, राग-द्वेष को दूर भगाया।
मैं भी ऐसी समता पाऊँ, अर्घ्य चढ़ाकर शीश झुकाऊँ॥1960॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज्यः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

पूर्णार्घ्य

प्रभु की दिव्यध्वनि कल्याणी, तीन गति के सुनते प्राणी।
वचनामृत औषध पाना है, प्रभु पूजन कर शिव पाना है॥

ॐ ह्रीं जलधरपटलगर्जित-सर्वभाषात्मक-योजनप्रमाणदिव्यध्वनि-प्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं० 36

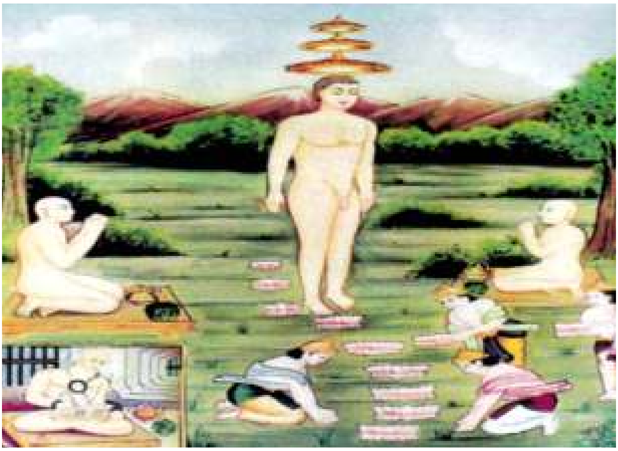

स्वर्ण कमलों की रचना

उन्निद्रहेम - नवपङ्कज - पुञ्जकान्ति -
पर्युल्लसन्नख - मयूख - शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति॥36॥

विष्णुपद छन्द

विकसित नूतन स्वर्ण कमल सम प्रभु के युगल चरण।
झिलमिल-झिलमिल नख कान्ति ज्यों नभ में चन्द्र किरण॥
विहार में प्रभुवर के ऐसे चरण जहाँ पड़ते।
स्वर्णमयी कमलों की रचना देव वहाँ करते॥
श्रद्धा कमल रचाकर भविजन जोड़े हाथ खड़े।
हृदय धरा पर कब प्रभुवर के पावन चरण पड़ें॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥36॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं

विण्महर्द्धि-विसंयोगात्, पुंसां रोग-विनाशकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 36॥

ॐ ह्रीं अर्हं विडौषधर्द्धिप्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

पद्धरि

1. **उन्मार्गी जिनधर्म न पाय, जिनवर भक्ति नहीं सुहाय।**
मैं हूँ भक्त तिहारा नाथ, मुझे बुला लो अपने पास॥1961॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'उन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

2. **निरख प्रभु को हुआ निहाल, नमन करूँ मैं नाथ त्रिकाल।**
होते हैं अघ सारे चूर्ण, मनोकामना होती पूर्ण॥1962॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

3. **दरिद्र भी होता धनवान, जो पाता तव शरण महान।**
प्रभु की महिमा अपरम्पार, सुरगुरु भी ना पावे पार॥1963॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

4. **हे आदीश्वर हे जगपूज्य, वन्दनीय से भी हो वन्द्य।**
ऋषि मुनियों के भी हो नाथ, मुझ अनाथ को करो सनाथ॥1964॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

5. **मनुजोत्तम कहलाते आप, शत-शत इन्द्र नमाते माथ।**
गणधर भी तव गुण को गाय, भक्ति कर उर में हर्षाय॥1965॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

6. **नहीं बढ़े प्रभु के नख केश, जब हो केवलज्ञान विशेष।**
धन्य आपका है पुरुषार्थ, किया सर्व जीवन चरितार्थ॥1966॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

7. **वस्तु स्वभाव जानकर आप, समता से मेटा सन्ताप।**
अहो भाव से पूजूँ नाथ, आप चरण में रख लूँ माथ॥1967॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

8. पंख लगा उड़ आऊँ समीप, जग में मात्र आप ही मीत।
मम मन मन्दिर करिए वास, या फिर मुझे बुला लो पास॥1968॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

9. कलुषित मन से मिलें न नाथ, जो मन रखता अपना साफ।
उसे प्रभु का मिलता दर्श , मिट जाता सारा संघर्ष॥1969॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

10. जननी से भी अधिक महान,अनन्त उपकारी भगवान।
तन को मात्र जन्म दे मात, अजर-अमर पद देते नाथ॥1970॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

11. पुंज चढ़ा अक्षत का आज, पाना अक्षयपुर का राज।
मुझमें है मुक्ती का स्वार्थ, प्रकटा दो मुझमें परमार्थ॥1971॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पुं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

12. जयवन्तों हे आदि जिनेश, मेटो जनम-मरण का क्लेश।
मुझको है तुम पर विश्वास, पूर्ण करोगे यह अभिलाष॥1972॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

13. लौकान्तिक सुरगण सब आय, प्रभु का तप कल्याण मनाय।
मेरा कब जागे सौभाग्य, होऊँ निज कल्याण सु-योग्य॥1973॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. तिरने की है जिनवर नाव, तीर दिखाते भव का आप।
पाना मुझको चिन्मय देश, धरूँ दिगम्बर जिन-सा भेष॥1974॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

15. पर्व स्वरूप आपका दर्श, पाकर मन में हो अति हर्ष।
अर्द्ध निशा भी लगे प्रभात, जब जिन-दर्शन हो साक्षात्॥1975॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

16. युगदृष्टा जिनवर वृषभेश, तुम्हें नमें सुर इन्द्र खगेश।
परम कृपा है मुझ पर नाथ, कर पाता हूँ भक्ति आज॥1976॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

17. वल्लभ शिवाङ्गना के आप, श्रद्धा से मैं कर लूँ जाप।
दिखते नहीं आदि जिनराय, अतः ध्यान कर भविजन ध्याय॥1977॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल्ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

18. सन्निधि श्री जिनवर की पाय, भविजन अतिशय पुण्य कमाय।
सुषुप्त जन को आप जगाय, मोक्षपुरी की डगर दिखाय॥1978॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

19. नयन अगोचर हो जिनराज, फिर भी होता यह अहसास।
नाथ आप हो मेरे पास, करते हृदय-कमल में वास॥1979॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

20. खत्म किए सारे ही दोष, भरा चिन्मयी गुण का कोष।
अतः आ गया जिनवर द्वार, मेरा भी करिए उद्धार॥1980॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

21. महन्त जन भी करें प्रणाम, ध्याएँ प्रातः हो या शाम।
डूब रहे जो उन्हें तिराय, गिरे हुए को आप उठाय॥1981॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

22. मयूर घन लख कर हर्षाय, भक्त भक्ति करके पुलकाय।
रहे प्रभु का शाश्वत साथ, नाथ मात पितु सच्चे भ्रात॥1982॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

23. खड्ग ध्यान की लेकर आप, संग धर्म दश सेना साथ।
किया कर्म पर तीव्र प्रहार, हुई शीघ्र कर्मों की हार॥1983॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

24. **शिथिल होएँ कर्मों के बन्ध, सद् गुरुदेव यदि हो संग।**
गुरुवर का पाकर निर्देश, पहुँचे भविजन चिन्मय देश॥1984॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

25. **खारे जल सम अन्य कुदेव, क्षीर सिन्धु सम हैं जिनदेव।**
अनन्त करुणाधर प्रभु देख, तजे भक्त ने द्वार अनेक॥1985॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'खा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

26. **भिगा दिए भक्तों ने नैन, दर्शन पाने को दिन-रैन।**
कुछ उपाय बतला दो नाथ, कैसे दर्शन दोगे आप॥1986॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

27. **राह न कोई सूझे नाथ, तब मैं करूँ आपकी याद।**
मम मन में अब करो प्रवेश, दिख जाएगा सिद्ध प्रदेश॥1987॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

28. **मौलिक स्वात्म निधि को पाय, त्रिभुवन में प्रभु श्रेष्ठ कहाय।**
मैं छोटा-सा सच्चा भक्त, कर ना सकूँ भावना व्यक्त॥1988॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

29. **पापोदय में किया न धर्म, रात-दिवस ही बाँधे कर्म।**
पापों का होवे विध्वंस, त्रिविध कर्म का होवे अन्त॥1989॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

30. **दौलत को जड़ नश्वर जान, अविनाशी आतम पहचान।**
जड़ चेतन का जाना भेद, पहुँच गए प्रभु शिवपुर देश॥1990॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

31. **पहनाए गुण भूषण आप, श्वास-श्वास से अनहद नाद।**
जग से न्यारी प्रभु की शान, जय हो आदिनाथ भगवान॥1991॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

32. दानव भी मानव बन जाय, जो जिनवर की शरणा पाय।
पंचमगति दायक जिननाथ, मुक्ती तक प्रभु दीजे साथ॥1992॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

33. निकट प्रभु रहने की चाह, जिससे सूझे मुक्ती राह।
अरज करूँ प्रभु रखिए ध्यान, भक्त आपका है नादान॥1993॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

34. तन धन से होकर आसक्त, जन्म अनेक गँवाएँ व्यर्थ।
आज समझ में आई बात, प्रभु भक्ति से हुआ प्रभात॥1994॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

35. वत्स खड़ा है जोड़े हाथ, अरज करे यह तुमसे आज।
निज गृह में बुलवा लो नाथ, कर्म दे रहे अति सन्ताप॥1995॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

36. यम भी देख तुम्हें डर जाय, जिससे जग के जीव डराय।
यदपि आपकी छवि अति शान्त, यम है क्रूर नाम बदनाम॥1996॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

37. त्रस बनकर भी मिटी न त्रास, मात्र आप चरणों की आश।
विघ्न सभी हो जाएँ चूर, सुख पाऊँगा मैं भरपूर॥1997॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

38. जिनमत से हो जग कल्याण, अन्त समय पावे निर्वाण।
प्रभु अगणित गुणगण भण्डार, निरखूँ प्रभु को बारम्बार॥1998॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

39. जिनेन्द्र प्रभु का दुर्लभ दर्श, दर्शन कर निज का हो स्पर्श।
मिट जाते हैं सर्व विकार, निर्विकल्प प्रभु हैं अविकार॥1999॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नेन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

40. द्रव्य दिव्य नहीं लाया साथ, जोड़े हाथ खड़ा हूँ नाथ।
मणि मुक्ता का ना है थाल, श्रद्धा से नत है मम भाल॥2000॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

41. धर्मामृत बरसाते आप, अनगिन भविजन हो निष्पाप।
तव पद में बीता जो काल, जीवन मेरा हुआ निहाल॥2001॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

42. मत्तः होकर मद में चूर, रहा आपसे मैं अति दूर।
मुझे बुला लो अपने पास, सिद्धशिला में हो मम वास॥2002॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्तः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

43. पद्मासन में ध्यान लगाय, शुक्लध्यान से मुक्ती पाय।
थिर करिए मम चंचल चित्त, हो जावे मम हृदय पवित्र॥2003॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

44. मायादिक त्रय शल्य मिटाय, महाव्रती नि:शल्य जिनाय।
मिले भक्त को यह आशीष, हो जाए वह तुम-सा ईश॥2004॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

45. निखिल विश्व के जाननहार, लोकालोक विलोकन हार।
गुणवादन में बीते काल, नमन करूँ मैं नाथ त्रिकाल॥2005॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

46. तमहर जिनवर मणिमय दीप, गाऊँ प्रभु नाम का गीत।
तेल बत्ती बिन दीप अपूर्व, महिमावन्त आप हो सूर्य॥2006॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

47. त्रय सन्ताप मिटाकर आप, हो कृतकृत्य परम जिनराज।
भक्त हृदय में जागी आश, शुद्धातम प्रकटाओ नाथ॥2007॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

48. विपुलमति ज्ञानी नत शीश, गणधर गुणधर के प्रभु ईश।
नाथ आप हो कीर्तिमान, पहुँच गए हो मुक्तीथान॥2008॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

49. बुद्धि सफल हुई मम आज, तव भक्ति करके जिनराज।
जन्म अन्ध ज्यों पाये नैन, जिनभक्ति कर मिलता चैन॥2009॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

50. सुधाः पान करने को भक्त, द्वार खड़ा लेकर उर पात्र।
नाथ आप हो परम उदार, वचनसुधा दे दो हितकार॥2010॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

51. पलक पावड़े भक्त बिछाय, करे प्रतीक्षा आप जिनाय।
हृदय वेदिका सूनी नाथ, प्रभो पधारो जोड़ूँ हाथ॥2011॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

52. गिरि से गिरती ज्यों जलधार, जिनमुख गिरि से अमृत धार।
गणधर गूँथे द्वादश अंग, आदिप्रभु का पाऊँ संग॥2012॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

53. विकल्प का हो जाता अन्त, दृढ़ संकल्पित होवे चित्त।
प्रभु सन्निधि से निधि मिल जाय, ज्यों निर्धन अति धन को पाय॥2013॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कल्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

54. पराग वश भँवरा गुँजाए, भक्त आपका ही गुण गाए।
ज्यों सुत माँ की पाकर गोद, मन में होए उमंग प्रमोद॥2014॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

55. यथाजात जिनभेष धराय, निर्विकार जिन दिगम्बराय।
विराटता का दर्शन पाय, तव चरणों में अर्घ्य चढ़ाय॥2015॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

56. विश्रान्ति शाश्वत जिन पाय, कर्मों की दीवार गिराय।
मैं भी आऊँ आपके पास, भक्त करे प्रभु से अरदास॥2016॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

पूर्णार्घ्य

जब विहार करते जिनराय, सुरगण स्वर्णिम कमल रचाय।
हृदय कमल से पूजूँ नाथ, अर्घ्य चढ़ाकर नाऊँ माथ॥

ॐ ह्रीं पादन्यासे पद्मश्रीयुक्ताय क्लीं-महाबीजक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 37

अद्वितीय विभूति

इत्थं यथा तव विभूति - रभूज्जिनेन्द्र!
धर्मोपदेशन - विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि॥37॥

विष्णुपद छन्द

प्रभुवर के धर्मोपदेश में जो वैभव होता।
समवसरण-सा विभव अन्य देवों में ना होता॥
जैसी प्रखर प्रभा सूरज में तम को हरती है।
झिलमिल करते अन्य ग्रहों में कभी न होती है॥
बाह्याभ्यन्तर अनुपम वैभव प्रभु ने प्राप्त किया।
भव भयहारक प्रभु चरणों में मैंने वास किया॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥37॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं।

सर्वौषधर्द्धिसंपन्नान्, निःशेषामयनाशिनः।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 37॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वौषधर्द्धिप्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

विष्णुपद छन्द

1. इत्यादिक कह कुछ नामों की महिमा गाता हूँ।
हूँ अल्पज्ञ भक्त भावों से शीश नवाता हूँ॥2017॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'इत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

2. स्वस्थं पूर्ण जिनं मैं वन्दूँ भव के रोग नशें।
पूर्ण निरोगी नाथ चित्त में मेरे नित्य बसे॥2018॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

3. यथार्थ तत्त्वों का वर्णन कर सद् उपदेश दिया।
बारह सभा भरी भक्तों से सबने नमन किया॥2019॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

4. थाल सजाकर दिव्य द्रव्य से सुरगण आते हैं।
उमंग से वे नाच गान कर पूज रचाते हैं॥2020॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'था' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

5. तथ्यभूत हैं वचन तिहारे सुनकर ज्ञान मिले।
वाणी सुनकर भविजन सिद्धालय की ओर चले॥2021॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

6. वरिष्ठ हो जिनराज विश्व में अजब निराली शान।
भक्ति करके भक्त अनेकों हुए स्वयं भगवान॥2022॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

7. विशद मति सु-स्पष्ट ज्ञान के धारी नाथ प्रणाम।
जग में रहकर तड़प रहा मैं बुलवा लो निज धाम॥2023॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

8. **भूल हुई क्या मुझसे भगवन् चले गए लोकाग्र।**
कौन दिखाए शिवपथ हमको हे दीनों के नाथ॥2024॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

9. **तिमिरान्तक है नाम तुम्हारा करिए मोह विनाश।**
विद्या गुरु ही कर सकते हैं मेरा आत्म विकास॥2025॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

10. **रहस्यमय है नाथ आपका परम विदेही रूप।**
जान न पाते हम अज्ञानी रंक आप हो भूप॥2026॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

11. **भूज्वाला जल वायु वनस्पति त्रस काया धारी।**
कहीं मिला ना सुख अब आया शर्ण प्रभु तेरी॥2027॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भूज्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

12. **जिनका सुमिरन मात्र कई जन्मों के दुख नाशे।**
ऐसे प्रभु के दर्शन करके आत्म-ज्ञान भासे॥2028॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

13. **रसनेन्द्रिय के वशीभूत हो दुःख बहुत पाए।**
परम अतीन्द्रिय सुख-रस पीने चरण शरण आए॥2029॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नेन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

14. **द्रवित हुए जो अन्य जीव को दुखी देख करके।**
वही दयालु शाश्वत बसते जाकर शिवपुर में॥2030॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

15. **धर्मी ही मुक्ती पाने का कर सकता पुरुषार्थ।**
सांसारिक सब कष्ट मिटाकर पाता सुख परमार्थ॥2031॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

16. मोक्ष प्राप्त करना दुर्लभ है चर्चा सुलभ रही।
वाचन करना बहुत सुलभ है पाचन सुलभ नहीं॥2032॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

17. परिचय बढ़ा बढ़ाकर पर से दुख ही पाया है।
स्वातम परिचय पाकर प्रभु ने सौख्य उपाया है॥2033॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

18. देव देवियाँ ऊर्ध्व लोक से मध्यलोक आए।
वीतराग छवि का आकर्षण सबके मन भाए॥2034॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

19. शब्द नहीं हैं गुण गाने को मति थकी मेरी।
मात्र आपके गुण चिन्तन से मिटती भव फेरी॥2035॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

20. नयन ढूँढ़ते यहाँ वहाँ पर आप नहीं दिखते।
जिनने देखा नाथ आपको वे शिवपुर बसते॥2036॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

21. विरह वेदना में अज्ञानी फूट-फूट रोता।
प्रभु विरह में भक्त आपका अघ मल को धोता॥2037॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

22. धौत[1] विशुद्ध शुक्ल लेश्या के धारी अरिहन्ता।
सर्व अशुभ लेश्या क्षय कर मैं होऊँ भगवन्ता॥2038॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

23. नष्ट हुए सारे बन्धन निर्बन्ध हुए स्वामी।
आदिनाथ जिनदेव हमारे वन्दूँ अभिरामी॥2039॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

1. सफेद

24. तर्क रहित मैं जिनवर की आज्ञा सदैव मानूँ।
लक्ष्य यही है स्वातम औ परमातम पहचानूँ॥2040॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

25. वृथा गँवाया समय प्रभु मैंने विकथाओं में।
आत्मकथा ना जानी भक्त पड़ा विपदाओं में॥2041॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'था' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

26. पग-पग पर यह छलिया मोह मुझे भरमाता है।
बार-बार धोखा खा आतम फिर फँस जाता है॥2042॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

27. रसना इन्द्रिय का आकर्षण कुछ ही पल का है।
प्रभु छवि का आकर्षण शाश्वत सौख्य दिलाता है॥2043॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

28. स्याद्वाद शैली से प्रभु ने सबको समझाया।
सम्यग्दृष्टि समझ गए मुक्तीपथ अपनाया॥2044॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

29. याद रहे पल-पल प्रभु की बस ऐसी मति होवे।
कभी लौटकर पड़े न आना ऐसी गति पावे॥2045॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

30. विश्वदृक् आदीश्वर भगवन् विश्व देख लेते।
अचरज है नासा दृष्टि रखकर कैसे देखे॥2046॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दृक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

31. प्रसन्नता का पार नहीं प्रभु गुण चिन्तन करके।
अथाह शान्ति अनुभवता हूँ तीनों योगों से॥2047॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

32. भाषा नहीं अनूठी मेरे पास शब्द कम हैं।
है विश्वास प्रभु भक्तों की भक्ति के वश हैं॥2048॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

33. दिग्भ्रमितों को दिशा बोध दे पास बुलाते हैं।
ऐसे दयासिन्धु जग में हम और न पाते हैं॥2049॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

34. नव निर्माण करें उनका जो स्खलित हुए प्राणी।
सोए भाग्य सँवारे प्रभु ने अद्भुत हैं दानी॥2050॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

35. कृत्रिम और अकृत्रिम चैत्यालय में जो प्रतिमा।
उन सबको मैं अर्घ्य चढ़ाकर गाऊँ प्रभु महिमा॥2051॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

36. प्रमादतः अब तक जो मैंने किए नाथ दुष्कर्म।
आप कृपा से कभी न छूटे वीतराग जिनधर्म॥2052॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

37. प्रणाम करते ही प्रभु को मन आनन्दित होता।
खलता मुझको प्रभु को पा क्यों पाप बीज बोता॥2953॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

38. हरदम मन तैयार रहे बस पाप कमाने को।
प्रभु सन्निधि पा मन करता अब पुण्य बढ़ाने को॥2054॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

39. सतां सज्जनों के दुखहारक भव भंजन जिनदेव।
विघ्न विनाशक प्रभु को वन्दूँ चरणों में सिर टेक॥2055॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

40. धर्मात्मा का ओढ़ मुखौटा अधर्म ना करना।
जिनवर कहते अन्तर बाहर इक समान रहना॥2056॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

41. **कार्य करूँ अब ऐसा पावन बन जाऊँ भगवान।**
नाथ आप ही पथ दिखलाना मांगूँ यह वरदान॥2057॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

42. **राजाओं के महाराज प्रभो पाया शिव साम्राज्य।**
नाथ आपका यश सुन आया अर्घ्य चढ़ाने आज॥2058॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

43. **ताप मिटाने वाले जिनवर सदा शान्त रहते।**
रहकर मौन भव्य जीवों को शिवपथ दर्शाते॥2059॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

44. **मादृक् मुझ जैसा अज्ञानी तव भक्ति चाहे।**
नाथ आप ही बतला दो जिनभक्ति की राहें॥2060॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दृक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

45. **कुशल कार्य में करे अनादर यही प्रमाद रहा।**
भव-वर्द्धक कार्यों में अब तक जीवन व्यर्थ गया॥2061॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

46. **तोड़ो जग के झूठे रिश्ते शिवपथ पर चल दो।**
पुकारती माँ जिनवाणी हे वत्स इधर आओ॥2062॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

47. **ग्रहण लगा मम ज्ञान सूर्य पर मेरे हाथों से।**
पछताता हूँ नाथ आज अपने ही कृत्यों से॥2063॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

48. **हवा बह रही मन्द-मन्द मानो ऐसा लगता।**
वृषभनाथ प्रभु हृदय धरा पर आए मन कहता॥2064॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

49. **गति आगति से मुक्त हुए थिर निवास शिवपुर में।**
आदीश्वर को अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँ कर में॥2065॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

50. 'णरस्स सारं णाणं' है प्रवचन में कहते हैं।
ज्ञानधार बस बहे स्वयं में यही चाहते हैं॥2066॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

51. अस्य कस्य[1] करते-करते कई जन्म बिताए हैं।
पैर थके हैं मेरे अब प्रभु दर पे आए हैं॥2067॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

52. विकार भावों के कारण ही दुःख उठाता हूँ।
जान बूझ कर क्यों मैं भगवन् पाप कमाता हूँ॥2068॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

53. कालजयी जिनराज आपने जीत लिया है काल।
हार गया बेचारा तुमसे झुका रहा है भाल[2]॥2069॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

54. सिद्धेश्वर ना दिखते फिर भी भक्ति करते हैं।
सिद्ध नाम जपने से बिगड़े काम संवरते हैं॥2070॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

55. नोकषाय भी चउ कषाय की अनुचरी रहती।
कषाय का इक अंश न अच्छा जिनवाणी कहती॥2071॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

56. कदाऽपि भूलूँ नहीं आपको ऐसा कर देना।
तुमसे तुमको ही मांगूँ यह शुभ वर दे देना॥2072॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऽपि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

पूर्णार्घ्य

प्रभु धर्मोपदेश में वैभव नहीं अन्य में हो।
अर्घ्य चढ़ाऊँ रवि सम प्रभु को वन्दन पद में हो॥

ॐ ह्रीं धर्मोपदेशसमये समवसरणादिलक्ष्मीविभूतिविराजमानाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

1. इसका-किसका
2. सिर

श्लोक नं॰ 38

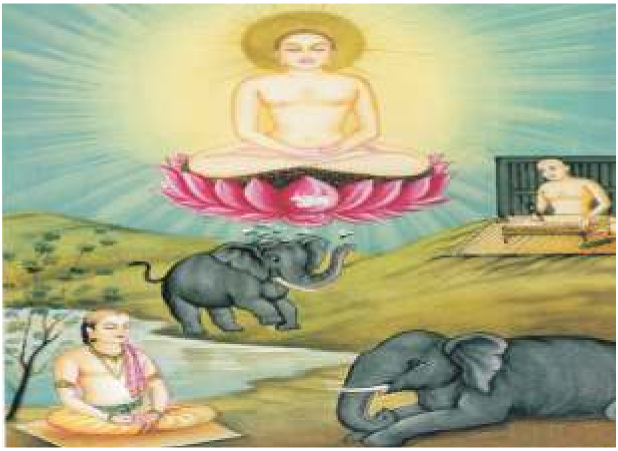

हस्ति भय निवारक भक्ति

श्च्योतन्मदाविल - विलोल - कपोलमूल-
मत्तभ्रमद् - भ्रमरनाद - विवृद्धकोपम्।
ऐरावताभमिभ - मुद्धत - मापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्॥38॥

विष्णुपद छन्द

गज के गण्डस्थल से झरती अविरल मद जलधार।
उस पर मत्त भ्रमर मँडराते करते हैं गुँजार॥
क्रोधित गज वह ऐरावत-सा सम्मुख आ जाता।
तव आश्रित वह भक्त कभी भयभीत नहीं होता॥
मान रूप गज से निर्भय हो हनन किया मद का।
आदिप्रभु ने पद पाया है शिवरमणी वर का॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥38॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं।

मनोबलर्द्धि सम्प्राप्तान्, हृदि सर्वाङ्गचिन्तकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 38॥

ॐ ह्रीं अर्हं मनोबलिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

दोहा

1. श्च्योतन् झरता ज्ञान जल, प्रभु मुख गिरि से शुद्ध।
हृदयांजुलि भर-भर पिऊँ, होवे भाव विशुद्ध॥2073॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्च्यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

2. तन्मय होकर पूजते, लेकर आठों द्रव्य।
इक या दो भव में वही, मुक्ती पाते भव्य॥2074॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

3. ममता हारी आपसे, देख विरागी रूप।
रागादिक का नाशकर, पाया शुद्ध स्वरूप॥2075॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

4. दाता उत्तम आप हैं, देय ज्ञान का दान।
सब देवों के देव हैं, जैन-धर्म की शान॥2076॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

5. विशिष्ट ख्याति प्राप्त जिन, गाते वेद पुराण।
मुक्त कराते भव्य को, भक्त जनों के प्राण॥2077॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

6. लक्ष्यभूत शुद्धात्म का, अनुभव करते आप।
भव-तारण आदीश जिन, शिवपुर के सम्राट्॥2078॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

7. विशिष्ट जिन की अर्चना, शिवपथ सुलभ कराय।
नाथ आपकी भक्ति बिन, और न सौख्य उपाय॥2079॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

8. लोप हुआ इस काल में, भरतक्षेत्र से मोक्ष।
सप्तम गुण[1] तक जा सके, कहते जिन निर्दोष॥2080॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

9. लघु बालक कुछ बोध ना, अब तक की जो भूल।
शिवपथ दर्शा दो मुझे, पा जाऊँ भव कूल॥2081॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

10. कथा सुनी 'पर' की बहुत, सुना न स्वात्म पुराण।
रुचि जगे निज आत्म की, करूँ शीघ्र कल्याण॥2082॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

11. पोषण करके देह का, मिला न कोई लाभ।
भाव सहित अर्चा करूँ, पाना है सर्वार्थ॥2083॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

12. लब्धि पाँचों प्राप्त कर, होवे समकित ज्ञान।
पूर्णज्ञान को प्रकट कर, पाना है निर्वाण॥2084॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

13. मूल भूल मेरी रही, भोगों में सुख मान।
ज्ञात हुआ प्रभु से मुझे, अब तक था अनजान॥2085॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

14. लगाव पर का दुःख दे, स्वात्म दृष्टि सुखकार।
स्व-सम्मुख दृष्टि रहे, यही चाह जिनराज॥2086॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

15. महिमा प्रभु की नन्त है, अज्ञ न पावे पार।
महिमाशाली आदि जिन, नमन अनन्तों बार॥2087॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

1. गुणस्थान

16. चित्त नित्य चंचल रहा, थिर करिए जिननाथ।
शिवपद की वाञ्छा मुझे, मैं हूँ बाल अनाथ॥2088॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

17. भ्रम का जाल भयावह, कैसे तोड़ा जाए।
भ्रम टूटे बिन ब्रह्म का, दर्श कभी ना पाए॥2089॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

18. श्रीमद् आदिनाथ जी, त्रिभुवन मङ्गलकार।
प्रभु के ज्ञान प्रकाश में, झलक रही शिवनार॥2090॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

19. भ्रष्टाचारी जीव को, धर्म कथा न सुहाय।
धर्म श्रवण बिन भव्य को, कहीं न मन रम पाय॥2091॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

20. मरण सुनिश्चित जीव का, जब तक है संसार।
जन्म-मरण होवे नहीं, पाता जब शिव द्वार॥2092॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

21. रग-रग में प्रभु भक्ति हो, मन में प्रभु का ध्यान।
वचनों में प्रभु जाप हो, निश्चित हो निर्वाण॥ 2093॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

22. नारा मात्र लगा लिया, नहीं किनारा पाय।
भवदधि तट पाना यदि, सच्चारित्र उपाय॥2094॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

23. दर्द स्वयं को दे रहा, पर को देता दोष।
श्री जिनवर कहते यही, स्वयं सँभालो होश॥2095॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

24. विचित्र यह संसार है, निज से है अनजान।
पर को अपना मानता, यही महा अज्ञान॥2096॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

25. वृद्ध अर्द्धमृत सम कहा, देह शिथिल हो जाय।
गुरु कहें कर लो अभी, झट-पट मोक्ष उपाय॥2097॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

26. सिद्ध दशा पाना मुझे, तजूँ प्रसिद्धि भाव।
गुप्त साधना ही कही, भव तिरने की नाव॥2098॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

27. कोमल भाव सदा रहे, कटते कर्म कठोर।
करूँ प्रतीक्षा शीघ्र हो, जीवन की शुभ भोर॥2099॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'को' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

28. पंक सना पग धुल सके, पाप पंक युत आत्म।
भक्ति नीर से ही धुले, कहते हैं परमात्म॥2100॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

29. ऐक्य नहीं परद्रव्य से, भिन्न-भिन्न सब द्रव्य।
जो आतम चिन्तन करे, परमातम हो भव्य॥2101॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऐ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

30. राग आग सम जानकर, हुए विशुद्ध जिनाय।
घाति कर्म जेता प्रभो, वन्दन शिवसुख दाय॥2102॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

31. वसनाभूषण तज दिए, लख नीलांजन नृत्य।
शुक्लध्यान में मग्न हो, प्रभु हुए कृतकृत्य॥2103॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

32. तामस भाव मिटा रहे, तजे राजसिक भाव।
सात्त्विक रखते भावना, पाते सिद्ध स्वभाव॥2104॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

33. भद्र भाव से मुक्त हो, अभद्रता को छोड़।
सहज सरल हो भावना, निश्चित पावे मोक्ष॥2105॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

34. मिथ्याचरण नहीं करो, कहते हैं जिनराज।
रत्नत्रय का आचरण, अनुपम एक जहाज॥2106॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

35. भवतरणी प्रभु अर्चना, अतः पूजते भव्य।
श्रेष्ठ हृदय में भाव ले, उत्तम-उत्तम द्रव्य॥2107॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

36. मुकुलित नयन खुले तभी, जब हो सूर्य प्रकाश।
ज्ञान नयन मेरे खुले, जब प्रभु मम उर पास॥2108॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

37. प्रबुद्ध प्रभु का दास ही, जग से रहे उदास।
प्रभु ज्ञान की रश्मि से, निज प्रभु दिखते पास॥2109॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

38. तप से क्षयकर कर्म को, प्रभु जी हुए महान।
भक्त यही बस चाहता, बन जाए भगवान॥2110॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

39. माला कर से फेरता, मन घूमे संसार।
चंचल हो उपयोग यदि, मिले न मुक्ती द्वार॥2111॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

40. परिभाषाएँ याद की, परिणति की न सुधार।
बिन सुधरे परिणाम तो, कैसे हो उद्धार॥2112॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

41. तन्द्रालु करता नहीं, कभी मोक्ष पुरुषार्थ।
तन्द्रा तज तप साध लो, कहते आदीनाथ॥2113॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

42. पतितं पावन प्रभु करें, बरसे ज्ञान फुहार।
जिन वचनामृत श्रवण कर, आए सौख्य बहार॥ 2114॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

43. दृष्टि स्व सन्मुख करूँ, निजानुभव हो नाथ।
यही प्रभु से प्रार्थना, नमूँ-नमूँ नत माथ॥2115॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दृष्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

44. सृष्ट्वा हो शिवमार्ग के, सद्दृष्टि दो नाथ।
मात्र आपकी शरण है, मुक्ती तक दो साथ॥2116॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ट्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

45. भव-भव में अज्ञान से, पाई है अति त्रास।
दुःख क्षयङ्कर आप ही, मात्र आपकी आस॥2117॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

46. नित्यं नाथ नमाम्यहं, पूजूँ ले वसु द्रव्य।
निराबाध सुख दीजिए, जानो मम मन्तव्य॥2118॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. भटक रहा जाना नहीं, क्या मेरा गन्तव्य।
आप मिले सौभाग्य से, कर लूँ निज कर्त्तव्य॥2119॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

48. स्वप्न हुए साकार सब, पाया प्रभु सान्निध्य।
दिव्य छवि लख आपकी, आदिप्रभु आदित्य॥2120॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

49. तिमिर भाव का हरण कर, वरण करी शिवनार।
निज में दिव्य प्रकाश है, कहें वृषभ जिनराय॥2121॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

50. जिनोत्तमं आदि जिनं, प्रणमूँ बारम्बार।
सार रूप जिनधर्म ही, सारा जगत असार॥2122॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

51. भय हर्त्ता सुखकर तुम्हीं, नमें मनुज पशु देव।
पूर्ण ज्ञानघन आपकी, परमौदारिक देह॥2123॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

52. वमन विकारों का किया, धन्य प्रभो अविकार।
भटक रहा हूँ भक्त मैं, चउ गति में तन धार॥2124॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

53. दानव भी मानव बने, तव समीपता पाय।
भक्त बने भगवन् परम, लक्ष्यभूत सुखदाय॥2125॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

54. आश्रित हूँ मैं आपके, करिए कर्म विहीन।
करूँ अरज वृषभेश से, होऊँ निजगुण लीन॥2126॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

55. ताकत अपनी खो रहा, विषयों में हो चूर।
अरज करूँ मत कीजिए, निज चरणों से दूर॥2127॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

56. भक्तानां दाता सुखं, आदिनाथ तीर्थेश।
प्रीत आपसे मीत जिन, हृदय बसो पूर्णेश॥2128॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

मान रूप गज पर विजय, पा लेता है भक्त।
चरण चढ़ाऊँ अर्घ्य मैं, हूँ जिनगुण आसक्त॥

ॐ ह्रीं हस्त्यादिगर्वदुर्द्धरभयनिवारणाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं० 39

सिंह भय से मुक्त जिनेन्द्र भक्ति

भिन्नेभकुम्भ - गलदुज्ज्वल - शोणिताक्त-
मुक्ताफल - प्रकर भूषित - भूमिभागः।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचल संश्रितं ते॥39॥

विष्णुपद छन्द

जिसने गज के मस्तक फाड़े गजमुक्ता बिखरी।
गिरी धरा पर धवल मोतियाँ लहु से भीग गईं॥
ऐसा सिंह भयानक क्रोधी अति खूँखार रहा।
दहाड़कर छल्लांग मारने को तैयार रहा॥
तव पद युगल गिरि आश्रित पर हमला ना करता।
कालसिंह भी तव भक्तों का कुछ ना कर सकता॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥39॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं।

वचोबलर्द्धि-संयुक्तान्, वाचा विश्वाङ्गपाठकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 39॥

ॐ ह्रीं अर्हं वचोबलिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अडिल्ल छन्द

1. भिन्न-भिन्न जीवों के भाव विभिन्न हैं।
जन और जिन की परिणति पूरी भिन्न है॥
आदिप्रभु का नाम मन्त्र जपता रहूँ।
भक्तामर का पाठ सदा करता रहूँ॥2129॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भिन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

2. नेता आप धर्म के कर्म जेता हैं।
तनिक नाथ सान्निध्य शान्ती देता है॥ आदि...॥2130॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

3. भवअटवी में मोह सिंह खूँखार है।
इससे मुझको बचना अति दुश्वार है॥ आदि...॥2131॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

4. कुंडल आदिक भूषण पहने देव-गण।
दिव्य द्रव्य लेकर करते हैं जिनपूजन॥ आदि...॥2132॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कुं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

5. भरतक्षेत्र से सिद्धप्रभु का ध्यान कर।
नमन करूँ मैं श्रद्धा से कर जोड़ कर॥ आदि...॥2133॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

6. गर्मी सर्दी के उपसर्ग सहे कई।
श्री जिनवर ने तपकर पाई शिव मही॥ आदि...॥2134॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

7. लक्ष्मी बाह्याभ्यन्तर प्रभु पद में झुकी।
समवसरण औ नन्त चतुष्टय के धनी॥ आदि...॥2135॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

8. **दुज्जय मोह अरि जीता प्रभु ध्यान से।**
मैंने नाता जोड़ लिया प्रभु आपसे॥
आदिप्रभु का नाम मन्त्र जपता रहूँ।
भक्तामर का पाठ सदा करता रहूँ॥2136॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दुज्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

9. **ज्वलन शील द्रव्यों में क्रोध महा अनल।**
दुख पाता है जीव इससे ही प्रतिपल॥ आदि...॥2137॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

10. **लता मृदु होने से झुककर उन्नत हो।**
विनयवान प्राणी ही भव से मुक्त हो॥ आदि...॥2138॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

11. **शोषक भवसागर के नाथ तारक हो।**
बीच भँवर में नैया मेरी तार दो॥ आदि...॥2139॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

12. **णिव्वाणं[1] पाया है प्रभु आदीश ने।**
अर्घ्य चढ़ाऊँ चरणों में धर शीश मैं॥ आदि..॥2140॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

13. **ताण्डव नृत्य करे सुरपति अति भाव से।**
प्रभु भक्ति कर डूबा स्वात्म स्वभाव में॥ आदि...॥2141॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

14. **भक्त आपको नन्त काल से ढूँढ़ता।**
आज मिले प्रभुवर निष्ठा से पूजता॥ आदि...॥2142॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

15. **मुकुटबद्ध राजा भी प्रभु को पूजते।**
जिन भक्ति कर निज का भाग्य सँवारते॥ आदि...॥2143॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

1.निर्माण

16. युक्तानन्त जघन्य प्रमाण अभव्य हैं।
श्रद्धा से प्रभु को पूजें वे भव्य हैं॥
आदिप्रभु का नाम मन्त्र जपता रहूँ।
भक्तामर का पाठ सदा करता रहूँ॥2144॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

17. फणीन्द्र भी तव पद में शीश नवा रहा।
अष्ट द्रव्य से पूजन कर गुण गा रहा॥ आदि...॥2145॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'फ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

18. लतिकाएँ झुक-झुक कर वन्दन कर रहीं।
वन्दनवार बनकर मानो शोभ रहीं॥ आदि...॥2146॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

19. प्रभात हर-पल लगता जिनवर शरण में।
शरण छोड़ प्रभु जाऊँ किसके चरण में॥ आदि...॥2147॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

20. करुणा का अवतार लेकर आए जिन।
सर्व जगत हितकार मेरे वृषभ जिन॥ आदि...॥2148॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

21. रज प्रभु-पद की एक बार छूना है।
कर्म रज को पूर्ण रूप से धोना है॥ आदि...॥2149॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

22. भूत प्रेत आ तव चरणों में शान्त हो।
क्योंकि मिटाते नाथ कर्म के ध्वान्त को॥ आदि...॥2150॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

23. ऋषि बनो या कृषि करो प्रभु ने कहा।
प्रभु ने जो कुछ कहा प्रथम निज में किया॥ आदि...॥2151॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

24. तत्त्व ज्ञान से निज के दोष दिखते हैं।
संवर और निर्जरा से फिर मिटते हैं॥
आदिप्रभु का नाम मन्त्र जपता रहूँ।
भक्तामर का पाठ सदा करता रहूँ॥2152॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

25. भूषणाङ्ग के कल्पतरु भूषण देते।
त्रिभुवन भूषण नाथ शिवसुख को देते॥ आदि...॥2153॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

26. मिथ्यात्वी जिन समोसृति जाए नहीं।
जो जाते वे समकित पाते हैं सही॥ आदि...॥2154॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

27. भाग्यहीन को प्रभु दर्श मिलता नहीं।
तव दर्शन बिन मुझे रहा जाता नहीं॥ आदि...॥2155॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

28. खगः जिनके शिवगामी पद में झुके।
विमानवासी भी तव पद में आ रुके॥ आदि...॥2156॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

29. बन्धच्छेद किया जिन मुक्ती प्राप्त कर।
नन्त काल उपरान्त कर्म सब शान्त कर॥ आदि...॥2157॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ब' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

30. शुद्ध बुद्ध अविनाशी हूँ यह चिन्तते।
भावों से मुनि मानतुङ्ग प्रभु पूजते॥ आदि...॥2158॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

31. क्रन्दन करने से कुछ भी होता नहीं।
वन्दन अर्चन से संकट रहता नहीं॥ आदि...॥2159॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

32. नमः प्रभु श्री आदिनाथ को नमन हो।
गुरुवर के संग शिष्यों का शिवगमन हो॥
आदिप्रभु का नाम मन्त्र जपता रहूँ।
भक्तामर का पाठ सदा करता रहूँ॥2160॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

33. क्रम-क्रम से मेरी भी बारी आ गई।
छह महिने में छह सौ आठ शिवराई॥ आदि...॥ 2161॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

34. मन्द कषाय करके क्षय ही करना है।
निष्कषाय होकर के मुक्ती वरना है॥ आदि...॥ 2162॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

35. गति होती मति के अनुसारि प्रभु कहें।
मति सन्मति हो तो पंचमगति में रहें॥ आदि...॥ 2163॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

36. तंत्र मन्त्र भी भाव शुद्धि बिन व्यर्थ है।
मन पवित्र है तो इनका क्या अर्थ है॥ आदि...॥ 2164॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

37. हनुमन्त ज्यों रामाज्ञा को मानते।
भक्त सदा जिनवाणी आज्ञा मानते॥ आदि...॥ 2165॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

38. रिझा रहे प्रभु शिवरमणी को ध्यान से।
बरसा दो अब कृपा नाथ शिवधाम से॥ आदि...॥ 2166॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

39. णाणी आस्रव बन्ध तत्त्व ना आदरें।
संवर निर्जर हित संयम ही आचरें॥ आदि...॥ 2167॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

40. अधिगम होता दिव्यध्वनि के श्रवण से।
जिनदर्शन से समकित चारित श्रमण से॥ आदि...॥ 2168॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

41. पोषक हो प्रभु भव्य भक्त के आप ही।
करते दूर जिनेश्वर भव सन्ताप ही॥
आदिप्रभु का नाम मन्त्र जपता रहूँ।
भक्तामर का पाठ सदा करता रहूँ॥2169॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

42. जडाशयोऽपि होकर मैं भक्ति करूँ।
लक्ष्य यही मम हे जिनवर मुक्ती वरूँ॥ आदि...॥ 2170॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ऽपि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

43. नाहं जानूँ निज औ जिनवर आपको।
जानन देखन हो अब मात्र निजात्म को॥ आदि...॥ 2171॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

44. आक्रामक अब तक माना था कर्म को।
प्रभु-कृपा से माना दोषी स्वयं को॥ आदि...॥ 2172॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

45. मनोयोग से धर्म्यध्यान करता रहूँ।
भक्तामर का शुभ विधान रचता रहूँ॥ आदि...॥ 2173॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

46. तिरस्कार मैं स्वयं आत्म का कर रहा।
विभाव परिणति में फँसकर दुख पा रहा॥ आदि...॥ 2174॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

47. धर्मचक्र में सहस्र आरे चमकते।
यक्ष प्रभु के आगे-आगे ले चलते॥ आदि...॥ 2175॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

48. मति आदिक चउ ज्ञान उपाधि युक्त हैं।
केवलज्ञान विशुद्ध उपाधि मुक्त है॥ आदि...॥ 2176॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

49. युक्ति युक्त इन जिनवचनों को जो सुने।
चउ गति तज वे पंचमगति को ही चुने॥ आदि...॥ 2177॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

50. **गायक बनकर जग को बहुत रिझा लिया।**
निज आतम कल्याण नहीं मैंने किया॥
आदिप्रभु का नाम मन्त्र जपता रहूँ।
भक्तामर का पाठ सदा करता रहूँ॥2178॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

51. **चपल इन्द्रियाँ मन को वश ना कर सका।**
देख छवि प्रभु के वश हो दर पर रुका॥ आदि...॥ 2179॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

52. **लहर ज्ञान सिन्धु की इक पाऊँ प्रभो।**
अरज यही शिव शुद्ध नगर आऊँ प्रभो॥ आदि...॥ 2180॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

53. **संवेदन कब हो मुझको शुद्धात्म का।**
पूजन करके चाहूँ पद शिवधाम का॥ आदि...॥ 2181॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

54. **आश्रित जो रहते प्रभु के वे सिद्ध हों।**
यश फैले चउ ओर जगत प्रसिद्ध हों॥ आदि...॥ 2182॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

55. **तंतु चारण आदि ऋद्धियाँ प्राप्त कर।**
ऋद्धि सिद्धि दातार हुए प्रभु क्षेमकर॥ आदि...॥ 2183॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

56. **तेजोमय हो गया भक्त छवि देखकर।**
आनन्दित हूँ आज प्रभु मैं पूजकर॥ आदि...॥ 2184॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

पूर्णार्घ्य

तव पद गिरि आश्रय जो भक्त लेता है।
कालसिंह उसका कुछ ना कर पाता है॥
आदिप्रभु का नाम मन्त्र जपता रहूँ।
भक्तामर का पाठ सदा करता रहूँ॥

ॐ ह्रीं युगादिदेवनामप्रसादात् केशरिभयविनाशकाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 40

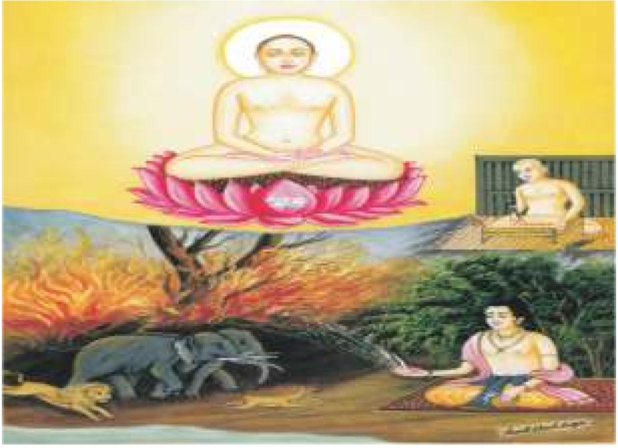

नाम स्मरण से दावानल शमन

कल्पान्तकाल - पवनोद्धत - वह्निकल्पं
दावानलं ज्वलित - मुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुख मापतन्तं
त्वन्नाम-कीर्तन - जलं शमयत्यशेषम्॥40॥

विष्णुपद छन्द

प्रलयंकारी तेज पवन से अग्नि धधक रही।
ऊपर उठती लपटें मानो जग को निगल रहीं॥
सम्मुख आती हुई वनाग्नि पल में बुझती है।
जब भक्तों की जिह्वा प्रभु के नाम को रटती है॥
प्रभु का यशोगान जल ही भव अग्नि शान्त करे।
अग्निशामक नाम आपका मम मन वास करे॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥40॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं।

कायबलर्द्धिसंसक्तान्, वर्ष्यव्युत्सर्गधारिण:।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 40॥

ॐ ह्रीं अर्हं कायबलिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

सखी छन्द

1. बहु कल्पकाल बीते हैं, दुख अभी नहीं रीते हैं।
मैं दुख में गोता खाऊँ, कब इससे मुक्ती पाऊँ॥ 2185॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कल्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

2. मैं पान्तु-पान्तु[1] चिल्लाता, नहीं कोई रक्षा करता।
जग में अति स्वार्थ भरा है, प्रभु तेरा द्वार खरा है॥ 2186॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

3. तज दिए प्रियजन सारे, प्रभु निर्ममत्व गुण धारे।
पर से सम्बन्ध हटाया, शिव शुद्ध दशा को पाया॥ 2187॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

4. कालान्तर की ना सोचो, अब वर्तमान को देखो।
जिनवाणी कहती प्यारे, क्यों ना निज आत्म संवारे॥ 2188॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

5. लज्जा क्यों तुम्हें न आती, माँ जिनवाणी समझाती।
परगृह में भटके चेतन, खोता है अपना निज धन॥ 2189॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

6. पलकासन आज बिछाऊँ, जिनवर को वहाँ बिठाऊँ।
फिर ज्ञान-चक्षु को खोलूँ,प्रभुवर की जय-जय बोलूँ॥ 2190॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

7. वन्दों जिनवर आदीश्वर, पहुँचे कैलास गिरि पर।
अब निकट बुला लो स्वामी, बनना मुझको शिवगामी॥ 2191॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

1.रक्षा कीजिए

8. **नो-इन्द्रिय इन्द्रिय मुक्तं, आदीश्वर सुखगुण युक्तं।**
पूज्यों से पूज्य हुए हो, अर्हत् से सिद्ध हुए हो॥2192॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

9. **शुद्धातम में ही रमते, अरहन्त प्रभु भी नमते।**
हे नित्य निरंजन स्वामी, आदीश प्रभु गुणनामी॥2193॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

10 **तकदीर संवारूँ अपनी, ना करूँ प्रतीक्षा पर की।**
सब स्वयं-स्वयं के कर्त्ता, जो कर्त्ता वो ही भर्त्ता॥2194॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

11 **वच गुप्ति धरी मुनिराई, उपसर्ग घड़ी जब आई।**
मुनि मानतुङ्ग ना बोले, क्रोधित नृप डाले ताले॥2195॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

12 **वह्नि जलाए प्रभु तप की, सब जला दिए हैं अघ ही।**
हो गए स्वर्ण सम पावन, कर जोड़ करूँ मैं वन्दन॥2196॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह्नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

13 **कल्पद्रुम जैसे भगवन्, कल्पित मिल जाए तत्क्षण।**
श्रद्धा से जो भी पूजे, हों मनवाञ्छित सब पूरे॥2197॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कल्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

14 **पंडित-पंडित सु-मरण हो, जिन नाम मात्र सुमिरन हो।**
उपयोग शान्त हो मेरा, हो सिद्धधाम में डेरा॥2198॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

15 **दानी हो परम जिनेश्वर, हे स्वात्म ज्ञान परमेश्वर।**
जग में ना कोई ऐसा, दाता आदीश्वर जैसा॥2199॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

16 **वाचन से मात्र हुआ क्या, आचरण भक्त को भाया।**
इसलिए शरण में आया, शुभ अर्घ्य चढ़ाने लाया॥2200॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

17 **नरकों में दुख ही दुख था, मुश्किल से मनुज हुआ था।**
बहु काल व्यर्थ में खोया, दुर्लभ अब प्रभु दर पाया॥2201॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

18 **लंकेश गुरु बिन भटका, नरकों में जाकर अटका।**
गुरु-महिमा कही ना जाए, गुरु प्रभु महिमा बतलाए॥2202॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

19 **उज्ज्वल भविष्य हो सबका, यह भाव भक्त के मन का।**
पहले निजात्म पहचानूँ, फिर निज सम सबको मानूँ॥2203॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

20 **लिप्सा से कुछ ना पाया, जो था वह पास गँवाया।**
पर से कुछ भी ना पाया, भ्रम में ही समय गँवाया॥2204॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

21 **तद्भव मुक्ति के गामी, आदीश प्रभु अभिरामी।**
प्रभु पास आपके आऊँ, निज को भी मैं पा जाऊँ॥2205॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

22 **मा मुज्झह[1] मुनिवर कहते, मत मोह करो समझाते।**
है मोह महा दुखदायी, गुरु की वाणी सुखदायी॥2206॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मुज्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

23 **ज्वर में सब कड़वा लगता, ना मद में धर्म सुहाता।**
हो धर्म प्राण सम प्यारा, पाऊँ आशीष तुम्हारा॥2207॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

1.मोह मत करो

24 हो लक्ष्य कभी ना ओझल, चाहे कितना मन बोझिल।
चलता ही चलता जाऊँ, नहीं पथ में धोखा पाऊँ॥ 2208॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

25 जिनमुत्तम पद के धारी, शाश्वत पद के अधिकारी।
मुक्ती का पथ मिल जाए, इच्छा पूरी हो जाए॥ 2209॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मुत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

26 स्फुर्ति भव्यों को आती, जब प्रभु की छवि दिख जाती।
मन शान्त होए तब दिखते, जब हो विकल्प ना दिखते॥ 2210॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्फु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

27. जिनलिंगी को वन्दन है ,जन-जन का अभिनन्दन है।
रहते हैं एक अकेले, सब झूठे तजे झमेले॥ 2211॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लिं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

28. गंगा-सा निर्मल चेतन, करते शुद्धातम वेदन।
उन महासन्त को वन्दन, छूटे मम जग का बन्धन॥ 2212॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

29. विपरीत विनय एकान्ती, संशय अज्ञान मिथ्यात्वी।
पाँचों मिथ्यातम छोड़े, प्रभु से भवि नाता जोड़े॥ 2213॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

30. विश्वं अखिलं जाने हैं, सर्वज्ञ उन्हें माने हैं।
अव्यय सुख प्राप्त किया है, परमागम ज्ञान दिया है॥ 2214॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्वं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

31. जिन आज्ञा को स्वीकारूँ, जिनवाणी उर में धारूँ।
मन वचन काय सम्भालूँ, निर्दोष आचरण पालूँ॥ 2215॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

32. घत्ताणं त्रय शल्यों के, पथ दर्शक हो भव्यों के।
निःशल्य सदा हो जाऊँ, बन व्रती परम पद पाऊँ॥ 2216॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'घत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

33. सुख सब ही पाना चाहें, पर चलते दुख की राहें।
मुझे मुक्ती पथ पर चलना, शुद्धातम में ही रमना॥ 2217॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

34. मिथ्या त्रय सुख संहारक, रत्नत्रय दुःख निवारक।
प्रभु अन्तरङ्ग रिपु जीते, सारे विकार से रीते॥ 2218॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

35. वसतिका प्रभु की प्यारी, रहें नन्त सिद्ध सुखकारी।
देहादिक मुक्त हुए हैं, गुण अनन्त युक्त हुए हैं॥ 2219॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

36. सम्मान प्रभु का करते, वे उत्तम गति को पाते।
लोकाग्र सुशोभित होते, सब कर्म मलों को धोते॥ 2220॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

37. मुक्ती का लक्ष्य बनाकर, सिद्धीरमणी को पाकर।
हो गए मुक्ती वरराया, मैं उन्हें पूजने आया॥ 2221॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

38. खतरे ही खतरे जग में, कर्मों के पहरे मग में।
शिवपथ में रुक-रुक जाता, संबल दो हे जिननाथा॥ 2222॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

39. हे माननीय वृषभेश्वर, मैं नमूँ चरण में सिर धर।
आशीष मिले अब स्वामी, बन जाऊँ केवलज्ञानी॥ 2223॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

40. पथ में उपसर्ग घनेरे, पग थके जिनेश्वर मेरे।
लघु पथ शिव का दिखला दो, संयम रथ पर बैठा दो॥ 2224॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

41. तन्दुल अखण्ड ले आऊँ, चरणों में पुंज चढ़ाऊँ।
अक्षय अनुपम पद पाना, प्रभु मेरे हृदय समाना॥ 2225॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

42. अमितं अतुलं जिनरायी, प्रभु नाम महा अतिशायी।
श्रद्धा से भक्त पुकारे, पहुँचे भवसिन्धु किनारे॥ 2226॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

43. त्वन्द्वैलोकस्य[1] विलोकी, जयवन्तों नाथ त्रिलोकी।
वन्दन श्री आदि जिनेशा, मम नाश करो भव क्लेशा॥ 2227॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

44. प्रभु नाग्न्य परीषह सहकर, धारण कर भेष दिगम्बर।
हो गए मोक्ष अधिवासी, मैं भी उसका प्रत्याशी॥ 2228॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

45. मन्तव्य आप ही जानो, मम आतम को पहचानो।
भवसागर नाथ सुखा दो, शिव-सदन आप पहुँचा दो॥ 2229॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

46. कीर्तन जो करे तुम्हारा, वो पावे स्वयं सहारा।
भवि अतिशय पुण्य बढ़ाता, हो 'पुण्ण फला अरहंता'॥ 2230॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कीर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

47. तन मन से पूजन करते, छवि लख प्रभु की सुर नमते।
करते जीवन न्यौछावर, जय हो जय हो आदीश्वर॥ 2231॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

48. नगरी साकेत[2] सजायी, प्रभु जन्म लिया अतिशायी।
सुर जन्म कल्याण मनाए, उत्तराषाढ़ उडु[3] आए॥ 2232॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

49. जन्मत दश अतिशय होते, सुरकृत चौदह फिर होते।
दश पूर्णज्ञान के पाए, चौंतिस अतिशय कुल गाए॥ 2233॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

1. इह परलोक दृष्टा 2. अयोध्या 3. नक्षत्र

50. लंघन से कर्म न कटते, यदि भेदज्ञान ना धरते।
बिन भाव फलें न क्रियाएँ, सहे जीव कई विपदाएँ॥ 2234॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

51. शक ही शत्रु आतम का, नि:शंक मीत शिवपथ का।
निर्भय चलना एकाकी, हो शान्त वरो शिवनारी॥ 2235॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

52. मनुजोत्तर गिरि के आगे, अब मनुष्य ना जा पावे।
मैं ढाई द्वीप से वन्दूँ, श्री आदिनाथ को पूजूँ॥ 2236॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

53. यत्नाचारी होते जो, निश्चय चारित पाते वो।
मैं चरण नमूँ शिवकन्ता, जय-जय वृषभेश महन्ता॥ 2237॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

54. यज्ञोपवीत जो धारे, वह श्रावक व्रत आचारे।
सद्श्रावक श्रमण बने हैं, सारे ही कर्म हने हैं॥ 2238॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

55. शेरादिक भी आ जाते, जहँ समवसरण प्रभु राजे।
त्रय गति के प्राणी आवें, श्रद्धा से पूज रचावें॥ 2239॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

56. षंडादिक वेद विनाशक, निर्वेद सु-ज्ञान प्रकाशक।
तव पूजा पावन करती, भविजन के मल को हरती॥ 2240॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

पूर्णार्घ्य

जिन नाम स्मरण जो करता, दावानल पल में बुझता।
भव रागानल बुझ जाए, प्रभु अर्घ्य चढ़ाने लाए॥

ॐ ह्रीं संसाराग्नितापनिवारणाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 41

भुजङ्ग भयहारी नाम नागदमनी

रक्तेक्षणं समद - कोकिल कण्ठ - नीलं
क्रोधोद्धतं फणिन - मुत्फण - मापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त - शङ्कस्-
त्वन्नाम - नागदमनी - हृदि यस्य पुंसः॥41॥

विष्णुपद छन्द

मद युत कोयल कण्ठ सरीखा लाल नेत्रवाला।
ऊपर फणा उठाकर क्रोधित कुटिल चाल वाला॥
डसने को तैयार भयङ्कर सर्प महा विकराल।
आगे बढ़ते अहि को लाँघे निर्भय वह तत्काल॥
जिसके मन में वृषभ नाम की औषध रहती है।
नागदमन यह औषध विषयों का विष हरती है॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥41॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं।

क्षीरस्वादूनृषीन् वाचा, तर्पकान् क्षीरवन्नृणाम्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 41॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षीरस्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. **रत्नदीप से करें आरती, इन्द्र प्रभु-पद में आकर।**
कहें प्रभु से मुझको रख लो, अपने चरणन में जिनवर॥2241॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

2. **मुक्तेः मुक्ती की आशा ले, नाथ शरण में आया हूँ।**
आदिप्रभु मुझे पास बुला लो, यही निवेदन लाया हूँ॥2242॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

3. **क्षपक श्रेणी आरूढ़ हुए प्रभो, मोह कर्म को क्षीण किया।**
बिना शस्त्र ही विजय प्राप्त कर, अजेय पद को प्राप्त किया॥2243॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

4. **सिद्धाणं कहकर प्रभुवर को, नमन अनन्तों बार करूँ।**
नाथ नमन से भ्रमण मिटेगा, यही भावना हृदय धरूँ॥2244॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

5. **सराग और विराग चरित दो, नाथ आपने बतलाए।**
सम्यक्चारित नाव भव्य को, भवदधि तट पर ले जाए॥2245॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

6. **ममता समता भाव कहे दो, बन्ध मोक्ष के कारण हैं।**
ममता से भव वर्द्धन होता, समता सिद्धि कारण है॥2246॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

7. **दर्श कर सकूँ अभी यहाँ से, नयनों में ज्योति भर दो।**
कदमों में नहीं शक्ति प्रभु जी, बालक पर करुणा कर दो॥2247॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

8. कोयल कूके मधुर स्वरों में, आम्र मञ्जरी के कारण।
भक्त भक्ति से नाचे गाए, प्रभु पर श्रद्धा है कारण॥2248॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'को' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

9. किस्मत उन भक्तों की जागी, जिनने निश्छल भक्ती की।
प्रभु की समीपता से उनको, डगर मिल गई मुक्ती की॥2249॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

10. लज्जित होता वह प्राणी जो, धर्म कार्य में छल करता।
देव शास्त्र गुरु विनय न करता, नरकों के वह दुख सहता॥2250॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

11. कंठ तालु औष्ठादि न हिलते, जब प्रभु मुख से ध्वनि खिरे।
सुनकर जो प्रभु वचन हृदय में, धारे वह भवसिन्धु तिरे॥2251॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

12. ठगिनी माया का आकर्षण, तत्क्षण अच्छा लगता है।
कपटी के पट खुलते निश्चित,खुद ही खुद को छलता है॥2252॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ठ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

13. नीले आसमान में प्रभु का, स्वर्णिम तन अति दमक रहा।
कहाँ मिलेंगे ऐसे प्रभुवर, दर्शन को मन मचल रहा॥2253॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

14. आलम्बन प्रभु का जो पाए, अशरण जग को भूला है।
यदि भटका उपयोग वहाँ से, निश्चित ही वह रोया है॥2254॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. क्रोध भाव से कर्म बाँधकर, नरक गति में दुख पाए।
जिसके कारण क्रोध किया वह, नहीं भोगने को आए॥2255॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

16. **धो**खेबाज कभी ना बनना, कर्म छलेंगे तुमको ही।
कर्म किसी को नहीं छोड़ते, कहते हैं आदीश्वर जी॥2256॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

17. ब**द्ध** कर्म में घबराना मत, अब भी भाव सँभालो तुम।
होगा कर्मों में परिवर्तन, भावी काल सुधारो तुम॥2257॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

18. **तं** वृषभादिक सर्व तीर्थंकर, निःसंग प्रभु को वन्दन है।
जल फलादि वसु द्रव्य हाथ ले, करूँ भाव से पूजन मैं॥2258॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

19. **फ**ण फैलाए सर्प सामने, आ जाए तो डरे नहीं।
भक्त हृदय में नाम आपका, सर्प शान्त हो डँसे नहीं॥2259॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'फ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

20. **णि**म्मल[1] भाव लिए मैं आया, शब्द नहीं कुछ मेरे पास।
यह अनुभूति रहती मुझको, प्रभु रहें पल-पल मम पास॥2260॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

21. **न**या-नया हर पल लगता प्रभु, जब-जब भी तुमको निरखा।
बिना कहे सुन लेते स्वामी, कितना पावन यह रिश्ता॥2261॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

22. **मु**त्तामुत्त द्रव्य के ज्ञायक, आदिनाथ प्रभु को पूजूँ।
अपूर्व अवसर आया मेरा, प्रभु को बार-बार वन्दूँ॥2262॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मुत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

23. **फ**र्क नहीं कुछ पड़ता मुझको, चाहे सब जग साथ तजे।
आप साथ हैं प्रभुवर मेरे, मन पल-पल तव नाम भजे॥2263॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'फ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

1.निर्मल

24. णमोकार में पहला अक्षर, 'ण' कितना पावन लगता।
मान कषाय गलाता तत्क्षण, महा प्राण जागृत करता॥ 2264॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

25. माता सम उपकारी भगवन्, माँ तन मात्र करे उत्पन्न।
परमातम को करे प्रकट प्रभु, शत-शत प्रभु का अभिनन्दन॥2265॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

26. परम प्रभु की कृपा प्राप्त कर, आत्म तत्त्व से रुचि हुई।
स्वातम दृष्टा प्रभु को लखकर, दृष्टि मेरी शुचि हुई॥ 2266॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

27. तन्मय होकर नाथ आपकी, सविनय करता पूजन मैं।
शीश झुकाकर करूँ आपको, कोटि-कोटि प्रभु वन्दन मैं।।2267॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तं अरिहन्तं आदि जिनेशं, सविनय यही निवेदन है।
भक्त आपका हूँ स्वीकारो, जीवन सर्व समर्पण है॥2268॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

29. आराधक मैं भक्त तिहारा, परमाराध्य आप जिनराज।
पूजक हूँ मैं निशदिन भगवन्, परम पूज्य हो जिन सम्राट्॥2269॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'आ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. अतिक्रान्त कर दिया कर्म को, आत्मदेश को स्वच्छ किया।
निष्कर्मा प्रभु देख आपको, भक्तों ने गुणगान किया॥2270॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

31. मनोज्ञ छवि लख वीतराग की, हृदयानन्द उमड़ता है।
भटका राही प्रभु वच सुनकर, मुक्तीपथ पर बढ़ता है॥2271॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

32. तिमिरारि हो आदि जिनेश्वर, ज्ञान ज्योति मुझको देना।
अपना मान लिया प्रभु तुमको, जग से क्या लेना देना॥ 2272॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

33. क्रम से जाने छद्मस्थी जन, जिन युगपत् सब जान रहे।
इसीलिए श्री आदिप्रभु को, केवलज्ञानी मान रहे॥2273॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

34. महा खेद है पूर्व काल में, आप मिले पर ना पूजा।
रागी देव कई देखे पर, वीतराग सम ना दूजा॥2274॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

35. युगपत् लोकालोक जानते, किन्तु नहीं थकते स्वामी।
नन्तवीर्य गुण प्रकट हुआ है, नन्त चतुष्टय गुणधामी॥2275॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

36. गेहादिक परवस्तु तजकर, चेतन गृह में पहुँच गए।
मन्दिर माला जप विधान में, भक्त आपको ढूँढ़ रहे॥2276॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

37. णर-णारय सुर तिरिय गति में, नन्त काल से भटका हूँ।
तीव्र पुण्य संयोग हुआ अब, शरण आपकी आया हूँ॥2277॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

38. निर्निमेष जिन नयन आपके, अर्धोन्मीलित नैन रहें।
आशा ना होने से कुछ भी, नासा दृष्टि आप धरें॥2278॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

39. रसिया निजानुभव के तुम हो, नन्त काल तक रमे रहे।
मन कहता है आप चरण में ,नित्य काल हम बसे रहें॥2279॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

40. प्रशस्त भावों की परिणति ले, भक्त निकट में आया है।
नाथ आपके गुणोद्यान की, खुशबू पाने आया है॥2280॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

41. **शंभु आप कहाते स्वामी, महागुणी हो इस जग में।
महा गुणों से महादेव प्रभु, बसे भक्त गण के मन में॥2281॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

42. **कस्य[1] शरण जाऊँ मैं भगवन्, कोई नहीं सुहाता है।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, प्रभु नाम मन भाता है॥2282॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

43. **त्वन् नामांकित भक्त हृदय में, सावन सदा बरसता है।
हृदयासन पर तुम्हें बिठाने, यह लघु भक्त तरसता है॥2283॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

44. **नाभेयादिक चौबीसी जिन, शरण आपकी आऊँ मैं।
सही न जाए विरह वेदना, तुम सम ही बन जाऊँ मैं॥2284॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

45. **मगन हुए जो आप भक्ति में, उन्हें पास ले आते हो।
कितने अपने से लगते तब, भविजन हृदय समाते हो॥2285॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

46. **नाथ आपकी कृपा न हो तो, कैसे भक्ति कर पाता।
मुझ पर नजर न होती तो क्या, पास आपके आ पाता॥2286॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

47. **गर्भगृह में शुद्ध वेदि पर, आप विराजे रहते हो।
भक्तजनों के हृदय गर्भ की, भक्ति वेदि पर बसते हो॥2287॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

48. **दशा सुधारो दिशा बदलकर, यही प्रभु का कहना है।
प्रभु अनुसारि गुरु कहें जो, वह ही मुझको करना है॥2288॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

49. **मधुर स्वरों में वाद्य बजा सुर, गुण गाकर सुख पाते हैं।
मणि रत्नों के थाल सजाकर, पूजन करने आते हैं॥2289॥**
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

1.किसकी

50. नीरज सरवर में खिलते हैं, नभ से सूर्य किरण पाकर।
भक्त कमल विकसित होते प्रभु, वीतराग का दर्शन कर॥2290॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

51. हृदयेश्वर माना है तुमको, हृदय कक्ष बस शुद्ध रहे।
सदा आपके योग्य चित्त हो, यही भावना भक्त करे॥2291॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

52. दिग्गज मनुजों को प्रभु-पद में, नाद सुनाई देता है।
उस पल रहते भक्त व भगवन्, और न कोई होता है॥2292॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

53. यह वह करते बीत गए भव, अब दर्शन की प्यास जगी।
प्रभु निकटता पाकर मुझको, अर्द्ध निशा भी दिवस लगी॥2293॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

54. रहस्य नन्त काल भटकन का, नाथ आपने बतलाया।
भव-भटकन की व्यथा मिटाने,आप शरण में अब आया॥2294॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

55. पुंज चढ़ा श्रद्धा निष्ठा का, अर्घ्य समर्पण करता हूँ।
पास नहीं कुछ जिसे चढ़ाऊँ, निज को अर्पण करता हूँ॥2295॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पुं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

56. सः वह यः जो जिन चरणों में, वसु विधि द्रव्य चढ़ाता है।
क्षायिक सम्यक्त्वादिक गुण पा, आठों कर्म नशाता है॥2296॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

पूर्णार्घ्य

मद युत कृष्ण भुजङ्ग भयानक , प्रभु भक्ति से शान्त हुआ।
क्रोध सर्प को शान्त कराने, अर्घ्य चढ़ाने मैं आया॥

ॐ ह्रीं त्वन्नामनागदमनीशक्तिसम्पन्नाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 42

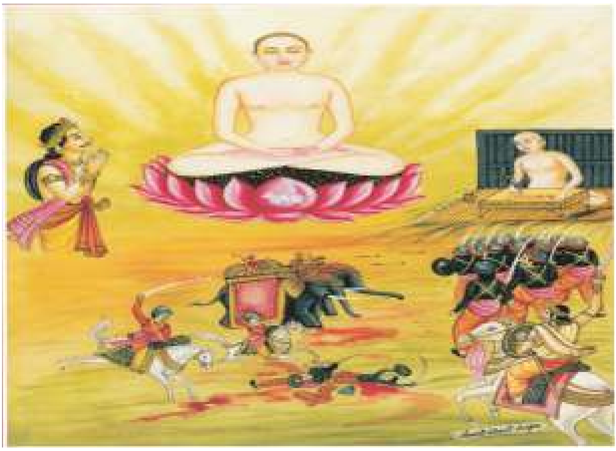

संग्राम भय विनाशक जिनकीर्तन

वल्गत्तुरङ्ग - गजगर्जित - भीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकर - मयूख - शिखापविद्ध
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति॥42॥

विष्णुपद छन्द

उछल रहे हैं घोड़े जिसमें गज गर्जन करते।
शूरवीर नृप शत्रु भयङ्कर आवाजें करते॥
सर्व सैन्य को एक आपका भक्त भगा देता।
ज्यों सूरज किरणों से तम को शीघ्र नशा देता॥
आदिप्रभु का अतिशयकारी नाम कहाता है।
कर्मशत्रु सेना के भय से मुक्ति दिलाता है॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥42॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं।

सर्पि:स्वादुमुनीन् वाण्या, घृतवत्-सौख्यदान् सताम्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्पि:स्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

घत्ता

1. **वल्लरियाँ झूमें, प्रभुपद चूमें, जब विहार प्रभु करते हैं।**
वन्दें नर-नारी, जय त्रिपुरारि, नारे भक्त लगाते हैं ॥2297॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वल्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

2. **गत्यागति नाशी, शिवपुर वासी, बाह्यान्तर लक्ष्मीयुत हैं।**
प्रभु सर्व जगत में, धनी आप हैं, वर्धमान सुख संयुत हैं॥2298॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

3. **तुलना अयोग्य हैं, ध्यान योग्य हैं,योगीजन यह कहते हैं।**
वे मौन धारकर, चित्त शान्त कर, जिनगुण चिन्तन करते हैं॥2299॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

4. **रंजायमान ना, राग-द्वेष ना, वीतरागता प्रभु धारे।**
परद्रव्य विरक्ति, निजानुभूति, स्वयं तिरे पर को तारे॥2300॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

5. **गति पंचम पाई, अति सुखदायी,शिवललना का दर्श किया।**
प्रभु महिमा सुनकर,गुण चिन्तन कर,आज हृदय में हर्ष हुआ॥2301॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

6. **गणधर भी आते, शीश नवाते, द्वादशाङ्ग वाणी गूँथे।**
प्रभु नाम उच्चारे, द्वारे-द्वारे, भव्यों के मुख से गूँजे॥2302॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

7. **जयकार लगाओ,प्रभु गुण गाओ,सुर दुन्दुभि से जगा रहे।**
कर प्रभु का सुमिरन, वन्दन पूजन, मोह नींद को भगा रहे॥2303॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

8. **गर्हा निज की हो, निन्दा तज दो, पर निन्दा से अपयश हो।**
निज दोष सुधारो, गुण को धारो, जिनवचनों का धारण हो॥ 2304॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

9. **जिन आलय जाओ, दर्शन पाओ, और जिनालय बनवाओ।**
गुरुवर कहते हैं, सच कहते हैं, गुरु की आज्ञा मत टालो॥2305॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

10. **तजकर परिवारा, घर सुत दारा, आदिप्रभु ने दीक्षा ली।**
दुख सहे अकेला, गुरु औ चेला, भव्यों ने यह शिक्षा ली॥2306॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

11. **भीगा है चेतन, प्रभु वाणी सुन, तत्त्व समझ में आया है।**
उपकार नन्त हैं, नहीं शब्द हैं, श्रद्धा से सिर नाया है॥2307॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

12. **मग[1] भटक गया हूँ, बुला रहा हूँ, नैया नाथ तिरा देना।**
हैं मगर मोह के, क्रोध लोभ के, इनसे आप बचा लेना॥2308॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

13. **नायक ना बनना, ज्ञायक रहना, गुप्त साधना करना है।**
पर की ना आशा, नहीं निराशा, एक अकेले चलना है॥2309॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

14. **दर्पण सम जीवन, नहीं खिन्न मन, प्रसन्न भी हो पर से ना।**
प्रभु वीतरागता, अन्तर समता, बहे ज्ञान का ही झरना॥2310॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

15. **मायावी दुनिया, सब ही दुखिया, निज-निज स्वारथ साध रहे।**
मैं किसे पुकारूँ, अपना मानूँ, भक्त आपको चाह रहे॥2311॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

1. मार्ग

16. **जौ**हरी जिनन्दा, शिव सुखकन्ता, रत्नत्रय बस पाना है।
कुछ और न चाहूँ, तुमको ध्याऊँ, मन में तुम्हें बसाना है॥2312॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

17. **ब**लवान तुम्हीं हो, वीर्य धनी हो, मोह शत्रु भी हार गया।
तव नाम को जपकर, मोह से बचकर, भक्तों ने सुख प्राप्त किया॥2313॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ब' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

18. **लं**कापति हारा, सत्य ने तारा, धर्मी राम प्रभु जीते।
नित सत्पथ चलना, प्रभु का कहना, सत्पन्थी दुख से रीते॥2314॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

19. **ब**हुकाल गँवाया, सुख ना पाया, पर से कुछ ना मिल सकता।
हो सौख्य स्वरूपी, गुण चिद्रूपी, स्वात्म रुचि से सुख मिलता॥ 2315॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ब' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

20. **ल**लकारो निज को, सोये क्यों हो, काल अनादि से आतम।
क्या पड़े रहोगे, या जागोगे, बनना है अब परमातम॥2316॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

21. **व**सनाभूषण सब, छोड़ दिए तब, जब प्रभु को वैराग्य हुआ।
मनपर्यय ज्ञानी, शिवसुख दानी, शुद्धातम का भान हुआ॥2317॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

22. **ता**रक भव्यों के, भक्त जनों के, सारे विघ्न विनाशक हो।
है घना अंधेरा, तुम्हें पुकारा, आतम ज्ञान प्रकाशक हो॥2318॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

23. **म**तलब के साथी, सर्व स्वारथी, अपना मान दिया धोखा।
अब समझ गया हूँ, द्वार खड़ा हूँ, मिला मुझे सुख का मौका॥2319॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

24. पिच्छी व कमण्डल,कहे उपकरण,मुनि आदिक कर में रखते।
प्रभु जैसा कहते, वैसा करते, जिनवर पर श्रद्धा करते॥2320॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

25. भूतल पर जिनवर, चउ अंगुल पर, अधर गमन करते स्वामी।
सुरगण आ जाते,कमल बिछाते, उन्हें नहीं छूते स्वामी॥2321॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

26. परिपक्व दशा हो, प्रभु पास हो, और न कोई आश धरूँ।
मन की सब जानो,सिद्धि दिला दो,यही आपसे अरज करूँ॥2322॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

27. तीर्थेश हमारे, अनगिन तारे, तव यश सुन मैं आया हूँ।
मैं हीरा मुक्ता, ला ना सकता, अर्घ्य चढ़ाने लाया हूँ॥2323॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ती' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

28. जीवानां शरणं, सब दुख हरणं, बड़े-बड़े संकट हरते।
उपकार आपका, जाए कहा ना, वचन अगोचर गुण धरते॥2324॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

29. उलझन सब नाशी, ज्ञान प्रकाशी ,कर्मगिरि को चूर किए।
जो शरणागत हैं,परम भक्त हैं,उनके विधिमल दूर किए॥2325॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'उ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

30. मैं पद्य में गाऊँ, तुम्हें रिझाऊँ, भक्त झोलियाँ फैलाएँ।
तुम ज्ञान धनी हो, जिन दानी हो, वीतरागता हम पाएँ॥2326॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

31. उद्दिष्ट आहारा, मुनि ने त्यागा, प्रभु आज्ञा अनुसार चलें।
मुनि निर्भय रहते, शिवपथ चलते, जिन आगम की छाँव तले॥2327॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

32. वात्सल्य देखकर,आया दर पर, है विश्वास उबारोगे।
प्रभु शक्तिवान हैं, दयावान हैं, भवदधि नाथ तिरा दोगे॥2328॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

33. कर में ले थाली, शरण तिहारी,आया हूँ पूजन करने।
हो पूज्य हमारे, पूजक सारे, आए हैं हम जिन बनने॥2329॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

34. रति राग मिटाकर, घाति क्षयङ्कर, पूर्णज्ञान पाया स्वामी।
जिनगुण अनुरागी, जिनानुगामी, बन जाऊँ मैं ध्रुवधामी॥2330॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

35. मणि रत्न न चाहूँ, प्रभु से मांगूँ, चाह भाव ही मिट जाए।
जड़ रत्न विनश्वर, प्रभु अविनश्वर, अविनाशी पद मिल जाए॥2331॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

36. केयूर बँधाए, देह सजाए, भाँति-भाँति के सुर आए।
अपने विमान से, ऊर्ध्व लोक से, आकर जिनपद सिर नाए॥2332॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

37. खगधर सिर नाए, पूज रचाए, मौलिक द्रव्य चढ़ाते हैं।
मुनि द्रव्य बिना ही, भाव सहित ही, पूजन कर सुख पाते हैं॥2333॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

38. शिशु तुम्हें पुकारे, जिनवर प्यारे, केवल आप सहायी हो।
जग स्वारथ मेला, भक्त अकेला, जगन्नाथ सुखदायी हो॥2334॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

39. मैं खास दास हूँ, पर उदास हूँ, मेरे हृदय प्रभु बसिए।
बिल्कुल अयोग्य हूँ,शरण योग्य हूँ,अपने योग्य मुझे करिए॥2335॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'खा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

40. परिभ्रमण मिटा दो, पास बुला लो,जहाँ आप शाश्वत रहते।
सिद्धालय प्यारा, सुखद नजारा, भक्त देखने को तरसे॥2336॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

41. विश्वास आप पर, अतः द्वार पर, आश यही लेकर आया।
जग से घबरा कर,प्रभु यश सुनकर,कष्ट मिटाने मैं आया॥2337॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

42. शुद्धं बुद्धं जिन, जपूँ रात-दिन, प्रभु नाम हो जिह्वा पर।
प्रभु सन्निधि पाकर, निज निधि लेकर, जाना है सिद्धालय पर ॥2338॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्धं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

43. त्वत् भक्ति करके, मुक्ती वर के, सारे कष्ट मिटाना है।
प्रभु को जब देखा, मन ने चाहा, अनन्त गुण प्रकटाना है॥2339॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

44. कीर्तन जो करते, कीर्ति पाते, कृपा छाँव प्रभु की पाते।
ये नयन हमारे, छवि निहारे, देख-देख प्रभु हर्षाते॥2340॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कीर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

45. तन्मय हो करके, नाम सुमर के, कितना अच्छा लगता है।
सब शक्ति लगाऊँ, जिनगुण गाऊँ, और नहीं कुछ भाता है॥2341॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

46. स्तवनात् कीर्ति हो,आत्म शान्ति हो,शिवललना को वरते हैं।
पर मन यह कहता, ऐसा लगता,आस-पास प्रभु रहते हैं॥2342॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नात्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

47. तकदीर सँवारे, जो दर आए, उन भक्तों के भाग्य खुले।
मन में हर्षाकर, प्रभु गुण गाकर, जनम-जनम के पाप धुले॥2343॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

48. मनहर मूरतियाँ, हर्षी अँखियाँ, निरख-निरख कर दिव्य छवि।
प्रभु तन तेजोमय,वर्ण स्वर्णमय,लज्जित होते कोटि रवि॥2344॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

49. इन्द्रादिक आए, शीश नवाए, प्रभु के पावन वचन सुने।
सब करें प्रार्थना, यही भावना, हम भी प्रभु सम शीघ्र बनें॥2345॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'इ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

50. **वाहन भक्ती का, लक्ष्य मुक्ती का, सवार होकर भक्त चला।**
प्रभु डगर दिखाना ,विघ्न नशाना ,हे आदीश्वर करो भला ॥2346॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

51. **शुभ योग हमारा, शरण तिहारा, आत्म शान्ति के दाता हैं।**
प्रभुवर निस्वार्थी, हम हैं स्वार्थी ,प्रभु पद झुकता माथा है ॥2347॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

52. **भिजवा दो शक्ति, मुक्ती युक्ती, मात्र आपकी आशा है।**
ना माणिक मोती, चाहूँ न ख्याति, सिद्धी की अभिलाषा है ॥2348॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

53. **दारुण दुख पाया, कष्ट उठाया, चउ गतियों में शान्ति नहीं।**
जिन द्वारे आकर, पूज रचाकर, कुछ पल मुझको शान्ति मिली॥2349॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

54. **मुख कमल तिहारा, अतिशय प्यारा, निजानुभव का कारण है।**
जग को क्या देखूँ, प्रभु अवलोकूँ, सुखकारक दुखवारण है ॥2350॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

55. **पैरों से चलकर,प्रभु मन्दिर तक, आना अच्छा लगता है।**
राजे महाराजे, पैदल आते, यह ही विनय कहाता है॥2351॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

56. **तिमिरान्तक स्वामी ,शिवपुरगामी ,तुमको पाकर सब पाया।**
आत्मीय मानकर, दुखी जानकर, प्रभु ने माँ सम सौख्य दिया॥2352॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

पूर्णार्घ्य

कर्मों की सेना, होवे भय ना, भक्ति से संबल मिलता।
प्रभु कर्म विजेता, सुधर्म नेता, अर्घ्य चढ़ाकर मैं नमता॥

ॐ ह्रीं संग्राममध्ये क्षेमङ्कराय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 43

शरणागत की युद्ध में विजय

कुन्ताग्रभिन्न - गजशोणित - वारिवाह-
वेगावतार - तरणातुर - योधभीमे।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षास्-
त्वत्पादपङ्कज - वनाश्रयिणो लभन्ते॥43॥

विष्णुपद छन्द

तीखे भालों से भेदित गज लहु से सने हुए।
रक्तधार में भी लड़ने योद्धा तैयार हुए॥
ऐसी सेना वाले रिपु को कौन जीत सकता।
विजय पताका भक्त आपका ही फहरा सकता॥
प्रभु-पद कमल रूप वन का जो आश्रय लेता है।
कर्मशत्रु को जीत जगत में विजयी होता है॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥43॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुसवीणं।

यतीन्द्रान् मधुरास्वादून्, खाण्डवत् तृप्तिदान् विदः।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं मधुस्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अडिल्ल छन्द

1. **कुन्द-कुन्द मुनिवर ने पाया ज्ञान वर।**
दयासिन्धु प्रथमेश प्रभु का ध्यान धर॥
भक्त करे अरदास अमर पद प्राप्त हो।
करुणाकर आदीश्वर मुझको दर्श दो॥2353॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कुन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

2. **तारणहार प्रभु तरणि सम आप हैं।**
इसीलिए हम करते प्रभु का जाप हैं॥ भक्त...॥2354॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

3. **अग्रज हो सब तीर्थंकरों में आप ही।**
करूँ आरती वृषभनाथ जिनराज की॥ भक्त...॥2355॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

4. **अभिलाषा है नाथ आप जैसा बनूँ।**
निजकृत सारे ही विकार को मैं हनूँ॥ भक्त...॥2356॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

5. **प्रसन्न होता भक्त आपको देखकर।**
चित्त शान्त होता है प्रभु को पूजकर॥ भक्त...॥2357॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

6. **गणनायक हो नाथ चतुर्विध संघ के।**
पथ दर्शक हो आप मोक्षपुर पन्थ के॥ भक्त...॥2358॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

7. **जन-जन का कल्याण किया है आपने।**
फिर शाश्वत निर्वाण पा लिया आपने॥ भक्त...॥2359॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

8. शोषक हो भवसागर के वृषभेश जी।
नन्त शक्ति से युक्त पराक्रम के धनी॥
भक्त करे अरदास अमर पद प्राप्त हो।
करुणाकर आदीश्वर मुझको दर्श दो॥2360॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

9. गुणिजन से वन्दित पूजित जिनराज हैं।
सर्व जीव के तारण-तरण जहाज हैं॥ भक्त...॥2361॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

10. तटस्थ होकर वस्तु स्वरूप विचारते।
अपने को अपने से प्रभुवर जानते॥ भक्त...॥2362॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

11. वाक् शक्ति से जीवों का कल्याण कर।
सार्थक नाम हुआ आपका क्षेमङ्कर॥ भक्त...॥2363॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

12. रिश्वत से मुक्ती का सुख मिलता नहीं।
अपने ही तप बल से पाता शिव मही॥ भक्त...॥2364॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

13. वारिधि अपने तल में रत्न रखता है।
ज्ञान वारिधि प्रभु में ज्ञान झलकता है॥ भक्त...॥2365॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

14. हम तुम में बस भक्त और भगवान हैं।
नाथ आप ही धड़कन मेरे प्राण हैं॥ भक्त...॥2366॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

15. वेगवान है नाथ आपकी चाल भी।
एक समय में पाया शिवपुर धाम ही॥ भक्त...॥2367॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

16. **गाथा कैसे गाऊँ शब्द न पास में।**
तुतलाती भाषी हूँ छोटा बाल मैं॥
भक्त करे अरदास अमर पद प्राप्त हो।
करुणाकर आदीश्वर मुझको दर्श दो॥2368॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

17. **वसुन्धरा प्रभु जैसा सुत पा धन्य है।**
नाथ चरण परसन[1] से माटी वन्द्य है॥ भक्त...॥2369॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

18. **तारो भवसागर से भक्त पुकारता।**
प्रभु पर है विश्वास पूर्ण इस भक्त का॥ भक्त...॥2370॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

19. **रथ भेजा है जिनशासन का आपने।**
किया नन्त उपकार जिनेश्वर आपने॥ भक्त...॥2371॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

20. **तव मम करते-करते काल बिता दिया।**
कोई हुआ न अपना सुख ही खो दिया॥ भक्त...॥2372॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

21. **रमण किया है नाथ आपने स्वात्म में।**
लौकिक जग को छोड़ चले परमार्थ में॥ भक्त...॥2373॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

22. **वीणा के तारों से सरगम बज रहा।**
प्रभो भक्त भी मन वीणा पर गा रहा॥ भक्त...॥2374॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

23. **तुल्य आपके कोई नहीं इस जगत में।**
अतुलनीय आदीश बसो मम हृदय में॥ भक्त...॥2375॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

1.स्पर्श

24. रचा मुनि ने भक्तामर अति भाव से।
मानतुङ्ग मुनि पद में झुकता भाल है॥
भक्त करे अरदास अमर पद प्राप्त हो।
करुणाकर आदीश्वर मुझको दर्श दो॥2376॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

25. योग साधना करके योगी शिव वरें।
पर आकर्षण में ही भोगी दु:ख धरे॥ भक्त...॥2377॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

26. धर्मध्वजा फहराई सारे विश्व में।
आदिप्रभु बस जाओ मेरे हृदय में॥ भक्त...॥2378॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

27. भीगे भावों से भवि ध्याये जो तुम्हें।
रोग शोक सब मिटे दु:ख वह ना सहे॥ भक्त...॥2379॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

28. मेघ बरसने की आशा चातक करे।
भक्त आपके वचन श्रवण का भाव धरे॥ भक्त...॥2380॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

29. युगल चरण को निरखे मेरे दो नयन।
पलक झुकाकर करते हैं प्रभु को नमन॥ भक्त...॥2381॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

30. सिद्धेश्वर की भक्ती मन में भा रही।
भक्तों की टोली चरणों में आ रही॥ भक्त...॥2382॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्धे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

31. जन्म जरा मृत रोगों से मैं घिर गया।
शरण आपकी पा दुख सिन्धु तिर गया॥ भक्त...॥2383॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

32. सत्यं शिवं सुन्दरम् आदिनाथ हैं।
मुझको कैसा डर जब प्रभु जी साथ हैं॥
भक्त करे अरदास अमर पद प्राप्त हो।
करुणाकर आदीश्वर मुझको दर्श दो॥2384॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

33. विज्ञप्ति से विरहित प्रवचन आपका।
फिर भी अनगिन सुनते प्रवचन नाथ का॥ भक्त...॥2385॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

34. जिनरायी ने जीता तीनों लोक को।
ऐसे आदिप्रभु को मेरी धोक हो॥ भक्त...॥2386॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

35. तत्त्व ज्ञान बिन कोई सुख पाता नहीं।
निजानुभव बिन कभी दुःख जाता नहीं॥ भक्त...॥2387॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

36. दुर्जय कर्मों को जीता प्रभु आपने।
पाप नाशने दास खड़ा है सामने॥ भक्त...॥2388॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दुर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

37. जहाँ विहरते प्रभु पावन हो वह धरा।
हृदय धरा मम हो पवित्र है भक्त खरा॥ भक्त...॥2389॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

38. यथार्थ भक्ति करना मैं जानूँ नहीं।
नाथ सिखा दो भक्ति कला मानूँ वही॥ भक्त...॥2390॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

39. जेता कर्म विजेता नेता धर्म के।
अधिकारी हो नाथ आप शिवशर्म के॥ भक्त...॥2391॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

40. यत्नाचार सहित जो संयम आचरे।
शिवाङ्गना निर्ग्रन्थ मुनि को आ वरे॥ भक्त...॥2392॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

41. पराग वश अलिदल सुमनों पर झूमते।
वीतराग गुण वश प्रभुवर को पूजते॥
भक्त करे अरदास अमर पद प्राप्त हो।
करुणाकर आदीश्वर मुझको दर्श दो॥2393॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

42. अनुप्रेक्षाः द्वादश का चिन्तन जो करें।
अनन्त गुण का स्वामी हो सुख को धरें॥ भक्त...॥2394॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

43. त्वत् समीप आकर जो करते गान हैं।
सु-स्वर पाते जग करता यशगान है॥ भक्त...॥2395॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

44. पाद पंकजों में जो भक्ति से झुके।
तव प्रसाद से शाश्वत सिद्धालय रुके॥ भक्त...॥2396॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

45. दयानन्द दाता कहे बिन देते हैं।
जग ना सुनता वही प्रभु सुन लेते हैं॥ भक्त...॥2397॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

46. पंचाचार पालक आचारज हुए।
तव पद में भक्तों के शीश झुक गए॥ भक्त...॥2398॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

47. कलियाँ सूरज की किरणों से खिल रहीं।
भविजन की मन कलियाँ जिनरवि से खिलीं॥ भक्त...॥2399॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

48. जगदीश्वर को छोड़ भक्त जाए कहाँ।
जहाँ पिता परमेश्वर सुत रहता वहाँ॥ भक्त...॥2400॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

49. वरदहस्त ना रखते भक्त के सिर पर।
फिर भी भविजन आते आपके दर पर ॥ भक्त...॥2401॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

50. नानाविध छन्दों से भक्त गाता है।
नहीं प्रसिद्धि चाह पाता साता है॥
भक्त करे अरदास अमर पद प्राप्त हो।
करुणाकर आदीश्वर मुझको दर्श दो॥2402॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।
51. श्रवण करूँ श्रद्धा से जिनवर के वचन।
प्रभु कृपा पगडंडी से शिव में गमन॥ भक्त...॥2403॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।
52. अतिशायि है श्री जिनवर की दिव्यध्वनि।
सुनकर अनगिन मोक्ष गए ऋषिगण मुनी॥ भक्त...॥2404॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।
53. 'समणो सम सुह दुक्खो' प्रभु जी ने कहा।
सुख दुख में समता धर शान्ति को धरा॥ भक्त...॥2405॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।
54. लक्ष्य भक्त का पूर्ण आप ही कर सकें।
परमानन्दी शाश्वत वह सुखरस चखे॥ भक्त...॥2406॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।
55. भन्ते हे भगवन्! मम नैया तार दो।
भक्त चाहता अब तो बेड़ा पार हो॥ भक्त...॥2407॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।
56. तेजभानु की सहस्र किरणें छिप गईं।
देख प्रभु की दिव्य मूर्ति शरमा गईं॥ भक्त...॥2408॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

पूर्णार्घ्य

शूरवीर है योद्धा मोह का भारी।
फिर भी भक्तों से सभी सेना हारी॥
भक्त करे अरदास अमर पद प्राप्त हो।
करुणाकर आदीश्वर मुझको दर्श दो॥

ॐ ह्रीं वनगजादिभयनिवारणाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 44

नाम स्मरण से निर्विघ्न समुद्र यात्रा

अम्भोनिधौ क्षुभित - भीषणनक्रचक्र-
पाठीनपीठ - भयदोल्वण - वाडवाग्नौ।
रङ्गत्तरङ्ग - शिखरस्थित - यानपात्रास्-
त्रासं विहाय भवतःस्मरणाद् व्रजन्ति॥44॥

विष्णुपद छन्द

कुपित भयङ्कर मगर और घड़ियाल रहे जिसमें।
मत्स्य पीठ की टक्कर से हो बड़वानल जिसमें॥
ऐसे तूफानी सागर में उठे भँवर उत्ताल।
मानो अभी पलटने वाला हो ऐसा जलयान॥
मात्र आपके नाम स्मरण से सिन्धु पार करता।
निडर भक्त भवदधि तिरकर अन्तर्यात्रा करता॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥44॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं।

मुनीशानमृतस्वादून्, सुधावत् स्वादुभोगिनः।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 44॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतस्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

चौपाई

1. **अम्बर भी नीचे झुक जाता, जब जिनवर का विहार होता।**
   भक्ति की मैं रीत न जानूँ, नाम प्रभु का ही पहचानूँ॥2409॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'अम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।
2. **भोक्ता पर का हो ना सकता, यह सच्चा जैनागम कहता।**
   परकर्त्ता बनकर दुख पाया, अनन्त दुख पाकर पछताया॥2410॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।
3. **नित्योद्घाटित ज्ञान तिहारा, लोकालोक जानने वाला।**
   पंचमगति के आप प्रदाता, शरणागत को हैं सुखदाता॥2411॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।
4. **सुधौत नाथ आपको कहते, तप्त स्वर्ण सम निर्मल रहते।**
   प्रभुवर तीन कर्ममल हारी, सुर नर इन्द्र चरण बलिहारी॥2412॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।
5. **क्षुधा तृषादि परीषह सहते, पाप कर्म मुनिवर के कटते।**
   मुनिवर ही जिनवर हो जाते, सिद्ध बने जग में ना आते॥2413॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।
6. **भिगो दिए हैं नैन हमारे, जिन वचनामृत हम उर धारे।**
   पाप कर्म कृश करिए स्वामी, करूँ प्रार्थना हे सुखधामी॥2414॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।
7. **तपोमूर्ति मनहारी लगती, आँखें इकटक छवि निरखतीं।**
   भव्यजनों को सन्मति देते, बदले में प्रभु कुछ ना लेते॥2415॥
   ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

8. भीतर एकाकी क्या करते, सदाकाल सिद्धालय रहते।
हो अचिन्त्य श्री आदि जिनन्दा, काटो मेरे भव के फन्दा॥2416॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

9. षड् दर्शन में सर्वोत्तम है, जिन-दर्शन ही परमोत्तम है।
केवलज्ञानी ने गाया है, भविजन के मन को भाया है॥2417॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

10. पूर्ण समर्पण जीवन मेरा, अपना लो यह भक्त अकेला।
अशरण को प्रभु दे दो शरणा, दुखियारे का भव दुख हरना॥2418॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

11. नर में श्रेष्ठ नरेन्द्र कहाता, देवों में जिनदेव सुहाता।
और कहीं ना सिर झुकता है, नाम आपका मन रटता है॥2419॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

12. क्रमिक विकास भले हो स्वामी, पर मुझको बनना शिवगामी।
हर पल सिद्धी पाना चाहूँ, जगत प्रसिद्धि मैं ना चाहूँ॥2420॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

13. चयन किया प्रभु मार्ग तुम्हारा, जग का पथ ज्यों जल है खारा।
नाथ आपको हृदय बसाऊँ, एक-एक पग चलता जाऊँ॥2421॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

14. क्रमशः आठों द्रव्य चढ़ाऊँ, अर्घ्य चढ़ा गुणमाला गाऊँ।
भक्ति में मन कभी न थकता, पूजन कर आनन्द बरसता॥2422॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

15. पालनहारे आप हमारे, जीवन जीना आप सिखाए।
आप धर्मनेता हो स्वामी, अनन्त उपकारी अभिरामी॥2423॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

16. श्रेष्ठी श्रेष्ठ प्रभु को ध्याए, समवसरण आकर हर्षाए।
एकमात्र सान्निध्य आपका,पाप मिटाता जनम-जनम का॥2424॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ठी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

17. नमाम्यहं हे प्रथम जिनेश्वर, आश यही लेकर आया दर।
मैं अबोध हूँ बाल तिहारा, कष्ट हरो मैं दुख से हारा॥2425॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

18. पीड़ा भव की सही न जाती, रह-रह याद आपकी आती।
कर्मों की पर्तों में लिपटी, भक्त चेतना रोती रहती॥2426॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

19. ठगिनी माया पल-पल ठगती, दृष्टि प्रभु पर थिर न रहती।
कर्मों की दीवारें तोड़ूँ, पर पदार्थ से दृष्टि मोड़ूँ॥2427॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ठ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

20. भविष्य निश्चित उज्ज्वल होगा, जिसने पाई भक्ति नौका।
भव से पार वही उतरे हैं, जिनने भी संकट झेले हैं॥2428॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

21. यज्ञ ज्ञान का जो करते हैं, आत्म ध्यान कर शिव वरते हैं।
आत्मज्ञान का मैं अभिलाषी, इच्छा पूर्ण करो शिववासी॥2429॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

22. दोष युक्त है जीवन मेरा, हो निर्दोष प्रभु संग डेरा।
प्रभु विभाव से अतिक्रान्त हैं, जब देखो तब परम शान्त हैं॥2430॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

23. भयदोल्वण अर्थात् भयावह, भवसागर से भक्त तिरा वह।
जिसने तुम्हें हृदय में धारा, तिरा भयानक सिन्धु अपारा॥2431॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

24. प्राण जाए पर प्रण न जाता, जो दृढ़ता से व्रत अपनाता।
नन्त सुखी हो वह जगवासी, बने शीघ्र मुक्ती का वासी॥2432॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

25. वायुपथ से विमान में आ, विद्याधर सुर इन्द्र शरण आ।
नाथ आपकी पूजा करते, युगपत् पद में आकर झुकते॥2433॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

26. डरता जो पापों से प्राणी, वह पुण्यात्मा होता ज्ञानी।
समता है मुक्ती की दूती, पाता है वह आत्म विभूति॥2434॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ड' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

27. वाग्गङ्गा वह कहलाई है, जो प्रभु के मुख से निकली है।
इस गङ्गा में डूब नहाऊँ, स्वच्छ होए शुद्धातम ध्याऊँ॥2435॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वाग्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

28. नौका डगमग जब भी डोले, भविजन नाम आपका बोलें।
नैया तट को पा लेती है, प्रभु भक्ति में अति शक्ति है॥2436॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

29. रंगमंच संसार समूचा, कभी अधो कभी जाए ऊँचा।
नानाविध पर्याय धरे हैं, आत्म ज्ञान से दूर रहे हैं॥2437॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

30. गत्यागति से विमुक्त स्वामी, शाश्वत थिर हो गए सु-नामी।
आदीश्वर ने शिवसुख पाया, मैं यह लगन लगाने आया॥2438॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

31. तत्त्वान्वेषी मैं बन जाऊँ, स्वात्म तत्त्व को पल-पल ध्याऊँ।
आर्त-रौद्र द्वय ध्यान नशाऊँ, धर्म्यध्यान कर संयम धारूँ॥2439॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

32\. **रंचमात्र भी कष्ट नहीं है, कोई इष्टानिष्ट नहीं है।**
ऐसी सिद्धशिला पर जाऊँ, सिद्ध बनूँ जग में ना आऊँ॥2440॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

33\. **गजमुक्ता लेकर सुर आए, नाथ आपके चरण चढ़ाए।**
मेरे पास नहीं कुछ स्वामी, भक्ति को स्वीकारे नामी॥2441॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

34\. **शिला कर्म की चूर करूँ मैं, रोक रही शिवपुर आने में।**
नन्त वीर्य मुझको पाना है, नाथ आप सम ही बनना है॥2442॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

35\. **खत्म हुई भव भ्रमण कहानी, प्रभु ने पाई शिव रजधानी।**
सांसारिक सुख कुछ ना चाहूँ, मात्र मुक्ती का ही सुख चाहूँ॥2443॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

36\. **रजनीपति भी शरमाता है, जब प्रभु की छवि को लखता है।**
श्रद्धा सुमनों से कर पूजा, कहता प्रभु सम और न दूजा॥2444॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

37\. **स्थिर होकर अपने में जिनवर, पहुँच गए भवसागर तट पर।**
मैं इस तट पर खड़ा हुआ हूँ, सहाय भगवन् माँग रहा हूँ॥2445॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्थि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

38\. **तव पादारविन्द में आया, हृदय कमल प्रभु तुम्हें चढ़ाया।**
और पास ना कुछ भी भगवन्, क्या अब द्रव्य चढ़ाऊँ चरणन॥2446॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

39\. **यान ज्ञान पर चढ़कर आते, ऋषि मुनि तव पद ध्यान लगाते।**
मुक्ती के साधन जिनरायी, साधक हैं त्यागी मुनिरायी॥2447॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

40\. **नम्र भक्त ही भगवन् बनता, मुक्ती पथ पर प्रयाण करता।**
दुरुह पन्थ है नाथ तिहारा, दुर्लभ मुक्ती-महल नजारा॥2448॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

41. पामर भी पावन हो जाता, परमातम में जब खो जाता।
आप छवि में निज छवि दिखती, निजात्म में प्रभु छवि झलकती॥2449॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

42. अहो विचित्रा: जग के प्राणी, कभी मीत तो कभी दुश्मनी।
शाश्वत नहीं रहा जग नाता, स्वारथ के पत्नी सुत भ्राता॥2450॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रा:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

43. त्राण आप ही कर सकते हैं, भक्त पाप से बच सकते हैं।
क्योंकि आप सर्व गुणधारी, त्रिभुवन के हो प्रभु उपकारी॥2451॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

44. सम्भव हो हर कार्य उसी का, जिसने शरण लिया प्रभु जी का।
अहंकार वश जो नहीं ध्याते, भवदधि में वो गोता खाते॥2452॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

45. वियोग ना हो कभी तिहारा, मुक्ती तक प्रभु मिले सहारा।
भव्य जनों को सन्मति दाता, दौड़-दौड़ मन प्रभु दर आता॥2453॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

46. हाहाकार मचा है जग में, आज जरूरत प्रभु जन-जन में।
फिर से मार्ग उन्हें दिखला दो, हिंसा का ही नाम मिटा दो॥2454॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

47. यथार्थता का बोध कराया, जन-जन में प्रतिशोध मिटाया।
प्रभु ने निज अनुशासन द्वारा, कर्म नष्ट कर शिवसुख पाया॥2455॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

48. भगवत् पूजा में ही सुख है, श्रावक भूल जाए सब दुख है।
वीतराग की पूजा कर लूँ, निजातमा में शान्ति पा लूँ॥2456॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

49. वर्ण तीन प्रभु ने बतलाए, ब्राह्मण वर्ण भरत बनवाए।
चार वर्ण से हुए दूर हैं, सिद्ध अवर्णी सौख्य पूर हैं॥2457॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

50. अन्तःकरण किया पावन है, जिनागमन में भक्त मग्न है।
पलक पावड़े बिछा दिए हैं, नम्र सभी ने शीश किए हैं॥2458॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

51. स्मरण मात्र से अघ मिट जाते, आगत विघ्न सभी टल जाते।
कुछ उपाय मुझको बतला दो, कर्म रिपु से छुटकारा दो॥2459॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

52. रहा यहाँ ना शाश्वत कोई, सिद्धदशा ही अक्षय होई।
प्रमाद वश में भटक रहा हूँ, रक्षा करिए द्वार खड़ा हूँ॥2460॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

53. जिन स्मरणाद्[1] निज सुख मिलता है, मुकुलित हृदय कमल खिलता है।
इसीलिए मैं तुमको ध्याऊँ, आस्था से प्रभु तव गुण गाऊँ॥2461॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णाद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

54. व्रत नियमों का पालन करके, पहुँचे भगवन् मोक्षमहल पे।
मैं जिन पूजा करने आया, शिवललना को वरने आया॥2462॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

55. जंजीरें कर्मों की जकड़ीं, नाथ आपने पल में तोड़ी।
ध्यान शस्त्र से मैं भी तोड़ूँ, शक्ति दो पर से मुख मोड़ूँ॥2463॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

56. तिरते-तिरते तट तक पहुँचे, ऊर्ध्वलोक में सबसे ऊँचे।
नहीं यहाँ से दिखते स्वामी, एक झलक दो अन्तर्यामी॥2464॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

पूर्णार्घ्य

तूफानी सागर तर जाता, प्रभु नाम जो सुमिरन करता।
भवसिन्धु से पार कराओ, अर्घ्य चढ़ाऊँ मुझे उबारो॥

ॐ ह्रीं संसाराब्धितारणाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

1.स्मरण से

श्लोक नं॰ 45

व्याधि विनाशक चरण रज

उद्भूत - भीषण - जलोदर - भारभुग्ना:
शोच्यां दशा - मुपगताश्च्युतजीविताशाः।
त्वत् - पाद - पङ्कज - रजोऽमृत - दिग्धदेहा
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्य- रूपाः॥45॥

विष्णुपद छन्द

महा जलोदर रोग भार से झुकी कमर जिनकी।
सोचनीय है दशा छोड़ दी आशा जीने की॥
ऐसे नर तव चरण-कमल की रज को छू लेते।
निरोग हो वे कामदेव से सुन्दर हो जाते॥
श्रद्धा से मैं नाथ चरण-रज शीश चढ़ाऊँगा।
देह मुक्त होकर विदेह पद को पा जाऊँगा॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥45॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं।

अक्षीणर्द्धिपरिप्राप्तान् , दात्राहार प्रवर्धकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 45॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीणमहानसेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

स्रग्विणी छन्द

1. **उद्बोधन दिया आपने भव्य को।**
अष्ट कर्मों का क्षय कर गए मोक्ष को॥
हे प्रभो! प्रार्थना भव समन्दर तिरूँ।
भक्ति से पाठ मैं भक्तामर का करूँ॥2465॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'उद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

2. **भूपति सुरपति अहिपति पूजते।**
तीन लोकों के नाथ तुम्हें मानते॥ हे...॥2466॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

3. **तत्त्व का बोध मिलता तुम्हीं से प्रभो।**
धर्म से हो सुशोभित हे वृषभ प्रभो॥ हे...॥2467॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

4. **भीति है भक्त को पाप बँधे नहीं।**
धर्म आराधना में सजग है वही॥ हे...॥2468॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

5. **षट् रसों से न रसना कभी तृप्त हो।**
विज्ञ रस त्याग करके ही सन्तुष्ट हो॥ हे...॥2469॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

6. **णमो आदीश्वरम् णमो वृषभेश्वरम्।**
मैं करूँ आपका अर्चनम् वन्दनम्॥ हे...॥2470॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

7. **जग के जंजाल में फँस गया हूँ प्रभो।**
हस्त अवलम्ब दे तार दो हे विभो॥ हे...॥2471॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

8. लोक विख्यात यश सर्व जग में सदा।
नहीं अपकीर्ति होवे प्रभु की कदा॥
हे प्रभो! प्रार्थना भव समन्दर तिरूँ।
भक्ति से पाठ मैं भक्तामर का करूँ॥2472॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

9. दण्ड पाते जो करते व्यसन सप्त ही।
नाथ कहते वो पाते नरक दुःख ही॥ हे...॥2473॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

10. रश्मियाँ सूर्य की सर्व फीकी पड़ीं।
जब लिया जन्म प्रभु ने झुकी ही रहीं॥ हे...॥2474॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

11. भाग्य से हीन है जो दरश ना करे।
पाए जैन धरम फिर भी नास्तिक रहे॥ हे...॥2475॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

12. रज चरण की प्रभु शीश पर मैं धरूँ।
झुका मस्तक नयन मूँदकर पूज लूँ॥ हे...॥2476॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

13. विश्वभुग् विश्वनायक शरण सार हैं।
भक्ति ही आसरा झूठा संसार है॥ हे...॥2477॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भुग्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

14. हे जिनाः मनोयोग से वन्दना।
चित्त हो आपमें आपसे प्रार्थना॥ हे...॥2478॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

15. शोधकर मोक्षपथ पर चले जिनवरा।
हो गए मुक्त ही नाथ आदीश्वरा॥ हे...॥2479॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

16. जैसे प्राच्यां दिशा में उगे सूर्य है।
मरुदेवी से जन्मे प्रभु आप हैं॥
हे प्रभो! प्रार्थना भव समन्दर तिरूँ।
भक्ति से पाठ मैं भक्तामर का करूँ॥2480॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च्याम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

17. दर्श के योग्य है वीतरागी छवि।
है द्युति देह की मानो कोटि रवि॥ हे...॥2481॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

18. शाश्वता कुछ नहीं है मेरे पास ही।
नाथ शाश्वत रहे आपका साथ ही॥ हे...॥2482॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

19. मुख कमल शरद पूनम का चन्दा लगे।
शशि दागी है जिनदेव बेदाग हैं॥ हे...॥2483॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

20. पतित को शीघ्र पावन किया आपने।
क्या ये कम है खड़ा भक्त तव सामने॥ हे...॥2484॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

21. गन्धकुटी में विराजे हैं आदीश जी।
झुक रहे चर्ण में अनगिनत शीश ही॥ हे...॥2485॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

22. शिव-गताश्चिन्मयी शुद्धता प्राप्त कर।
सिद्ध-आलय बसे सर्व मल नाश कर॥ हे...॥2486॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ताश्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

23. अच्युतं अक्षयं सौख्य को पा लिया।
यश सुना आपके द्वार मैं आ गया॥ हे...॥2487॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च्यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

24. तत्त्वदर्शी प्रभु नन्त को जानते।
आपको सर्व ज्ञानी सभी मानते॥
हे प्रभो! प्रार्थना भव समन्दर तिरूँ।
भक्ति से पाठ मैं भक्तामर का करूँ॥2488॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

25. जीव जीता सदा कभी मरता नहीं।
विज्ञ मृत्यु महोत्सव में रोता नहीं॥ हे...॥2489॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

26. विश्व ज्ञानी हो फिर भी नहीं मान है।
इसलिए मानते सर्व भगवान हैं॥ हे...॥2490॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

27. ताल देकर सभी देवियाँ नाचतीं।
भाग्यशाली हैं वृषभेश को देखतीं॥ हे...॥2491॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

28. आशा: पाश बन्धन में ही डालती।
इसलिए नासा दृष्टि किए नाथ जी॥ हे...॥2492॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शा:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

29. त्वत् प्रसादात् कई भव्य भव से तिरे।
नाथ करिए कृपा भक्त को सुख मिले॥ हे...॥2493॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

30. पारंगत हो गए पाई मुक्ती कला।
भक्त की प्रार्थना मान को दो गला॥ हे...॥2494॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

31. दर्द ही दर्द तन मन के सहता रहा।
आज आया समझ क्यों भटकता रहा॥ हे...॥2495॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

32. पंच परमेष्ठी जग में सदा पूज्य हैं।
दो प्रभु त्रय गुरु रूप में वन्द्य हैं॥
हे प्रभो! प्रार्थना भव समन्दर तिरूँ।
भक्ति से पाठ मैं भक्तामर का करूँ॥2496॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

33. कल्पना व्यर्थ करके क्यों होता दुखी।
कहे भगवन् हो अविकल्प बन जा सुखी॥ हे...॥2497॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

34. जन हितैषी सही नाथ आदीश हैं।
पन्थ दिखलाते मुक्ती का जो क्लिष्ट है॥ हे...॥2498॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

35. रख सके आपको चेतना में सदा।
चाहे कैसी दशा हो न भूलें कदा॥ हे...॥2499॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

36. जोड़ कर धन को क्या साथ ले जाओगे।
अन्त में देह भी छोड़कर जाओगे॥ हे...॥2500॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

37. मृण्मयी देह मिटती है शाश्वत नहीं।
चिन्मयी चेतना नित्य भास्वत रही॥ हे...॥2501॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

38. तम विनाशक किया आपने तप महा।
कर्म की राख करके खरा पद धरा॥ हे...॥2502॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

39. दिग्भ्रमितों को दे दी दिशा आपने।
हो गए भक्त वे नित्य ही आपके॥ हे...॥2503॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दिग्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

40. धर्मोदय हो गया आपके त्याग से।
तप धरें नृप कई साथ वैराग्य ले॥ हे...॥2504॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

41. देवालय में हैं वृषभेश की मूर्तियाँ।
भक्ति से देहालय में दिखी झलकियाँ॥
हे प्रभो! प्रार्थना भव समन्दर तिरूँ।
भक्ति से पाठ मैं भक्तामर का करूँ॥2505॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

42. हास-परिहास में कर्म बाँधे कई।
भोगने के समय चेतना रो रही॥ हे...॥2506॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

43. मर्त्य के लोक में देवगण आ रहे।
दिव्य द्रव्यों की ले थाल गुण गा रहे॥ हे...॥2507॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मर्त्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

44. याचना पर पदार्थों की चाहूँ नहीं।
चाह है आपके दर्श पाऊँ अभी॥ हे...॥2508॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

45. भगवती चेतना सर्व ही जीव में।
फिर भी सहता है क्यों आतमा पीर है॥ हे...॥2509॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

46. वन्दना योग्य है मोक्ष पुरुषार्थ ही।
काम भोगों में है सार कुछ भी नहीं॥ हे...॥2510॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

47. तिरस्कृत मैं हुआ मोह का साथ कर।
जानकर भी बना मोही क्यों हाथ धर॥ हे...॥2511॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

48. मग्न हैं स्वात्म में ना डिगेंगे कभी।
आदि जिन को झुकाऊँगा सिर मैं अभी॥ हे...॥2512॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

49. कर्णप्रिय है कथा नाथ के नाम की।
पाए श्रोता डगर मोक्ष के धाम की॥ हे...॥2513॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

50. रत्न-राशि चढ़ाएँ, सभी चर्ण में।
हाथ जोड़े खड़ा भक्त लो शर्ण में॥
हे प्रभो! प्रार्थना भव समन्दर तिरूँ।
भक्ति से पाठ मैं भक्तामर का करूँ॥2514॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

51. ध्वज जिनधर्म का नाथ फहरा दिया।
आज तक ध्वज वही नाथ लहरा रहा॥ हे...॥2515॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

52. जयवन्तों करें देव जयघोष को।
नष्ट करते हैं यों मिथ्यातम दोष को॥ हे...॥2516॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

53. तुष्ट होते नहीं भक्ति कर भक्त भी।
दर्श प्रत्यक्ष चाहे पर शक्य नहीं॥ हे...॥2517॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

54. मूल्य नश्वर पदार्थों का कुछ भी नहीं।
तत्त्व अनमोल है आतमा इक सही॥ हे...॥2518॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

55. रूप पुद्गल का है चेतना का नहीं।
निज स्वरूप लखूँ भावना है यही॥ हे...॥2519॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

56. जग प्रदीपा: श्री आदिनाथा तुम्हीं।
आप ही मीत हैं आपसे प्रीत ही॥ हे...॥2520॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

पूर्णार्घ्य

रोग भारी जलोदर हुआ हो भले।
आप भक्ति से ही रोग मुक्त हुए॥
हे प्रभो ! प्रार्थना भव समन्दर तिरूँ।
भक्ति से पाठ मैं भक्तामर का करूँ॥

ॐ ह्रीं दाहतापजलोदराष्टादशकुष्टसन्निपातादिरोगहराय क्लीं-महाबीजाक्षर-सम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 46

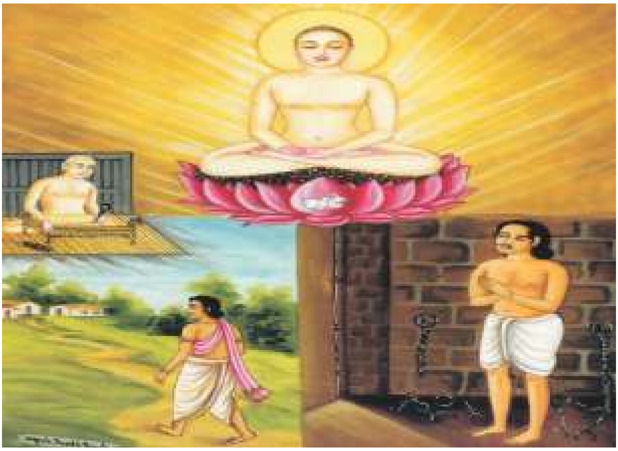

नाम जाप से बन्धन मुक्ति

आपादकण्ठ - मुरुश्रृङ्खल - वेष्टिताङ्गा
गाढं बृहन्निगड - कोटि - निघृष्टजङ्घाः।
त्वन्नाम - मन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति॥46॥

विष्णुपद छन्द

बड़ी-बड़ी बेड़ी से जिनका तन है कसा बँधा।
दृढ़ सांकल की नोंक से जिनकी छील गई जंघा॥
ऐसे बन्दीजन अविरल तव नाम मन्त्र जपते।
उनके बन्धन स्वयं तड़ातड़ पलभर में नशते॥
आदिप्रभु के नाममन्त्र में है ऐसी शक्ति।
कर्मबन्ध से विमुक्त हो भविजन पाते मुक्ति॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥46॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं।

भुवनत्रयसंसेव्यान्, वर्धमानान् महायतीन्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 46॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमानेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

दोहा

1. **आपत्ति से हूँ घिरा, नाथ बचा लो आज।**
करता हूँ यह अरज मैं, सदा रहूँगा पास॥2521॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'आ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **पारदर्शिता आपमें, निश्छल रहते नित्य।**
देह रहित आदीश जिन, आतम पूर्ण पवित्र॥2522॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **दयावान जग में तुम्हीं, अभयदान भरपूर।**
महा कारुणिक हे प्रभो, करिए संकट चूर॥2523॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **कंठ न हो अवरूद्ध मम, जब तक तन में श्वास।**
नाम मन्त्र जपता रहूँ, यही भक्त अभिलाष॥2524॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **ठगिनी माया ने ठगा, मुझे अनेकों बार।**
जिन जननी रक्षा करो, मैं अज्ञानी बाल॥2525॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ठ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **मुमुक्षु करते अर्चना, मोक्ष प्राप्ति के काज।**
त्रियोग से मैं भी करूँ, पूजन प्रभुवर आज॥2526॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **रुदन किया अब तक बहुत, कर्म सताते नाथ।**
एक आपका आसरा, शीश झुकाए दास॥2527॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. श्रृंगारित कर देह को, किया राग पर राग।
इसका फल अति दु:ख है, भोगूँ मैं जिनराज ॥2528॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्रृं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. खड्ग लिया निज ध्यान का, किया कर्म पर वार।
चउ उपसर्ग विमुक्त जिन, मम जीवन आधार ॥2529॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. लहर एक सद्ज्ञान की, दीजे मुझे मुनीश।
मैं अज्ञानी भक्त हूँ, हो जाऊँ निज ईश॥2530॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. वेष्टित है मम आतमा, अष्ट कर्म से नाथ।
हे निर्बन्धी आदि जिन, बन्ध काट दो आप॥ 2531॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वेष्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. टिम-टिम करती तारिका, एक चमकता चाँद।
ऋषि मुनि तारे हैं सभी, जिनवर शशि समान॥2532॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'टि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. निर्विषतां को प्राप्त हो, विष हो चाहे तीव्र।
जिनवर आप प्रभाव से, सुख पावे यह जीव॥2533॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. गाथाएँ रट लीं बहुत, हुआ न निज का भान।
प्रभु कहें उस जीव का, कैसे हो कल्याण॥2534॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. गाफिल मत हो जाग जा, प्रभुवर रहे पुकार।
उपादान यदि है नहीं, निमित्त की हो हार॥2535॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. **ढंग नहीं यदि भक्ति का, बिना भाव के गाए।**
पाठ करे तोता रटन, कैसे मुक्ति पाए॥2536॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ढं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. **बृहज्ज्ञान सिन्धु प्रभो, एक बूँद दो नाथ।**
हृदय पात्र लेकर खड़ा, भक्त झुकाकर माथ॥2537॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. **अर्हन् नाम सुहावना, करे पाप का नाश।**
आदीश्वर प्रभु ने कहा, कर लो कर्म विनाश॥2538॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. **निखिल विश्व को जानते, योगीगम्य महान।**
मानतुङ्ग मुनि के प्रभो, भक्तों के भगवान॥2539॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. **गल जाए मम मान सब, यही प्रार्थना नाथ ।**
मद के कारण ही प्रभो, बना नहीं जिननाथ॥2540॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. **डर मुझको किस बात का, नाथ आप हैं साथ ।**
ऐसा पल -पल भासता, गुण गाऊँ दिन-रात॥2541॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ड' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. **कोटि-कोटि वन्दन करूँ, भाव सहित आदीश।**
मेरे प्रभो महान हैं, तीन भुवन के ईश॥2542॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'को' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. **टिका रहूँ तव चरण में, शाश्वत ही यह भाव।**
सिद्धालय का लक्ष्य है, प्रकटे शुद्ध स्वभाव॥2543॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'टि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. निश्चय ही नर स्तवन से, पाता मुक्ति पन्थ।
रमण करे शुद्धात्म में, हो जाता शिवकन्त॥2544॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. घृणा किसी से ना करो, सबकी आत्म समान।
देखो ना पर्याय को, कहते हैं भगवान॥2545॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'घृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. अष्ट द्रव्य से पूजकर, हुआ हृदय में हर्ष।
ऐसी ज्योति दो मुझे, करूँ दर्श प्रत्यक्ष॥2546॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष्ट' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. जंजीरों से हूँ बँधा, कर्म तीव्र हैं नाथ।
बाँधे हैं अज्ञान से, छुड़ा दीजिए आप॥2547॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. विघ्नौघाः प्रलयं यांति, जो पूजे जिनराज।
विघ्न समूह नशें सभी, यही भक्ति का राज॥2548॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'घाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. त्वन् नुति सरवर में सदा, भविजन करते स्नान।
पवित्र भावों से सदा, करते स्वातम ध्यान॥2549॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. नाभिराय के तनय हैं, प्रथम जिनेश महान।
अति बड़भागी मात पितु, पुत्र स्वयं भगवान॥2550॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. मरुदेवी के लाल हो, जग के पालनहार।
पालक माता धन्य है, सर्व जगत हितकार ॥2551॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. मन्दाकिनी[1] मुनि भक्त हैं, सागर वृषभ जिनाय।
बूँद रूप मैं भक्त हूँ, बूँद समुद्र समाय॥2552॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. त्रय रोगों से मुक्त हैं, तीन छत्र सिर धार।
कृपा छाँव मुझ पर रहे, अरज यही जिनराय॥2553॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. महामुनी सब ही कहें, दिखते गुण प्रत्यक्ष।
दोष रहा ना एक भी, नाथ आप निष्पक्ष॥2554॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. निलय सिद्ध आलय रहा, नन्त सिद्ध इक साथ।
तीव्र भाव हैं दर्श के, अहो विदेही नाथ॥2555॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. शंकादिक दूषण रहित, सम्यग्दृष्टि भक्त।
सम्यक्त्वादिक गुण सहित,आदि जिनेश प्रसिद्ध॥2556॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. मशक तैरती नीर में, भवदधि तैरे भव्य।
प्रभु नाम की नाव से, पाता अनुपम सौख्य॥2557॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. नुति भक्ति भविजन करे, फिर वह करे विधान।
सर्व विघ्न उसके टलें, होए प्रसिद्ध महान॥2558॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. विरजा: रज से मुक्त हो, अमल हुए जिनदेव।
निर्मल होने को नमूँ, प्रभु चरण सिर टेक॥2559॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जा:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. स्मरण मात्र से आपके,कष्ट सभी कट जाए।
सारा जग ना दे सका, वह प्रभु से सुख पाए॥2560॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1.नदी

41. **रंगीला यह जगत है, राग-द्वेष के रंग।**
निस्तरंग उपयोग प्रभु, मिटे कर्म के फंद॥2561॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. **विगत: सर्व विकार जिन, मनुजाकार प्रसिद्ध।**
वीतरागता देखकर, झुके स्वयं ही शीश॥2562॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. **सज्जित हैं गुण नन्त से, अचिन्त्य महिमायुक्त।**
सिद्धालय प्रभु भवन में, नन्त चतुष्टय स्तम्भ॥2563॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. **आद्य: कहकर आपको, पुकारते ऋषि सन्त।**
सद्य: उनको प्राप्त हो, अनर्घ्य पद सुखकन्द॥2564॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्य:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. **स्वभाव शुद्ध प्रकट किया, शुक्लध्यान से नाथ।**
विभाव परिणति में रुला, मैं हूँ भक्त अनाथ॥2565॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. **सत्यं शिव जिन सुन्दरम्,छवि अलौकिक धार।**
शब्दों से ना कह सके,प्रभु गुण अगम अपार॥2566॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. **विहग फलों युत वृक्ष पर, करे बसेरा नित्य।**
भक्त बसे तव चरण में, जिन गुण नन्त पवित्र॥2567॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. **गरिमामय व्यक्तित्व है, गा न सके छद्मस्थ।**
गणधर भी प्रभु को निरख, हो जाते हैं स्वस्थ॥2568॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. **तड़प रहा था जगत में, भटक-भटक कर नाथ।**
पता मिला जिनवचन से, कहाँ बसे हैं आप॥2569॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. बन्धन मुक्त हुए मुनी, भक्ति शस्त्र था साथ।
चमत्कार प्रभु भक्ति का, देखे सर्व समाज॥2570॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. धर्मवीर बनकर प्रभो, आए आदीनाथ।
गुण गाता धर्मात्मा, दिन हो चाहे रात॥2571॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. भवकानन बीहड़ घना, राह न सूझे नाथ।
सत्पथ दिखला दो मुझे, जोड़ूँ दोनों हाथ॥2572॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. याद प्रभु की बनी रहे, किया नन्त उपकार।
कैसे भूलूँ नाथ को, श्वास-श्वास में आप॥2573॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. भगवन् कहकर आपको, मुनि सुमरे हर बार।
जग वैभव चाहूँ नहीं, दर्शन दो इक बार ॥2574॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. वंशज होकर आपका, बना दीन दुख पूर।
एक बार बतलाईए, क्या है नाथ कसूर ॥2575॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तिरते हैं प्रभु नाम से, कठोर भी पाषाण।
नम्र भक्त यह आपका, क्यों न बने गुणवान॥2576॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

बेड़ी हथकड़ियाँ सभी, गईं तड़ातड़ टूट।
मानतुङ्ग मुनिराज में, भक्ति भरी अटूट॥1॥
कर्म बन्ध से मुक्त हो, भक्त भावना भाए।
शीश झुका दर पर खड़ा, चरणन अर्घ्य चढ़ाए॥2॥

ॐ ह्रीं नानाविधकठिनबन्धनदूरकरणाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 47

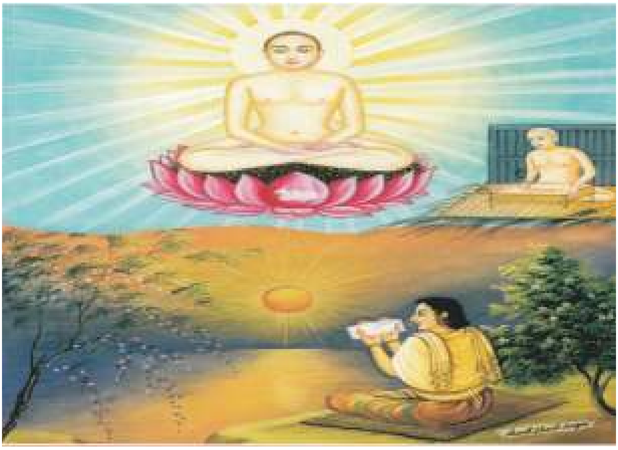

संपूर्ण भय निवारक जिन स्तवन

मत्तद्विपेन्द्र - मृगराज - दवानलाहि
संग्राम - वारिधि - महोदर - बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥47॥

विष्णुपद छन्द

बुद्धिमान जो प्रभु स्तोत्र को भावों से पढ़ता।
उसका भय तत्काल स्वयं ही डर करके भगता॥
चाहे वह भय मत्त हाथी या सिंह अग्नि का हो।
सर्प युद्ध सागर या भारी रोग जलोदर हो॥
बन्धन से भी प्रकट हुआ भय शीघ्र विनशता है।
निर्भय होकर भक्त शीघ्र शिवधाम पहुँचता है॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥47॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व सिद्धायदणाणं।

यमिनः सर्व सिद्धायत, नान् सन्मोक्षगामिनः।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 47॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व-सिद्धायतनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

विष्णुपद छन्द

1. **महाश्रमण पुरुदेव हमारे बिन बोले सुनते।**
नयन बिना खोले निष्ठा के नैनों से दिखते॥2577॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **उत्तम-उत्तम द्रव्य सभी सुरगण लेकर आते।**
पुनः दर्श की आशा लेकर स्वर्गों में जाते॥2578॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **अद्वितीय महिमा आदीश्वर जिन बिन ना दूजा।**
इसीलिए तो भाव भक्ति से ही मैंने पूजा॥2579॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **गुणोपेत प्रथमेश प्रभु जी अनन्त गुण धारे।**
सब विषाद मिट जाते पल में आकर तव द्वारे ॥2580॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **सुरेन्द्र अपना स्वर्ग छोड़कर तव पद में आता।**
जो स्वर्गों में नहीं मिला सुख तव पद में पाता॥2581॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्द्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **मृदुतम भाव तिहारे भगवन् सब पर कृपा करें।**
अज्ञ जनों को विज्ञ बनाने दिव्य देशना दें॥2582॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **गर्वित मन से भक्ति करे तो सार्थक ना होवे।**
सरल समर्पण भाव सहित ही विभाव मल धोवे॥2583॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. राजा और महाराजा सब दर्शन को तरसे।
भक्त नयन प्रभु के दर्शन को सावन सम बरसे॥2584॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. जलधि के तल में अथाह रत्नों का है भण्डार।
नाथ आपके शुद्धातम में गुणगण भरे अपार ॥2585॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. दयासिन्धु के गुणवादन में हर पल ही बीते।
अन्त समय हो नयन बन्द मम भक्ति रस पीते॥2586॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. वास करें प्रभु अपने ही शुद्धात्म प्रदेशों में।
भक्त कहें प्रभु बसते हैं मेरे मन नैनों में॥2587॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. नरतन को कर दिया सफल मुक्तिफल को पाकर।
मैं भी जीवन सफल बनाऊँ तव दर पर आकर ॥2588॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. लाली प्रातः और शाम की भिन्न-भिन्न रहती।
प्रभु भक्ति औ विषयासक्ति नहीं एक रहती॥2589॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ला' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. हिलमिल करके रहो सभी साधर्मी आपस में।
प्रभु औ गुरु के वचन यही कहते हैं आगम में॥2590॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. संकट मोचन आदिनाथ जी करिए विघ्न विनाश।
मोह भुजङ्ग दूरकर मेरे मन में करिए वास॥2591॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. ग्राम-ग्राम औ नगर-नगर में जय-जयकार करें।
बाट जोहते सभी यहाँ वृषभेश विहार करें ॥2592॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग्रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. मरुभूमि सम जगत दुखद है संकट भरे अनेक।
मधुवन-सा लगता प्रभु पद में मिट जाते हैं क्लेश॥2593॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. वातावरण सुहाना लगता समवसरण आकर।
कौन यहाँ से जाना चाहे प्रभु सन्निधि पाकर ॥2594॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. रिपुता और मित्रता दोनों दुखी-सुखी करती।
आदिनाथ की वीतरागता आनन्दित करती॥2595॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. अधिनायक त्रिभुवन के ज्ञाता-दृष्टा नाथ तुम्हीं।
मेरे हृदयासन पर भगवन् करते राज तुम्हीं॥2596॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मर्मस्पर्शी प्रवचन देते समवसरण में आप।
है ओंकार नाद वचनामृत मिटा रहे भवताप॥2597॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. होनहार जिनका अच्छा है वही पूजते हैं।
स्वतः प्रेरणा से आकर तव गुण को गाते हैं ॥2598॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. दरिया भरा ज्ञान का तुममें कभी न खाली हो।
भक्त समर्पण से भर लेता खाली झोली को॥2599॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रसना रटती नाम तिहारा थकती नहीं कभी।
है विश्वास मिलेंगे भगवन् मेरे भीतर ही॥2600॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. बंशी वीणा वाद्य बजाकर नृत्य गान करते।
पता न चलता दिवस रात का गुण गाते-गाते॥2601॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. धड़कन में जिन नाम मन्त्र का नाद गूँजता है।
आँखें बन्द करूँ या खोलूँ प्रभु ही दिखता है॥2602॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. जिनोत्तमं हैं चउ उत्तम में सर्वश्रेष्ठ जिनराज।
उत्तमाङ्ग से नमूँ आपको देना शिवपुर राज॥2603॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नोत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. मानथंभ के दर्शन करके मान गलित होता।
भक्त प्राप्त करके समकित सब विधिमल ही धोता॥2604॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तरंग मालाएँ विकल्प की पल-पल उठती हैं।
निर्विकल्प होने की मेरे मन में रहती है॥2605॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. स्यात् अस्ति स्याद् नास्ति आदिक भङ्ग सात ही हैं।
स्याद्वाद समझाने वाले आदिनाथ जी हैं॥2606॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. शुक्लध्यान की अग्नि जलाकर कर्म दहन करते।
निष्कर्मा श्री वृषभनाथ के पद में हम नमते॥2607॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. नाविक बन संयम की नैया पार लगाते हो।
बिना दाम के निस्वारथ प्रभु आप तिराते हो॥2608॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. **श**र्माता हूँ अल्प बुद्धि होने से क्या गाऊँ।
इसीलिए श्वासों की सरगम पर तुमको ध्याऊँ॥2609 ॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. **मु**दित मुखी हो समवसरण में प्रभुवर को निरखा।
निजातमा को ही निज माना पर को भी परखा॥2610॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. **प**त्थर की प्रतिमा दर्शन से स्वात्म दर्श होता।
ललक लगी है कब प्रभु का प्रत्यक्ष दर्श होगा॥2611॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. **या**दगार है भक्तामर पढ़ जब प्रभु भक्ती की।
पगडंडी तब देखी मैंने शाश्वत मुक्ती की॥2612 ॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. **ति**मिरारि नभ का सूरज बस बाह्य उजाला दे।
तमहारि प्रभु ज्ञान सूर्य अन्तर उजियाला दे॥2613॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. **भ**व भटके अज्ञानी ज्ञानी मुनि बन शिव पावे।
शाश्वत काल रहे सिद्धालय जग में ना आवे॥2614॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. **यं**त्र रखो गृह में कितने पर श्रद्धा बिन सब व्यर्थ।
घट में णमोकार है यदि तो इन सबका क्या अर्थ॥2615॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. अ**भि**षेक कर ले प्रातः जो प्रभु का श्रद्धा से।
कर्मों की धारा सूखे बहे ज्ञानधार उर से॥2616॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. ध्**ये**य बनाया मात्र मुझे शिवनगरी जाना है।
मुक्ती का पावन पथ भगवन् तुमसे पाना है ॥2617॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. वर्द्धमान अंतिम तीर्थङ्कर आदिनाथ प्रथमेश।
मध्यलोक से नमन करूँ स्वीकारो हे पूर्णेश॥2618॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. है अभ्यस्त अनादि से बन्धन कैसे करना।
नहीं जानता जीव मोक्ष सुख को कैसे पाना॥2619॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तालमेल ना है शब्दों में फिर भी भक्ति करूँ।
भक्त हुआ लाचार भक्ति बिन मैं ना रह पाऊँ॥2620॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. वधूएँ जग की वरी अनेकों वर्धन कर दुख का।
मुक्तीवधू को वरूँ लक्ष्य अब शाश्वत शिव सुख का॥2621॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. कंकर पत्थर जोड़ जोड़कर अज्ञ धनी माने।
ज्ञानी नन्त चतुष्टय धन पाने की ही ठाने॥2622॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. मस्तक झुका रहा जो श्रद्धा भावों से भरकर।
उन्नत होगा लोक अग्र तक कहते हैं गुरुवर॥2623॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वशीभूत हो पंचेन्द्रिय विषयों से क्या पाया।
सुखाभास है केवल सच्चा सुख प्रभु से पाया॥2624॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. मिश्री से भी मीठी प्रभु की वाणी पाप हरे।
श्रवण और आचरण करे वह केवलज्ञान धरे ॥2625॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. मंद बुद्धि होने से भगवन् गुण ना गा सकता।
आप भक्त के मन की जानो मन प्रभु में रमता॥2626॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. मदिरा मोह भाव की पीकर जीव हुआ बेहोश।
ज्ञान खटाई इसे खिलाकर दिलवा देना होश॥2627॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. मति करिए प्रभु ऐसी मेरी पंचम गति पाऊँ।
मति अनुसारि गति होती है अतः तुम्हें ध्याऊँ॥2628॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. माध्यम है प्रभु मोक्ष प्राप्त में भवि जीवों के आप।
कौन दिखाए सच्चे सुख का मार्ग प्रभो! बिन आप॥2629॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. नहा-नहाकर ज्ञानसिन्धु में विद्या धन पाया।
ऐसा चिन्मय धन पाने मैं प्रभु-पद में आया॥2630॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. धीर नहीं अब मेरे मन में प्रभु दर्शन पाना।
कैसे आऊँ शरण आपकी प्रभु बतला देना॥2631॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तेजस्वी है छवि तिहारी वीतराग प्यारी।
नहीं जगत में ऐसी मूरत जन-जन हितकारी॥2632॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

सर्व भयों से मुक्त भक्त हो भक्तामर पढ़कर।
तीन योग से जो भी पूजे पहुँचे मोक्षनगर॥

ॐ ह्रीं बहुविधविघ्नविनाशनाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 48

स्तुति का फल

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र! गुणै र्निबद्धां
भक्त्या मया रुचिर- विचित्रपुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं
तं 'मानतुङ्ग'-मवशा समुपैति लक्ष्मीः॥48॥

विष्णुपद छन्द

प्रभु गुण की डोरी में अक्षर पुष्प पिरोए हैं।
भक्तिमाल में आदिप्रभु के गुण ही गाए हैं॥
जो श्रद्धालु स्वयं कण्ठ में स्तुति माला धारे।
मानतुङ्ग सम उन्नत हो वह मुक्तिरमा पावे॥
नाथ आपके ज्ञान बाग की सुरभि मैं पाऊँ।
बन्ध रहित निर्भय होकर मैं शिवरमणी पाऊँ॥
मानतुङ्ग मुनिवर में प्रभु की भक्ति समाई है।
भक्तामर में वृषभदेव की महिमा गाई है॥48॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदोमहदिमहावीरवड्ढमाण-बुद्धिरिसीणं।

वर्धमानान् महावीरान् , महतो बुद्धिसागरान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 48॥

ॐ ह्रीं अर्हं भगवन्महावीर-वर्धमान-बुद्धि-ऋषिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. **प्रस्तोता प्रभु मोक्षमार्ग के, हितोपदेशी कहलाए।**
रागी देव नहीं मन भाए, वीतरागता मन भाए॥2633॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

2. **त्रस्त हो रहा भक्त आपका, क्या ना कष्ट मिटाओगे।**
दयासिन्धु कहलाते हो फिर,क्या ना दया दिखाओगे॥2634॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

3. **सहस्र नामों से ध्याते हैं, सूरीश्वर जिनसेन महा।**
भक्त गा रहा एक नाम ही, पूजन बिन ना जाए रहा॥2635॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

4. **जंजीरें अति सूक्ष्म कर्म की, मुझ आतम को जकड़ रहीं।**
नन्त दोष का कोष बना हूँ, अनन्त गुण हो प्रकट नहीं॥2636॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

5. **तव सातिशय गुणोद्यान में, शान्त भाव का झरना है।**
विदेह पदधर श्री जिनवर के, दर्शन मुझको करना है॥2637॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

6. **वक्ता श्रेष्ठ कहाते भगवन्, सब भाषाएँ जान रहे।**
भक्त पशु पक्षी सुर नर सब, बात आपकी मान रहे॥2638॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

7. **जिनमुद्रा अविकार दर्श कर, भाव विशुद्धि होती है।**
जिनशासन जयवन्त आपसे, भक्तों की स्तुति गाती है॥2639॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

8. जिनेन्द्र नाम सु-पावन कितना,मन से जय-जयकार करूँ।
प्रथमादीश जिनेन्द्र प्रभु को, वन्दन बारम्बार करूँ॥2640॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नेन्' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

9. छिद्र युक्त हो नाव यदि तो, नहीं किनारा पा सकती।
राग-द्वेष मय आस्रव हो तो, मुक्तीनगरी ना मिलती॥2641॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्र' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

10. गुणवानों से पूज्य जिनेश्वर, अनन्त गुण को धार रहे।
गुण से सघन भरें आदीश्वर, दोष विचारे कहाँ रहें॥2642॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गु' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

11. गुणैर्निबद्धां गुण सुमनों से, प्रभु गुणमाला गूँथी है।
भक्त स्वयं को धनिक मानता, भक्ति उसकी पूँजी है॥ 2643॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णैर्' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

12. निर्विकल्प रहने से प्रभु की, छवि मनहारी लगती है।
अँखियाँ पलकें ना झपकातीं,अपलक तुम्हें निरखती हैं॥2644॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

13. बड़े-बड़े धनवान बली सब, काल गाल में समा गए।
काल विजेता आदिनाथ जी, भक्त हृदय में समा गए॥2645॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ब' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

14. सिद्धांतों का पार प्राप्त कर, अन्त सिद्ध पद पाया है।
सर्व त्याग कर शिवसुख पाया, जिनवाणी ने गाया है॥2646॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्धां' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

15. भक्तामर के सर्व अर्घ्य कुल, छब्बीस सौ अट्ठासी हैं।
अंतिम में पूर्णार्घ्य बनाकर, प्रभु की महिमा गाई है॥2647॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भक्' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

16. त्याग ज्ञान की मूरत गुरुवर, और जिनेश्वर दो ही हैं।
गुरु बोलते प्रभु मौन हैं, प्राण श्वास दो ये ही हैं॥2648॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्या' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

17. मद मर्दन कर ममत्व तजकर,समत्व अंगीकार किया।
देख दिगम्बर रूप आपका, मुक्ती ने स्वीकार किया॥2649॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर–संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

18. याम आठ में सुमरूँ प्रभु को, जिन सुमिरन में सुख मिलता।
पर से निज उपयोग हटाकर, परम प्रभु में नित रमता॥2650॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर–संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

19. गुरु प्रभु बिन कुछ और न देखूँ,द्वय नयनों में बसे रहें।
अन्त समय में मात्र इन्हीं के,द्वय चरणों की शर्ण रहे॥2651॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर–संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

20. चिदानन्द रसपान करें प्रभु, फिर भी निराहार मानूँ।
ज्ञानामृत भोजन करके मैं, तत्त्व ज्ञान का जल चाहूँ॥2652॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर–संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

21. रसनेन्द्रिय को जीता जिनने, निजानुभव रसपान किया।
रस पीकर हो गए अमर प्रभु, भक्तों ने गुणगान किया॥2653॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर–संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

22. वर्षा होती ज्ञानामृत की,पीते रहते भव्य सदा।
तव चरणों को तजकर जाना, क्या चाहेंगे भव्य कदा॥2654॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वर्' बीजाक्षर–संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

23. पूर्ण किए हैं कार्य सभी ही, अतः नाथ कृतकृत्य हुए।
भक्ति करके नाथ आपकी, भक्त सभी धनि–धन्य हुए॥2655॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर–संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

24. विचरण करते ज्ञान बाग में, अनन्त गुण पंछी दल हैं।
झर–झर बहते स्वभाव झरने, शान्त रूप ना कल–कल है॥2656॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर–संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

25. चिन्तन मनन करूँ तव गुण का, शुभ उपयोग बना रहता।
शुद्ध होए उपयोग शीघ्र ही, यही भक्त का मन कहता॥2657॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चि' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

26. अत्र-अत्र आओ आदीश्वर, हृदय वेदिका खाली है।
मन मन्दिर है योग्य आपके, भक्ति द्रव्य की थाली है॥2658॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

27. पुष्प सुकोमल गन्ध युक्त हो, पर कुछ पल में मुरझाता।
मेरा हृदय कमल प्रभु पद में, आकर के ही खिल जाता॥2659॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पुष्' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

28. पांडुक वन में पांडु शिला पर,बाल प्रभु का न्हवन किया।
देव-देवियों ने मिलकर फिर, हर्ष भाव से नृत्य किया॥2660॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पां' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

29. धवल भाव से धवलाक्षत ले, पूजन करने आया हूँ।
शुद्ध द्रव्य से शुद्ध भाव हो, यही भावना लाया हूँ॥2661॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

30. उत्तेजक भावों से चेतन, सबसे वैर बढ़ाता है।
शान्त भाव से ही यह आतम, शाश्वत शान्ति पाता है॥2662॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्ते' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

31. जड़ जमीन औ जोरु सब ये, कष्ट बढ़ाने वाले हैं।
देव शास्त्र औ गुरु तीन ये, सौख्य दिलाने वाले हैं॥2663॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

32. नोकर्मों को बढ़ा-बढ़ाकर, कर्म बाँधकर दुख पाया।
नाथ आपका निमित्त पाकर, आत्मानन्द छलक आया॥2664॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नो' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

33. यथानाम गुण तथा रहे हैं, वृषभनाथ आदीश प्रभो।
कई नामों से इन्द्र पुकारे, सार्थक सारे नाम विभो॥2665॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

34. इष्ट स्थान पर पहुँच गए प्रभो, भक्त कष्ट क्यों है सहता।
आप सरीखे नाथ प्राप्त कर, सुख से वञ्चित क्यों रहता॥2666॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'इ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

35. हलचल मची तीन लोकों में, कषाय से ना शान्ति कहीं।
वीतरागता की सन्निधि में, दुख का नाम निशान नहीं॥2667॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

36. उत्कंठित है भक्त आतमा, सिद्धालय में आने को।
यथाख्यात चारित्र प्राप्त कर, आठों कर्म नशाने को॥2668॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

37. ठगी मोह ने नन्त काल से, मुझ पर जादू चला दिया।
बैठा देख समीप आपके, अपने मुख को छिपा लिया॥2669॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ठ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

38. गरिमामय जिनशासन प्यारा, जो जन इसको हृदय धरे।
भवकानन में वह ना भटके, मोक्षमहल में वास करे॥2670॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

39. ताज ज्ञान का पहना जिसमें, अनन्त गुणमणि रत्न जड़े।
हुए विदेही सबसे सुन्दर, प्रभुवर शिव सोपान चढ़े॥2671॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

40. मलीन मन से कई बार प्रभु, पूजन की पर व्यर्थ रही।
मन एकाग्र किया जब मैंने, लगा अर्चना आज हुई॥2672॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

41. जगती के उद्धारक स्वामी, मेरा भी उद्धार करो।
कर्म आक्रमण करते मुझ पर, शक्तिवान प्रभु विघ्न हरो॥2673॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

42. नाथ अजस्त्रं सदा भक्ति कर,पापास्त्रव को बन्द करूँ।
कभी न भूलूँ नाथ आपको,पल-पल वृषभदेव सुमरूँ॥2674॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त्रं' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

43. हितंकरी जिनवाणी जो भी, श्रवण करे आचरण करे।
इक या दो भव में वह निश्चित, शिवाङ्गना का वरण करे॥2675॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तं' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

44. माना है सर्वस्व आपको, तुमसे अब मैं क्या मांगूँ।
आप मिल गए प्रभु जी मुझको,चाह मिटे सब यह चाहूँ॥2676॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

45. नख औ केश नहीं बढ़ते जब, पूर्णज्ञान हो जाता है।
अकथनीय प्रभो तव महिमा,देखत मन खो जाता है॥2677॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

46. तुंबी तैरे बिना लेप की, निर्मोही जन मोक्ष वरे।
रागादिक का लेप लगाकर, अनगिनती भव धार रहे॥2678॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तुं' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

47. गहन गहनतम चिन्तन करके,सिर को बोझिल क्यों करना।
पर की चिन्ता छोड़ प्रभु के,गुण चिन्तन कर सुख पाना॥2679॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

48. मतलब के सारे संगाती, दुख में साथ न देते हैं।
अत: साथ तज रागी जन की, विज्ञ शरण तव लेते हैं॥2680॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

49. वन औ भवन काँच औ कंचन, सन्त भेद ना रखते हैं।
समताधारी मानतुङ्ग मुनि, मेरे हृदय समाते हैं॥2681॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

50. शासननायक प्रथम देव श्री,वृषभनाथ की जय-जय हो।
भक्त समर्पण से यदि पूजे,तो निश्चित ही अतिशय हो॥2682॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शा' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

51. सतर्क होकर चलो भक्त जन, कर्मों के पहरे चउ ओर।
जिनवाणी माँ समझाती यह,दृष्टि रखना तुम निज ओर॥2683॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

52. मुदित मना हो भक्ति करो तुम, कुछ भी माँग नहीं रखना।
मुक्ती की भी इच्छा ना हो, जैनागम का यह कहना॥2684॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

53. पैठ प्रभु ने ज्ञानसिन्धु में, अनन्त गुण मुक्ता पाई।
सुख सीपी के मोती पाने, शरण पड़ा मैं जिनराई॥2685॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पै' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

54. तिनका-तिनका जोड़-जोड़कर,कितना परिश्रम करता है।
गुरु कहें वह अन्त समय में, यहीं छोड़कर मरता है॥2685॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

55. लक्ष्य नहीं मैं ख्याति पाऊँ,नहीं पुण्य फल की है चाह।
भक्त हृदय की यही भावना,चलता चलूँ मोक्ष की राह॥2687॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लक्ष्' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

56. उद्यमी: जन पुरुषारथ कर, शिवलक्ष्मी को वरते हैं।
'विद्यासागर' रत्न प्राप्त कर, 'पूर्ण' सौख्य अनुभवते हैं॥2688॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मी:' बीजाक्षर-संयुक्तायश्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

पूर्णार्घ्य

प्रभु गुण डोर सुमन अक्षर के,भक्तिमाल जो कण्ठ धरें।
मानतुङ्ग मुनि सम उन्नत हो, अनर्घ्य पद को प्राप्त करें॥

ॐ ह्रीं सकलकार्यसाधनसमर्थाय क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय पूर्णार्घ्यं...।

महार्घ्य (शम्भु छन्द)

श्री मानतुङ्ग स्वामी द्वारा, यह रचा गया भक्तामर है।
जो भी श्रद्धा से इसे पढ़े, पद पाता वह अजरामर है॥
मैं हृदय थाल में भावों से, शुभ अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
हे अनर्घ्य पदधारी स्वामी, मैं जिनपद पाने आया हूँ॥

ॐ ह्रीं अष्टचत्वारिंशद्दलकमलाधिपतये क्लीं-महाबीजाक्षरसम्पन्नाय हृदयस्थिताय श्रीवृषभजिनाय महार्घ्यं...।

ऋद्धि अर्घ्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वियाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चोद्दसपुव्वियाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहानिमित्तकुसलाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वणइड्ढिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरक्कमाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभयारिणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
45. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
46. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
47. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसिद्धायदणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
48. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसाहूणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-:: जाप्य ::-

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथतीर्थङ्कराय नमः।

जयमाला

दोहा

आदिनाथ भगवान के, चरण कमल सुखदाय।
श्रद्धा से गुणगान कर, भक्त अमर पद पाय॥1॥

ज्ञानोदय छन्द

त्रिभुवनपति श्री वृषभदेव को,मन-वच-तन से वन्दन है।
नाभिराय के नयन सितारे, मरुदेवी के नन्दन हैं॥
मालव प्रान्त नगर उज्जयिनी शूरवीर नृप राज्य करे।
विद्या प्रेमी संस्कृत भाषी वहाँ कई विद्वान रहे॥2॥
कवि धनञ्जय मुनी भक्त से, अन्य कवि ईर्ष्या करते।
राजा से कवि और मुनी के विरूद्ध में बातें करते॥
तभी एक दिन नृप ने मुनि को, राज्यसभा में बुलवाया।
मुनिवर ने उपसर्ग समझकर, महा मौन व्रत धार लिया॥3॥
हुआ नहीं शास्त्रार्थ सभा में, राजा भी फिर कुपित हुआ।
मानतुङ्ग मुनि पर क्रोधित हो, अपमानित दुर्वचन कहा॥
अड़तालिस कमरों के भीतर, श्रीमुनिवर को डाल दिया।
बेड़ी और हथकड़ियों से तन,नख से शिख तक बाँध दिया॥4॥
देह भले बन्धन में हो पर, मैं निर्बंध स्वरूपी हूँ।
समता धरकर किया चिन्तवन, मैं चिन्मय चिद्रूपी हूँ॥
तीन दिनों तक आत्म ध्यान कर, वृषभनाथ की भक्ति की।
भाव सहित कारागृह में ही, भक्तामर की रचना की॥5॥
ज्यों-ज्यों हुई श्लोक की रचना, इक-इक ताले टूट गए।
कर्म असाता के बन्धन भी, प्रभु-भक्ति से छूट गए॥
द्वारपाल आश्चर्य चकित थे, मुनि बाहर कैसे आए।
पुनः कैद कर लिया उन्हें तो, अनुपम अतिशय प्रकटाए॥6॥

तीन बार बन्धन में डाला, फिर भी मुनि निर्बन्ध हुए।
बाहर प्रासुक उपल शिला पर, आकर मुनिवर बैठ गए॥
सुन वृतान्त नृप परिजन को ले, घटनास्थल पर आ पहुँचे।
चमत्कार लख महामुनि का, नयन हुए नृप के नीचे॥7॥
श्रद्धा से मुनि को वन्दन कर, जैन धर्म स्वीकार किया।
नृप ने श्रावक व्रत को धारा, सबने जय-जयकार किया॥
भक्तामर की यशोपताका, सब जन मन में फहराई।
जिसने पाठ किया श्रद्धा से, जीवन में खुशियाँ छाईं॥8॥
मन्त्र समान जो अर्थ युक्त इस, महास्तोत्र को पढ़ता है।
निज शुद्धातम वैभव पा वह, शिवमारग पर बढ़ता है॥
निर्वाञ्छक दृढ़ श्रद्धा से जो, प्रभुवर की भक्ति करता।
तन मन चेतन के बन्धन से, शीघ्र मुक्त ही वह होता॥9॥
मानतुङ्ग मुनिवर के जैसी, श्रद्धा भक्ति प्रकट करूँ।
राग-द्वेष क्षयकर समता धर, भव बन्धन के कष्ट हरूँ॥
भक्तामर की दिव्यशक्ति को, भाव सहित मैं नमन करूँ।
एक यही अभिलाषा भगवन्, शुद्धातम में रमण करूँ॥10॥

दोहा

भक्तामर जिन स्तोत्र का, पाठ करे नित भव्य।
तजकर सर्व विभाव वह, पा लेता गन्तव्य॥11॥

ॐ ह्रीं क्लीं-सर्वकर्मविनाशनाय आगतविघ्नभयनिवारणाय श्रीवृषभनाथ-जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

घत्ता

हे प्रथम जिनेश्वर, श्रीआदीश्वर, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

पूज्यपाद आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज की पूजन

स्थापना

(तर्ज – श्याम तेरी बंशी...)

गुरु मेरे ऋषिवर हैं गुरु भगवान्,
गुरुवर के दर्शन से मिले चारों धाम[2]
श्रद्धा से पथ सारा मैंने बुहारा,
भक्ति के गीतों से तुमको पुकारा[2]
हृदय वेदिका पर विराजो गुरु आज[2],
भक्त का निमंत्रण स्वीकारो गुरुराज॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्र! अत्र अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठ : स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव वषट्सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

विद्या के सिन्धु में ज्ञान है समाया,
श्रद्धा की कलशी को भरने मैं आया।
मेरे सब विकारों का करिए विनाश[2],
गुरु द्वार आया हूँ यही लेके आश॥1॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

चन्दन की खुशबू से घ्राण तुष्ट होती,
गुरु- कृपा चन्दन से आत्म पुष्ट होती।
मिटे गुरु भक्ति से भव-भव का ताप[2],
गुरु नाम का ही मैं करूँ नित्य जाप॥2॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं ....।

गुरुवर में आनन्द झरने झरे हैं,
अक्षय पदगामी को वन्दन करे हैं।
श्रमण संस्कृति के हैं गुरुवर मिशाल[2],
शरण पाके गुरुवर की हुए हम निहाल॥3॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ....।

भेद ज्ञान बगिया में गुरुवर विचरते,
चारित्र सौरभ से पल-पल महकते।
भक्त भ्रमर बन आया गुरु ज्ञान बाग[2],
मुझे भी पिला दो गुरु रस वीतराग॥4॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ....।

शुद्ध आत्म अनुभूति रस चख रहे हैं,
बाहर में रहकर भी आत्म लख रहे हैं।
मोक्ष की भी इच्छा न करें गुरुराज[2],
ऐसे भावलिंगी को नमन् बार-बार॥5॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

गुरुवर की मूरत में प्रभु की छवि है,
बुझे हुए दीपक हम गुरुवर रवि हैं।
सारे जग में छाया तीर्थङ्कर - सा प्रभाव[2],
मोक्ष तक मिले गुरु चरणों की छाँव॥6॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ....।

जड़ कर्मों का कोई दोष नहीं है,
दु:खों का कारण राग-द्वेष ही है।
तजे मोह बन्धन हुए वीतराग[2],
गुरुवर पुकारें हे चैतन्य जाग॥7॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

पाप कर्म फल में निराशा नहीं है,
पुण्य के फलों की भी आशा नहीं है।
पाप-पुण्य फल में रहें इक समान[2],
भावी अरहन्ता को मेरा प्रणाम॥8॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

नाम पद प्रसिद्धि की नहीं कामना है,
पद अनर्घ्य पाऊँ यही भावना है।
मेरे देवता देखो जरा मेरी ओर[2],
अर्घ्य मैं चढ़ाऊँ हे गुरु कर जोड़॥9॥

ॐ ह्रीं श्री 108आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं....।

जयमाला

ज्ञानोदय छन्द

स्वयं चेतना माँ के सुत हो, निज उपयोग पिताश्री है।
भाव विशुद्धि भगिनी जिनकी, भ्राता स्वानुभव ही है॥
आत्माश्रित गुण मित्र गुरु के, स्वात्म चतुष्टय गृह प्यारा।
भेदज्ञान के दीपक जलते, जग को देते उजियारा॥1॥
शुद्ध आत्म अनुभूति के स्वर, गुरु के निज गृह गूँज रहे।
स्वर लहरी सुनकर हम भविजन,श्री गुरुवर को पूज रहे॥
ध्यान सुरङ्ग खोदकर गुरुवर, एकाकी खो जाते हैं।
भक्त ढूँढ़ते रहते बाहर, कहीं नजर ना आते हैं ॥2॥
ऋद्धिधारी मुनियों जैसे, गुरुवर चलते दिखते हैं।
इक निश्छल मुस्कान प्राप्त कर,पतझड़ मधुवन बनते हैं॥
जिनके परिणामों में पल-पल,स्वभाव सुरभि महक रही।
अतः गुरु के गुणोद्यान में, चिन्मय चिड़ियाँ चहक रहीं॥3॥
ज्ञानसिन्धु में डूब-डूबकर, चिन्तन के मोती देते।
सहज भाव से शिष्यगणों को, अध्यातम ज्योति देते॥
वस्त्राभूषण त्याग दिए पर, कितने सुन्दर दिखते हो।
नजर नहीं हटती मूरत से, तीर्थङ्कर से लगते हो॥4॥
ज्यों-ज्यों उम्र बीतती जाती, निजानुभूति गहराई।
आतम की अतलान्त गहनता, मेरे गुरुवर ने पाई॥
दूर किया यदि हमें चरण से, मोक्ष दूर हमसे होगा।
बड़े दोष के भागी होना, स्वीकृत तुम्हें नहीं होगा॥5॥
अतः आपको हाथ जोड़कर, इतना मात्र निवेदन है।
संग ले चलो मोक्षपुरी तक, यह जयमाला अर्पण है॥
मैं दोषों का कोष हूँ गुरुवर, आप क्षमा के सागर हो।
मैं धरती की धूल हूँ केवल, गुरुवर ज्ञान दिवाकर हो॥6॥

दोहा

जैसा ज्ञान दिया गुरु, वैसा ही है शिष्य।
अपने वंशज की गुरु, भूल सभी हो क्षम्य॥7॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

घत्ता

श्री विद्यागुरु की, गणनायक की, जो भवि पूजा नित्य करें।
सब विघ्न नशावें, शिवसुख पावें, 'विद्यासागर पूर्ण' करें॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

अर्घ्यावली

देवशास्त्र गुरु बीस तीर्थङ्कर एवं सिद्धप्रभु

ज्ञानोदय छन्द

जल फलादि वसु द्रव्य मिलाकर, अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं स्वामी।
दर्शन ज्ञान चरित गुण आदि निज में प्रकट करूँ स्वामी॥
देव शास्त्र गुरु विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर नमन करूँ।
सिद्धप्रभु का ध्यान धरूँ मैं, अनर्घ्य पद को प्राप्त करूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यो विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽनन्तानन्तसिद्ध-परमेष्ठिभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी एवं कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय

ज्ञानोदय छन्द

तीन काल सम्बन्धी पाँचों, भरत और ऐरावत में।
सर्व तीस चौबीसी प्रभु को, तीन योग से वन्दूँ मैं॥
त्रिलोक में कृत्रिम-अकृत्रिम,जहाँ-जहाँ चैत्यालय हैं।
अनर्घ्य पद हित अर्घ्य चढ़ाऊँ,पा जाऊँ सिद्धालय मैं॥

ॐ ह्रीं त्रिकालसम्बन्धि-त्रिंशत् चतुर्विंशति-त्रिलोकसम्बन्धीकृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं...।

कृत्रिमाकृत्रिम जिनबिम्ब

ज्ञानोदय छन्द

ऊर्ध्व मध्य औ अधोलोक में, जितने भी हैं बिम्ब महान।
कृत्रिम और अकृत्रिम सबको,मन-वच-तन से करूँ प्रणाम॥
चतुर्निकायी देव भक्ति से, जिनका वन्दन करते हैं।
उन बिम्बों के चरण- कमल में, अर्घ्य समर्पण करते हैं॥

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसम्बन्धिजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं...।

समुच्चय चौबीसी का अर्घ्य

ज्ञानोदय छन्द

जड़ द्रव्यों का मूल्य किया पर, आत्म द्रव्य अनमोल रहा।
फिर भी निज को जड़ द्रव्यों से, मैं मूरख क्यों तोल रहा॥
शिवपथ की आशा ले आया, अर्घ्य चढ़ा करता वन्दन।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, नाश करो विधि के बन्धन॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री आदिनाथ भगवान्

ज्ञानोदय छन्द

मेरे पास नहीं कुछ स्वामी, कैसे अर्घ्य बनाऊँगा।
आतम धन से निर्धन हूँ मैं, अब तुम सम बन जाऊँगा॥
आदीश्वर जिनराज आज यदि, अपना भक्त बनाओगे।
सच कहता हूँ शीघ्र मुझे भी, सिद्धालय में पाओगे॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान्

त्रिभंगी छन्द

हम दास तिहारे, आए द्वारे, सिद्धक्षेत्र में बस जाएँ।
पद अर्घ्य चढ़ाए, शरणे आए, चन्द्रप्रभ सम बन जाएँ॥
अष्टम तीर्थङ्कर, घातिक्षयङ्कर, भव्य हितङ्कर जिनराई।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, जिन गुण गाऊँ, श्री चन्द्रप्रभ सुखदाई॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री शान्तिनाथ भगवान्

ज्ञानोदय छन्द

बिन श्रद्धा के नाथ हजारों, मैंने अर्घ्य चढ़ाए हैं।
दिखा - दिखाकर इस दुनिया को, धर्मी भी कहलाए हैं॥
सारे दर को छोड़ प्रभु जी, आज आपके दर आया।
शान्तिनाथ प्रभु के चरणों में, पद अनर्घ्य पाने आया॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री नेमिनाथ भगवान्

नरेन्द्र छन्द

कर्म शक्ति को क्षय करने प्रभु, चरणन अर्घ्य चढ़ाया।
ध्रुव अनर्घ पद पाने का अब, अपूर्व अवसर आया॥
नेमिनाथ तीर्थङ्कर स्वामी, चेतन गृह में आना।
एक अकेला भटक रहा हूँ, शिवपथ मुझे दिखाना॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री पार्श्वनाथ भगवान्

हरिगीतिका छन्द

निज आत्म वैभव खो चुका हूँ, क्या चढ़ाऊँ अर्घ्य मैं।
प्रभु आपका ही हो चुका हूँ, आ गया हूँ शर्ण में॥
श्री पार्श्वनाथ जिनेश मुझको, लीजिए अपनाइए।
आवागमन से हूँ व्यथित, उद्धार मेरा कीजिए॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री महावीर भगवान्

(तर्ज - माता तू दया करके ...)

पर को देखा मैंने, निज को ही ना परखा।
अब सुख अनन्त पाने, सम्बन्ध तजूँ पर का॥
ज्ञायक पद पा जाऊँ, हो शक्ति प्रकट स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज का अर्घ्य

सखी छन्द

श्री विद्यासिन्धु मुनीश्वर, गुरुवर भक्तों के ईश्वर।
है शान्त छवि अति प्यारी, गुण गाती दुनिया सारी॥
मन वच तन से मैं ध्याऊँ, भावों से अर्घ्य चढ़ाऊँ।
गुरुदेव चरण सिर नाऊँ, निज आतम में रम जाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री 108 आचार्यविद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य

मैं देव श्री अरहन्त पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों॥
अरहन्त भाषित वैन पूजूँ, द्वादशाङ्ग रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरु चरन, शिवहेत सब आशा हनी॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय,जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पनमेरु-नन्दीश्वर जिनालय,खचर सुर पूजित भजूँ॥
कैलास श्री सम्मेदगिरि, गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जय,होय पति शिवगेह के॥

दोहा

जल गन्धाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूज हूँ, बहु विध भक्ति बढ़ाय॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यो द्वादशाङ्गजिनागमेभ्यः उत्तमक्षमादि-दशलक्षणधर्माय दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः त्रिलोकस्थित-कृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बेभ्यः पञ्चमेरु सम्बन्ध्यशीति-चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नंदीश्वरद्वीपस्थित-द्विपञ्चाशज्-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः श्रीसम्मेदाष्टापदोर्जयन्तगिरि-चम्पापुर-पावापुरादिसिद्धक्षेत्रेभ्यः सातिशयक्षेत्रेभ्यो विद्यमानविंशति-तीर्थंकरेभ्योऽष्टाधिक-सहस्रजिननामभ्यः श्रीवृषभादि-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं॥
पञ्चम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थङ्कर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक,नमो शान्तिहित शान्ति विधायक॥
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥
शान्ति जिनेश शान्ति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शान्ति दीजै हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार सङ्घ को॥

पूजैं जिन्हें मुकुटहार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शान्तिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिए करहिं शांति सदा अनूप॥

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को औ यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले,कीजे सुखी हे जिन ! शान्ति को दे॥
होवै सारी प्रजा को, सुख बलयुत हो, धर्म - धारी नरेशा।
होवै वर्षा समै पै, तिलभर न रहे, व्याधियों का अन्देशा॥
होवै चोरी न जारी, सुसमय वरतै, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं, जिनवर वृष को, जो सदा सौख्यकारी॥

घातिकर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज॥
शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का॥
बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लों सेऊँ, चरण जिनके, मोक्ष जो लों न पाऊँ॥
तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने॥

अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब,करुणा करि पुनि छुड़ाहु भव दुख से॥
हे जगबन्धु जिनेश्वर ! पाऊँ तव चरण - शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

(कायोत्सर्ग - नौ बार णमोकार मन्त्र)

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय॥1॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहुँ भगवान॥2॥
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहुँ राखहुँ मुझे, देहु चरण की सेव॥3॥
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजे भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण॥4॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादि-परमेष्ठिनः पूजाविधि-विसर्जनं करोमि। अपराध-क्षमापणं भवतु। यः यः यः।

(उक्त मंत्र पढ़कर ठोने पर पुष्प क्षेपण कर विसर्जन करें)

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय॥

(नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप)

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा रचित

मङ्गलमय जीवन बने, छा जाये सुख छाँव।
जुड़ें परस्पर दिल सभी, टले अमङ्गल भाव॥1॥
यही प्रार्थना वीर से, अनुनय से कर जोर।
हरी भरी दिखती रहे, धरती चारों ओर॥2॥
यही प्रार्थना वीर से, शान्ति रहे चहुँ ओर।
हिल-मिल कर सब एक हों, बढ़े धर्म की ओर॥3॥

विधान की इस पुस्तक में निम्नोक्त स्थानों के आदिनाथ भगवान् के चित्र हैं, आप वहाँ के दर्शन अवश्य कीजिए।

1. खुणादरी (राजस्थान)
2. डूँगरपुर (राजस्थान)
3. बड़े बाबा कुण्डलपुर
4. चाँदखेड़ी (राजस्थान)
5. केसरगंज (अजमेर)
6. दाहोद (गुजरात)
7. गुलगाँव (राजस्थान)
8. बीना बारहा (सागर)
9. सांगानेर (जयपुर)
10. गोलाकोट (खनियाधाना)
11. गुफा मन्दिर (अजमेर)
12. राणापुर
13. नसियाँ (अजमेर)
14. शकरपुर (दिल्ली)
15. बड़ौदिया (राजस्थान)
16. बण्डा (सागर)
17. हनुमानताल (जबलपुर)
18. नोगामा (बाँसवाड़ा)
19. गुहाटी
20. नेमावर
21. किशनगढ़ (राजस्थान)
22. कोटा (राजस्थान)
23. भुसावर
24. खंदारगिरि
25. धार नगरी
26. बावनगजा (बड़वानी)
27. मांगीतुंगी
28. डूँगरपुर
29. चित्रकूट (उदयपुर)
30. शाढ़ौरा
31. माउण्ट आबू
32. ईसनपुर, अहमदाबाद
33. प्यावल जी
34. झाँसी
35. डूँगरपुर (राजस्थान)
36. शीतलधाम (विदिशा)
37. पाडला नहरौर (बिजनॉर)
38. बावनगजा
39. परतापुर
40. लाल मन्दिर (दिल्ली)
41. ललितपुर
42. सवाई माधोपुर (चमत्कार जी)
43. थूबौन जी
44. कुण्डलपुर
45. कोटा
46. मोजमाबाद (राजस्थान)
47. श्री सम्मेदशिखर जी
48. सिद्धवरकूट

आर्यिका रत्न 105 श्री पूर्णमति माता जी द्वारा रचित कृतियाँ

सिद्धचक्र मण्डल विधान

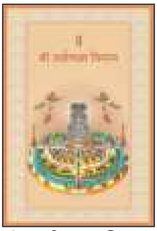

श्री अर्हच्चक्र विधान

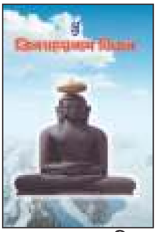

जिनसहस्रनाम विधान

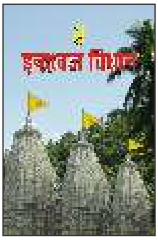

इन्द्रध्वज विधान

श्री शांतिनाथ विधान

श्री पार्श्वनाथ विधान

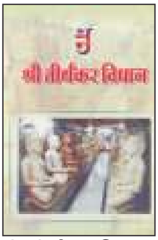

श्री तीर्थंकर विधान

श्री पंचपरमेष्ठी विधान

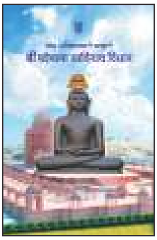

श्री बड़ेबाबा आदिनाथ विधान

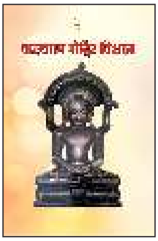

कल्याण मंदिर विधान

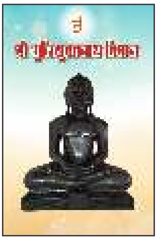

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

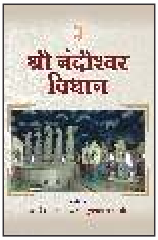

श्री नंदीश्वर विधान

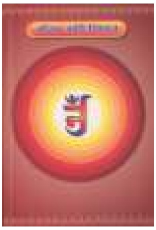

चौंसठ ऋद्धि विधान

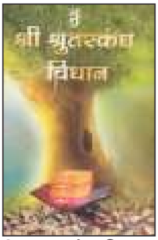

श्री श्रुतस्कंध विधान

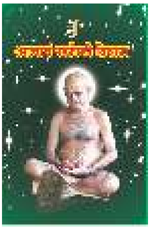

आचार्य परमेष्ठी विधान

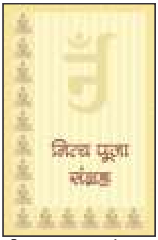

नित्य पूजा संग्रह

आर्यिका रत्न 105 श्री पूर्णमति माता जी द्वारा रचित कृतियाँ

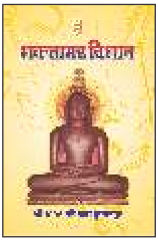

भक्तामर विधान

याग मंडल व पंचकल्याणक विधान

पंच विधान संग्रह

तीस चौबीसी विधान

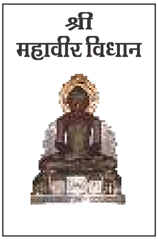

श्री महावीर विधान

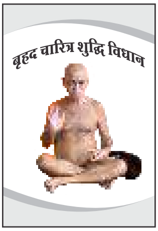

बृहद चारित्र शुद्धि विधान

तत्त्वार्थ सूत्र विधान

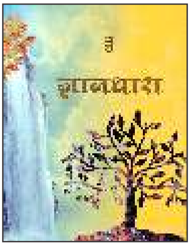

ज्ञानधारा

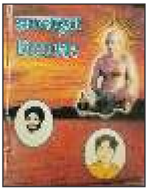

ज्ञानदूत विद्याधर

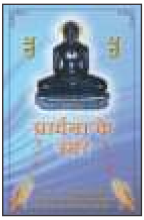

प्रार्थना के स्वर

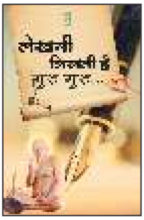

लेखनी लिखती है गुरु गुरु...

गुरु से सुना वही चुना

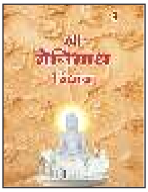

श्री नेमिनाथ विधान

प्रभु भक्ति शतक

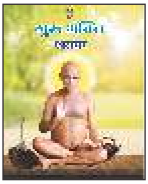

गुरु भक्ति शतक

आत्म बोध शतक

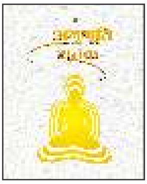

अनुभूति शतक

मेरे गुरुवर

''आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की अमृतवाणी''

- जिन और जन में इतना ही अंतर है कि एक वैभव के ऊपर बैठा है और एक के ऊपर वैभव बैठा है।
- श्रद्धा जब गहराती है तब वही समर्पण बन जाती है।
- मांगने से नहीं किंतु अधिकार श्रद्धा से मिलते हैं।
- विचारों का मूल्य होता है मात्र शब्दों का नहीं।
- शिक्षा वही श्रेष्ठ है, जो जन्म-मरण का क्षय करती है।

-: आत्म पुरुषार्थ :-

- अपने आपको जानो, अपने को पहचानो, अपनी सुरक्षा करो क्योंकि अपने में ही सब कुछ है।
- स्व की ओर मुड़ना ही सही पुरुषार्थ है।
- शरीर के प्रति वैराग्य और जगत के प्रति संवेग ये दोनों ही बातें आत्म कल्याण के लिये अनिवार्य है।
- अपने उपयोग का उपयोग, पर की चिंता में न करें।

-: भक्ति स्तुति :-

- पंच परमेष्ठी की भक्ति एवं ध्यान से विशुद्धि बढ़ेगी, संक्लेश घटेगा, वात्सल्य बढ़ेगा।

-: भक्ति महिमा :-

- भक्ति गंगा की लहर हृदय के भीतर से प्रवाहित होना चाहिए और पहुँचना चाहिए वहाँ जहाँ निस्सीमता हो।

-: मौन :-

- जो व्यक्ति वाणी को नियन्त्रित नहीं कर सकता है वह साधना नहीं कर सकता है।
- वे महान हैं, जो मुख से एक शब्द निकालने में आगे पीछे विचार करते हैं।

श्री भक्तामर महामण्डल विधान

माण्डना